मन के बंधन

अनुवादक
रमेश एम०ए०

१६५६
साहित्य-प्रकाशन-दिल्ली

मन के बंधन

मन के बंधन

ह्यूमन बौंडेज का हिन्दी रूपान्तर

अनुवादक
रमेश एम० ए०

१९५६
साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य-प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली

मूल्य
पाँच रुपया

मुद्रक
रामा कृष्णा प्रेस,
कटरा नील, चाँदनी चौक
दिल्ली।

: १ :

सुबह हो गई, अलस और उदास। बादल बोझिल होकर आसमान में थम गये थे और हवा में शुष्कता थी, जिससे आभास होता था कि बर्फ गिरेगी। एक नौकरानी एक कमरे में पहुँची, जिसमें एक बच्चा सो रहा था और उसने पर्दे खींच दिये। उसने यन्त्र-चालित सी सामने के मकान को देखा, मकान की दीवारों पर बालू और चूने का प्लास्टर था और सामने एक पोर्टिको था। वह बच्चे के बिस्तर के पास पहुँची।

"उठो, फ़िलिप," उसने कहा।

उसने बच्चे के बिस्तर के कपड़े अलग कर दिये, उसे अपने हाथों में लिया और नीचे की मंजिल में ले गई। बच्चा उस समय अर्द्ध जागृतावस्था में था।

"तुम्हारी माता जी तुम्हें बुला रही हैं," उसने कहा।

एक कमरे का दरवाज़ा खोल कर वह बच्चे को एक पलंग के पास ले गई, जिस पर एक स्त्री लेटी हुई थी। वह बच्चे की माँ थी। उसने अपने हाथ पसार दिये और बच्चा उसकी अंक में दुबक गया। उसने पूछा नहीं कि उसे क्यों जगाया गया है। स्त्री ने उसकी आँखें चूमीं, और अपने पतले-छोटे हाथों से सफेद फ़लालैन के नाइट-गाउन के नीचे उसके शरीर की गर्मी महसूस की। उसने बच्चे को अपने और समीप करके दबाया।

"तुम्हें नींद लग रही है, डार्लिंग ?" उसने कहा।

उसकी आवाज़ इतनी कमज़ोर थी, कि वह बड़ी दूर से आती हुई मालूम पड़ रही थी। बच्चे ने कोई उत्तर नहीं दिया, वह केवल मुस्कराया, जैसे बड़े सुख में हो। वह उस बड़े और गर्म बिस्तर, और

उन मुलायम हाथों के आलिंगन में बड़ा खुश था। अपनी माँ के और पास सिकुड़-सिमट कर उसने स्वयं को और छोटा बना लेने का उपक्रम किया और नींद में आते हुए उसे चूम लिया। दूसरे क्षरण अपनी आँखें बंद करके वह गंभीर निद्रा में निमग्न हो गया। डाक्टर आगे आकर पलंग के बगल में खड़ा हो गया।

"ओह, उसे अभी मत ले जाओ," स्त्री कराही।

बिना उत्तर दिये डाक्टर ने उसकी ओर गंभीरता से देखा। उसे मालूम था कि वह बच्चे को अपने पास अधिक समय तक नहीं रख सकेगी, इसलिए उसने उसे फिर चूमा; और सिर से पैर तक उसका बदन कोमलता से सहलाया; दाँया पैर हाथ में लेकर पाँचों उँगलियाँ महसूस कीं; और तब धीरे-धीरे अपना हाथ उसके बाँयें पैर पर रख दिया। सहसा वह सिसक पड़ी।

"क्या बात है ?" डाक्टर ने कहा, "आप थक गई हैं।"

स्त्री ने सिर अकारात्मक ढंग से हिलाया, बोल सकने में वह असमर्थ थी, और आँसू उसके बालों पर ढुलक पड़े। डाक्टर झुक गया।

"बच्चे को मुझे उठा लेने दीजिए।"

स्त्री उसकी इच्छा का विरोध करने के लिए बड़ी कमजोर थी। उसने बच्चा उसे दे दिया। डाक्टर ने उसे नर्स के हवाले कर दिया।

"अच्छा यह होगा कि तुम उसे उसके बिस्तर पर ही लिटा दो।"

"बहुत अच्छा, श्रीमान्।"

सोता हुआ बच्चा ले जाया गया। उसकी माँ अब सिसकने लगी, जैसे उसका दिल टूट गया हो।"

"उसका क्या होगा, मेरा बच्चा ?"

नर्स ने उसे शान्त करने की चेष्टा की और कुछ देर में, थक जाने के कारण, उसका रोना बन्द हो गया। डाक्टर कमरे के दूसरी ओर रक्खी मेज़ के पास गया। उस पर तौलिये से लिपटा एक नवजात मृत

बालक का शरीर था तौलिया उठाकर उसने देखा। मेज़ एक पर्दे के कारण पलंग की ओट में था, परन्तु स्त्री समझ गई कि वह क्या कर रहा है।

"लड़का था या लड़की ?" उसने नर्स से फुसफुसा कर पूछा।

"लड़का।"

स्त्री ने उत्तर न दिया। उसी क्षण बच्चे की नर्स वापस आ गई। वह बिस्तर के पास पहुँची।

"मास्टर फ़िलिप बिल्कुल नहीं जगे," नर्स ने कहा।

एक निस्तब्धता रही। तब डाक्टर ने अपने मरीज़ की नाड़ी फिर देखी।

"मेरा ख्याल है, इस समय मुझे कुछ नहीं करना," उसने कहा, "मैं नाश्ते के बाद फिर आऊँगा।"

"मैं बाहर तक आपको भेज आऊं, श्रीमान्", बच्चे की नर्स ने कहा।

उन्होंने चुपचाप सीढियाँ पार कीं। हाल में डाक्टर रुक गया।

"तुमने मिसेज़ कैरी के बहनोई को बुलाया है, है न ?"

"जी, श्रीमान्।"

"तुम्हें मालूम है किस समय वह यहाँ आयेंगे ?"

"नहीं, श्रीमान्। मैं उनके घर का इन्तजाम कर रही हूँ।"

"और बच्चे का क्या होगा ? मैं सोचता हूँ कि उसका बाहर रहना ही ठीक होगा।"

"मिस वाटकिन ने कहा था, श्रीमान्, कि वे उसे अपने साथ ले जायेंगी।"

"मिस वाटकिन कौन हैं ?"

"वह उसकी 'ग्रॉड मदर'[1] हैं। आपका क्या विचार है, श्रीमान्,

---

१. बच्चे के ईसाई धर्म में प्रवेश करते समय उसकी धार्मिक शिक्षा का भार ग्रहण करने वाली स्त्री।

क्या मिसेज़ कैरी ठीक हो जायेंगी ?"

डाक्टर ने अपना सिर हिलाया।

एक सप्ताह बाद। फ़िलिप ऑन्स्लो गार्डेन्स में मिस वाटकिन्स के मकान के ड्राइंग रूम के फर्श पर बैठा था। सिर्फ वही एक लड़का था, और अपने को खुश रक्खा करता था। कमरे में वज़नी फर्नीचर सजा हुआ था और प्रत्येक सौफ़े पर तीन बड़ी गद्दियाँ थीं। हरएक आराम कुर्सी पर भी एक एक गद्दी थी। सारी गद्दियाँ उसने ले ली थीं और हल्की तथा आसानी से हटायी जा सकने वाली कीमती फैशनेबुल कुसियों की सहायता से उसने अपने लिए एक गुफा का निर्माण कर लिया था, जिसमें वह पर्दे के पीछे खड़े इण्डियनों[1] से अपने को छिपा सकता था। अपना कान फर्श से लगा कर वह 'प्रेयरीज़'[2] के आर पार दौड़ने वाले भैंसों के झुँड की आवाज़ सुनने लगा। उसी समय द्वार खुलने की आवाज़ सुनकर उसने अपनी साँस रोक ली, जिससे उसका पता न लग सके; परन्तु एक तेज़ हाथ ने एक कुर्सी खींच ली और गद्दियाँ गिर पड़ीं।

"बदमाश लड़के, मिस वाटकिन जरूर तुम पर नाराज़ होंगी।"

"हल्ले, ए माँ !" उसने कहा।

नर्स ने झुक कर उसे चूम लिया, और वह गद्दियाँ अलग करने लगी। उसने उन्हें उनके स्थान पर रख दिया।

"क्या मुझे घर चलना है ?" उसने पूछा।

"हाँ, मैं तुम्हें लेने आई हूँ।"

"तुम आज नई पौशाक पहने हो ?"

यह १८८५ की बात है और वह एक 'बसल'[3] पहने थी। उसकी

---

१. उत्तरी अमेरिका के आदि-वासी, जो अब नहीं के बराबर रह गये हैं। २. उत्तरी अमेरिका के घास के मैदान। ३. स्त्रियों द्वारा स्कर्ट के नीचे पहना जाने वाला काला कपड़ा।

कसी बाहों और ढलका कंधों वाला गाउन काली मखमल का था और उसके 'स्कर्ट में तीन बड़े 'फ्लाउंस'[1] थे। सिर पर काला 'बॉनेट'[2] था, जिसपर बैंजनी तागे थे। वह हिचकिचाई। जिस प्रश्न की वह आशा कर रही थी, वह नहीं पूछा गया था, इसलिए वह अपना तैयार किया हुआ उत्तर भी नहीं दे सकती थी।

"क्या तुम नहीं पूछना चाहते कि तुम्हारी माता जी कैसी हैं ?" उसने आखिर कहा।

"ओह, मैं भूल गया। माता जी कैसी हैं ?"

"तुम्हारी माता जी अब ठीक हैं, और खुश हैं।"

"ओह मैं बड़ा खुश हूँ।"

"तुम्हारी माता जी चली गई हैं। अब कहीं तुम उन्हें नहीं देख पाओगे।"

फ़िलिप उसका मतलब नहीं समझा।

"क्यों ?"

"वे अब स्वर्ग में हैं।"

यह रोने लगी, फ़िलिप भी, यद्यपि उसकी समझ में ठीक-ठीक नहीं आया, रोने लगा। एमा के आँसुओं के कारण उसकी भावुकता बढ़ गई और उसने बच्चे को अपने हृदय से लगा लिया। उसे बच्चे की पीड़ा का कुछ-कुछ आभास हुआ कि उसने संसार का केवल एक निस्वार्थ प्रेम खो दिया है। उसे यह भयानक लगा कि अब उसे अजनबियों को सोंप दिया जायगा। परन्तु थोड़ी देर में उसने अपने को संयत कर लिया।

"तुम्हारे चाचा विलियम तुमसे मिलने का इन्तज़ार कर रहे हैं," उसने कहा, "जाओ, और मिस वाटकिन को अभिवादन कर आओ। हमें

---

१. स्कर्ट के साथ सिली जाने वाली प्लेटदार पट्टी। २. स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाला बिना किनारे का हैट, जो तागों द्वारा सिर में बाँधा जाता है।

घर चलना है।

"मैं अभिवादन नहीं करना चाहता," बच्चे ने उत्तर दिया। स्वभावत: वह अपने आँसू छिपाने का इच्छुक था।

"अच्छा, तो दौड़ कर ऊपर जाओ और अपना हैट ले आओ।"

जब वह हैट लेकर नीचे आया तो एमा हाल में प्रतीक्षा कर रही थी। उसने डाइनिंग रूम के पीछे के कमरे से आने वाली आवाजें सुनीं। वह रुका। उसे मालूम था कि मिस वाटकिन और उसकी बहन मित्रों से बातें कर रही थीं और उसे लगा—वह नौ वर्ष का हो गया था कि अगर वह अन्दर गया तो वे उसके लिये अफ़सोस प्रकट करेंगी।

"मैं सोचता हूँ कि मिस वाटकिन को अभिवादन कर ही आऊँ।"

"यही अच्छा होगा," एमा ने कहा।

"भीतर जाकर उनसे कहो मैं आ रहा हूँ," फ़िलिप ने कहा।

वह अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहता था। दरवाज़े को खट-खटाकर एमा भीतर चली गई। फ़िलिप ने उसे बोलते सुना।

"मास्टर फ़िलिप आपसे 'गुडबाई' कहना चाहते हैं, मिस!"

सहसा बातों का ज्वार-सा आ गया और फ़िलिप ने अन्दर प्रवेश किया। हेनरीटा वाटकिन मजबूत महिला थीं और उनका चेहरा लाल तथा बाल रंगे हुए थे। वे अपनी बड़ी बहन के साथ रहती थीं, जिन्हें अपनी वृद्धावस्था से बड़ा सन्तोष था। दो महिलायें, जिन्हें फ़िलिप नहीं पहचानता था, वहाँ बैठी ताज्जुब से उसकी ओर देख रही थीं।

"मेरे प्यारे बच्चे," मिस वाटकिन ने हाथ पसारते हुए कहा।

वे रोने लगीं। फ़िलिप अब समझ गया कि उन्होंने दोपहर का खाना क्यों नहीं खाया और वे काले कपड़े क्यों पहने थीं। वे बोल नहीं सकीं।

"मुझे घर जाना ही है," फ़िलिप ने आखिर कहा।

उसने अपने को मिस वाटकिन के हाथों से मुक्त किया, और उन्होंने

उसे फिर चूमा। तब उसने उनकी बहन के पास जाकर भी 'गुडबाई' कहा। उन अज्ञात महिलाओं में से एक ने उससे पूछा कि क्या वह उसे चूम सकती है और उसने गंभीरता पूर्वक आज्ञा दे दी। वह यद्यपि रो रहा था, उस सनसनी का आनन्द भी ले रहा था जो उसके आने से पैदा हो गई थी; कुछ देर और रुक कर थोड़ी सनसनी और बढ़ाने में उसे खुशी ही होती, पर उसे लगा कि वह चाहती थीं कि वह चला जाये। इसलिए उसने कहा कि एमा उसकी प्रतीक्षा में है। वह कमरे के बाहर चला गया। एमा नीचे की मंजिल में किसी मित्र से बातें करने चली गई थी और वह सीढ़ियों के बीच की चौड़ी समतल जगह पर उसका इन्तज़ार करने लगा। उसे हेनरीटा वाटकिन की आवाज़ सुनाई पड़ी।

"उसकी माँ मेरी सबसे बड़ी मित्र थी। मैं यह सोचना बर्दाश्त नहीं कर सकती कि वह अब नहीं रही।"

"तुम्हें अन्त्येष्टि में नहीं जाना चाहिए था, हेनरीटा," उनकी बहन ने कहा, "मुझे मालूम था इससे तुम परेशान हो जाओगी।"

तब उन अज्ञात स्त्रियों में से एक बोली।

"बेचारा बच्चा! यह विचार, कि वह दुनिया में बिल्कुल अकेला है, कितना भयानक है। मैंने देखा है, वह लंगड़ाता है।"

"हाँ, उसके एक पैर में फील पाँव है। उसकी माँ को इसका बड़ा दुःख था।"

तब एमा वापस लौट आई। एक बग्घी बुलाई गई और उसने ड्राइवर को बता दिया कि कहाँ जाना है।

जब वे उस मकान में पहुँचे जिसमें मिसेज़ कैरी की मृत्यु हुई थी—वह केन्सिंगटन में नॉटिंग हिलगेट और हाई स्ट्रीट के बीच एक सुनसान अच्छी सड़क पर स्थित था—एमा फ़िलिप को ड्राइंग रूम में ले गई। उसके चाचा शव पर चढ़ाने के लिये फूल मालाएँ भेजने वाले व्यक्तियों को धन्यवाद के पत्र लिख रहे थे। उनमें से एक, जो अन्त्येष्टि के

बहुत बाद पहुँचा था, हाल की मेज पर दफ़्ती के डिब्बे में रक्खा था।

"मास्टर फ़िलिप आ गये," एमा ने कहा।

मिस्टर कैरी सावधानी से उठ खड़े हुए और उन्होंने छोटे बच्चे से हाथ मिलाये। फिर दोबारा सोचकर झुके और उन्होंने उसका मत्था चूम लिया। वे औसत से कुछ कम उँचाई के आदमी थे, जरा छोटे और उनके लम्बे बाल सिर पर इस तरह से सजाये हुए थे कि उनका गंजापन ढक सके। वे 'क्लीन-शेव' थे। उनके अंगों की गठन सुडौल थी और यह कल्पना की जा सकती थी कि अपने यौवन के दिनों में वह सुन्दर रहे होंगे। घड़ी के चैन के साथ वे सोने का 'क्रास' पहने थे।

"तुम अब मेरे साथ रहोगे, फ़िलिप," मिस्टर कैरी ने कहा, "तुम्हें अच्छा लगेगा?"

दो साल पहले, चेचक के आक्रमण के बाद फ़िलिप को 'विकारेज'[1] भेज दिया गया था। लेकिन अब उसे अपने चाचा और चाची से ज्यादा छत पर बने एक कमरे और एक बड़े बाग की याद रह गई थी।

"हाँ।"

"तुम्हें अब मुझे और अपनी चाची लुइज़ा को अपने पिता और माता समझना चाहिये।"

बच्चे के होंठ थरथराये, उसका चेहरा लाल हो गया, पर उसने उत्तर नहीं दिया।

"तुम्हारी प्यारी माँ तुम्हें मेरे संरक्षण में छोड़ गई हैं।"

मिस्टर कैरी को अपने भाव प्रकट करने में अधिक आसानी न हो रही थी। जब उनके पास खबर पहुँची कि उनकी भाभी की मृत्यु बहुत समीप है, तो वह फौरन लन्दन के लिये रवाना हो गये। लेकिन रास्ते भर वे सिर्फ एक ख्याल में खोये रहे—भाभी की मृत्यु के बाद अगर उन्हें

---

१. पादरी के रहने की जगह।

उनके बच्चे का भार सम्भालना पड़ा तो उनके जीवन में बड़ी उथल-पुथल हो जायगी। उनकी अवस्था पचास वर्ष से अधिक थी और उनकी पत्नी, जिनके साथ विवाह हुए तीस वर्ष हो चुके थे, निस्संतान थीं। उन्हें अपने घर में किसी बच्चे की उपस्थिति को सोच कर अधिक खुशी नहीं हो रही थी—वह शैतान और हल्ला मचाने वाला भी हो सकता है। उन्हें अपनी भाभी कभी भी ज्यादा पसन्द न थी।

"कल मैं तुम्हें ब्लैकस्टैबिल ले चलूँगा," उन्होंने कहा।

"एमा के साथ ?"

बच्चे ने अपना हाथ एमा के हाथ पर रख दिया और एमा ने उसे दबाया।

"नहीं, एमा को कहीं और चली जाना पड़ेगा," मिस्टर कैरी ने कहा।

"पर मैं एमा को अपने साथ रखना चाहता हूँ।"

फ़िलिप रोने लगा और नर्स भी स्वयं को विचलित होने से न रोक सकी। मिस्टर कैरी असहाय से उन्हें देखते रहे।

"मेरा ख्याल है तुम मास्टर फ़िलिप को थोड़ी देर मेरे पास अकेला छोड़ दो।"

"बहुत अच्छा, श्रीमान्।"

यद्यपि फ़िलिप उससे चिपका हुआ था, पर एमा ने स्वयं को उससे मुक्त कर लिया। मिस्टर कैरी ने बच्चे को अपने घुटने पर बिठा कर अपने हाथ से उसे घेर लिया।

"रोओ मत," उन्होंने कहा, "अब तुम बड़े हो गये हो, और तुम्हें नर्स की जरूरत नहीं है। अब तुम्हें स्कूल भेजने का प्रबन्ध करना पड़ेगा।"

"मैं एमा को अपने साथ रखना चाहता हूँ," बच्चे ने फिर कहा।

"ऐसा करने में बहुत पैसे खर्च होते हैं, फ़िलिप ! तुम्हारे पिता अधिक छोड़ कर नहीं मरे थे और मुझे मालूम नहीं, वह सब रुपया कहाँ

चला गया। तुम्हें हर एक पेनी बहुत सोच-विचार के बाद खर्च करनी पड़ेगी।"

फ़िलिप के पिता डाक्टर थे और उनकी प्रैक्टिस अच्छी चलती थी। इसलिये जब खून ज़हरीला हो जाने के कारण सहसा उनकी मृत्यु हो गई, तो लोगों को यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उनकी विधवा के लिये जीवन बीमा और ब्रूटन स्ट्रीट के मकान के किराये के अलावा कुछ नहीं बचा था। यह छः महीने पहले की बात थी; और मिसेज कैरी ने जिनका स्वास्थ्य पहले से ही खराब रहता था, अपने को गर्भवती जान कर मकान के किराये के लिये पहला प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपना फर्नीचर एक जगह इकट्ठा किया और एक साल के लिये एक सजा-सजाया मकान किराये पर ले लिया, जिससे बच्चा पैदा होने तक उन्हें किसी तरह की असुविधा न हो। परन्तु रुपयों-पैसों का हिसाब रखना उन्हें कभी न आया था और वे अपने को नयी परिस्थितियों के अनुकूल बना सकने में असमर्थ न हुई। और इसलिये सब खर्च काट कर अब दो हजार पौंड से ज्यादा नहीं बचे थे, जिनसे बच्चे को इस योग्य बनाना था कि वह खुद कमा-खा सके। यह सब फिलिप को समझाना असम्भव था और वह अब भी सिसक रहा था।

"तुम एमा के पास चले जाओ," उन्होंने यह महसूस करते हुए कहा कि एमा बच्चे को किसी और से अधिक सांत्वना दे सकती थी।

बिना एक शब्द बोले फ़िलिप अपने मामा के घुटने से उतर गया, पर मिस्टर कैरी ने उसे रोका।

"हमें कल जरूर चल देना है, क्योंकि शनिवार को मुझे अपना प्रवचन तैयार करना है। तुम एमा से कहो कि वह तुम्हारा सामान तैयार कर दे। अपने सारे खिलौने तुम ले चल सकते हो। और अगर अपने माता-पिता की याद के लिये कुछ ले चलना चाहो, तो उनके लिये एक-एक चीज़ ले लो बाकी सारी चीजें बेंच दी जायेंगी।"

"लड़का कमरे से बाहर चला गया। मिस्टर कैरी को अधिक काम

करने की आदत नहीं थी और वह बेरुखी से पत्रोत्तर लिखने बैठ गये। मेज़ में एक ओर बिलों का बंडल रक्खा था और उन्हें देख-देख कर मिस्टर कैरी को चिढ़ लग रही थी। एक तो उन्हें बड़ा ही असंगत मालूम पड़ रहा था। मिसेज़ कैरी की मृत्यु के फौरन बाद ही एमा ने बहुत से सफेद फूल मृतक के कमरे में रखने को मंगाये थे। यह पैसे का बिल्कुल दुरुपयोग था। एमा अपने को बहुत लगाती है। अगर पैसे की कमी न होती, तो भी वे उसे निकालते नहीं।

लेकिन फिलिप उसके पास गया और उसके वक्ष में सिर गड़ाकर रोने लगा, जैसे उसका दिल ही टूट जायगा। एमा को महसूस हुआ जैसे वह उसका ही बच्चा है—उसने उसे एक महीने की उम्र से पाला था—और वह उसे कोमल शब्दों से बहलाने लगी। उसने वादा किया कि वह उसे कभी भूलेगी नहीं और अक्सर देखने आया करेगी। उसने उसे उस गांव के बारे में बताया जहां वह जा रहा था और डेवनशायर के अपने घर के बारे में भी बताया। आख़िर फ़िलिप आँसू बहाना भूल गया, और आगामी यात्रा की कल्पना मात्र से उत्तेजित हो उठा। एमा ने उसे जमीन पर खड़ा कर दिया क्योंकि काम काफी करना था और वह उसे बिस्तर पर अपने कपड़े रखवाने में मदद करने लगा। एक ने उसे नर्सरी से अपने खिलौने लाने को भेजा, और थोड़ी देर में वह प्रसन्नतापूर्वक खेलने लगा।

परन्तु आखिर वह अकेले ऊब गया और सोने के कमरे में चला गया, जहाँ एमा एक बड़े टीन के बक्स में उसके कपड़े रख रही थी। उसे तब याद आया कि उसके चाचा ने माता-पिता की याद करने के लिये कुछ ले-लेने को कहा था। उसने एमा को यह बताया और पूछा कि उसे क्या ले चलना चहिये।

"ड्राइंगरूम में चले जाओ और जो चीज तुम्हें पसन्द आये ले लो।"

"वहाँ पर तो विलियम चाचा हैं।"

"तो इससे क्या? वे अब तुम्हारी चीजें हैं।"

फ़िलिप धीरे-धीरे नीचे गया। कमरे का दरवाजा खुला था। मिस्टर कैरी कमरे में नहीं थे। फ़िलिप धीरे-धीरे कमरे में टहलने लगा। उसे मालूम था कि कौन सी चीजें उसकी माँ की हैं और कौन सी मकान मालिक की। तब एक घड़ी पर उसकी दृष्टि थम गई, जो, उसकी माँ ने कभी कहा था, माँ को बहुत पसन्द थी। उसे लेकर वह कुछ असन्तोष के साथ ऊपर गया। अपनी माँ के सोने के कमरे के सामने खड़ा होकर वह सुनने लगा। यद्यपि किसी ने उसे भीतर जाने को मना नहीं किया था। उसे महसूस होता था कि ऐसा करना गलती होगी। वह जरा डरा हुआ था, और उसका दिल साधारण से ज्यादा गति से धड़कने लगा था। लेकिन साथ-साथ कोई उसे दरवाजा खोलने को प्रेरित कर रहा था। उसने हैंडिल बहुत धीमे से घुमाया, जैसे भीतर किसी को कोई आवाज न सुनने देना चाहता हो और बड़े धीमे से दरवाजा खोल दिया। कुछ देर वह देहली पर खड़ा रहा, तब अंदर प्रवेश करने का साहस कर सका। अब वह डरा हुआ नहीं था, बस एक अजीब सा भाव मन में उठ रहा था। उसने अपने पीछे द्वार बन्द कर लिया। परदे खिचे हुए थे और जनवरी की दोपहर की ठंडी रोशनी में कमरे में अंधेरा था। श्रृंगार-मेज पर मिसेज़ कैरी के ब्रुश और हाथ शीशा रखे थे। एक छोटी सी ट्रे में बालों के पिन थे-'चिकनी-पीस पर एक उसका और एक उसके पिता के फोटोग्राफ रक्खे थे। जब उसकी माँ जीवित थीं, वह पिता के अक्सर इस कमरे में आया करता था, पर अब बड़ा अन्तर महसूस हो रहा था, कुर्सियाँ कुछ अजीब तरह की दिखलाई पड़ने लगी थीं। बिस्तर बिछा हुआ था जैसे रात में कोई उस पर सोयेगा और तकिये पर एक केस में रात की पोशाक रक्खी थी।

फ़िलिप ने कपड़ों की एक बड़ी आलमारी खोली और अंदर प्रवेश करके जितने कपड़े दोनों हाथों में ले सकता था लेकर उनमें अपना सिर गड़ा दिया। उनसे उस इत्र की खुशबू आरही थी, जिसे उसकी माँ इस्तेमाल किया करती थी। तब उसनें माँ की चीजों से भरे दराज़ खोल

डाले और उन्हें देखा : लिनेन के बीच लैवेंडर के थैले थे और उनकी खुशबू ताज़ी और खुशनुमा थी। कमरे का अजनबीपन दूर हो गया और उसे लगा, मानों उसकी माँ कहीं घूमने भर चली गई है। वह अभी वापस आकर नर्सरी में उसके साथ चाय पियेंगी और उसे अपने होठों पर उनके चुम्बन की अनुभूति हुई।

यह सही नहीं हो सकता कि अब वह कभी अपनी माँ को देख नहीं पायेगा। यह सही नहीं हो सकता क्योंकि यह असम्भव है। बिस्तर पर चढ़कर उसने अपना सिर तकिये पर रख दिया और बिल्कुल शान्त लेट गया।

अश्रुपूरित नयनों से फ़िलिप ने एमा से बिदा ली, परन्तु ब्लैकस्टेबिल की यात्रा में उसे आनन्द आगया। जब वे वहाँ पहुंचे वह पिछली बातें भूल चुका था। ब्लैकस्टेबिल लन्दन से साठ मील दूर था। नौकर को सामान देकर मिस्टर कैरी फ़िलिप को साथ ले 'विकारेज' की ओर पैदल ही चल पड़े। वहाँ पहुँचने में पाँच मिनट से कुछ ही अधिक समय लगा।

मिसेज कैरी जानती थीं कि वे किस ट्रेन से आरहे हैं और वे ड्राइंग रूम में बैठी उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। उनके कान फाटक खुलने की आवाज के इन्तजार में थे। फाटक खुलने की आवाज सुनी तो दरवाजे तक गई।

"वह रहीं लुइ चाची," उन्हें देखकर मिस्टर कैरी ने कहा, "दौड़ कर उन्हें एक चुम्बन दो।"

अपने हाथ-पाँव घसीटते हुए, जरा भद्दे ढंग से, फ़िलिप ने दौड़ना शुरू किया और तब वह रुक गया। मिसेज़ कैरी की उम्र उनके पति की उम्र के ही बराबर थी, कद छोटा और शरीर भर में झुर्रियाँ थीं। चेहरे पर तो झुर्रियों की संख्या बहुत अधिक थी और आँखों का रंग हल्का नीला था। उनके यौवन के फैशन के अनुसार इनके भूरे बाल छोटे-छोटे छल्लों में व्यवस्थित थे। उनके शरीर पर काले वस्त्र थे और

उनका केवल एक आभूषण सोने की जंजीर थी, जिसमें एक 'क्रास' लटक रहा था। उनका स्वभाव लजीला और आवाज़ मुलायम थी।

"क्या तुम पैदल चल कर आये हो, विलियम ?" उन्होंने लगभग भर्त्सना करते हुए अपने पति से कहा और उनका चुम्बन लिया।

"मैंने यह सोचा भी नहीं," उन्होंने अपने भांजे की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

"पैदल चलने से तुम्हें कोई कष्ट तो नहीं हुआ, फ़िलिप ?" मिसेज़ कैरी ने बच्चे से पूछा।

" नहीं। मुझे इसका अभ्यास है।"

उनकी बातचीत पर फ़िलिप को कुछ आश्चर्य हुआ। लुईज़ा चाची ने उससे भीतर आने को कहा और उन्होंने हाल में प्रवेश किया। वह लाल पीले पत्थरों से जड़ा हुआ था, जिन पर एक-एक छोड़कर 'ग्रीकक्रास' और 'लैम्प आफ गाड' बने हुए थे। हाल से बाहर जाने के लिये शानदार सीढ़ियाँ थीं। वे पालिशदार चीड़ की लकड़ी की बनी थीं, जिसमें एक विशेष गंध थी, और जब गिरजे की मरम्मत हुई थी, तो सौभाग्यवश काफी लकडी बच रही थी और उन्हें बना दिया गया था। छोटे खम्भे 'चार एवेंजलिस्टों' के निशानों से सजाये गये थे।

लुइज़ा चाची फ़िलिप को उपर एक छोटे सोने के कमरे में ले गईं, जो सड़क की ओर था। खिड़की के ठीक सामने एक बड़ा पेड़ था, जिसकी शाखें इतनी नीची थीं कि उस पर अधिक ऊंचाई तक चढ़ना बहुत आसान था।

"छोटे से बच्चे के लिये छोटा-सा कमरा," मिसेज़ कैरी ने कहा, "अकेले सोने में तुम्हें डर तो नहीं लगेगा ?"

"अरे, नहीं।"

एक बार वह 'विकारेज' में और आया था, परन्तु उसके साथ नर्स थी, और मिसेज़ कैरी को उससे अधिक वास्ता न था। वे अब उसकी ओर कुछ अनिश्चितता से देख रही थीं।

"तुम अपने हाथ धो सकते हो, या मैं उन्हें धो दूँ ?"

"मैं खुद धो सकता हूँ," उसने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

"ठीक है, जब तुम चाय पीने नीचे आओगे तो मैं उन्हें देखूँगी," मिसेज़ कैरी ने कहा।

वे बच्चों के बारे में कुछ नहीं जानती थीं। यह तय हो गया कि फ़िलिप ब्लैकस्टेबिल आयेगा, तो वे बहुत सोचने लगीं कि उन्हें उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये। वे अपना कर्तव्य निबाहने को तैयार थीं; पर अब जब वह वहाँ आ गया था तो वे उसके साथ इतना संकोच करने लगीं, जितना फ़िलिप स्वयं उनसे संकोच करता था। वे चाहती थीं कि फ़िलिप शोर और बदमाशी न करे, क्योंकि उनके पति को शोर और बदमाशी करने वाले लड़के पसन्द न थे। क्षमा माँग कर वे फ़िलिप को अकेला छोड़ कर चली गईं, पर एक क्षण में ही लौट कर उन्होंने दरवाजा भड़भड़ाया। बिना कमरे के भीतर गये उन्होंने पूछा कि क्या वह अपने आप पानी डाल सकता है। तब नीचे जाकर चाय के लिये उन्होंने घंटी बजाई।

डाईनिंग रूम बड़ा और अच्छे अनुपात से बना था। उसकी दो दीवारों पर खिड़कियाँ थीं, जिन पर लाल 'रेप' [1] के भारी परदे पड़े थे। बीच में एक बड़ी मेज पड़ी थी और एक किनारे पर आकर्षक आलमारी रक्खी थी, जिसमें एक आइना रक्खा था। एक कोने में हारमोनियम था। फ़ायरप्लेस[2] के दोनों ओर दो कुर्सियाँ थीं जिन पर नक्काशीदार चमड़ा चढ़ा था और ऐन्टीमैंकासार[3] और एक कुर्सी में हत्थे थे और उसे पति कहा जाता था, दूसरी में हत्थे नहीं थे और उसे पत्नी कहा जाता था। हत्थों वाली कुर्सी पर मिसेज़ कैरी कभी नहीं

---

१. एक तरह का कपड़ा। २. वार में बनी अंगीठी जिससे कमरा गरम रखा जाता है। ३. सोफ़ा सेट को तेल आदि से बचाने के लिये एक प्रकार का आवरण।

बैठती थीं : वह कहती थीं कि ज्यादा आराम देह कुर्सियाँ उन्हें पसन्द नहीं; हमेशा ही काम अधिक रहता है और अगर उनकी कुर्सी में हत्थे भी होंगे तो वे उतनी आसानी से उसे छोड़ न सकेंगी।

जब फ़िलिप अन्दर गया तो मिस्टर कैरी आग जला रहे थे और उन्होंने अपने भाँजे से बताया कि 'पोकर'[1] दो हैं। एक बड़ा चमकदार, पालिश किया हुआ था और इस्तेमाल में न लाया जाता था, विकर[2] कहलाता था; और दूसरा, जो काफी छोटा था और स्पष्टतया अधिक आग में रह चुका था 'क्यूरेट'[3] कहलाता था।

"हम किसका इन्तजार कर रहे हैं ?" मिस्टर कैरी ने कहा।

"मैंने मेरी ऐन से आपके लिये एक अंडा बनाने को कहा था। मैंने सोचा सफर के बाद आप भूखे होंगे।"

मिसेज़ कैरी लन्दन से ब्लैकस्टेबिल की यात्रा को बहुत थका देने वाली समझती थीं। वे स्वयं शायद ही कभी यात्रा करती हों, क्योंकि उन्हें तीन सौ पौंड सालाना में रहना पड़ता था, और जब पति को छुट्टी की जरूरत होती थी, चूंकि दो व्यक्तियों के लिये पर्याप्त धन नहीं था, वे अकेले ही चले जाते थे। वे चर्च काँग्रेस के बड़े शौकीन थे, और साल में एक बार लन्दन जाने का प्रबन्ध कर ही लेते थे। एक बार नुमाइश में वे पेरिस गये थे, और दो या तीन बार स्विटजरलैंड भी। मेरी ऐन अंडा ले आई और वे बैठ गये। कुर्सी फ़िलिप के लिये काफी नीची थी और एक क्षण के लिये मिस्टर और मिसेज कैरी दोनों में से किसी की समझ में न आया कि क्या किया जाय।

"मैं फ़िलिप के नीचे कुछ किताबें रक्खे देती हूं।" मेरी ने कहा।

हारमोनियम के ऊपर से उसने बड़े साइज की बाइबिल और और प्रार्थना की पुस्तक जिससे पादरी साहब प्रार्थनायें पढ़ा करते थे, उठाकर फ़िलिप की कुर्सी पर रख दीं।

१. आग प्रज्जवलित करने के डंडे। २. बिशप का सहायक जो उसके नाम पर गिरजे का शासन चलाता है। ३. विकर का सहायक।

"ओह, विलियम वह बाइबिल पर नहीं बैठ सकता," मिसेज़ करी ने धक्का मारकर कहा, "क्या तुम लाइब्रेरी से उसके लिये कुछ किताबें नहीं निकाल सकते ?"

मिस्टर कैरी ने एक क्षण को प्रश्न पर विचार किया।

"मेरी ऐन, प्रार्थना के ऊपर अगर पुस्तक रख दो, तो कोई हानि न होगी" उन्होंने कहा, "प्रार्थना-पुस्तक हम जैसे पार्थिव व्यक्तियों की ही लिखी किताब है। किसी भी प्रकार नहीं कहा जा सकता कि इसे ईश्वर ने लिखा है।"

"मैंने यह नहीं सोचा था, विलियम," लुइजा चाची ने कहा।

फ़िलिपि किताबों के ऊपर बैठ गया और 'ग्रेस' कहने के बाद पादरी ने अंडे का ऊपरी हिस्सा काटा। उन्होंने उसे फ़िलिपि की ओर बढ़ाते हुए कहा, "अगर तुम चाहो तो मेरे अंडे का आखिरी हिस्सा चख सकते हो।"

फ़िलिप एक पूरा अंडा खाना पसन्द करता, पर उसे दिया नहीं गया था, इसलिये जितना मिल सकता था उसी से उसने सन्तोष कर लिया।

"मुर्गियां मेरे जाने के बाद ठीक तरह से अंडे देती रही हैं न ?" पादरी ने पूछा।

"ओह बड़ी भयानक हैं वे। बस एक या दो अंडे हर दिन।"

"वह ऊपर का हिस्सा कैसा लगा तुम्हें, फ़िलिप ?" उसके चाचा ने पूछा।

"बहुत अच्छा, धन्यवाद !"

"इतवार की शाम को तुम्हें दूसरा मिलेगा।"

मिस्टर कैरी हमेशा इतवार को चाय के साथ उबला हुआ अंडा खाया करते थे, जिससे शाम की सभा के लिये वे ठीक रहें।

फ़िलिप का जीवन अभी तक एक इकलौते लड़के की तरह अकेला बीता था। विकारेज में उसका अकेलापन उतना ही अधिक था जितना

माँ के जीवित रहने पर रहता था। मेरी ऐन से उसने घनिष्टता बढ़ा ली। उसकी अवस्था ३५ वर्ष की थी, कद छोटा, और शरीर मोटा। वह एक मछवाहे की लड़की थी। अठारह वर्ष की उम्र में विकारेज में आई थी। उसने पहली बार यहीं नौकरी की थी और उसे छोड़ने का उसका कोई इरादा न था; पर उसकी एक शादी की संभावना उसके मालिकों के शिरों पर डंडे की तरह लटकती रहती थी। उसके माता-पिता हार्वरस्ट्रीट के पार रहते थे और वह अपनी छुट्टियों वाली शामों में उनसे मिलने जाया करती थी। एक शाम उसने भी मेरी के साथ उसके घर जाने की इजाज़त चाही, पर चाची को डर था कि उसे कहीं कुछ हो न जाय और चाचा का कहना था कि बुरी संगत में पड़कर चाल-चलन बिगड़ जाता है। वह गंदे मछवाहों को पसन्द नहीं करते थे क्योंकि वह चैपेत[1] जाते थे। परन्तु फ़िलिप डाइनिंग रूम की अपेक्षा रसोईघर में अधिक प्रसन्न रहता था, और जब भी संभव होता, अपने खिलौने ले जाकर वहीं खेलता। चाची को इससे कोई परेशानी न थी। उन्हें शैतानी पसन्द न थी और यद्यपि वह जानती थीं कि बच्चे शैतानी करते ही हैं, उन्हें यह अधिक पसन्द था कि फ़िलिप रसोई घर में गन्दगी फैलाये। अगर वह शान्ति से न रहेगा तो उसके चाचा परेशान हो उठेंगे और कहने लगेंगे कि आज उसके स्कूल जाने का समय आ गया है। स्कूल जाने के लिये मिसेज़ कैरी फिलिप को अभी छोटा समझती थीं और मातृहीन बच्चे के लिये उनका हृदय भर आता; पर उसका प्यार जीतने के उनके ढंग जरा भद्दे थे और फ़िलिप, शर्म के कारण, उनके व्यवहार को इतनी बेरुखी से ग्रहण करता था कि वे बहुत दुखी हो उठतीं। कभी वह रसोई घर से आती उसकी तेज़ आवाज उन्हें हँसी में बदली सुनाई पड़ती, पर जब वह अन्दर जाती तो वह शर्माकर चुप हो जाता और मेरी ऐन मज़ाक बनाने लगती।

---

१. नीचे के गिरजे की निगरानी में रहने वाला पूजा करने का स्थान।

मिसेज कैरी को उसमें कई मजेदार बातें न दिखाई पड़तीं और वे तनिक मुस्करा पड़तीं।

"हम लोगों से अधिक वह मेरी ऐन के पास खुश रहता है," मशीन लेकर अपनी सिलाई पर बैठते हुये उन्होंने कहा।

"स्पष्ट है कि उसका पालन-पोषण बड़े बुरे ढंग से हुआ है। उसकी आदतें सुधारी जानी चाहियें।"

फ़िलिप के आने के दूसरे दिन एक अप्रिय घटना हो गई। हमेशा की तरह खाना खाने के बाद मिस्टर कैरी एक झपकी लेने ड्राइंग रूम में चले गये, पर उस समय उनका मूड बड़ा चिड़-चिड़ा हो रहा था, और वह सो नहीं सके।

सहसा उन्हें एक अप्रत्याशित शोर सुनाई पड़ा। उन्होंने अपने चेहरे पर पड़ा रूमाल उठाया और जिस सोफे पर पड़े हुये थे उससे उठकर वह डाइनिंग रूम में जा पहुँचे। मेज पर अपने चारों ओर अपनी सारी ईंटें रक्खे फ़िलिप बैठा था। उसने एक बड़ा सा किला बनाया था, और नींद की किसी गड़बड़ी के कारण वह अभी-अभी बड़े शोर के साथ गिर पड़ा था।

"इन ईंटों से तुम क्या कर रहे हो फ़िलिप ? तुम्हें मालूम है रविवार को खेलने की आज्ञा तुम्हें नहीं है।"

भयभीत आँखों से फ़िलिप ने एक क्षण उन्हें देखा, फिर अपनी आदत के अनुसार वह शर्मा गया।

"मैं घर में हमेशा खेला करता था," उसने उत्तर दिया।

"मुझे विश्वास है तुम्हारी प्यारी माँ तुम्हें ऐसा दुष्ट काम कभी न करने देती होंगी।"

फ़िलिप को नहीं मालूम था कि यह दुष्ट काम है; वह अगर ऐसा था तो वह नहीं चाहता था कि उसकी माँ की सम्मति समझी जाये। उसने सिर झुका लिया और कोई उत्तर न दिया।

"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि रविवार को खेलना बड़ा खराब

काम है । तुम्हारा क्या ख्याल है; इसे आराम करने का दिन क्यों कहा जाता है ? आज रात तुम्हें गिरजे में जाना है, तुम अपने बनाने वाले के सामने कैसे खड़े हो सकते हो, जबकि दोपहर में तुम उसके बनाये हुये कानून को ही तोड़ते रहे हो ?"

मिस्टर कैरी ने फ़िलिप से फौरन ईंटें हटाने को कहा और जब तक उसने सारी ईंटें हटा नहीं दीं वह वहीं खड़े रहे ।

"तुम बड़े शैतान लड़के हो," उन्होंने दोहराया, "जरा सोचो तो स्वर्ग में तुम्हारी माँ को कितना दुःख पहुँच रहा होगा ।"

फ़िलिप को लगा वो रो पड़े, पर उसे घृणा थी कि दूसरे उसके आँसुओं को देखें और दाँत जमाकर उसने सिसकियों को बाहर निकलने से रोक लिया । मिस्टर कैरी अपनी आराम कुर्सी पर बैठकर एक किताब के पन्ने उलटने लगे : फ़िलिप खिड़की के पास खड़ा था, विकारेज टरकनबरी से आने वाली सड़क के पीछे की ओर था, और डाइनिंग रूम से अर्द्धवृत्तकार घास का मैदान और क्षितिज तक फैले हुए हरे-हरे खेत दिखलाई पड़ते थे । भेड़ें उनमें चर रही थीं ।

कुछ देर में मेरी ऐन चाय रखने आया और लुइजा चाची सीढ़ियों से उतरने लगीं ।

"तुम अच्छी तरह झपकी ले पाये, विलियम ?" उन्होंने पूछा ।

"नहीं," उन्होंने उत्तर दिया, "फिलिप इतना शोर कर रहा था कि मैं एक पलक भी नहीं सो सका ।"

यह सत्य नहीं था क्योंकि अपने ही विचारों के कारण वे सोने न पाये थे और अनिच्छापूर्वक सुनते हुये फ़िलिप सोच रहा था कि उसने केवल एक बार शोर किया था और कोई कारण नहीं था कि उसके पहले या बाद चाचा सो न सकें । मिसेज़ कैरी ने पूरीबात जाननी चाही तो पादरी साहब ने सारी घटना बता दी ।

"उसने यह तक नहीं कहा कि उसे दुःख है," उन्होंने अपना कथन इस वाक्य से समाप्त किया ।

"ओह, फ़िलिप मुझे विश्वास है कि तुम्हें दुःख है," मिसेज कैरी ने कहा। वह बड़ी आतुर थीं कि अपने चाचा को वह जरूरत से ज्यादा शैतान न मालूम पड़ने लगे।

फ़िलिप ने उत्तर नहीं दिया। वह अपनी डबलरोटी और मक्खन खाता रहा। वह नहीं जानता था कि उसके भीतर की कौनसी शक्ति उसे दुःख प्रदर्शन करने से रोक रही थी। उसे लगा कि उसके कान हिल रहे हैं, वह रो पड़ने को हो आया, पर उसके होठों से शब्द एक भी न निकला।

चाय खामोशी में पी गई। मिसेज कैरी कभी-कभी चोरी से फ़िलिप को देख लेतीं, पर पादरी साहब जानबूझ कर उसकी उपस्थिति पर ध्यान नहीं दे रहे थे। जब फ़िलिप ने अपने चाचा को गिरजे जाने के लिए तैयार होने के लिये ऊपर जाते देखा, तो हाल में जाकर उसने अपना हैट और कोट उठा लिया। पादरी साहब ने नीचे आकर उसे देखा और कहा;

"मैं नहीं चाहता कि आज रात तुम गिरजे जाओ, फ़िलिप! मैं नहीं सोचता कि आज तुम्हारा दिमाग ईश्वर के मन्दिर में जाने के लिये उचित अवस्था में है।"

फ़िलिप ने एक भी शब्द न कहा। उसे लगा उसका अधिक अनादर किया गया है और यह महसूस करके उसके गाल लाल हो गये। वह चुपचाप खड़ा अपने चाचा को अपना चौड़ा हैट और भारी भरकम लबादा पहनते देखता रहा। हमेशा की तरह मिसेज कैरी उन्हें दरवाजे तक भेजने गईं। तब वे फ़िलिप की ओर मुड़ीं।

"कोई बात नहीं, फ़िलिप, अगले रविवार को तुम शैतानी नहीं करोगे, है न? और तब शाम को तुम्हारे चाचा तुम्हें गिरजे ले जायेंगे।"

उसका हैट और कोट उतार कर वे उसे डाइनिंग रूम में लेगईं।

"हम दोनों साथ-साथ 'सर्विस' [१] पढ़ें, फ़िलिप फिर हारमोनियम पर

१. सार्वजनिक ईश्वर की प्रार्थना।

'हिम्स'[1] गायें। तुम्हें अच्छा लगेगा ?"

फ़िलिप ने निश्चयात्मक ढंग से सिर हिला दिया। मिसेज़ कैरी स्तब्ध रह गईं। वह उनके साथ-शाम की 'सर्विस' नहीं पढ़ेगा, तो उनकी समझ में आया, उसके साथ क्या करना चाहिये।

"तब अपने चाचा के आने तक तुम क्या करना चाहोगे ?" उन्होंने बड़ी आज़िजी से पूछा।

फ़िलिप ने अभीष्ट अपना मौन भंग किया।

"मैं अकेला रहना चाहता हूँ," उसने कहा।

"फ़िलिप, ऐसी बात तुम कैसे कह सकते हो ? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हारे चाचा और मैं तुम्हारा ही भला चाहते हैं ? क्या तुम मुझे बिलकुल प्यार नहीं करते ?"

"मैं आपको घृणा करता हूँ। मैं चाहता हूँ आप मर जायें।"

मिसेज़ कैरी स्तब्ध रह गईं। फ़िलिप ने ये शब्द इतनी निर्दयतापूर्वक कहे थे कि वह सहसा विचलितहो उठीं। कुछ कह न सकीं। वह अपने पति की कुरसी पर बैठ गईं; वह उस मित्र-विहीन, पंगु बच्चे को प्यार करना चाहती थीं और उनकी उत्कट इच्छा थी कि वह भी उन्हें प्यार करे—वह वन्ध्या थीं और स्पष्टतः यह ईश्वर की ही इच्छा थी कि वह सन्तानहीना रहें, फिर भी वह बच्चों को देख सकना सहन नहीं कर सकतीं थीं क्योंकि उनके हृदय में टीस उठने लगती थी—यह सोचते-सोचते उनकी आँखें भर आईं और एक-एक कर आँसू उनके गालों पर ढुलकने लगे। फ़िलिप आश्चर्य से उन्हें देखता रहा। उन्होंने अपना रूमाल निकाल लिया, और अब वह खुलकर रोने लगीं। सहसा फ़िलिप को महसूस हुआ कि वह उसके शब्दों के कारण रो रही हैं, तो वह दुःखी हो उठा। चुपके से उनके पास जाकर उसने उन्हें चूमा। बिना

---

१. ईश्वर की प्रशंसा करने वाले सामूहिक रूप से गाये जाने वाले गीत।

मांगे हुए यह उसने पहला चुम्बन उन्हें दिया था और बेचारी सन्तान-हीना स्त्री ने उसे अपनी गोदी में बिठाकर अपने हाथों से उसे लपेट लिया। वह रोती रहीं, जैसे उनका हृदय टूट जायगा। परन्तु उनके आँसू अंशतः प्रसन्नता के आँसू थे, क्योंकि वह महसूस कर रही थीं कि उनके बीच का अजनबीपन खत्म हो चुका है। उसने उन्हें कष्ट पहुँचाया था, और वह उसे एक नये ढंग से प्यार करने लगी थीं।

मिस्टर और मिसेज़ कैरी ने फ़िलिप को टरकनबरी के किंग्स स्कूल में भेजने का निश्चय कर लिया। पड़ोस के पादरी अपने बच्चों को वहीं भेजते थे। बड़ी पुरानी परम्परा से वह 'कैथीड्रल'[1] से मिला हुआ था: वहाँ के हेडमास्टर एक अवैतनिक 'कैनन'[2] थे, और एक भूतपूर्व हेड-मास्टर 'आर्कडीकन'[3] थे। लड़कों को वहाँ 'होली ऑर्डर'[4] का इच्छुक बनना सिखाया जाता था और शिक्षा ऐसी थी कि ईमानदार नवयुवक अपना जीवन ईश्वर की सेवा में अर्पित कर सकें। इससे मिला हुआ एक प्रारम्भिक स्कूल था और फ़िलिप के उसी में पढ़ने का प्रबन्ध किया गया था। सितम्बर के अन्तिम दिनों में एक बृहस्पतिवार को मिस्टर कैरी उसे टरकनबरी ले गये। सारे दिन फ़िलिप उत्तेजित और कुछ-कुछ भयभीत सा रहा। 'दि ब्वायज़ ओन पेपर' में पढ़ी हुई कहानियों के अतिरिक्त वह स्कूली जीवन के बारे में कुछ न जानता था। उसने 'एरिक' या 'लिटिल बाईबिल' को पढ़ा था।

टरकनबरी में वे ट्रेन से बाहर निकले तो फ़िलिप सोच-विचार में ही अधमरा हो रहा था, और शहर में रास्ते भर चुपचाप बैठा रहा। स्कूल के सामने खड़ी ऊँची ईंटों की दीवार के कारण वह जेल सा दीख रहा था। उसमें एक छोटा दरवाजा था, जो उनके घंटी बजाने पर खुल गया। एक भद्दा, गंदा आदमी अन्दर आया और उसने फ़िलिप का

---

१. किसी भू भाग के लिये मुख्य गिरजाघर। २. किसी 'कैथीड्रल' के विशेष अधिकार प्राप्त व्यक्ति। ३. 'बिशप' का सहकारी। ४. ईसाई धर्म।

टीन का बक्स और खेलने का डिब्बा ले लिया। उन्हें ड्राइंगरूम में बिठाया गया। वह भारी और भद्दे किस्म के फर्नीचर से भरा पड़ा था और कमरे की कुर्सियाँ एक प्रकार की स्थिरता से दीवारों के सहारे रक्खी थीं। वह हेडमास्टर के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

"मिस्टर वाटसन कैसे हैं ?" जरा देर बाद फ़िलिप ने पूछा ?

"तुम खुद देख लोगे।"

फिर मौन छा गया। मिस्टर कैरी सोच रहे थे कि अभी तक हेड-मास्टर आये क्यों नहीं। फ़िलिप ने दुबारा कोशिश की और कहा, 'उनसे कह दीजियेगा मुझे फीलपाँव है।"

मिस्टर कैरी के बोलने के पहले दरवाजा सहसा खुल गया और मिस्टर वाटसन कमरे के भीतर आये। फ़िलिप को तो वे भीमकाय ही मालूम पड़े। लम्बाई छः फुट से अधिक, चौड़े कंधे और वक्ष, विशाल हाथ और लम्बी लाल दाढ़ी। वे खुशी से जरा ऊँचे स्वर में बात करते थे। पर उन की आक्रमणकारी प्रसन्नता से फ़िलिप के दिल में भय उपज उठा। उन्होंने मिस्टर कैरी से हाथ मिलाया और तब फ़िलिप का छोटा हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"तुम्हारी उम्र कितनी है ?"

"नौ साल," फ़िलिप ने कहा।

"तुम्हें 'श्रीमान्' जरूर कहना चाहिये," उसके चाचा ने कहा।

"मेरा ख्याल है तुम्हें बहुत कुछ सीखना है," हेडमास्टर ने हंसते हुए कहा।

बच्चे में आत्म-विश्वास पैदा करने के लिये वह अपनी खुरदरी उंग-लियों से उसे सहलाने लगे। फ़िलिप को उस स्पर्श से शर्म और बेचैनी महसूस हुई और वह सिकुड़ सा गया।

"फ़िलहाल मैंने उसे एक छोटे हाल में रक्खा है।......तुम्हें पसन्द आयेगा, है न ?" उन्होंने फ़िलिप की ओर देखकर कहा, "फिर तुम आठ लोग वहीं रहोगे। वहाँ अकेलापन नहीं महसूस होगा तुम्हें।"

तब द्वार खुला और मिसेज़ वाटसन अन्दर आईं । रंग साँवला, बाल काले, बीचों-बीच सफ़ाई से निकाली हुई माँग । आश्चर्यजनक रूप से मोटे होंठ, छोटी गोल नाक, बड़ी काली आँखें । उनकी उपस्थिति में एक अजीब तरह की शीतलता थी । वह कम बोलती थीं और उससे भी कम मुस्कराती थीं । उनके पति ने उन्हें मिस्टर कैरी से परिचित कराया और तब फ़िलिप को मित्रतापूर्ण धक्का देकर उनकी ओर बढ़ाया ।

'यह है नया लड़का, हेलेना । 'नाम कैरी है ।"

बिना एक शब्द बोले उन्होंने फ़िलिप से हाथ मिलाये और तब बिना बोले ही वे बैठ गईं और हेडमास्टर मिस्टर कैरी से पूछते रहे कि फ़िलिप का ज्ञान कितना है और उसने कौन-कौन सी किताबें पढ़ी हैं । उनके अधिक स्पष्ट खुश दिल मिजाज से मिस्टर कैरी को जरा अजीब सा लगा और एक-दो मिनट बाद ही वे उठ खड़े हुए ।

"मेरा ख़याल है अब फ़िलिप को मैं आपके पास ही छोड़ दूँ ।"

"ठीक है, मिस्टर वाटसन ने कहा," वह मेरे साथ सुरक्षित रहेगा और घर में लगी हुई आग की तरह बढ़ेगा । है न, बेटे ?"

फ़िलिप से उत्तर की अपेक्षा न करके वे जोर से हँस पड़े । उसका माथा चूम कर मिस्टर कैरी चले गये ।

"आओ, बेटे," मिस्टर वाटसन चीखे, "मैं तुम्हें स्कूल का कमरा दिखा दूँ ।"

लम्बे-लम्बे डग भर कर वे कमरे से बाहर निकल गये और जल्दी-जल्दी लंगड़ाता हुआ फ़िलिप भी उनके पीछे चल पड़ा । वह एक लम्बे खाली कमरे में ले आया गया । जहाँ कमरे की लम्बाई के बराबर की दो मेजें रखी थीं, उनके दोनों ओर लकड़ी की बेंचें थीं ।

"अभी यहाँ कोई नहीं है," मिस्टर वाटसन ने कहा, "अब मैं तुम्हें खेलने का मैदान दिखा कर तुम्हें अकेले छोड़ दूँगा, कि अपने आप परिचय प्राप्त कर सको ।"

मिस्टर वाटसन आगे-आगे चलते रहे । फ़िलिप ने अपने को एक बड़े

मैदान में पाया जिसके तीन ओर ऊँची ईंटों की दीवारें थीं। चौथी ओर एक लोहे की रेलिंग थी, जिसके बीच से लम्बा चौड़ा घास का मैदान और उसके पार किंग्स स्कूल की कुछ इमारतें दिखलाई पड़ती थीं। एक छोटा लड़का अपने चारों ओर के वातावरण से निर्लिप्त कंकड़ों को ठोकर मारता हुआ घूम रहा था।

"हल्लो, वेनिंग," मिस्टर वाटसन चिल्लाये, "तुम कब आये ?"

आगे बढ़कर छोटे लड़के ने उनसे हाथ मिलाया।

"यह तुम्हारा नया साथी है। यह तुमसे बड़ा और उम्र में ज्यादा है, इसलिये इसे परेशान मत करना।"

हेडमास्टर ने दोस्ताना अंदाज से दोनों लड़कों को देखा, अपनी आवाज के भारीपन से दोनों में भय का संचार कर दिया और तब जोर से हँस कर वे चले गये।

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"कैरी।"

"तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?"

"वे मर चुके हैं।"

"ओह ! क्या तुम्हारी माँ कपड़े धोती हैं ?"

"वह भी मर चुकी हैं।"

फ़िलिप ने सोचा था कि इस उत्तर से लड़का थोड़ी मुश्किल में पड़ जायगा, पर इतनी छोटी बात से वेनिंग के मसखरे पन में अन्तर नहीं पड़ने वाला था।

"हाँ, तो क्या वे कपड़े धोती थीं ?" वह पूछता गया।

"हाँ," फ़िलिप ने चिढ़ कर कहा।

"तब वह धोबिन थीं ?"

"नहीं ! वह धोबिन नहीं थीं।"

"तब वे कपड़े नहीं धोती थीं।"

छोटा लड़का अपनी भाषा की सफलता पर खुशी से भर उठा।

तब उसकी दृष्टि फ़िलिप के पैरों पर पड़ी ।

"तुम्हारे पैर में क्या हो गया है ?"

आदतन फ़िलिप ने उसे दृष्टि से बाहर खींचना चाहा । उसने उसे अच्छे वाले पैर के पीछे छिपा लिया ।

"मेरा एक पैर फीलपाँव है ।"

"यह कैसे हो गया ?"

"यह हमेशा से ही ऐसा था ।"

"मुझे देखने दो जरा ।"

"नहीं ।"

"अच्छा, मत दिखाओ ।"

इन शब्दों के साथ ही उसने फ़िलिप के पैर में जोर से ठोकर मारी। फ़िलिप को उसकी आशा न थी, इस कारण वह अपना बचाव भी न कर सका । दर्द इतना ज्यादा हुआ कि वह स्तब्ध रह गया, पर दर्द से अधिक आश्चर्य था । उसकी समझ में न आया कि वेनिंग ने उसे ठोकर क्यों मारी थी । उसे होश नहीं था कि वह भी उसे मार देता । फिर लड़का उससे छोटा था, और उसने 'दि ब्वायज ओन पेपर' में पढ़ा था कि अपने से छोटों को मारना नीचता का काम है । वह अपना पैर सहला रहा था कि एक तीसरा लड़का आ गया, और उसे मारने वाला लड़का उसके पास से चला गया । जरा देर में उसने देखा कि वे दोनों उसके बारे में ही बातें कर रहे हैं और उसे महसूस हुआ कि वे उसके पैरों को देख रहे हैं ।

परन्तु एक दर्जन लड़के और आगये, फिर और, तथा वे बातें करने लगे कि छुट्टियों में वे कहाँ रहे, उन्होंने क्या किया और कैसा बढ़िया क्रिकेट उन्होंने खेला । कुछ और नये लड़के आ गये और थोड़ी देर में फ़िलिप उनसे बातें करने लगा । वह शर्मा रहा था और घबराया हुआ सा था । वह अपने को खुश करना चाहता था, पर कहने को कुछ सोच न सका । उससे बहुत से सवाल पूछे गये और उसने मन से सबके उत्तर

दिये। एक लड़के ने उससे पूछा कि क्या वह क्रिकेट खेल सकता है।

"नहीं" फ़िलिप ने उत्तर दिया, "मेरा एक पैर फ़ीलपाँव है।"

लड़के ने फ़ौरन सिर नीचा कर लिया और उसका चेहरा लाल हो गया। फ़िलिप ने देखा कि वह सोच रहा है, उसे यह सवाल नहीं पूछना चाहिये था। क्षमा माँगने में वह शर्मा रहा था, पर फ़िलिप को परेशान-सा देख रहा था।

समय बीतने के साथ-साथ फ़िलिप के पैर की विद्रूपता पर लोगों का ध्यान कम होता गया। वह किसी लड़के के लाल बालों और दूसरे के अत्याधिक मोटापे की तरह स्वीकार किया जाने लगा। परन्तु इस बीच वह बहुत अधिक संवेदनशील हो गया। यथासंभव वह कभी-कभी दौड़ता, क्योंकि उसे मालूम था दौड़ने से उसका लँगड़ापन बहुत स्पष्ट हो जाता था, और एक अजीब तरह से चलना उसने शुरू कर दिया। वह फ़ील पाँव दूसरे पैर के पीछे कर के अधिक-से-अधिक देर तक चुप खड़ा रहता, जिससे उस पर किसी का ध्यान न पड़े और वह हमेशा देखता रहता कि कोई उसके बारे में बातें तो नहीं कर रहा है। दूसरे लड़कों की तरह वह खेलों में शामिल नहीं हो सकता था। इस कारण उसका जीवन उसके लिए अजीब हो रहा। वह ज्यादा समय तक अकेला रहता। पहले वह बातें ज्यादा करता था। पर धीरे-धीरे वह चुप रहने लगा। वह अपने और दूसरों के अन्तर के बारे में सोचने लगा।

दो साल बीत गये और फ़िलिप लगभग बारह साल का हो गया। यह पहले फार्म में था, ऊपर से दो या तीन स्थान नीचे और बड़े दिन बाद जब कुछ लड़के सीनियर स्कूल में चले जायेंगे, वह मानीटर हो जायगा उसने अभी से बहुत से इनाम जीत लिये थे। उसके स्थान के कारण अब उसका मज़ाक नहीं उड़ाया जाता था और वह खुश था। उसके फ़ील पाँव के कारण लड़के उसकी सफलता को माफ़ कर देते थे।

अब उसे मिस्टर वाटसन से पहले की तरह भय नहीं लगता था। उस तेज़ आवाज़ का वह आदी हो गया था और जब हेडमास्टर का

भारी हाथ उसके कंधे पर पड़ता, फ़िलिप को उसमें प्रेममय आलिंगन का भान होता। उसकी तेज़ स्मरणशक्ति मानसिक शक्ति से अधिक विद्या अध्ययन के लिये उपयुक्त थी और उसे मालूम था कि मिस्टर वाटसन को आशा थी कि वजीफा लेकर ही वह प्रारंभिक स्कूल छोड़ेगा।

परन्तु उसे यह फ़िक्र हमेशा रहा करती थी कि कौन उसके बारे में क्या सोचता है और वह नव-जात शिशु को ज्ञान नहीं होगा कि उसका शरीर आस पास की वस्तुओं से अधिक उसका अपना भाग है, और वह अंगूठे से बिना इस विचार के खेलता है कि वह उसका अपना अंग है। धीरे-धीरे करके, दर्द के बाद, वह अपने शरीर के बारे में सब कुछ समझ पाता है। उसी तरह के अनुभव आवश्यक हैं कि कोई व्यक्ति उनके लिये इतना आतुर और व्याकुल हो उठे; लेकिन यहां एक अन्तर है कि यद्यपि हर आदमी को एहसास हो पाता है कि उसका शरीर एक अलग और पूर्ण अंग है, हर आदमी को यह एहसास नहीं हो पाता कि वह एक अलग और पूर्ण व्यक्तित्व है। मनुष्य का योनि संस्थान जब जागृत हो उठता है, तभी अधिकतर आदमियों को दूसरों की अलग होने की भावना का जन्म होता है, पर यह भावना इतनी उन्नत नहीं होती कि वह अपने और दूसरों के अन्तर को स्पष्टतः समझ सके। ऐसे ही आदमी, जो छत्ते में बैठी शहद की मक्खी की तरह स्वयं को पहचानते हैं, सौभाग्य शाली होते हैं, क्योंकि वे ही खुश रहने के अधिक अवसर पाते हैं: उनके कार्यकलापों में सबका भाग होता है। उनकी खुशी केवल इसलिये खुशी होती है क्योंकि उसे सामूहिक रूप से लूटा जाता है; 'ह्विटमन्डे'[1] को वे हैम्पडेड हीथ में नृत्य करते हुए, फुटबाल मैच में चिल्लाते हुए, या 'पालमाल' में क्लब्ज़ की खिड़की से शाही जुलूस की प्रशंसा करते हुए दिखलाई पड़ सकते हैं। उन्हीं के कारण आदमियों

१. ईस्टर के बाद के सातवें इतवार के बाद सोमवार।

को सामाजिक जानवर कहा गया है।

फ़िलिप के फील पाँव के कारण उत्पन्न हुए व्यंग के कारण वह बचपन की अबोधता को भूल कर अपने व्यक्तित्व के कड़वेपन को पहचानने लगा था। उसकी अपनी परिस्थितियाँ कुछ ऐसी कमजोर थीं कि साधारण बातों में होने वाले नियमों का प्रयोग उसके साथ नहीं किया जा सकता था और वह अपने लिये सोचने को बाध्य था। अनेक पुस्तकों के पढ़ने से उसके मस्तिष्क में विचार उठने लगे, जिनके कारण चूंकि उन्हें वह आधा ही समझ पाता था, उसकी कल्पना और विस्तृत हो उठी। उसकी दर्द भरी शर्म के पीछे उसके भीतर कुछ उग रहा था, और अपने व्यक्तित्व का थोड़ा-थोड़ा आभास उसे होने लगा था। परन्तु कभी-कभी उसे अधिक आश्चर्य होता; वह कुछ कर डालता, क्यों कर डालता उसे मालूम न था और बाद में जब उसके बारे में सोचता, तो स्वयं को अजीब परिस्थिति में पाता।

तब धार्मिकता की एक लहर स्कूल में दौड़ गई। गालियाँ न सुनी जाने लगीं और छोटे बच्चों की बदामशियों को शत्रुता से देखा जाने लगा। बड़े लड़के मध्ययुगीन बहादुरों की तरह अपने से कमज़ोर लड़कों को शक्ति के बल पर सही रास्ते पर ले जाते थे।

फ़िलिप का चंचल मस्तिष्क नई चीजों का स्वागत करता था। सहसा वह त्यागमय हो गया। उसे सुनाई पड़ा कि बाइबिल-लीग का सदस्य बना जा सकता था और उसने ऐसा किया भी। उसके पास एक कैलेन्डर आया, जिस पर हर दिन पढ़ने के लिये एक गद्यांश था। एक कागज़ भी आया जिसके एक ओर गुड शेपहर्ड और मेमने की तस्वीर बनी थी और दूसरी ओर लाल रेखाओं से सजा कर लिखी हुई एक छोटी प्रार्थना थी जिसे गद्यांश पढ़ने से पहले किया जाना था।

हर शाम वह जल्दी-से-जल्दी कपड़े उतार डालता, जिससे गैस बुझाये जाने से पहले नित्य का काम करने का समय मिल सके। 'लीग'

का ढंग इस प्रकार था कि 'ओल्ड टेस्टामेंट'[1] की एक पुस्तक के बाद 'न्यू टेस्टामेंट'[2] की एक पुस्तक पढ़ी जाती और एक रात फ़िलिप ने जीसस क्राइस्ट के ये शब्द पढ़े।

"अगर तू विश्वास करता है और तुझे संदेह नहीं है, तो तू केवल वही नहीं कर सकता जो अंजीर के पेड़ के साथ किया जाता है, वरन् अगर तू पहाड़ से भी कहेगा, 'यहां से हटकर तू समुद्र में गिर जा,' तो ऐसा हो जायगा।

विश्वास करते हुए, प्रार्थना करते समय तू जो कुछ मांगेगा, पायेगा।"

यद्यपि प्रत्येक छपे हुए शब्द पर उसे विश्वास था, पर उसे मालूम हो गया था कि बाइबिल में जो कुछ लिखा होता है, अधिक रहस्यमय ढंग से उसके मतलब दूसरे ही होते हैं। स्कूल में वह किसी से पूछना न चाहता था, इसलिये बड़े दिन की छुट्टियों तक प्रश्न को वह अपने मस्तिष्क में ही रखे रहा। तब एक दिन उसे अवसर मिला। रात का भोजन समाप्त हो चुका था और प्रार्थना की जा चुकी थी। हमेशा की तरह मेरी ऐन के लाये हुए अंडों को मिसेज़ कैरी गिन रही थीं, और हर एक पर तारीफ़ लिखती जा रही थीं। फ़िलिप मेज़ के पास खड़ा अविचलित भाव से बाइबिल के पन्ने उलटने का बहाना कर रहा था।

"देखिये चचा, यह गद्यांश, क्या इसका यही मतलब है?"

उसने अपनी उंगली उस पर रख दी, जैसे वह उसे अकस्मात् मिल गया हो।

"कौन सा हिस्सा है वह?" पादरी ने पूछा।

"यही—अगर विश्वास हो तो पहाड़ों को भी हटाया जा सकता है—वाला।"

फ़िलिप ने उत्तर के लिये अपने चाचा की ओर देखा।

१-२. बाइबिल के दो भाग।

"यह विश्वास की बात है।"

"क्या आपका मतलब है कि सचमुच विश्वास करने पर पहाड़ भी डिगाये जा सकते हैं ?"

"ईश्वर की इच्छा हो तो !" पादरी ने कहा।

'अब अपने चाचा से गुड नाइट कहो, फ़िलिप," लुइज़ा चाची ने कहा, "आज रात तुम पहाड़ नहीं जा रहे हो, है न ?"

चाचा ने उसका मांथा चूमा और वह मिसेज़ कैरी के आगे-आगे सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। उसे मनोवांछित सूचना मिल गई थी। उसका छोटा कमरा बहुत ठंडा था और अपना नाइटगाउन पहनते समय वह काँप उठा। पर उसे हमेशा ऐसा महसूस होता कि दुःख के समय की गई उसकी प्रार्थनाओं में ईश्वर को अधिक आनन्द मिलता। उसके हाथ-पैरों की ठंडक भी तो ईश्वर के लिये उपहार है और आज की रात वह घुटनों के बल बैठ गया, और चेहरा हाथों में गड़ा लिया, और अपनी पूरी शक्ति से भगवान् से विनती करने लगा कि वह उसके फ़ील पाँव को ठीक कर दे। पहाड़ हटाने की तुलना में यह बहुत ही छोटा काम था। वह जानता था कि चाहने पर ईश्वर ऐसा अवश्य कर सकता है और उसका अपना विश्वास पूर्ण था। अगली सुबह, उसी माँग के साथ अपनी प्रार्थना समाप्त करके उसने उस असाधारण घटना के होने के लिये एक तारीख़ नियत कर दी।

"ओह ईश्वर, अगर तू मुझ पर मेहरबान है और तेरी इच्छा है, तो मेरे स्कूल जाने के पहली वाली रात में मेरा पैर बिलकुल ठीक कर दे।"

अपनी इस प्रार्थना को उसने एक फार्मूले का रूप दे दिया और इस में उसे खुशी हुई। बाद डाइनिंग रूम में प्रार्थना के बाद के निस्तब्धता के क्षणों में अपने घुटनों से उठने के पहले, उसने उसे दोहराया। उसने शाम को फिर कहा और अपनी रात की कमीज़ में काँपते हुए बिस्तर पर लेटने से पहले फिर कहा और उसे विश्वास था। वह आतुरता से छुट्टियाँ समाप्त होने की राह देख रहा था जब वह तीन सीढ़ियाँ एक साथ

दौड़ कर पार करेगा तो चचा को कितना आश्चर्य होगा, यह सोचकर वह अपने आप हँस पड़ा। और नाश्ते के बाद उसे और लुइज़ा चाची को जल्दी-जल्दी जाकर नये जूते खरीदने पड़ेंगे। स्कूल में सब अचरज में पड़ जायेंगे।

"हलो, कैरी, तुमने अपने में क्या जादू कर दिया ?"

"ओह, अब यह बिलकुल ठीक है," वह यों उत्तर देगा, जैसे यह संसार की सबसे स्वाभाविक चीज हो।

वह फुटबाल खेल सकेगा। उसने अपने को और सब लड़कों से बहुत तेज़ दौड़ते देखा और उसका हृदय उछल पड़ा। ईस्टर वाले 'टर्म' के अन्त में 'स्पोर्ट्स' होते हैं और वह दौड़ों में भाग ले सकेगा। उसे लगा वह 'हर्डिलों' को पार कर रहा है। वह और सभी की तरह हो जायगा, नये लड़के जो उसके फ़ीलपाँव के बारे में नहीं जानते, उसे आश्चर्य से घूरेंगे नहीं, और गर्मियों में नहाने के लिये कपड़े उतारते समय उसे अविश्वसनीय सावधानी नहीं बरतनी पड़ेगी और ऐसा करने के पहले अपना पैर उसे पानी में न डालना पड़ेगा, और यह कितना अच्छा होगा।

वह अपनी आत्मा की सम्पूर्ण शक्ति से प्रार्थना करता रहा। उसे संदेह तनिक भी नहीं था। उसे ईश्वर के शब्दों पर भरोसा था। और स्कूल जाने से पहली वाली रात में वह आदेश से सिहरता हुआ अपने बिस्तर पर गया। जमीन पर बर्फ पड़ी थी और अपने शयनकक्ष में लुइज़ा चाची ने आग जला रक्खी थी। लेकिन फ़िलिप के छोटे कमरे में इतनी ठंड थी कि उसकी उंगलियाँ ठिठुर गई थीं और अपना कालर खोलने में उसे बड़ी दिक्कत उठानी पड़ी थी। उसके दाँत बज रहे थे। उसके दिमाग में विचार आया कि उसे हमेशा से कुछ अधिक करना चाहिए जिससे ईश्वर का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो सके। उसने अपने पलंग के पास पड़े कालीन को उलट दिया, जिससे वह सिर्फ तख्तों पर घुटनों के बल बैठ सके। तब उसे लगा कि उसकी रात की कमीज़ आरामदेह थी और ईश्वर उस पर नाराज़ हो सकता है। उसने उसे भी

उतार दिया और नंगे बदन ही प्रार्थना करने लगा। जब वह बिस्तर पर गया, उसे इतनी सर्दी लग रही थी कि कुछ समय तक वह सो न सका। फिर जब वह सो गया तो इतनी गम्भीरता पूर्वक कि अगली सुबह मेरी ऐन जब गर्म पानी लेकर उसके पास आई तो उसे हिलाकर जगाना पड़ा। परदे खींचते समय वह उससे बात करती रही, पर उसने उत्तर नहीं दिया; उसे फौरन याद आ गया था कि आज ही वह सुबह है जब चमत्कार होने को है। उसका हृदय खुशी और कृतज्ञता से भर उठा। उसे लगा कि अपने हाथ से टटोल कर पैर देखा जो अब बिल्कुल ठीक हो गया है, पर ऐसा करना उसे ईश्वर की अच्छाई पर संदेह करना मालूम हुआ। उसे मालूम था कि उसका पैर ठीक हो गया है। पर आखिर उसने निश्चय किया और अपने दाँयें पैर के अंगूठे से बाँया पैर जरा सा छुआ। तब उसे हाथ से सहलाया।

मेरी ऐन डाइनिंग रूम में प्रार्थना करने जा रही थीं और फ़िलिप लंगडाता हुआ चल रहा था। वह तब नाश्ता करने बैठ गया।

"तुम आज बहुत चुप हो, फ़िलिप," लुइज़ा चाची ने कहा।

"वह कल मिलने वाले स्कूल के अच्छे नाश्ते के बारे में सोच रहा है," पादरी बोले।

फ़िलिप ने इस ढंग से उत्तर दिया जो उसके चाचा को हमेशा चिढ़ा देता था।

"मान लीजिये आपने ईश्वर से कुछ करने को कहा," फ़िलिप बोला, "और आप वास्तव में विश्वास करते रहे कि ऐसा अवश्य हो जायगा—जैसे पहाड़ का हटाना ही—और आपको ईश्वर की शक्ति पर संदेह न रहा, परन्तु फिर भी नहीं हुआ, तो इससे क्या साबित होगा?"

"तुम कैसे अजीब लड़के हो!" लुइज़ा चाची ने कहा, "दो तीन हफ़्ते पहले तुमने पहाड़ों को हटाने वाली बात पूछी थी।"

"इससे यही साबित होगा कि तुम्हें विश्वास नहीं था," चचा ने कहा।

फ़िलिप ने इसे स्वीकार कर लिया। अगर ईश्वर ने उसे ठीक नहीं किया था तो इसलिये कि उसे वास्तव में विश्वास नहीं था। फिर भी उसकी समझ में न आया कि इससे अधिक वह कैसे विश्वास कर सकता था। पर शायद उसने ईश्वर को काफ़ी समय नहीं दिया था। उसने सिर्फ उन्नीस दिन में यह करने को कहा था। एक-दो दिन में उसने अपनी प्रार्थना फिर शुरू कर दी और इस बार 'ईस्टर' नियत किया। यह उसके पुत्र की मुक्ति का दिन था और अपनी खुशी में ईश्वर ऐसा करने के लिये तैयार हो सकते हैं। पर फ़िलिप दूसरे ढंगों से भी अपनी इच्छा पूर्त्ति की कोशिश करने लगा। जब वह नया चाँद या लंगड़ाता हुआ घोड़ा देखता तो इच्छा करता, और वह टूटते तारों को देखने की कोशिश करता; छुट्टियों में 'विकारेज' में मुर्गी बनाई गई और लुइज़ा चाची के साथ उसने भाग्यवती हड्डी तोड़ी और फिर इच्छा की कि उस का पैर ठीक हो जाये। अनजान में वह इज़रायल के ईश्वर से भी पुराने देवताओं की प्रार्थना कर रहा था। और सर्वशक्तिमान पर वह दिन के अजीब-से-अजीब समय में, जब उसे याद आ जाती, हमेशा एक-से शब्दों में प्रार्थना की वर्षा बच्चों की तरह करने लगता, उसे यह आवश्यक लगता था कि उसकी प्रार्थना हमेशा एक-से शब्दों में एक ही तरह से हो। पर उसे आभास होने लगा कि इस बार भी उसका विश्वास काफ़ी न होगा। इस संदेह से वह पार न पा सका। उसने अपने खुद के अनुभव को एक सर्वसाधारण के लिये सत्य नियम का रूप दे दिया।

"मेरा ख्याल है कभी किसी का विश्वास पर्याप्त नहीं होता" उसने कहा।

यह उस नायक की तरह था जिसके बारे में उसकी नर्स बताया करती थी। किसी चिड़िया की पूंछ पर नमक रख कर उसे पकड़ा जा सकता है; और एक बार वह 'केंसिंग्टन गार्डेन्स' में नमक का थैला ले जाता था। पर वह कभी चिड़िया के इतने समीप नहीं रुका कि उसकी पूंछ पर नमक रख सकता। 'ईस्टर' के पहले ही उसने संघर्ष बंद

कर दिया। अपने चाचा के खिलाफ़ एक प्रकार का विद्रोह-सा उसके मन में भर आया, उन्होंने उसे गलत चीज़ बताई थी जिस अंश में पहाड़ों को हटाने वाली बात लिखी थी, वह वैसा ही अंश था जिसमें लिखा कुछ और होता है और जिसका मतलब कुछ और होता है। उसने सोचा कि उसके चाचा उसके साथ मज़ाक कर रहे हैं।

तेरह वर्ष की उम्र में फ़िलिप टरकनबरी के किंग्स स्कूल में गया। स्कूल को अपनी प्राचीनता पर गर्व था। शिक्षकों को शिक्षा के आधुनिक सिद्धान्त, जिन्हें 'दि टाइम्स' या 'दि गार्जियन' में कभी-कभी पढ़ते थे, बिलकुल पसन्द न थे। उन्हें पूरी आशा थी कि 'किंग्स स्कूल' अपनी परम्परा निभाये चला जायगा। मातृ भाषाएं इतनी अच्छी तरह से पढ़ाई जाती थीं कि पुराने लड़के होकर या वर्जिल के बारे में बिना ऊबे नहीं सोच पाते थे; और यद्यपि 'कोमन रूम' में खाना खाते समय एक या दो अपेक्षाकृत साहसी व्यक्ति कहते कि गणित का महत्व बढ़ रहा है तो सर्व साधारण भाव यही था कि क्लासिक्स[1] का अध्ययन सबसे अच्छा अध्ययन है। जरमन या रसायन विज्ञान नहीं पढ़ाये जाते थे, और फ्रेंच सिर्फ फार्म-मास्टर द्वारा पढ़ाई जाती थी; विदेशियों से अधिक से नियन्त्रण रख सकते थे और किसी भी फ्रांसीसी आदमी की तरह चूंकि वे व्याकरण जानते थे। यह महत्वपूर्ण नहीं मालूम पड़ता था कि ब्रोलने के किसी रेस्तरां में उनमें से किसी को एक प्याला काफी भी नहीं मिल सकती थी यदि वेटर को थोड़ी अंग्रेजी न आती हो। लड़कों से नक्शे बनवाकर भूगोल पढ़ाई जाती थी और यह काम सबको प्रिय था मुख्यत: जब पहाड़ी भागों के बारे में पढ़ाया जाता था: ऐंडीज या ऐपीनाइन्ज बनाने में काफी समय नष्ट किया जा सकता था।

लेकिन फ़िलिप के स्कूल पहुंचने के एक साल पहले उसमें एक बड़ा परिवर्तन आ गया था। कुछ दिनों से यह स्पष्ट मालूम पड़ रहा था

---

१. ग्रीक और लैटिन भाषायें।

कि डाक्टर फ्लेनिंग, जो चौथाई शताब्दी तक हैडमास्टर रहे थे, अधिक बहरे होते जा रहे थे और इस कारण ईश्वर की और अधिक सेवा करने में असमर्थ होते जा रहे थे।

यह आवश्यक हो गया कि उनका उत्तराधिकारी खोजा जाय। यह स्कूल की परम्परा के विरुद्ध था कि छोटे मास्टरों में से कोई चुना जाये। कॉमन रूम का एक स्वर से कहना था कि प्रारम्भिक स्कूल के हेडमास्टर मिस्टर कटसन को ही चुना जाय; उन्हें उस स्कूल का शिक्षक नहीं समझा जा सकता था और सभी उन्हें बीस साल से जानते थे, पर 'चेप्टर'[1] 'ने सहसा उन्हें आश्चर्य चकित कर दिया; उसने पार्किन्स नाम के एक आदमी को चुना। पहले तो किसी की समझ में न आया कि पार्किन्स कौन है, पर हफ्ता बीतने से पहले ही पता लग गया कि वह लीनेन[2] बेचने वाले पर्किन्स का लड़का था। डाक्टर फ्लेनिंग ने खाने से कुछ पहले से यह सूचना शिक्षकों को दी और उनके बोलने के ढंग से उसकी निराशा स्पष्ट थी। उपस्थित आदमियों ने लगभग निस्तब्धता में खाना खाया और नौकरों के चले जाने तक इस बात का कोई जिक्र नहीं किया गया, फिर बातें होने लगीं। इस अवसर पर उपस्थित व्यक्तियों के नाम महत्वपूर्ण नहीं हैं, पर वे स्कूली लड़कों की पीढ़ियों में साइज, टार, विकस, स्क्वर्टस और पैट नामों से जाने जाते थे।

वे सभी पर्किन्स को जानते थे। उनके बारे में पहली बात तो यह थी कि वह भला आदमी न था। उन्हें वह अच्छी तरह जानता था। छोटे कद और साँवले रंग का लड़का, बिखरे बाल, बड़ी आँखें। बनजारों के जैसा दिखलाई पड़ता था। वह स्कूल में सिर्फ दिन में पढ़ने आता था और उसे सबसे अच्छा बजीफा मिलता था, इसलिये उसकी शिक्षा में कुछ खर्च नहीं हुआ था। निस्संदेह वह बड़ा होशियार था। हर भाषण

---

१. किसी 'कैथीड्रल' केनन की सभा। २. एक तरह का कपड़ा।

वाले दिन उसे अनेक इनाम मिला करते थे। क्लासिक्स पढ़ने वाला उससे अच्छा विद्यार्थी डाक्टर फ्लोनिंग को याद नहीं था। स्कूल छोड़ने के साथ-साथ वह उनका सबसे बड़ा वजीफ़ा भी लेता गया। मैन्टलेन में उसे फिर वजीफ़ा मिला और यूनिवर्सिटी में भी शानदार इतिहास कायम करने में वह लग गया।

स्कूल की पत्रिका में उसकी हर साल की विजयें छपती रहीं और जब उसे "दोहरा प्रथम" मिला तो डाक्टर फ्लोनिंग ने स्वयं पत्रिका के पहले पृष्ठ पर उसकी प्रशंसा में कुछ शब्द लिखे। पार्किन्स और कूपर की दूकान अब बहुत कम चलने लगी थी, इस कारण सफलता की ओर अधिक उत्साह एवं सन्तोष से स्वागत किया जाता: कूपर बहुत शराब पीने लगा था और टाँम पार्किन्स के डिग्री लेने से कुछ दिन पहले लीनेन बेचने वालों ने दिवालिया हो जाने की दरख्वास्त दे दी।

उपयुक्त समय पर पार्किन्स ने 'होली आर्डर्स'[1] लिए और जिस व्यापार के लिये वह बिल्कुल ठीक था, उसी में उतर गया। कुछ दिनों तक वह वेलिंग्टन और तब एबी में सहायक शिक्षक रहा।

परन्तु दूसरे स्कूलों में उसकी सफलता का स्वागत करने और अपने ही स्कूल में उसके नीचे काम करने में बड़ा अन्तर था। हमने कभी-कभी उसे सजा दी थी और स्क्वर्टस ने उसके कान मेंठे थे। वे कल्पना न कर सके कि 'चेष्टर' ने ऐसी गल्ती की कैसे। वह भूलने की आशा करना व्यर्थ था कि वह एक दिवालिये लीनेन फरोश का लड़का था और कूपर के शराब पीने से जैसे उनकी और अधिक बेइज्जती हो रही हो। यह निश्चय था कि 'डीन' ने अधिक उत्साह से उसका पक्ष लिया था, इसलिये वे उसे डिनर पर भी बुलायेंगे। पर क्या चाहरदीवारी के भीतर होने वाले छोटे-छोटे खुशनुमा डिनर टाम पार्किन्स की मेज़ पर रहते हुये भी उतने ही खुशनुमा रहेंगे ? और

१. पादरी नियुक्त किया जाना।

अफसरों से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह उसे अपने की ही तरह मानेंगे। इस तरह स्कूल को बहुत नुकसान होगा। लड़कों के माता-पिता असंतुष्ट हो जायेंगे, आश्चर्य नहीं कि अनेक विद्यार्थी वहाँ पढ़ना छोड़ दें और तब उसे मिस्टर पर्किन्स कहकर बुलाने का अपमान ! अपना विरोध प्रकट करने को शिक्षकों ने एक साथ अपने इस्तीफे भेजने की बात सोची, पर इस भय से कि वे फौरन स्वीकार कर लिए जायेंगे, उन्होंने ऐसा नहीं किया।

'अब हमारे सामने केवल एक ही रास्ता है कि हम अपने बदलने को तैयार हो जायें," साइज़ ने, जो पाँचवी कक्षा को पच्चीस वर्ष असमान अयोग्यता से पढ़ा रहे थे, कहा।

एक साल बीत गया। फ़िलिप जब स्कूल आया तो सभी पुराने शिक्षक अपनी-अपनी जगहों पर थे, परन्तु उनके ढीठ विरोध के बावजूद भी अनेक परिवर्तन हो ही गये थे। प्रारंभिक स्कूल में अब भी फार्म मास्टर ही फ्रेंच पढ़ाते थे, पर एक और मास्टर जिसके पास हीडेलवर्ग यूनिवर्सिटी की 'डाक्टर आफ़ फिलालाजी' की डिग्री थी, आ गये थे, जो ऊंची कक्षाओं को फ्रेंच, और ग्रीक के स्थान पर जर्मन लेने वालों को जर्मन पढ़ाया करते थे। एक और मास्टर और अधिक ढंग से गणित पढ़ाने के लिए रक्खे गए थे। इनमें से कोई भी 'आर्डेन्ड' नहीं था। यह वास्तव में विद्रोह था और जब वे दोनों आये तो और शिक्षकों ने अविश्वास के साथ उनका स्वागत किया। एक प्रयोगशाला बन गई, सैनिक शिक्षा दी जाने लगी, सभी कहते कि स्कूल बदल रहा है। ईश्वर ही जाने मिस्टर पार्किन्स के गन्दे दिमाग में इस तरह की और कितनी खुराफ़ात भी होंगी। प्रत्येक सार्वजनिक स्कूल की तरह वह स्कूल भी छोटा ही था। दो सौ से अधिक रहने वाले लड़के न थे और वह गिरजे से इस तरह सटाकर बनाया हुआ था कि उसे और बढ़ाना असंभव था। पर मिस्टर पार्किन्स ने एक तरकीब से इतनी जगह निकालने की सोच ही ली, जिससे स्कूल दूने आकार का किया जा सके। वह लन्दन से भी

लड़कों को आकर्षित करना चाहते थे। उनका विचार था कि केंटा[1] के लड़कों के साथ में रहने में उनका भला होगा और देहाती लड़कों की बुद्धि और प्रखर होजायगी। उनकी इस स्कीम से कोई सहमत न था।

परन्तु मिस्टर पार्किन्स का सबसे अधिक बुरा लगने वाला काम था कभी-कभी दूसरे शिक्षकों की कक्षा ले लेना। वह एक दयालु काम की तरह उसे माँगते थे, पर यह काम अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता था। नहीं तो टार या मिस्टर टर्नर, का कथन था कि यह सभी के लिये अशोभन था। वह कभी पहले से न बताते थे, परन्तु सुबह की प्रार्थना के बाद किसी भी शिक्षक से कहते :

"आज आप ग्यारह बजे छठवीं कक्षा को ले लें। हम आज बदल लें, ठीक है न ?"

उन्हें मालूम नहीं था कि और स्कूलों में ऐसा किया जाता था या नहीं, पर निश्चय ही टरकनवरी में कभी ऐसा नहीं किया गया। परिणाम आश्चर्यजनक हुए। मिस्टर टर्नर, जो पहले शिकार थे, ने अपनी कक्षा से कहा कि उस दिन लैटिन उन्हें हेडमास्टर साहब इस बहाने पढ़ायेंगे कि शायद लड़के उनसे कुछ पूछना चाहें, इसीलिए उन्हें होशियारी से जवाब देना चाहिये। उन्होंने इतिहास के घंटे का आखरी चौथाई भाग उस दिन के लिये नियुक्त लिपी के प्रसंग को अनुवाद करने में लगाथा। पर जब वे कक्षा में आये और उन्होंने उस कागज को देखा, जिस पर पार्किन्स ने अंक लिखे थे, उन्हें महान आश्चर्य हुआ। कक्षा के दो होशियार लड़कों ने बहुत बुरे अंक पाये थे और दूसरे लड़के जिन्होंने पहले कभी अच्छे नम्बर नहीं पाये थे, उन्होंने पूरे-पूरे अंक पाये जब उन्होंने सबसे होशियार लड़के एलीज से उसका मतलब पूछा, तो उसने मुंह फुलाकर कहा :

---

१. इंग्लैंड का एक जिला।

"मिस्टर पार्किन्स ने अनुवाद कराया ही नहीं। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं जनरल गार्डन के बारे में क्या जानता हूं।"

तब यह सत्य भी सबको मालूम हो गया कि नये हेडमास्टर को साधारण ज्ञान का नशा था। रटकर पास होने वाले इम्तहानों के उपयोग पर उन्हें संदेह था। वह साधारण ज्ञान चाहते थे।

साइज़ हर महीने अधिक-से-अधिक परेशान होते गये। क्लासिकल साहित्य के प्रति हेडमास्टर के रुख को वे घृणा करते थे और मध्ययुग के शिक्षक स्कवर्टस दिन-प्रति-दिन बुरे स्वभाव के होते जा रहे थे।

दाख़िला होने पर फ़िलिप को उन्हीं की कक्षा में रक्खा गया। रेवरेन्ड बी० बी० गार्डन स्वभावतः स्कूल मास्टर होने के योग्य न थे। वह अधीर और क्रोधी थे। शर्मीले फ़िलिप को पढ़ाने के लिये उनसे अधिक कोई और शिक्षक अनुपयुक्त न था। पहली बार मिस्टर वाटसन से मिलते समय से इस बार उसे कम भय लग रहा था। प्रारम्भिक स्कूल में साथ पढ़ने वाले अनेक लड़कों को वह जानता था। वह अपने को और बड़ा महसूस हो रहा था और स्वभावतः सोचता था कि अधिक लड़कों के बीच उसका पैर लोगों का ध्यान अधिक आकर्षित न करेगा। पर पहले ही दिन से उसे मिस्टर गार्डन से भय लगने लगा और मास्टर जिन्हें भय खाने वाले लड़के फौरन मालूम हो जाते थे, इसी बात पर उसे नापसन्द करने लगे। फ़िलिप को अपना काम करने में मजा आता था, पर अब वह स्कूल के घंटों को भय से देखने लगा। कोई उत्तर, जो गलत भी हो सकता था, देकर शिक्षक से अनेक गालियाँ खाने की अपेक्षा वह बैठा रह जाना ही ज्यादा पसन्द करता था। जब खड़े होकर अनुवाद करने की उसकी बारी आती तो वह सोच-विचार से बीमार सा और सफेद पड़ जाता। उसके खुशी के क्षण तब आते थे जब मिस्टर पार्किन्स कक्षा पढ़ाने आते थे। वह हेडमास्टर साहब के साधारण ज्ञान के नशे को तृप्त करने में सफल हो पाता था। उसने हर तरह की अजीब-अजीब किताबें पढ़ रक्खी थीं, जो अक्सर उसकी उम्र से भी

अधिक होती थीं, और कभी-कभी जब कक्षा भर से कोई सवाल पूछा गया होता, मिस्टर पार्किन्स फ़िलिप की ओर देखकर मुस्कराकर रुक जाते, और उसे खुशी से भर देते और कहते :

"अब कैरी तुम इन लोगों को बल दो।"

ऐसे अवसरों पर मिले अच्छे अंकों से मिस्टर गार्डन का उसके प्रति क्रोध और बढ़ ही जाता। एक दिन अनुवाद करने की फ़िलिप की बारी आई और मास्टर उसकी ओर जलती आँखों से देखते और अपने नाखून काटते बैठे रहे। वह बड़े क्रोध में थे। फ़िलिप धीमे स्वर में बोलने लगा।

"बुड़बुड़ाओ मत," मास्टर साहब चीखे।

लगा फ़िलिप के गले में कुछ चिपक गया है।

"बोलो, बोलो। बोलो।"

हर बार शब्द पिछली बार से अधिक तेजी से चिल्लाये गये थे। इसका असर यह हुआ कि जो कुछ फ़िलिप को आता था वह भी उसके दिमाग से निकल गया। वह छपे हुए पृष्ठ को खोखली दृष्टि से देखने लगा। मिस्टर गार्डन की साँस भारी हो उठी।

"तुम्हें नहीं मालूम तो वैसा क्यों नहीं कहते? तुम जानते हो या नहीं? ये सब अनुवाद किये जाते हुये पिछली बार तुमने सुना था या नहीं? बोलते क्यों नहीं? बोलो, कुन्दजेहन लड़के बोलो।"

मास्टर ने अपनी कुर्सी के हत्थे कसकर पकड़ लिये जैसे अपने को फ़िलिप के ऊपर गिरने से बचा रहे हो। सभी को मालूम था कि पहले वह लड़कों को गले से पकड़ लिया करते थे, यहाँ तक कि लड़कों का दम घुटने लगा करता था, शिरायें उनके माथे पर ऊपर उठीं, और उनका चेहरा काला और भयानक हो उठा। वे आदमी का—पागल।

फ़िलिप को वह अंश पिछले दिन अच्छी तरह याद था। अब वह कुछ भी न सुना सका।

"मैं नहीं जानता," उसने थूक गुटककर कहा।

"क्यों नहीं जानते ? एक-एक शब्द लो। अभी मालूम हो जायगा तुम्हें आता है या नहीं।"

फ़िलिप मौन खड़ा रहा। बिलकुल सफ़ेद, काँपता हुआ था। मास्टर की साँस बड़ी तेज हो उठी।

"हेडमास्टर साहब का कहना है, तुम होशियार हो। पता नहीं वह कैसे देखते हैं। साधारण ज्ञान।" वे निर्दयता से हंसे। "मेरी समझ में नहीं आता, उन्होंने तुम्हें इस कक्षा में क्यों भेजा है।"

इस शब्द से वह प्रसन्न हो उठे और खूब ज़ोर से चिल्लाकर दोह-राने लगे :

"मूर्ख ! मूर्ख ! फीलपांव वाला मूर्ख !"

यह कहकर उन्हें कुछ शान्ति मिली। उन्होंने सहसा फिलिप को लाल हो जाते देखा। कहा कि यह 'ब्लैक बुक' ले आओ। अपनी 'सीज़र' रख कर फ़िलिप चुपचाप बाहर चला गया। 'ब्लैक बुक' ऐसा रजिस्टर था, जिसमें लड़कों के नाम, उनके बुरे कामों के साथ लिखे जाते थे और जब एक नाम तीन बार लिख दिया जाता था तो उसका मतलब होता था छड़ियों से पीटा जाना। फ़िलिप हेडमास्टर साहब के घर पर गया और उसने उनकी 'स्टडी' का दरवाजा खटखटाया। मिस्टर पार्किन्स अपनी मेज पर बैठ थे।

"क्या मैं 'ब्लैक बुक' ले सकता हूँ, श्रीमान् ?"

"यह रक्खी है," मिस्टर पार्किन्स ने अपना सिर हिलाकर उसको उसकी रखने की जगह बताते हुए कहा, "तुमने ऐसा कौनसा काम किया है जो तुम्हें न करना चाहिये था ?"

"मुझे नहीं मालूम श्रीमान् !"

एक क्षण को उसे तेजी से देखकर बिना बोले मिस्टर पार्किन्स अपना काम करते रहे। रजिस्टर उठाकर फ़िलिप बाहर चला गया। कुछ मिनटों बाद घंटा खतम हुआ तो वह उसे वापस ले आया।

"जरा मुझे तो दिखाओ," हेडमास्टर साहब ने कहा, "हाँ, मिस्टर

गार्डन ने 'बहुत बड़ी बे अदबी' के लिये तुम्हारा नाम इसमें लिखा है। क्या है वह ?"

"मुझे नहीं मालूम, श्रीमान् मिस्टर गॉर्डन ने कहा, मैं फीलपाँव वाला मूर्ख हूँ।"

मिस्टर पार्किन्स ने फिर उसे देखा। वह सोचने लगे कि क्या लड़के के उत्तर में व्यंग था। पर वह अभी भी काँप रहा था। उसका चेहरा सफेद था और उसकी आँखों में भय मिश्रित दुःख की छाया थी। मिस्टर पार्किन्स खड़े हो गये और उन्होंने 'ब्लैक बुक' नीचे रख दी। ऐसा करते समय उन्होंने कुछ फोटोग्राफ उठा लिये।

"आज सवेरे मेरे एक मित्र ने एथेन्स की ये तसवीरें भेजी हैं," उन्होंने कहा, "देखो, यह एक्रोपोलिस[1] है।"

वे फिलिप को समझाने लगे कि तसवीरों में वह क्या देख रहा है। उनके शब्दों से वह खंडहर और अधिक मूर्तिमान हो उठा। उन्होंने उसे डायनीसस[2] का थियेटर दिखा कर बतलाया कि किस तरह आदमी बैठा करते थे और दूर पर किस तरह नीली ईजियन[3] देख सकते थे और तब सहसा उन्होंने कहा :

"मुझे याद है जब मैं मिस्टर गार्डन की कक्षा में था, वह मुझे बन-जारा नट कहा करते थे।"

फिलिप का दिमाग तसवीरों पर लगा था और इसके पहले कि वह इस टिप्पणी के माने समझ सके, मिस्टर पार्किन्स उसे सलाभीस[4] की तसवीर दिखा रहे थे, और एक अंगुली, जिसका किनारा थोड़ा काला था, इशारा कर रहे थे कि यूनानी जहाज़ कहाँ पर थे और ईरानी जहाज कहाँ पर थे।

अगले दो वर्ष फ़िलिप का जीवन सुखी परन्तु एक रस रहा। वह

---

१. ऐथेन्स का किला। २. मदिरा का देवता। ३. जूनियर द्वारा मिनर्वा को दी हुई ढाल। ४. एक स्थान का नाम।

अपनी तरह के और लड़कों से अधिक बेवकूफ नहीं बनाया गया; और अपने फीलपाँव, जिसके कारण वह खेलों में शामिल नहीं हो सकता था, से वह प्रथक-सा होगया था, जिसके लिये वह बड़ा कृतज्ञ था। वह प्रसिद्ध नहीं था और बड़ा अकेला था।

तब वह चाय के फौरन बाद हेडमास्टर साहब की 'स्टडी' में होने वाली कक्षा में जाने लगा। इसमें लड़कों को 'कन्फर्मेशन'[1] के लिये तैयार किया जाता था। मिस्टर पार्किन्स अपने इस काम को बड़ी गंभीरतापूर्वक पूरा करते थे। अपने व्यस्त दिनों में भी वह अपने कन्फर्मेशन के लिये तैयार करने वाले लड़कों को अलग-अलग पन्द्रह-बीस मिनट के लिये पढ़ा ही देते थे। वह उन्हें महसूस कराना चाहते थे कि यह उनके जीवन का पहला गंभीर कदम था। वह उनकी आत्माओं की गहराइयों में उतरा करते। वह उनके भीतर अपना-सा ही असीम त्याग कर देना चाहते थे। शर्मीले फ़िलिप में उन्हें लगा कि उनकी-सी लगन है। लड़के का स्वभाव उन्हें धार्मिक मालूम पड़ा। एक दिन वह सहसा उस विषय से अलग हट गये जिस पर बोल रहे थे।

"क्या तुमने सोचा है कि बड़े होकर तुम क्या बनोगे?" उन्होंने पूछा।

"मेरे चाचा मेरा 'आर्डेन्ड' होना पसन्द करेंगे," फिलिप ने कहा।

"और तुम?"

फ़िलिप दूसरी ओर देखने लगा। उसे यह उत्तर देने में शर्म आ रही थी कि वह स्वयं को इसके अयोग्य समझता है।

"मैं नहीं समझता कि हमारे जीवन से अधिक खुश और कोई जीवन भी है। मैं चाहता हूँ कि तुम्हें बताऊँ यह कैसा अच्छा काम है। ईश्वर की सेवा तो हर तरह से की जा सकती है। पर हम उसके अधिक समीप हैं। मैं तुम्हें प्रभावित नहीं करना चाहता, पर अगर तुम निश्चय करलो

---

१. पादरी बनने के लिये तैयार करना।

ओह फौरन तो तुम्हें ऐसी प्रसन्नता और आराम मिलेगा, जो एक बार मिल जाने पर कभी खोता नहीं।"

फ़िलिप ने उत्तर नहीं दिया, पर हेडमास्टर साहब ने उसकी आँखों में पढ़ लिया कि जो कुछ वह कहना चाहते हैं, फिलिप अभी से कुछ-कुछ समझने लगा है।

"जिस तरह आज कल काम करते हो उसी तरह करते रहे तो कभी तुम भी अपने को स्कूल का मुख्याध्यापक बना पाओगे और स्कूल छोड़ते समय वजीफा तो तुम्हें मिल ही जायगा। क्या तुम्हारी अपनी भी कोई सम्पत्ति है ?'

"मेरे चाचा कहते हैं कि इक्कीस साल का हो जाने पर मुझे सौ पौंड हर साल मिलेंगे।"

"तुम अमीर होगे। मेरे पास कुछ नहीं था।"

हेडमास्टर साहब एक क्षण को हिचकिचाये और तब सामने रक्खे कागज पर यों ही लकीरें खींचते हुए कहते गये :

"हाँ तुम अधिक तरह के व्यवसायों में से अपना चुनाव नहीं कर सकोगे। स्वभावतः तुम कोई ऐसा काम नहीं कर सकते जिसमें शारीरिक काम की अधिक आवश्यकता हो।"

फ़िलिप बालों की जड़ों तक लाल हो गया, जब कभी उसके फील-पाँव की बात होती थी तो वह हमेशा ही लाल हो जाया करता था। मिस्टर पार्किन्स उसे गंभीरता से देखते रहे।

"मेरा खयाल है अपनी बदकिस्मती के लिये तुम जरूरत से ज्यादा संवेदनशील हो। क्या कभी तुम्हें लगा है कि इसके लिये तुम ईश्वर को धन्यवाद दो ?"

फ़िलिप ने फौरन ऊपर देखा। उसके होंठ कस गये। उसे याद आया उनकी बातों पर विश्वास करके कैसे वह महीनों तक ईश्वर से प्रार्थना करता रहा था कि जिस तरह उसने कोढ़ी को ठीक किया था और अंधे को आँखें दी थीं, इसी तरह वह उसका पैर भी ठीक करदे।

"जब तक तुम इसे विद्रोहात्मक दृष्टि से देखते रहोगे तुम्हें शर्म ही लगेगी। लेकिन यदि तुम सोचो कि तुम्हारे कंधे इसे वहन करने के लिये मजबूत हैं, इसलिये यह 'क्रास' की तरह तुम्हें मिला है—ईश्वर की कृपा का चिन्ह—तो दुःख के स्थान पर तुम्हें खुशी होगी।"

उन्होंने देखा कि इस विषय पर आगे बात करना फ़िलिप को पसन्द नहीं, वह चुप हो गये।

परन्तु फ़िलिप हेडमास्टर साहब की बातें सोचता रहा और उसका मस्तिष्क सामने के उत्सव से भर उठा, एक रहस्यमय आनन्द की अनुभूति उसे हुई। पार्थिक बन्धनों से उसे आत्मा मुक्त होती हुई मालूम पड़ी और उसे लगा नया जीवन मिल गया है। अपने भीतर की सारी लगन से वह पूर्णता प्राप्त करने की कल्पना करने लगा। उसे लगा कि वह अपना सारा जीवन ईश्वर की सेवा में लगा दे और उसने निश्चय कर लिया कि वह 'आर्डेन' अवश्य बन जायगा।

परन्तु ऊँची पहाड़ियों की हवा में फ़िलिप अधिक समय तक नहीं रह सका। पहली बार जब धार्मिकता ने उसके भीतर जोर पकड़ा था तब जो कुछ हुआ था वही फिर से हो गया। चूंकि उसे विश्वास की सुन्दरता का भली भांति ज्ञान था, चूंकि आत्मसमर्पण की इच्छा उसके भीतर ज्वाला सी जल रही थी, उसे लगा कि उसकी आकांक्षा की तुलना में उसकी शक्ति नगण्य है। वह अपनी लालसा की शक्ति से थम गया था। उसकी आत्मा सहसा शुष्क हो उठी। वह ईश्वर की उपस्थिति ही भूलने लगा, जो पहले हर जगह मालूम पड़ती थी और उसकी प्रार्थनायें, जो अब भी बिलकुल ठीक समय पर की जाती थीं, सिर्फ नाम मात्र को रह गईं। पहले इस पतन के लिये उसने अपने को दोष दिया और नर्क की आग के भय से नई शक्ति से उसे शुरू करना चाहा पर लालसा मर चुकी थी और धीरे-धीरे दूसरे आकर्षण उसके विचारों को दूसरी ओर ले जाने लगे।

फ़िलिप के मित्र नहीं थे। उसकी पढ़ने की आदत ने उसे अकेला

कर दिया था और यह इतना आवश्यक हो गया था कि थोड़ी देर ही और लड़कों के साथ रहने पर वह अब और परेशान हो उठता था। अधिक किताबें पढ़ने से जो विस्तृत ज्ञान उसे हो गया था उसका उसे गर्व था, उसका मस्तिष्क सावधान था, और अपने साथ पढ़ने वालों की मूर्खताओं के लिये जो घृणा उसके मन में थी, उसे छिपा सकने की योग्यता उसमें न थी। उसमें एक प्रकार मजाक करने का स्वभाव होता जा रहा था, और उसे पता लग गया कि वह ऐसी कड़वी बातें कर सकता है जो एकाएक दूसरों को लग सकती हैं। वह उन्हें कहता क्योंकि इसमें उसे मजा आता। उसे ख्याल भी न आता कि उन्हें कितना कष्ट हो सकता है। साथ ही उसे बुरा लगता कि उसके शिकार उसे अत्यधिक घृणा से देखते हैं। पहली बार जब वह स्कूल गया था, उसे बहुत नीचा देखना पड़ा था, और दूसरे लोगों से वह दूर भागने लगा था, यह आदत उसकी अभी भी गई नहीं थी; वह शर्मीला और चुप्प बना ही रहा।

फ़िलिप छठवीं कक्षा में आ गया, पर अब वह स्कूल को बुरी तरह घृणा करने लगा था। अपनी महत्वाकांक्षा वह भूल गया था, इसलिये उसे चिन्ता न थी कि वह अच्छा कर रहा है या बुरा। सवेरे उठता तो यह सोचकर कि मुसीबत का एक और दिन काटना है, उसका हृदय बैठने लगता। दूसरों के बताये काम करते-करते वह थक गया था, और तरह-तरह की पाबन्दियों से उसे परेशानी होती। वह स्वतन्त्रता चाहता था। जानी हुई बातें दोहराने और किसी मोटी अक्ल वाले लड़के के कारण उसे पहले ही समझ में आ गई बात को बार-बार कहने से उसे चिढ़ लगने लगी थी।

मिस्टर पार्किन्स के साथ इच्छानुसार काम किया जा सकता था और नहीं भी किया जा सकता था। वह आतुर और एकान्तप्रिय साथ-साथ था। छठवीं कक्षा का कमरा पुराने गिरजाघर के एक भाग में था, जिसकी मरम्मत कर दी गई थी, और उसमें एक मध्ययुगीन खिड़की थी। फ़िलिप अपनी ऊब मिटाने के लिये उसे बार-बार कागज़ पर बनाता था।

कभी-कभी वह कल्पना से गिरजे की ऊंची मीनार या अन्दर आने वाला प्रवेश द्वार भी बनाने लगता। उसे चित्रकला का शौक था। अपने यौवन के दिनों में लुइजा चाची पानी के रंगों से तस्वीरें बनाया करती थीं और उनके अनेक अलबम गिरजाघरों, पुराने पुलों और झोपड़ियों की तस्वीरों से भरे पड़े थे। विकारेज की चाय-पार्टियों में वे अक्सर दिखाये भी जाया करते थे। एक बार उन्होंने बड़े दिन के उपहार-स्वरूप एक पानी के रंगों का डिब्बा फ़िलिप को दिया था, और उसने उनकी तस्वीरों की नकल शुरू कर दी थी। वह लोगों की आशा से अच्छा नकल कर लेता था और कुछ दिनों में स्वयं अपनी भी तस्वीरें बनाने लगा। मिसेज़ कैरी ने उसे उत्साहित किया। उसे बदमाशी न करने देने का यह एक अच्छा रास्ता था, और बाद में उसके स्केच बाज़ारों के लिये लाभदायक होंगे। दो तीन स्केच फ्रेम करवा कर उसके कमरे में टंगवा दिये गये थे।

लेकिन एक दिन, सुबह का काम खत्म करने के बाद, मिस्टर पार्किन्स ने उसे कमरे से बाहर निकलते समय रोका।

"तुम्हें क्या हो गया है, कैरी ?" उन्होंने सहसा कहा।

शर्माते हुए फ़िलिप ने उनकी ओर देखा। पर अब तक वह उन्हें अच्छी तरह जान गया था, इसलिये बिना कुछ बोले उनके आगे कहते जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

"मैं इधर कुछ दिनों से तुमसे असन्तुष्ट हूँ। तुम पढ़ने में ध्यान नहीं देते और काम पूरा नहीं करते। जैसे अपने काम में तुम्हें कोई मज़ा ही न आता हो। यह बड़ी खराब बात है।"

"मुझे बहुत दुःख है, श्रीमान्," फ़िलिप ने कहा।

"अपने बारे में तुम्हें सिर्फ इतना ही कहना है ?"

फ़िलिप नीचे देखने लगा। वह कैसे उत्तर देता कि वह बहुत ऊब चुका है।

"तुम्हें मालूम है इस 'टर्म' में तुम बजाय ऊपर जाने के नीचे चले जाओगे। मैं तुम्हें बहुत अच्छी रिपोर्ट नहीं दूंगा।" मिस्टर पार्किन्स कहते

गये।

"मैं तुमसे निराश हो गया हूँ और समझ भी नहीं पाता। मैं जानता हूँ कि अगर तुम चाहो तो बहुत कुछ कर सकते हो। पर लगता है अब तुम चाहते ही नहीं। मैं अगले 'टर्म' में तुम्हें मानीटर बनाने वाला था, पर अब मुझे थोड़ा ठहरना पड़ेगा।"

फ़िलिप का चेहरा लाल हो गया। उसे इस तरह छोड़ दिये जाने का विचार अच्छा न लगा। उसने होंठ कस लिये।

"और भी बातें हैं। अब तुम्हें अपने वजीफे के बारे में भी सोचना चाहिये। अगर जम कर काम नहीं करोगे तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।"

फ़िलिप इस भाषण से चिढ़ गया। वह हेडमास्टर साहब और अपने, दोनों पर नाराज हो गया।

"मैं नहीं सोचता कि अब मैं आक्सफोर्ड जाऊँगा।" उसने कहा।

"क्यों नहीं? मैंने सोचा था तुम्हारा विचार 'आर्डेन्ड होने का है।"

"मैंने अपना विचार बदल दिया है।"

"क्यों?"

फ़िलिप ने कोई उत्तर नहीं दिया। मिस्टर पार्किन्स खड़े थोड़ी देर तक फ़िलिप को इस तरह देखते रहे, मानो वे उसे समझाने की कोशिश कर रहें हों, तब सहसा उन्होंने उससे कहा कि वह जा सकता है।

स्पष्टतः वह सन्तुष्ट नहीं हुए थे, क्योंकि एक हफ्ते बाद, एक शाम, जब फ़िलिप को कुछ कागज लेकर 'स्टडी' में जाना था, उन्होंने बातचीत फिर शुरू कर दी। पर इस बार उन्होंने दूसरा ढंग अख़्तियार किया। वह स्कूली लड़के से बोलने वाले मास्टर की तरह नहीं, वरन् एक मानव से दूसरे मानव की तरह बोलने लगे। अब जैसे उन्हें परवाह नहीं थी कि फ़िलिप का काम कितना रद्दी था और ऑक्सफोर्ड जाने के लिये आवश्यक वज़ीफे के लिये प्रतिद्वन्द्विता करने वाले बच्चों के बीच उसकी आशा नहीं थी। सबसे आवश्यक बात तो थी अपनी भविष्य की जिन्दगी के बारे में

बदला हुआ स्वभाव। मिस्टर पार्किन्स उसकी 'आर्डेन्ड' होने की आतुरता को फिर से जगाने का प्रयास करने लगे। बड़ी कुशलता से वह उसकी भावनाओं पर प्रहार करने लगे, उनके लिए यह आसान भी था, क्योंकि वह स्वयं वास्तव में विचलित हो उठे थे। फ़िलिप के विचार परिवर्तन से उन्हें बहुत दुःख हुआ था और वह सोचते थे कि न मालूम वह किस चीज के लिए अपनी प्रसन्नता की आशा को निराशा में बदल रहा है। उनकी आवाज़ बड़ी आग्रहपूर्ण थी। फ़िलिप अपने बाह्य असौन्दर्य के बावजूद बड़ा भावुक था—उसके चेहरे पर, अंशतः स्वभाववश अंशतः स्कूल में इतने वर्ष बिताने के कारण, लाली छा जाने के अलावा और कोई भाव नहीं उभरता था और दूसरों की भावुकता से आसानी से विचलित हो जाता था। हेडमास्टर साहब की बातों ने भी उसके मर्म को छू दिया। जितनी आत्मीयता वह दिखा रहे थे उसके लिए वह अनुग्रहीत था, पर उसके व्यवहार से जो दर्द उन्हें हो रहा था उसके लिए उसकी आत्मा उसे कोस रही थी। यह भी गर्व की बात थी कि मिस्टर पार्किन्स को चिन्ता करने के लिए सारा स्कूल पड़ा था, परन्तु वह उसके लिये परेशान थे, उसके भीतर कुछ और भी था, जैसे उसके बगल में खड़ा कोई और आदमी निराश होकर केवल दो शब्द कह रहा हो।

"नहीं। नहीं। नहीं।"

उसे लगा वह फिसल रहा है। उसके अन्दर से एक कमज़ोरी उभर रही थी और उसके सामने वह अपने को असहाय महसूस कर रहा था। जैसे पानी से भरे तसले में डाली हुई खाली बोतल में धीरे-धीरे करके पानी भर रहा हो। अपने दाँत एक दूसरे पर जमाकर वह बार-बार कहता रहा।

"नहीं। नहीं। नहीं।"

आख़िर में पार्किन्स ने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

"मैं तुम्हें प्रभावित नहीं करना चाहता," उन्होंने कहा, "तुम स्वयं

निर्णय करो तुम्हें क्या करना है। ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हारी सहायता करे और तुम्हें राह दिखाये।"

जब फ़िलिप हेड मास्टर साहब के घर से बाहर आया, रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा था। वह चाहरदीवारी के भीतर जाने वाले प्रवेश-द्वार के नीचे आ गया, वहाँ एक भी आदमी न था और 'एम' के पेड़ों पर बैठी चिड़ियाँ शान्त थीं। वह धीरे-धीरे टहलने लगा। उसे गर्मी लग रही थी और वर्षा से उसे आराम मिल रहा था। वह मिस्टर पार्किन्स की बातों को सोचने लगा, उसके व्यक्तित्व के दबाव से बाहर आकर अब वह शान्ति से सोच सकता था और वह ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था कि उनके सामने वह झुक नहीं गया।

अंधकार में वह गिरजे की इमारत, कुछ-कुछ देख रहा था। उसे जबर्दस्ती लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करनी पड़ी थीं, इस कारण उसके लिये उसके दिल में घृणा उपज उठी। 'एन्थेस' समाप्त ही होने को न आता था, उसके गाये जाने के बीच ऊबते हुए खड़ा रहना पड़ता था। 'सरमन' सुनाई नहीं पड़ सकता था और जब हिलने डुलने को तबियत चाहती थी, तो मजबूरन बैठे रहने से शरीर में दर्द होने लगता था। तब फ़िलिप को ब्लैक स्टेबिल की रविवार वाली दो 'सर्विसों' की याद आई। गिरजे में टंडक रहती थी और फर्श पर कुछ बिछा नहीं था, तथा वातावरण में पोमेड तथा कलफ़ किये हुए कपड़ों की खुशबू थी। एक बार 'क्यूरेट' बात कहते थे और एक बार उसके चचा। उम्र बदलने के साथ-साथ वह अपने चचा को पहचानने लगा था। फ़िलिप स्पष्ट काम करने वाला और असहनशील था और उसकी समझ में नहीं आता था कि पादरी की हैसियत से एक बात गम्भीरता पूर्वक कह कर, आदमी की हैसियत से उस पर अमल क्यों नहीं किया जाता। इस धोखे से उसे क्रोध हो आता था। उसके चाचा कमजोर और स्वार्थी आदमी थे और उनकी मुख्य आकांक्षा यही थी कि उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न उठानी पड़े।

मिस्टर पार्किन्स ने ईश्वर की सेवा में उत्सर्ग किये गये जीवन की सुन्दरता के बारे में बताया था। फ़िलिप को मालूम था कि उसके घर ईस्टइण्डिया में पादरी किस तरह का जीवन व्यतीत करते थे। ब्लैक स्टेबिल से कुछ दूर ह्वाइट स्टोन पैरिस के विकर थे : वह अविवाहित थे, और कुछ करने के लिये उन्होंने खेती करना शुरू कर दिया था : स्थानीय समाचार-पत्रों में अनेक आदमियों के विरुद्ध उनके मुकद्दमों, जिनकी मज़दूरी वे देते थे उन मजदूरों, और जिन पर ठगने का इलजाम लगाते थे उन व्यापारियों के समाचार छपते रहते थे; अफ़वाहें तो यहाँ तक थीं कि अपनी गायों को वह भूखा रखते थे, और उनके खिलाफ़ वहाँ के निवासी सामूहिक ढंग से कुछ करने जा रहे थे। फिर 'फर्म' के विकर थे, लहीम-शहीम दाढ़ी वाले आदमी : उनकी क्रूरता के कारण उनकी पत्नी उन्हें छोड़ कर चली गई थी और उन्होंने विकर की चरित्रहीनता की अनेक कहानियाँ फैला दी थीं। समुद्र के किनारे एक छोटा-सा पुल था, सर्ल। वहां के विकर अपने घर से थोड़ी ही दूर स्थित 'पब्लिक हाउस' में हर शाम को देखे जाते थे; और गिरजे में 'वार्डेन' मिस्टर कैरी के पास इस मामले में सलाह मांगने गये थे। छोटे-छोटे किसानों या मछवाहों के अलावा कोई उनके बारे में बात नहीं करता था; जाड़े की लम्बी शामों में, जब पत्ते रहित पेड़ों के बीच से हवा सनसनाती हुई बहा करती थी, उन्हें हल चलाए हुए खेतों की एकरसता के अलावा और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता था; और गरीबी थी, और काम की कमी थी; उनके चरित्र का प्रत्येक पहलू अच्छी तरह उभर सकता था; उन्हें रोकने को कुछ न था; वह संकुचित विचारों वाले और पागल से होते जा रहे थे : फ़िलिप यह सब जानता था, पर अपने नव यौवन की असहनशीलता के कारण उसे बहाना नहीं बनाना चाहता था। ऐसा जीवन व्यतीत करने के विचार मात्र से वह काँप उठा; वह बाहर की दुनियाँ में जाना चाहता था।

: २ :

मिस्टर पार्किन्स को बहुत शीघ्र पता चल गया कि फ़िलिप पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और फिर कभी उन्होंने उस पर ध्यान ही नहीं दिया। उन्होंने उसकी एक बड़ी कड़ी रिपोर्ट लिखी। जब वह घर पहुँची और लुइज़ा चाची ने उससे पूछा कि वह कैसी है तो उसने खुशी से उत्तर दिया :

"बिल्कुल रद्दी।"

"सचमुच ?" पादरी ने कहा, "मैं उसे फिर से देखूंगा।"

"क्या आप सोचते हैं कि टरकनबरी में मेरे रहने से कोई लाभ है ? मेरा ख्याल है कि थोड़े दिनों को मैं जर्मनी चला जाऊं तो ज्यादा अच्छा होगा।"

"यह ख्याल कैसे तुम्हारे दिमाग़ में आया ?" लुइज़ा चाची ने पूछा।

"आपका क्या कहना है, यह अच्छा विचार नहीं है ?"

"पर तुम्हें वजीफ़ा नहीं मिलेगा।"

"वह तो यों भी नहीं मिलेगा। और फिर, मेरा ऑक्सफोर्ड जाने का कोई खास इरादा भी नहीं है ?"

"लेकिन अगर तुम्हें 'ऑर्डेन्ड' होना है तो ?" लुइज़ा चाची आश्चर्य और दुःख से चीख पड़ी।

"बहुत दिन पहले से यह विचार मैंने अपने दिमाग़ से बाहर कर दिया है।"

मिसेज़ कैरी ने विस्फारित नेत्रों से उसे देखा, और तब, चूंकि उन्हें अपने को संतुलित कर लेने की आदत थी, उन्होंने उसके चाचा के लिये एक प्याला चाय और डाली। वह कुछ बोले नहीं। एक क्षण में फ़िलिप ने देखा कि चाची के गालों पर आँसू धीरे-धीरे वह रहे हैं। उसका हृदय सहसा मरोड़ खा उठा, क्योंकि उसने उन्हें दुःख पहुंचाया था। उनका

पूरा शरीर एक प्रकार के दर्द से पूर्ण था। फ़िलिप ने ऐसा पहली बार देखा था।

बाद में जब पादरी साहब क्यूरेट के साथ अपनी 'स्टडी' में बन्द हो गये, तो फ़िलिप ने अपनी बाहें चाची की कमर के चारों ओर लपेट लीं।

"मुझे दुःख है, चाची, कि मैंने आपको कष्ट दिया," उसने कहा, "पर अगर मुझे पूरी तरह विश्वास नहीं है, तो फिर मेरे 'ऑर्डेन्ड' होने से क्या लाभ ?"

"मुझे कितनी निराशा हुई है, फ़िलिप," वह कराहीं, "मैं कब से यही सोच रही थी। मैं सोचती थी कि तुम अपने चाचा के क्यूरेट हो जाओगे और जब हमारा समय आयेगा—आख़िर हम लोग हमेशा तो जीवित नहीं रह सकते न ?—तो तुम उनकी जगह पादरी हो जाओगे।"

फ़िलिप काँप गया। एक तरह का भय उसमें भर गया। पिंजड़े में बंद कबूतर जिस तरह अपने पंख फड़फड़ाता है उसी तरह उसका दिल बेचैन होकर फड़कने लगा। चाची का सिर उसके कंधों पर था और वह सिसक रही थीं।

"मैं चाहता हूँ कि आप चचा को मेरे टरकनबरी छोड़ने के लिये समझा दें। मैं वहाँ से ऊब उठा हूँ।"

लेकिन टरकनबरी के विकर अपने प्रबन्ध को आसानी से बदलते नहीं थे, और यह तय किया गया था कि अट्ठारह वर्ष की उम्र तक फ़िलिप किंग्स स्कूल में रहे और उसके बाद आक्सफोर्ड चला जाये। किसी भी हालत में वह फ़िलिप के उसी समय स्कूल छोड़ने की बात सोच ही नहीं सकते थे, क्योंकि कोई नोटिस नहीं दी गई थी, और 'टर्न' का फीस तो देनी ही पड़ेगी हर हालत में।

"तब आप बड़े दिन पर मेरे स्कूल छोड़ने का नोटिस देंगे ?" वार्ता के अन्त में फ़िलिप ने कहा।

"मैं इस बारे में मिस्टर पार्किन्स को लिखकर उनकी राय जानूंगा।"

"ओह, अगर मैं इक्कीस साल का होता। दूसरे की आज्ञाओं का पालन हमेशा करते रहना कितना भयानक होता है।"

"फ़िलिप, अपने चचा से इस तरह बात नहीं किया करते, बेटे," मिसेज़ कैरी ने मुलायमियत से कहा।

"पर क्या आप सोचते नहीं कि पार्किन्स तो चाहेगा ही कि स्कूल न छोड़ूँ? हर पढ़ने वाले लड़के के लिये उसे कुछ पारिश्रमिक मिलता है।"

"तुम आक्सफोर्ड क्यों नहीं जाना चाहते?"

"मैं गिरजे में नहीं जा रहा, तो वहाँ जाने से क्या लाभ?"

तुम गिरजे से नहीं जा सकते; तुम अभी भी उसमें हो।" पादरी ने कहा।

"अच्छा 'आर्डेन्ड' सही," अधीर होकर फ़िलिप ने उत्तर दिया।

"तुम क्या बनना चाहते हो, फ़िलिप?" मिसेज़ कैरी ने पूछा।

"मुझे मालूम नहीं। अभी मैंने निश्चय नहीं किया है। पर जो कुछ मैं बनूं, विदेशी भाषाओं को जानने से लाभ ही होगा। उस घेरे में ठह-रने से ज़्यादा मैं एक साल जरमनी में रह कर सीख सकूंगा।"

वह नहीं कह सका कि आक्सफोर्ड उसके स्कूली जीवन का बढ़ा रूप ही होगा। वह अपना मालिक बनने का अधिक इच्छुक था। फिर वहाँ पर पुराने साथी तो रहेंगे ही जो उसे पहचानेंगे और वह उन सबसे दूर भाग जाना चाहता था। उसे लगता था कि उसका स्कूली जीवन असफल रहा है। वह जीवन फिर से प्रारम्भ करना चाहता था।

अनेक वार्तालापों का परिणाम यह हुआ कि तय किया गया कि एक और 'टर्न' के लिये फ़िलिप टरकनबरी जायेगा और तब छोड़ देगा। इस प्रबन्ध से वह असन्तुष्ट नहीं था। पर उसके आने के कुछ दिन बाद हेडमास्टर साहब ने उससे बातें की।

"मेरे पास तुम्हारे चचा का पत्र आया है। लगता है तुम जर्मनी जाना चाहते हो। उन्होंने इस बारे में मेरी राय पूछी है।"

फ़िलिप स्तम्भित रह गया। अपने शब्दों को वापस लेने के लिये वह अपने अभिभावक पर नाराज़ हो उठा।

"मैं सोचता था कि यह तय हो चुका है, श्रीमान," उसने कहा।

"यह बड़े दूर की बात है। मैंने लिख दिया है कि उसे स्कूल से निकालना बहुत बड़ी गलती होगी।"

फौरन बैठ कर फ़िलिप ने अपने चाचा को एक क्रोध-भरा पत्र लिख डाला। उसने अपनी भाषा को संभालने की कोशिश नहीं की। वह इतना क्रोधित हो उठा था कि अधिक रात गये तक सो न सका और सवेरे बड़ी जल्दी उठकर सोचने लगा कि उन लोगों ने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया है। वह अधीरता से उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। दो-तीन दिन में वह आ गया। वह लुइजा चाची का दर्द से भरा, हल्का पत्र था जिसमें लिखा था कि उसे अपने चचा को ऐसी बातें नहीं लिखनी चाहियें—वह सब पढ़ कर उन्हें बड़ा दुख हुआ। निर्दय और सच्चा ईसाई नहीं था। उसे समझना चाहिये कि वह उसके सर्वाधिक भले की बात सोच रहे हैं और उनकी उम्र उससे इतनी अधिक है कि उसके लिये क्या सबसे अच्छा है, यह वह ही अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं। फ़िलिप की मुट्ठियाँ बंध गईं। उसने यह वक्तव्य अनेक बार सुना था और वह समझ नहीं पाता था कि वह क्यों सही है; सारी दशाओं को वह उसकी तरह नहीं जानते थे फिर वह इसे स्वयंसिद्धि की तरह क्यों स्वीकार कर लेते हैं कि उनकी उम्र ज्यादा होने के कारण उनमें बुद्धि भी अधिक है? पत्र इस सूचना के साथ समाप्त हुआ था कि मिस्टर कैरी ने दी हुई नोटिस वापस ले ली है।

फ़िलिप अगली आधे दिन की छुट्टी तक अपना गुस्सा पिये रहा। आधे दिन की छुट्टियाँ मंगलवार और वृहस्पतिवार को हुआ करती थीं, क्योंकि शनिवार को दोपहर के बाद उन्हें गिरजे में जाना पड़ता था। सारी कक्षा के बाहर जाने के बाद वह रुक गया।

"क्या मैं आज शाम के लिये ब्लैकस्टेबिल जा सकता हूँ श्रीमान्?"

उसने पूछा।

"नहीं," हेडमास्टर ने संक्षेप में कहा।

"मैं एक बड़ी ख़ास बात के बारे में अपने चचा से मिलना चाहता हूँ।"

"क्या तुमने मुझे 'नहीं' कहते नहीं सुना ?"

कुछ उत्तर न देकर फ़िलिप बाहर चला गया। पूछने और इन्कार करने से फ़िलिप के आत्मसम्मान को बड़ी ठेस लगी। अब वह हेड-मास्टर को घृणा करने लगा। क्रोध की अधिकता में वह क्या करता है इसकी उसे परवाह न थी। खाना खाने के बाद अच्छी तरह जाने-पहचाने पीछे के रास्ते से वह स्टेशन पहुंचा। ब्लैकस्टेबिल वाली ट्रेन छूटने ही वाली थी। विकारेज में प्रवेश करने पर उसने अपने चचा और चाची को डाइनिंगरूम में बैठे पाया।

"हलो, तुम यहाँ कहाँ से आ गये ?" विकर ने कहा।

बहुत स्पष्ट था कि उसे देखकर वे खुशी नहीं हुए। वे जरा बेचैन भी मालूम पड़े।

"मैंने सोचा स्कूल छोड़ने के बारे में मैं आकर आपसे मिल लूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि जब मैं यहाँ था तो एक चीज का वायदा करने और एक ही हफ़्ते बाद कुछ और करने का क्या मतलब है।"

वह अपने साहस पर स्वयं आश्चर्यान्वित हो उठा, परन्तु उसने निश्चय कर लिया था कि उसे कौन से शब्द कहने हैं और यद्यपि उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था, उसने वे शब्द कह ही डाले।

आज यहाँ आने की छुट्टी तुमने ले ली है ?''

"नहीं। मैंने पार्किन्स से छुट्टी माँगी थी और उसने इंकार कर दिया। अगर आप उसे लिखकर बताना चाहें कि मैं यहाँ आया था तो आप सचमुच मुझे सजा तो दिलवा ही देंगे।"

मिसेज कैरी काँपते हाथों से बुनती हुई बैठी रहीं। वह झगड़े पसन्द नहीं करती थीं। वे काँप उठी थीं।

"अगर मैं उन्हें लिख दूं, तो अपने किये का अंजाम तो तुम्हें मिल ही जायगा," मिस्टर कैरी ने कहा।

"यदि आप ऐसे नीच बनना ही चाहते हैं, तो बनें। पार्किन्स को वह सब लिखने के बाद आप निस्संदेह इस योग्य हैं।"

"यह कहना फ़िलिप की बेवकूफ़ी थी क्योंकि इससे पादरी साहब को ठीक वही अवसर मिल गया जो वह चाहते थे।

"तुम मुझसे बदतमीजी की बातें करोगे तो मैं चुप नहीं बैठूंगा," उन्होंने शान से कहा।

वह उठ खड़े हुए और तेजी से कमरे से बाहर जाकर अपनी 'स्टैडी' में चले गये। फ़िलिप ने उन्हें दरवाज़ा बन्द करके भीतर से ताला लगाते सुना।

"ओह, मैं चाहता हूँ कि इक्कीस वर्ष का हो गया होता। इस तरह बँध कर रहना बड़ा भयानक है।

लुइजा चाची धीरे-धीरे सुबकने लगीं।

"ओह फ़िलिप, तुम्हें अपने चचा से इस तरह बातें नहीं करनी चाहियें। जाकर उनसे कह दो तुम्हें दुःख है।"

"मुझे बिलकुल दुःख नहीं है। वह बेकार का फ़ायदा उठा रहे हैं। मुझे स्कूल में रखना धन का दुरुपयोग ही है, पर उन्हें क्या परवाह? यह उनका धन थोड़े ही है। मुझे ऐसे आदमियों के संरक्षण में रखना बड़ा क्रूर था, जो चीज़ों को समझते ही नहीं।"

"फ़िलिप!"

अत्यधिक क्रोधित फ़िलिप उनका स्वर सुन कर सहसा चुप हो गया। स्वर जैसे टूटे हुए दिल से निकला हो। उसे ख़्याल नहीं रहा था कि वह कितनी कड़वी बातें कहता चला जा रहा है।

"फ़िलिप, तुम कैसे इतने निर्दय हो सकते हो? तुम्हें मालूम है हम लोग तुम्हारे लिये सबसे अच्छी बात करने की ही कोशिश कर रहे हैं, और हमें मालूम है हमें इसका अनुभव नहीं। इसलिये हमने मिस्टर

पार्किन्स से सलाह ली थी।" इनकी आवाज़ टूट-सी गई। "मैंने तुम्हारी माँ बनने की कोशिश की है। अपनी कोख के बच्चे की तरह मैंने तुम्हें प्यार किया है।"

वह इतनी छोटी और कमज़ोर मालूम पड़ीं, उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा दर्द भर गया था कि फ़िलिप का दिल हिल गया। उसे लगा उसके गले में कुछ अटक गया है और उसकी आँखों में आँसू भर आये।

"मुझे दुःख है," उसने कहा, "मैं निर्दयी नहीं बनना चाहता था।"

उनके बगल में वह घुटनों के बल बैठ गया, और उन्हें अपने हाथों में लेकर उसने उनके गीले, मुरझाये कपोल चूम लिये। वह बुरी तरह सिसक रही थीं और उनके व्यर्थ जीवन पर सहसा उसे दया हो आई। इसके पहले कभी उन्होंने इस तरह अपने को भावनाओं के ज्वार में बह जाने नहीं दिया था।

"मुझे मालूम है, फ़िलिप, कि तुम्हारे लिये जो मैं बनना चाहती थी, बन नहीं पाई हूँ, पर कैसे, यह मैं नहीं जान पाई। मेरे लिये कोई अपनी सन्तान न होना उतना ही भयानक है जितना तुम्हारे लिये माँ न होना।"

फ़िलिप अपना क्रोध और स्वार्थ भूल गया। उसे केवल चाची को सान्त्वना देने की बात याद रही, टूटे-फूटे शब्दों और छोटे-छोटे आलिंगनों से। तब घड़ी बजी और उसी क्षण उसे ट्रेन पकड़ने के लिये भागना पड़ा, वही एक ऐसी ट्रेन थी जो उसे हाज़िरी के समय तक टरकनबरी पहुँचा सकती थी। ट्रेन के डिब्बे के एक कोने में बैठ कर वह सोचने लगा कि उसने कुछ नहीं किया। अपनी कमजोरी के लिये वह स्वयं पर नाराज़ हो उठा। पादरी साहब की झूठी शान और चाची के आँसुओं से उसका अपने निश्चय से हट जाना बड़ा घृणात्मक था। परन्तु चाचा और चाची के न मालूम किन संवादों के बाद हेडमास्टर साहब को एक और पत्र लिखा गया। पार्किन्स ने उसे अपने कंधों को आतुरता से उचका कर पढ़ा। उन्होंने फ़िलिप को भी उसे दिखाया।

पत्र यों था :

"प्रिय मिस्टर पार्किन्स,

"अपने 'वार्ड' के विषय में आपको फिर परेशान करने के लिये क्षमा करें, पर उसकी चाची और मैं दोनों ही उसके लिये बड़े परेशान रहे हैं। वह स्कूल छोड़ने को बड़ा लालायित मालूम पड़ता है और उसके चचा का कहना है कि वह खुश नहीं है। हम लोग उसके माता-पिता नहीं हैं और यहाँ रुकने में वहअपने धन का अपव्यय समझता है। यदि आप उससे एक बार बात कर लेंगे तो मैं बड़ा अनुगृहीत होऊंगा और अगर वह फिर भी वही सोचता रहा तो शायद उसका बड़े दिन में, जैसे मेरा पहला इरादा था, स्कूल छोड़ देना ही अच्छा होगा।

आपका ही,

विलियम कैरी।"

फ़िलिप ने पत्र उन्हें वापस कर दिया। अपनी विजय में उसे एक प्रकार का गर्व मालूम पड़ा उसने अपने मन की करली थी और वह सन्तुष्ट था। उसकी इच्छा ने दूसरों की इच्छा पर विजय पाई थी। उसकी आँखों में एक क्षणिक चमक आई। मिस्टर पार्किन्स ने उसे देखा, और हँस पड़े।

"तुम जीत गये न ?" उन्होंने कहा।

तब फ़िलिप स्पष्टतः मुस्करा पड़ा। अपनी खुशी वह छिपा नहीं पा रहा था।

"क्या यह सच है कि तुम स्कूल छोड़ने को बहुत उत्सुक हो ?"

"हाँ, श्रीमान्।"

"क्या यहाँ तुम खुश नहीं हो ?"

फ़िलिप शर्मा गया। उसे स्वभावतः पसन्द न था कि कोई उसकी भावनाओं की गहराई में उतरने का प्रयास करे।

"ओह, मुझे मालूम नहीं, श्रीमान्।"

अपनी दाढ़ी के बीच उंगलियाँ फिराते हुए मिस्टर पार्किन्स विचार-

मग्न से उसकी ओर देखते रहे। तब सहसा वह फ़िलिप से बोले :

"देखो, मेरा एक प्रस्ताव है। अब 'टर्म' तो ख़त्म हो ही रहा है। एक और 'टर्म' तुम्हें मार नहीं डालेगा और अगर तुम्हें जर्मनी जाना ही है तो बड़े दिन के बाद न जाकर ईस्टर के बाद जाओ। जाड़े से अधिक बसन्त में मज़ा आयगा। यदि अगले 'टर्म' के अन्त में भी तुम्हारा यही विचार बना रहा तो फिर मैं नही रोकूंगा। क्या कहते हो ?"

"अनेक धन्यवाद, श्रीमान्।"

फ़िलिप इतना खुश हुआ कि एक और 'टर्म' ठहरना उसे बुरा न लगा। उसे मालूम हो गया था कि ईस्टर से पहले वह हमेशा के लिये स्कूल से आज़ाद हो जायगा, तो वह जेल उसे अधिक न मालूम पड़ने लगी। उसका हृदय नाचने लगा।

आख़िर विदा होने का दिन आया और वह मिस्टर पार्किन्स से बिदा लेने उनके पास गया।

"तो क्या सचमुच तुम जाना चाहते हो ?"

हेडमास्टर साहब के आश्चर्य से फ़िलिप का चेहरा आवेशहीन हो उठा।

"आपने कहा था आप रोकेंगे नहीं," उसने कहा।

"मैंने सोचा था यह तुम्हारा एक वहम भर है। मैं जानता हूँ तुम ज़िद्दी, और दृढ़प्रतिज्ञ हो। अब तुम क्यों छोड़ना चाहते हो ? एक ही 'टर्म' तो और बाकी है अब। तुम्हें आसानी से मैगडलेन वज़ीफ़ा मिल जायगा, और आधे इनाम तो मिल ही जायेंगे।"

फ़िलिप ने निरुत्साह से उन्हें देखा। उसे लगा, उसे धोखा दिया गया है, पर हेडमास्टर साहब ने वादा किया था और पार्किन्स को उसे निभाना ही पड़ेगा।

"आक्सफोर्ड में तुम्हारा समय बड़ी खुशी से बीतेगा एकदम निर्णय करने की जरुरत नहीं कि तुम भविष्य में क्या करोगे। शायद तुम्हें नहीं मालूम कि बुद्धिमान विद्यार्थियों का जीवन वहाँ कितना आनन्दमय

होता है।"

"मैंने अब जर्मनी जाने का सारा प्रबन्ध कर लिया है, श्रीमान।"

"क्या यह प्रबन्ध बदला नहीं जा सकता ?" अपनी रहस्यमय मुस्कान के साथ मिस्टर पार्किन्स ने पूछा ? तुम्हें खोकर मुझे बड़ा दुःख होगा। स्कूलों में बेवकूफ़ लड़के जो काम करते रहे हैं, आलसी या होशियार लड़कों से अच्छे नम्बरों से पास होते हैं, लेकिन जब होशियार लड़का काम करने लगता है—तब वह वही कर दिखाता है जो तुमने इस टर्म में कर दिखाया है।"

फ़िलिप का चेहरा गहरा लाल हो उठा। उसकी प्रशंसा कभी न की गई थी, और न उससे कभी किसी ने कहा था कि वह होशियार है। हेडमास्टर साहब ने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

"तुम्हें मालूम है, बेवकूफों के दिमाग में चीज़ें ठोकना बड़ा रद्दी काम है, पर जब कभी ऐसा लड़का मिल जाता है जो आधा रास्ता स्वयं तय कर लेता है, जो शब्दों को मास्टर के मुँह से निकलने के पहले ही समझ लेता है, तब पढ़ाना दुनियाँ का सबसे अधिक आनन्द और संतोष-प्रद काम बन जाता है।"

फ़िलिप दयालुता से पिघल गया; उसे कभी सूझा ही नहीं था कि उसके जाने या ठहरने का मिस्टर पार्किन्स से भी सम्बन्ध था। उसका दिल छू लिया गया था और वह अपनी तारीफ से फूल उठा। स्कूल के दिन शान के साथ समाप्त करके आक्सफोर्ड जाना सचमुच आनन्द-दायक होगा ! पर वह शर्मा रहा था, अब अगर वह हार मान जायगा तो अपनी ही आँखों में गिर जायगा। हेडमास्टर साहब की वाक्पटुता की तारीफ करके उसके चचा शरारत से मुस्करायेंगे। थोड़ी और बात बढ़ाने की जरूरत थी, इतना कि उसके आत्मसम्भाव की रक्षा हो सके, और फ़िलिप मिस्टर पार्किन्स की किसी भी आकांक्षा की पूर्ति कर देता; पर उसके चेहरे पर इन विरोधी भावों का कोई प्रभाव न दिखाई पड़ रहा था। वह भावनाहीन और शुष्क था।

"मेरा विचार जाने का ही है श्रीमान् ।"

मिस्टर पार्किन्स, जो अनेक अन्य आदमियों की तरह अपने व्यक्तिगत प्रभाव से काम बना लेते थे अपनी शक्ति को फौरन काम न करते देखकर तनिक अधीर हो उठे। उनके पास बहुत सा काम करने को था। वह ऐसे लड़के के लिये और अधिक समय का अपव्यय नहीं कर सकते थे, जो बहुत जिद्दी मालूम पड़ रहा था।

"ठीक है, मैंने वायदा किया था कि अगर तुम वास्तव में चाहोगे तो मैं रोकूंगा नहीं। मैं अपना वायदा पूरा करूंगा। तुम जर्मनी कब जा रहे हो ?"

फ़िलिप का हृदय जोर से धड़कने लगा। वह लड़ाई जीत गया था, पर उसे संदेह था कि वह हार तो नहीं गया।

"मई के शुरू में श्रीमान् ।"

"ठीक है। लौटकर हमसे मिलने अवश्य आना।"

उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया। अगर उन्होंने उसे एक मौका और दिया होता तो फ़िलिप अवश्य ही अपना विचार बदल देता। पर उनकी ओर से सारा मामला तय हो ही गया था। फ़िलिप घर के बाहर आया उसके स्कूल के दिन खत्म हो गये थे। वह आज़ाद था; पर जिस असीम प्रसन्नता की वह आशा कर रहा था, वह कहीं न थी। वह चाहरदीवारी के चारों ओर धीरे-धीरे घूमता रहा और उसका मन अधिक उखड़ा हुआ था। अब वह सोच रहा था कि उसे बेवकूफ़ी नहीं करनी चाहिये थी। वह जाना नहीं चाहता था, पर जानता था कि वह स्वयं कभी भी हेडमास्टर साहब के पास जाकर नहीं कह सकेगा कि वह ठहरना चाहता है। इस प्रकार वह अपनी मानहानि स्वयं नहीं कर सकता था। वह सोच रहा था क्या उसने सही किया। वह अपने और अपनी परिस्थितियों से असंतुष्ट था वह एक तरह के आलस से अपने से पूछ रहा था कि क्या ऐसा हमेशा होता है कि अपनी मनोवांछित वस्तु पाकर आदमी सोचता है कि न पाया होता तो ज्यादा

अच्छा होता !

मिस विल्किसन फ़िलिप के चाचा की पुरानी मित्र थीं। मिसेज़ कैरी से उनका पत्र-व्यवहार चला करता था और दो तीन बार वे ब्लैकस्टेबिल के 'विकारेज' में अतिथि के रूप में रही भी थीं—ऐसे अतिथियों को जो हमेशा न आते थे, रहने के लिए कुछ खर्च करना पड़ता था। वे भी यही करती थीं। जब यह निश्चित हो गया कि फ़िलिप की बात मान लेने में ही कम मुसीबत होगी, तो मिसेज़ कैरी ने मिस विल्किसन से सलाह माँगी। विलिकसन ने जर्मन सीखने के लिये हीडेल-बर्ग सबसे अच्छी जगह बताई और रहने के लिये फ्राँ[1] प्रोफेसर आर्लिन का घर सबसे आरामदेह घर: फ़िलिप वहाँ तीस मार्क प्रति सप्ताह खर्च करके रह सकता था और प्रोफेसर स्वयं, स्थानीय हाई स्कूल में जो शिक्षक थे, उसे बताते रहेंगे। मई की एक सुबह फ़िलिप वहाँ पहुंच गया। स्टेशन से सामान लेकर आने वाले पोर्टर ने उसे एक बड़े सफेद मकान के मुख्य द्वार के सामने लाकर छोड़ दिया। गन्दे कपड़े पहने हुए एक लड़का बाहर आया और उसे ड्राइंग रूम में ले गया।

कुछ देर बाद, खाना बनाने की खुशबू साथ लिये श्रीमती प्रोफेसर अन्दर आईं। छोटा कद, बहुत मज़बूत, कसे हुये बाल, लाल चेहरा, मोती के दानों सी चमकती छोटी-छोटी आँखें, और बड़ा खुशदिल व्यवहार। फ़िलिप के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर वे मिस विलिकसन के बारे में पूछने लगीं, जिन्होंने दो बार कुछ सप्ताह उनके साथ बिताये थे। फ़िलिप उन्हें समझा नहीं सका कि वह मिस विलिकसन को नहीं जानता था। तब उनकी दो लड़कियाँ आईं। फ़िलिप को वे जवान नहीं मालूम पड़ीं, लेकिन शायद वे पच्चीस वर्ष से अधिक उम्र की न थीं: बड़ी, थकेला, अपनी माँ की तरस छोटे कद, उसी स्वाभाव की थीं, पर उनका चेहरा सुन्दर और बाल घने काले थे; अन्ना उसकी छोटी

---

१. फ्राँ (जर्मन) = श्रीमती।

वहन, लम्बी और सीधी सादी थी, पर चूंकि उसकी मुस्कान मनमोहक थी, फ़िलिप ने फौरन उसी को पसन्द कर लिया। कुछ मिनटों की नम्र बातचीत के बाद श्रीमती प्रोफेसर फ़िलिप को अन्दर लिवा ले गई और वहाँ उसे छोड़ दिया। कमरा एक छोटी मीनार पर 'ऐनलेज' में लगे पेड़ों के ऊपर था, बिस्तर एक छोटे दरबे में था, इसलिए डेस्क पर बैठने पर सोने का कमरा सा मालूम ही नहीं पड़ता था। फ़िलिप ने अपना सामान खोला और अपनी सारी किताबें सजाकर रख दीं। अखिर कार वह अपना स्वामी था।

एक बजे खाना खाने की घंटी बजी और उसने देखा कि श्रीमती प्रोफेसर के अतिथि ड्राइंग रूम में एकत्रित हो रहे हैं। उसका परिचय उनके पति से कराना गया, जो अधेड़ अवस्था के घने बालों वाले आदमी थे, जो अब भूरे पड़ते जा रहे थे और हल्की नीली आंखें थीं। उन्होंने फ़िलिप से सही, परन्तु पुराने ढंग की अँग्रेजी में बातें कीं, जो उन्होंने बातचीत में नहीं वरन् अँग्रेजी के ग्रन्थों का अध्ययन करके सीखी थीं। उन्हें वे अजीब शब्द प्रयोग में लाते देखकर बड़ा अजीब मालूम पड़ रहा था जो उसने सिर्फ शेक्सपियर के नाटकों में पढ़े थे। ड्राइंग रूम के पीछे वाले बड़े कमरे में जब वे खाना खाने बैठे तो फ़िलिप ने देखा, कुल सोलह व्यक्ति थे। श्रीमती प्रोफेसर की बगल में कई वृद्धा स्त्रियाँ बैठी थीं पर फिलिप ने उन पर अधिक ध्यान नहीं दिया। दो नवयुवतियाँ थीं, दोनों खुले रंग की और उनमें से एक बहुत सुन्दर, जिन्हें फ़िलिप ने फ्रॉलीन[1] हेडाविग और फ्रालीन कैसिली के नाम से पुकारे जाते सुना। वे पास-पास बैठी थीं और दबी हुई हँसी के साथ एक दूसरे से बातें कर रही थीं। कभी-कभी वे फ़िलिप की ओर देखतीं और उनमें से एक फुसफुसा कर कुछ कह पड़ती। दोनों हँस पड़ती और फ़िलिप यह समझकर कि वे उसका मज़ाक उड़ा रही हैं, शर्मा जाता। उनके पास

१. फ्राँलीन (जर्मन)=कुमारी।

एक चीनी आदमी बैठा था । उसका चेहरा पीला था और मुस्कान खुली हुई । वह यूनिवर्सिटी में पश्चिमी देशों की दशाओं का अध्ययन कर रहा था। वह एक अजीब तरह के उच्चारण के साथ इतनी जल्दी बोलता कि लड़कियाँ उसे हमेशा समझ न पातीं, और तब वे खिल-खिला कर हँस पड़तीं । वह भी आनन्द लेता हुआ हँस पड़ता और ऐसे समय उसकी आंखें मुँद जातीं । काले कोट पहने, पीले चेहरे और सूखे चमड़े वाले तीन अमेरिकन आदमी भी बैठे थे : वे धर्म-शिक्षा के विद्यार्थी थे। जर्मन ठीक से न बोल पाते थे और उनके उच्चारण करने के ढंग न्यूइंगलैंड के ढंग का मिश्रण था। फ़िलिप ने उन्हें सन्देह से देखा, क्योंकि उसे अमेरिकनों को जंगली और हतोत्साह असभ्य समझना सिखाया गया था।

बाद में जब वे ड्राइंग-रूम की कड़ी हरी मखमल की कुर्सियों पर थोड़ी देर बैठे रहे थे, कुमारी अन्ना ने फ़िलिप से पूछा कि क्या वह उनके साथ घूमने चलना पसन्द करेगा।

फ़िलिप ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। पार्टी अच्छी बन गई थी। श्रीमती प्रोफेसर की दोनों दूसरी लड़कियाँ, एक अमेरिकन विद्यार्थी और फ़िलिप अन्ना और कुमारी हेडविग के बगल में चल रहा था। वह जरा चंचल हो उठा था । लड़कियों से अभी तक उसका परिचय नहीं रहा था। ब्लैकस्टेबिल में सिर्फ किसानों और स्थानीय व्यापारियों की लड़कियाँ थीं । वह उन्हें पहचानता था और उनके काम जानता था, पर वह साहसहीन था और सोचता था कि वे उसके फ़ीलपाँव पर हँसती थीं। पादरी साहब और मिसेज़ कैरी ने अपनी ऊंची और किसानों की स्थिति में जो अन्तर बताया था, फ़िलिप ने उसे प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया था। डाक्टर की दो लड़कियाँ थीं, पर वे फ़िलिप से उम्र में बहुत बड़ी थीं और जब वह बच्चा ही था, उनका मेल डाक्टर के सहायकों से हो गया था । स्कूल में दो तीन लड़-कियाँ थीं, जिनमें शालीनता से अधिक निर्भयता थी और जिन्हें स्कूल के

कुछ लड़के जानते थे। इनके रहस्यों के बारे में पुरुषों द्वारा कल्पना की गई अनेक कहानियाँ प्रचलित थीं; पर फ़िलिप ने अपने मन में बाह्य घृणा के भीतर उनमें उपजा हुआ भय छिपा रक्खा था। उसकी कल्पना और पढ़ी हुई किताबों ने उसमें बायरन[1] जैसा स्वभाव पैदा कर दिया था और वह दुःख पूर्ण आत्मप्रवचना और स्त्रियों के लिये 'नायक' बनाने की इच्छा के बीच फिसल रहा था। उसे अब लगा कि उसे खुश और प्रसन्न चित्त रहना चाहिये, पर उसका दिमाग खाली सा था और बहुत कोशिश करने पर भी कहने की कोई बात सोच न सका। कुमारी अन्ना कभी-कभी उससे बात कर लेती थी, जैसे कर्त्तव्य का पालन कर रही हो, पर दूसरी कुछ नहीं बोल रही थी। वह कभी-कभी उसकी ओर चमकती आँखों से देखती और कभी उसे परेशान सा करके हँस पड़ती। फ़िलिप सोच रहा था कि वह उसे बिलकुल बेवकूफ समझ रही है। एक पहाड़ी के किनारे चीढ़ के दरख्तों के नीचे से वे चले जा रहे थे और उनकी खुशनुमा खुशबू से फ़िलिप के मन में एक प्रकार का आह्लाद भरता जा रहा था। दिन में थोड़ी गर्मी थी और आसमान में बादल नहीं थे। आखिर वे एक ऐसी खुली हुई जगह पर पहुंचे, जहाँ से चमकती धूप में फैली हुई राइन[2] की घाटी उन्हें दिखलाई पड़ती थी। भूमि का असीम विस्तार था, सुनहरी रोशनी से दमकता हुआ और दूर पर शहर थे और उसके बीच नदी चाँदी के फीते की तरह मरोड़ खा रही थी। केन्ट के जिस भाग से फ़िलिप परिचित था उसमें इस तरह के विस्तृत भूमि-विस्तार नहीं थे और समुद्र से ही चौड़े क्षितिज का भास होता था। अपने सामने की असीम दूरी से उसमें एक प्रकार की अजीब और अवर्णनीय सिहरन भर उठी। उसे सहसा लगा यह बहुत ऊँचा उठ गया है। यद्यपि उसे मालूम नहीं था, यह पहली बार था जब उसने वाह्य भावनाओं रहित

---

१. उन्नीसवीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध अंगरेज कवि। २. जर्मनी की एक नदी।

सौंदर्य का, उनके स्वाभाविक रूप में पान किया। वे तीनों एक बेंच पर बैठ गये, क्योंकि और लोग आगे चले गये थे। लड़कियाँ जर्मन में तेजी से बातचीत कर रही थीं और फ़िलिप उनका सामीप्य भूल कर अपनी आँखों द्वारा नैसर्गिक सौंदर्य का पान कर रहा था।

"हे ईश्वर, मैं कितना खुश हूँ," उसने जैसे अपने को भूलकर स्वयं से कहा।

फ़िलिप को डेनावर्ग में रहते तीन महीने हुए होंगे कि एक दिन सवेरे श्रीमती प्रोफेसर ने उसे बताया कि हेवर्ड नाम का एक अंग्रेज वहाँ रहने आ रहा है, और उसी शाम को खाने के समय उसे एक नया चेहरा दिखलाई पड़ा। कुछ दिनों तक सारा परिवार एक प्रकार की उत्तेजना की दशा में रहा। पहला कारण तो यह था कि जिस अंग्रेज नवयुवक से कुमारी थेकला की मंगनी हो चुकी थी, उसके माता पिता ने उसे इंग्लैंड आने का निमंत्रण दिया था। एक हफ्ते बाद कुमारी हेडविग ने चमकती मुस्कानों के साथ बताया कि उसके प्रेम का अधिकारी लेफ्टिनेण्ट अपने माता-पिता के साथ हीडेलबर्ग आ रहा है। अन्ना फ़िलिप को चिढ़ाने लगी कि अब उसकी प्रेयसी उससे अलग होने वाली है और फ़िलिप को बेचैनी और कुछ दुःख भी महसूस होने लगा। कुमारी हेडविग ने कई गीत गाये, कुमारी अन्ना ने 'वेडिंग मार्च' बजाया, और प्रोफेसर भी गाये बिना न रह सके। इन खुशियों के बीच फ़िलिप ने नये आगन्तुक पर कोई ध्यान नहीं दिया। वे खाना खाने एक दूसरे के सामने बैठे, लेकिन फ़िलिप व्यस्त-सा कुमारी हेडविग से बातें करता रहा, और आगन्तुक, जो जर्मन न जानता था, चुप-चाप खाना खाता रहा।

अगले दिन तक फ़िलिप ने उससे बातें नहीं कीं। डिनर से पहले उन्होंने एक दूसरे को ड्राइंगरूम के सामने के बरामदे में अकेला पाया। हेवर्ड ने उसे सम्बोधित किया।

"तुम अंगरेज हो, है न?"

"हाँ।"

"क्या यहाँ का खाना कल रात की ही तरह रद्दी बनता है ?"

"हाँ, हमेशा इसी तरह का।"

"भयानक है, है न ?"

"हाँ, भयानक है।"

फ़िलिप को खाने में कोई बुराई नहीं दिखाई पड़ी थी और वास्तव में उसने तो खूब खुशी से अधिक मात्रा में खाया था। लेकिन वह अपने को ऐसा आदमी नहीं दिखाना चाहता था कि जिस खाने को एक आदमी बुरा कह रहा हो उसे वह अच्छा कहे।

कुमारी थेकला के इंगलैंड चले जाने से उसकी बहन का घर में अधिक काम करना आवश्यक हो गया और लम्बी-लम्बी सैरों के लिये समय निकालना उसके लिये असम्भव हो गया। कुमारी कैसिली को इधर कुछ दिनों से सोसाइटी में आना रुचिकर न मालूम पड़ रहा था। कुमारी हेडविग चली गई थी और बीक्स, उनके साथ सैर करने वाला अमेरिकन, दक्षिण जर्मनी का भ्रमण करने चला गया था। काफी समय तक फ़िलिप अकेला ही रहता, हेवर्ड उससे जान पहचान बढ़ाना चाहता था; परन्तु फ़िलिप का अजीब सा स्वभाव हो गया था, शर्म और गुफा निवासियों से विरासत में मिली हुई हीनता की भावना के कारण वह पहली जान पहचान में हमेशा ही आदमियों को घृणा करने लगता था। जब वह साथ रहते-रहते उनका अभ्यस्त हो जाता था तभी अपने मस्तिष्क पर पड़े प्रथम प्रभाव पर विजय कर पाता था। उससे जान पहचान कर सकना दूसरे लोगों के लिये भी मुश्किल ही था। हेवर्ड की इच्छा का स्वागत वह बहुत संकोच के साथ करता और एक दिन जब हेवर्ड ने घूमने चलने का प्रस्ताव रक्खा तो वह इसलिये तैयार हो गया कि न जाने का कोई बहाना नहीं था। उसके गाल सुर्ख हुये जा रहे थे और वह उन पर अधिकार न पा रहा था, इस कारण उसे क्रोध भी आ रहा था। अपने क्रोध को हँस कर उड़ा देने की कोशिश करते हुए उसने हमेशा की तरह क्षमा-प्रार्थना की।

"मुझे भय है कि मैं ज्यादा तेज नहीं चल सकता ।"

"हे ईश्वर मैं कोई शर्त लगा कर थोड़े ही चलता हूं । मैं तो धीरे-धीरे टहलना ही पसन्द करता हूँ । क्या तुम्हें 'मैरियस' का यह अध्याय याद नहीं जहाँ पीटर लिखता है कि धीरे-धीरे चलना ही बातें करने को सबसे अधिक अच्छा है ?"

वे टहलते हुये किले तक चले गये और घास के मैदान पर बैठ गये जिसके सामने पूरा नगर दिखाई पड़ रहा था । हँसी खुशी से बहती हुई नेक[1] की गोद में वह अधिक शान्ति से बसा हुआ था । चिमनियों से निकलने वाला धुआँ उसके ऊपर ठहर गया था, एक हलके नीले रंग के धुंधलके सा; और लम्बी छतें, गिरजों के स्पायर[2] उसे एक सुखमय मध्ययुगीन नगर की तरह बना रहे थे । एक अजीब तरह का घर-का-सा वातावरण उनके चारों ओर था, जिसके कारण उनके दिलों में गर्मी सी भर गई थी । हेवर्ड रिचर्ड[3] मदान बांबरी[4], वर्लेन[5], दाँते[6] और मैथ्यूआर्नल्ड[7] के विषय में बात कर रहा था । उन दिनों में फिट्जगेरैल्ड[8] का लिया हुआ उमर खैय्याम[9] का अनुवाद सिर्फ चुने हुए आदमियों को ही मालूम था । हेवर्ड ने फ़िलिप को उसे सुनाया । वह अपनी और दूसरों की कवितायें सुनाने का बहुत शौकीन था, और ऐसा वह उतार चढ़ाव रहित स्वर में किया करता था । घर पहुँचने तक हेवर्ड के प्रति फ़िलिप का अविश्वास आवेशमय प्रशंसा में बदल गया था ।

---

१. जर्मनी की एक छोटी नदी । २. गिरजे के गुम्बद के ऊपर लगी हुई धातु की छड़ । ३. अंग्रेज लेखक । ४. फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार फ़्लादेय का अमर उपन्यास । ५. फ्रांस का लेखक । ६. इटली का अमर कवि । ७. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का अंगरेज कवि और आलोचक । ८. उन्नीसवीं शताब्दी का कवि, उमर खैय्याम की रूबाइयों के अनुवाद के लिए प्रसिद्ध । ९. ईरान का कवि ।

दोपहर के बाद रोज घूमने जाने की दोनों व्यक्तियों ने आदत डाल ली और फ़िलिप को हेवर्ड की परिस्थितियों के बारे में कुछ मालूम पड़ा। वह देहात के एक जज का लड़का था, जिनकी मृत्यु हो जाने पर उसे तीन सौ पौण्ड प्रति वर्ष की विरासत मिली थी। चार्टर-हाउस में उसका रिकार्ड इतना शानदार था कि जब वह कैम्ब्रिज गया तो ट्रिनिटी हॉल के मास्टर ने अपने रास्ते से अलग हटकर उसे बताया कि वह कालेज में कैसे रहेगा। उसने भी अपने को अधिक प्रसिद्धिमय पथ के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। वह बौद्धिक व्यक्तियों के बीच उठता, बैठता। ब्राउनिंग[१] को वह उत्साह से पढ़ता और टेनीसन[२] की ओर से आँखें फेर लेता; हैरियेट[३] के प्रति शैली[४] के व्यवहार के बारे में उसे सब कुछ मालूम था; वह कला का इतिहास पढ़ता। उसके कमरों की दीवारों पर जो एक वॉट्स[५], बर्न जोन्स[६] और बॉटिसेली[७] द्वारा निर्मित चित्रों के प्रति रूप टंगे थे; वह निराशा वादी कवितायें लिखता था और उसमें उसे कुछ प्रसिद्धि भी मिली थी। समय बीतने की वह कला और साहित्य का अच्छा मर्मज्ञ हो गया।

तब हेवर्ड कानून पढ़ने के लिये लन्दन चला गया। 'क्लीमेन्ट्स इन' में उसके बड़े सुन्दर कमरे थे और वह कोशिश किया करता था कि वे कमरे ट्रिनिटी हॉल के कमरों जैसे दिखलाई पड़ें। उसकी महत्त्वाकांक्षायें कुछ-कुछ राजनीतिक थीं, वह स्वयं को ह्विग[८] कहता था और एक किबरल[९] क्लब का सदस्य था। उसका विचार वकालत करने का था और जितनी जल्दी उसके किये गये वादे पूरे हो जायेंगे उतनी ही जल्दी किसी निर्वाचन क्षेत्र के उम्मीदवार बनने का इरादा भी था; इसी बीच

---

१. उन्नीसवीं शताब्दी का अंगरेज़ कवि। २. उन्नीसवीं शताब्दी का अंगरेज़ कवि। ३. प्रसिद्ध अंगरेज कवि शैली की पत्नी। ४. उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध का कवि। ५-६-७. अंगरेज़ चित्रकार। ८-९. इंगलैंड की दो राजनैतिक संस्थायें।

में वह ऑपेरा भी देखता रहा और कुछ ऐसे खुशनुमा व्यक्तियों से जान-पहचान बढ़ाता रहा जिनकी रुचि उनकी ही रुचि की तरह थी। उसने अपने से कुछ अधिक अवस्था की एक महिला से प्लैटोनिक[1] मित्रता कर ली। वह महिला केनसिंगटन स्क्वायर में रहती थी और लगभग प्रतिदिन दोपहर के बाद दोनों साथ साथ चाय पिया करते और जार्ज मेरीडिथ[2] तथा वाल्टर पेटर की बातें किया करते थे। यह प्रसिद्ध था कि वे कौन्सिल की परीक्षायें एक बेवकूफ़ भी पास कर सकता था और उसका अध्ययन यों ही ढीले-ढाले रूप में चलता रहा। फ़ाइनल इम्तहान अपनी बेइज़्जती सा मालूम पड़ा। उसी समय केन सिंगटन स्क्वायर वाली महिला ने बताया कि उसके पति छुट्टी लेकर भारतवर्ष से वहाँ आ रहे हैं, और वह हर तरह से योग्य पादरी हैं, परन्तु उनका मस्तिष्क साधा ण आदमियों सा ही है और वह एक नवयुवक का बार-बार वहाँ आना समझ न सकेंगे। हैवर्ड को लगा कि उसका जीवन बदसूरती से भर उठा है, परीक्षकों के पागलपन का सामना करने से उसकी आत्मा विद्रोह करने लगी और पैरों के पास पड़ी हुई गेंद को ठोकर मार देना उसे बड़ा अच्छा लगा। उस पर कर्ज भी काफी हो गया था : तीन सौ पौण्ड प्रति वर्ष में लन्दन में भले आदमियों की तरह रहना असम्भव हो गया था; और हृदय में वेनिस और फ्लोरेंस को देखने की महत्वाकांक्षा उठने लगी, जिनका वर्णन जॉन रस्किन ने इतनी सुन्दरता पूर्वक किया था। उसे महसूस हुआ कि वकालत के पेशे के लिए वह उपयुक्त नहीं है और आधुनिक राजनीति में शराफ़त नहीं है। उसे लगा कि वह कवि है। कर्ल-मेंट्स के अपने कमरे उसने बेच दिये और इटली चला गया। एक जाड़ा फ्लोरेंस और एक रोम में बिता कर वह जर्मनी में अपनी दूसरी गर्मी बिता रहा था जिससे कि वह गेटे को मूल में पढ़ सके।

---

१. वासनाहीन २. अंगरेज़ कवि और उपन्यासकार।

हेवर्ड का एक गुण बहुत मूल्यवान था। साहित्य के लिये उसके हृदय में सच्ची भावनायें थीं और वह अपना प्रेम बड़े प्रभावोत्पादक ढंग से व्यक्त कर सकता था। वह लेखक की भावनाओं के साथ अपने को एक कर देता था और उसकी सारी अच्छाइयों को ग्रहण कर लेता था, और तब उसके बारे में पूरी समझ के साथ बोल सकता था। फ़िलिप का अध्ययन काफी विस्तृत था, पर उसने बिना चुनाव किये जो कुछ पाया, पढ़ डाला था, और अब किसी ऐसे आदमी का मिल जाना उसके लिए अच्छा ही था जो उसकी रुचि का परिमार्जन कर सके। शहर के छोटे पुस्तकालय से किताबें लाकर हेवर्ड की बनाई हुई सारी अच्छी चीजें पढ़ना उसने शुरू कर दिया। पढ़ने में हमेशा ही उसे आनन्द न आता, पर पढ़ता वह बड़ी मेहनत से था। अपनी उन्नति का वह इच्छुक था। वह अपने को बड़ा अज्ञानी, बड़ा छोटा समझता था। अगस्त के अन्त तक, जब वीक्स दक्षिण जर्मनी से लौट कर आया, फ़िलिप पूर्णतया हेवर्ड के प्रभाव में आ गया था। हेवर्ड वीक्स को पसन्द नहीं करता था। वह वीक्स के काले कोट और लाल पैन्ट की बुराई करना, और उसकी न्यू इंगलैंड की आत्मा की बात करके उपेक्षा से कंधे उचकाता। हेवर्ड अपने रास्ते से अलग हटकर फ़िलिप पर उदारता दिखाने गया था। इस कारण फ़िलिप वीक्स को दी हुई उसकी गालियाँ चुपचाप सुनता रहता। परन्तु जब क्ली वीक्स हेवर्ड के बारे में अशोभन बातें करता तो वह फौरन नाराज़ हो उठता।

हेवर्ड बड़े दिन के कुछ पहले ही दक्षिण की ओर चला गया। जर्मन लोगों को किसी प्रकार की खुशियाँ मनाना अब पसन्द नहीं था। उस मौसम की खुशियों की बात सोच-सोच कर उसे सिर दर्द होने लगता और उनसे कतराने की इच्छा से उसने निश्चय किया कि बड़े दिन के आस-पास यह यात्रा ही करता रहेगा।

उसके जाने का फ़िलिप को दुःख नहीं हुआ क्योंकि वह सीधा आदमी था और यह जानकर उसे चिढ़ लगती थी कि कोई अपने ही विचारों को

न जानता हो। यद्यपि हेवर्ड का प्रभाव उस पर बहुत था, परन्तु वह यह नहीं मानता था कि अनिश्चय का इशारा एक सुन्दर संवेदनशीलता की ओर होता है; हेवर्ड उसके सीधे वचनों को तनिक उपेक्षा से देखता था और फ़िलिप उनका भी विरोध करता था। वे पत्र-व्यवहार करते रहे। हेवर्ड बहुत अच्छे पत्र लिखता था और यह जानकर उन्हें लिखने में मेहनत भी क़ाफी करता था। उसका स्वभाव जिन सौन्दर्यमय प्रभावों के सम्पर्क में आता था उन्हें ग्रहण कर लेता था और रोम से लिखे हुए अपने पत्रों में इटली की निश्चित सुगन्धि भर सका था। वह गिरजाघरों के पुराने संगीत, और अलबन हिल्स, और धूप की देर तक रहने वाली खुशबू और बरसते पानी में सड़कों के सौन्दर्य— जब फुटपाथ चमकते थे, और सड़क के लैम्पों की रोशनी रहस्यमय होती थी—लिखा करता था। शायद ये प्रशंसा योग्य पत्र वह अपने सभी दोस्तों को लिखा करता था। उसे नहीं मालूम था कि फ़िलिप पर उनका कैसा परेशान करने वाला प्रभाव पड़ता था। लगता था उन्होंने उसका जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया हो। वसन्त के आगमन पर वह अत्यधिक आवेशमय हो उठा। उसने प्रस्ताव रक्खा कि फ़िलिप इटली चला आये। वह हीडेलबर्ग में अपना समय नष्ट कर रहा था। जर्मन सभ्य नही हैं और वहाँ का जीवन साधारण है। वैसे अनिश्चित वातावरण में आत्मा का विकास कैसे हो सकता था? टस्कैनी में, वसन्त सारी भूमि पर फूल बिखरा रहा था, और फ़िलिप उन्नीस वर्ष का था; वह आ जाये तो वे अम्ब्रिया के पहाड़ी नगरों में विचरण कर सकेंगे। उनके नाम फ़िलिप के हृदय में गूंज उठते और कैसिली भी अपने प्रेमी के साथ इटली चली गई थी। जब वह उनके बारे में सोचता, फ़िलिप एक प्रकार की बेचैनी से भर उठता, जिसका कोई कारण वह नहीं बता सकता था। वह अपने भाग्य को कोसता क्योंकि यात्रा करने के लिये उसके पास धन न था, और उसे मालूम था कि उसके चचा पूर्व निश्चित पन्द्रह पौंड प्रति माह से अधिक नहीं भेजेंगे। उसने अपने धन का उपयोग ठीक से नहीं किया था। उसकी

पेंशन और कक्षा का मूल्य चुकाने के बाद उसके पास बहुत कम बच रहता था और हेवर्ड के साथ घूमना काफी कीमती था। कभी-कभी जब फ़िलिप के महीने वाले पैसे ख़त्म होने को होते, हेवर्ड कहीं घूमने या नाटक देखने, या शराब की बोतल का प्रस्ताव रख देता; और अपनी अवस्था की गलती के अनुसार वह यह स्वीकार करने में हिचकिचाता कि वह खर्चा बर्दाश्त नहीं कर सकता।

सौभाग्य से हेवर्ड के पत्र कभी-कभी ही आते थे और बीच के दिनों में फ़िलिप अपने व्यस्त जीवन में डूब जाता था। विश्वविद्यालय में उसने मैट्रिक पास कर लिया था और लेक्चरों के एक-दो कोर्स भी सुन चुका था। कूले फ़िशर उस समय अपने प्रसिद्धि के शिखर पर थे और जाड़े में शापेनहावर पर बड़े सुन्दर भाषण दे रहे थे। यह फ़िलिप के लिये दर्शन शास्त्र से पहली भेंट थी। विषय की निराशा उसके यौवन को आकर्षित करती थी; और उसे विश्वास हो गया था कि जिस दुनिया में वह प्रवेश करने वाला है, वह दयाहीन कष्टों और अन्धकार की जगह है। उससे वह उसमें प्रवेश करने को और उत्कंठित हो उठा और जब, समय आने पर मिसेज़ कैरी, जो उसके अभिभावक के विचारों को उस तक पहुँचाया करती थीं, ने सुझाया कि अब उसे इंगलैंड लौट आना चाहिये तो वह आवेश से तैयार हो गया। अब उसे निश्चय कर ही लेना पड़ेगा कि उसे क्या करना है। यदि वह जुलाई के अन्त में हीडेलबर्ग छोड़ेगा, तो अगस्त में वे सारी बातें कर सकेंगे और प्रबन्ध करने के लिये वह समय अच्छा रहेगा।

फ़िलिप के प्रस्थान की तिथि निश्चित हो गई और मिसेज़ कैरी ने फिर उसे पत्र लिखा। उन्होंने उसे मिस विलिकसन की याद दिलाई, जिनकी कृपा से ही हीडेलबर्ग में वह श्रीमती अर्लिन के घर में रहा था और लिखा कि उन्होंने उनके साथ कुछ हफ़्ते ब्लैकस्टेबिल में बिताने का निश्चय किया है। अमुक दिन वे फ्लशिंग से आती हुई वहाँ से गुज़रेंगी, और यदि वह भी उसी समय यात्रा कर रहा हो, तो उन्हें देख ले और

उनके साथ ही ब्लैकस्टेबिल चला आये। फ़िलिप की शर्म ने फौरन उससे लिखवा दिया कि वह उससे एक या दो दिन बाद ही रवाना हो सकेगा।

आख़िर उसने हीडेलबर्ग के लिये प्रस्थान कर दिया। तीन महीने से वह केवल भविष्य के बारे में सोच रहा था; और बिना पश्चाताप के चल पड़ा। उसे मालूम नहीं था कि वहाँ वह खुश था या नहीं। कुमारी अन्ना ने उसे एक किताब दी, और बदले में उसने विलियम मैरिस[1] की कविताओं का एक संग्रह उसे उपहार में दिया। बड़ी बुद्धिमानी से दोनों ने एक-दूसरे के उपहारों को कभी नहीं पढ़ा।

अपने चाची और चाचा को देखकर फ़िलिप आश्चर्य में पड़ गया। उसने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था कि वे बूढ़े हो गये हैं। विकर ने हमेशा की तरह उनका स्वागत किया। वे थोड़े मोटे हो गये थे, उनके कुछ बाल और झड़ गये थे और कुछ भूरे पड़ गये थे। फ़िलिप ने देखा कि वे कितने महत्वहीन थे। उनका चेहरा कमजोर और अपने में व्यस्त था। लुइज़ा चाची ने उसे अपने हाथों में लेकर चूम लिया। खुशी के आँसू उनके गालों पर बहने लगे। फ़िलिप का हृदय छू गया और उसे कुछ अजीब सा लगा। वह नहीं जानता था कि कितने भूखे प्यार से चाची उसकी परवाह करती थीं।

"ओह तुम्हें यहाँ से गये कितने दिन हो गये, फ़िलिप," उन्होंने कहा।

उन्होंने उसका हाथ थपथपाया और खुशी से भरी आँखों से उसका चेहरा देखा।

"तुम बहुत बड़े हो गये हो। अब तो तुम पूरे आदमी हो।"

उसके ऊपर होंठ पर छोटी-सी मूंछें उग आई थीं। उसने एक रेजर खरीद लिया था और कभी-कभी अत्यधिक सावधानी से अपनी चिकनी

---

१. एक अंग्रेज़ कवि (उन्नीसवीं सदी)।

ठुड्डी के आस-पास शेव किया करता था।

"तुम्हारे बिना हम बहुत अकेले रहे हैं।" और तब जरा संकोच से, टूटती सी आवाज में, उन्होंने पूछा, "अपने घर लौट कर तुम खुश हो, है न?"

"हाँ।"

वह इतनी दुबली थीं कि लगभग पारदर्शक मालूम पड़ती थीं, उसकी गर्दन के चारों ओर पड़े हुए उनके हाथ केवल हड्डी भर थे और मुर्गी की हड्डियों की याद दिलाते थे, और उनका आशाहीन चेहरा ओह! कितनी झुर्रियों से भर गया था। उनका छोटा, मुर्झाया शरीर पतझड़ की तरह था, जो लगता था, किसी भी तेज हवा के झोंके से उड़ जायगा। फ़िलिप ने महसूस किया कि वे अपना जीवन जी चुके हैं, ये दो शान्त आदमी: वे गुजरी हुई पीढ़ी के आदमी थे और धैर्यपूर्वक अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे और वह, अपने यौवन और शक्ति के मद में उत्तेजना और ऐडवेन्चर का इच्छुक, उनकी बरबादी पर आश्चर्य कर रहा था। उन्होंने कुछ नहीं किया था और जब वे मर जायेंगे तो ऐसा लगेगा जैसे उनका अस्तित्व ही कभी न था। लुइजा चाची के लिये उसको अधिक तरस आया और सहसा वह उन्हें प्यार करने लगा क्योंकि वे उसे प्यार करती थीं।

तब मिस विल्किंसन, जो कैरी दम्पति को अपने भतीजे का स्वागत करने के लिए अवसर देने को जान बूझ कर अलग हो गई थीं, कमरे में आईं।

"ये हैं मिस विल्किंसन, फ़िलिप," मिसेज कैरी ने कहा।

मिस विल्किंसन ने अपना हाथ बढ़ाते हुये कहा," शाहखर्च साहब वापस आ गये। साहब के 'बटन होल' के लिये मैं एक फूल लाई हूँ।"

एक मधुर मुस्कान के साथ अभी-अभी बाग में तोड़े हुए फूल को उन्होंने फ़िलिप के कोट में लगा दिया। वह शर्माया, उसे बड़ा अजीब लगा। उसे मालूम था कि मिस विल्किंसन विलियम चचा के आखरी

रेक्टर [1] की पुत्री थी और गिरजे से सम्बन्धित व्यक्तियों की लड़कियों से उसकी बहुत जान पहचान थी। वह बुरी तरह फटे कपड़े और मजबूत जूते पहना करती थीं। कपड़े अधिकतर काले ही होते। उनके बाल बड़ी असावधानी से गूंथे गये होते और उनके शरीर से कलफ किये हुए लीनेन की तेज बू आया करती। स्त्रियोचित गुणों को वह ठीक नहीं समझती थीं और वृद्धायें और युवतियाँ सभी एक ही तरह की दिखलाई पड़ती थीं। अपने धर्म की कट्टर पाबन्द थीं। गिरजे का सम्बन्ध निकट का होने के कारण शेष मानवता के प्रति उनका व्यवहार डिक्टेटर का सा रहता।

मिस विल्किसन में बड़ा अन्तर था। वह सफेद मसलिन का गाउन, जिस पर छोटे-छोटे भूरे फूलों के गुच्छे छपे थे, नोकदार ऊँची ऐडी के जूते, मोजों के साथ, पहने थीं। फिलिप के अनुभव से उसे लगा कि उनकी पोशाक बड़ी अच्छी है, पर उसने ध्यान नहीं दिया कि उनका फ्रॉक सस्ता और दिखावटी है। उनके बाल बड़ी सावधानी से बंधे थे और मत्थे के बीच में एक बढ़िया छल्ला था; वह काला, चमकदार और सख्त था, और लगता था कि वह कभी बिगड़ नहीं सकता। उनकी आँखें काली और बड़ी थीं और नाक कुछ मुड़ी हुई थी; बगल से देखने पर वह शिकारी पक्षी की तरह दिखलाई पड़ती थीं, पर सामने से आकर्षक थीं। वह मुस्कराती अधिक थीं, पर उनका मुँह बड़ा था और मुस्कराते समय अपने बड़े और कुछ पीले दांत छिपाने की कोशिश करती थीं। लेकिन जिससे फ़िलिप को सबसे अधिक परेशानी हुई, वह थी, कि वे पाउडर बहुत ज्यादा लगाये हुए थीं। स्त्रियों के व्यवहार के बारे में उसके विचार बड़े कठोर थे और वह सोचता था कि स्त्रियों को कभी पाउडर नहीं लगाना चाहिये।

फ़िलिप ने मिस विल्किसन को न पसन्द करने का निश्चय कर लिया।

---

१. गिरजे का एक अधिकारी।

दो या तीन दिन तक वह शान्त रहा और विरोध करता रहा। परन्तु मिस विल्किसन ने यह नहीं देखा। वह बातें करने को बड़ी तत्पर थीं। अपनी बात-चीत लगभग केवल उसी को संबोधित करके वे करतीं। वह उसे हँसाती भी और फ़िलिप बरबस उन आदमियों की ओर खिच ही जाता था जो उसका मनोविनोद करते थे। कभी-कभी वह बड़ी अच्छी बातें करता था और एक अच्छा श्रोता समझना भी सौभाग्य की बात थी। विकर और मिसेज कैरी दोनों में से कोई भी आदमी परिहास पसन्द नहीं करते थे, और कभी भी उसकी बातों पर न हँसते थे। जैसे-जैसे वह मिस विल्किंसन का अभ्यस्त होता गया, और उसकी शर्म कम होती गई, वह उन्हें अधिक पसन्द करने लगा। डाक्टर ने बाग में एक पार्टी दी, और उसमें मिस विल्किंसन दूसरों से बहुत अच्छी तरह कपड़े पहने थीं। वह बड़े सफेद धब्बों वाली नीली रेशम पहने थीं और उससे उत्पन्न हुई सनसनी से सिहर उठा।

एक दिन जब मिस विल्किसन अपने कमरे में थीं, उसने लुइजा चाची से पूछा कि मिस विल्किसन की उम्र कितनी है।

"ओह, प्रिय, कभी किसी महिला की उम्र मत पूछा करो; पर निश्चय ही तुम्हारे शादी करने के लिये वह बहुत बड़ी हैं।"

विकर धीमे से हँसे।

"वह कोई कम उम्र नहीं, लुइजा," उन्होंने कहा, "जब हम लिंकनशायर में थे वह लगभग सयानी हो गई थी और यह बीस साल पहले की बात है।"

"वह दस बरस से ज्यादा न रही होगी," फ़िलिप ने कहा।

"वह उससे ज्यादा होगी," लुइजा चाची बोली।

"मेरा खयाल है वह बीस बरस की थी," विकर ने कहा।

"अरे नहीं, विलियम, सोलह या सत्रह साल की रही होगी।"

"यानी अब वह तीस साल से अधिक है," फिलिप ने कहा।

उसी क्षण बेन्जामिन गार्ड का एक गीत गुनगुनाती हुई मिस

विल्किंसन नीचे आईं। उन्होंने हैट पहन रक्खा था, क्योंकि वह और फिलिप घूमने जा रहे थे और उन्होंने दस्ताने के बटन बन्द कराने को अपना हाथ फिलिप की ओर बढ़ा दिया।

अब उनके बीच में बातचीत आसानी से होने लगी और चलते-चलते वे सभी प्रकार की बातें करने लगे। वह फिलिप को बर्लिन के बारे में बताने लगीं और फिलिप ने हीडेलबर्ग में गुजरे अपने साथ की बातें कहीं।

तब मिस विल्किंसन ने यों ही हल्के ढंग से पूछा कि हीडेलबर्ग में उसने किसी से प्यार भी किया था या नहीं। बिना सोचें उसने स्पष्ट उत्तर दिया कि उसने प्यार नहीं किया था; पर उन्होंने विश्वास करने से इन्कार कर दिया।

"तुम कितना छिपाते हो!" उन्होंने कहा," तुम्हारी इस उम्र में क्या यह संभव है?"

वह शर्माया और हँसा।

"तुम बहुत ज्यादा जानना चाहती हो," उसने कहा।

"आह, यही मैं भी सोचती थी," वे विजयपूर्ण ढंग से हँसीं, "ओह कैसे झेंप रहे हो तुम!"

: ३ :

सैरेमनी से लौटने के पन्द्रह दिन बाद तक फिलिप के भविष्य के बारे में फिलिप और उसके चचा में गरमागरम बहस होती रही। उसने आक्सफोर्ड जाने से निश्चयात्मक ढंग से इन्कार कर दिया था और अब जब उसके वजीफा पाने की कोई आशा न रह गई, मिस्टर कैरी भी स्वयं इसी निर्णय पर पहुंचे कि वहां का खर्च वह बर्दाश्त नहीं कर सकता था। उसकी सारी सम्पत्ति दो हजार पौंड थी और यद्यपि उसे पाँच प्रतिशत सूद पर रेहन रखने में लगा दिया गया था, वह केवल ब्याज पर नहीं रह पाया था। उसकी सम्पत्ति अब कुछ कम हो गई थी।

वह सीधा लन्दन जाने का इच्छुक था। मिसेज कैरी का विचार था कि किसी शरीफ आदमी के लिए चार प्रकार के व्यवसाय होते हैं, सेना, नौसेना, कानून, और गिरजाघर। उन्होंने डाक्टरी का पेशा भी जोड़ दिया था क्योंकि उनके बहनोई डाक्टर थे, पर वह भूली नहीं थीं कि उनके यौवन के दिनों में डाक्टर को कोई शरीफ आदमी नहीं समझता था। पहले दो का तो प्रश्न ही नहीं था और फिलिप ने 'आर्डेन्ड' होने से निश्चय पूर्वक इन्कार कर ही दिया था। अब सिर्फ कानून रह गया था। स्थानीय डाक्टर साहब का मत था कि बहुत से आदमी अब इंजिनियरिंग में जाने लगे हैं। पर मिसेज कैरी ने फौरन इस विचार का प्रतिवाद किया।

"पिता की तरह उसे भी क्यों न डाक्टर बनाया जाय?" लुइजा चाची ने कहा।

"मैं बिलकुल पसन्द नहीं करता," फिलिप ने कहा।

मिसेज कैरी को दुःख नहीं हुआ। बाद का तो प्रश्न ही नहीं उठता था, क्योंकि वह आक्सफोर्ड नहीं जा सकता था और कैरी-दम्पत्ति का खयाल था कि कानून के लिए अब भी डिग्री का होना आवश्यक है। अन्त में यह तय हुआ कि वह किसी सालिसिटर के यहाँ उम्मीदवार हो जाये। उन्होंने परिवार के वकील, अलबर्ट निक्सन, जो हेनरी कैरी की सम्पत्ति के ब्लैकस्टेबिल के विकार के, साथ एक्जीक्यूटर' थे, को पत्र लिखा और पूछा कि क्या वह फिलिप को अपने यहाँ सहकारी बना लेंगे। एक दो दिन में उत्तर आया कि उनके यहां जगह नहीं है और वह इस स्कीम के बिलकुल विरुद्ध हैं। इस व्यवसाय में बड़ी भीड़ थी और बिना काफी रुपए या अच्छे रसूकों के आदमी मैनेजिंग क्लर्क से अधिक नहीं बन सकता। उन्होंने सुझाया कि फिलिप को चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट बनाया जाय। जिन चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट को अलबर्ट निक्सन ने तीस साल से काम दे रक्खा था उनके यहाँ एक जगह खाली थी और वे तीन सौ पौंड फीस लेकर फिलिप को अपने यहाँ रख लेंगे। इसका आधा भाग पाँच साल में

जब तक आर्टिकिल रहेंगे, उसे वेतन के रूप में वापस कर दिया जायगा। काम में अधिक उन्नति की गुंजाइश न थी, पर फिलिप को लगा कि उसे कुछ-न-कुछ निश्चय करना ही चाहिये और लन्दन में रहने के विचार ने उसके थोड़े अनमनेपन को सन्तुलित कर दिया। निश्चय हो गया और यह भी प्रबन्ध हो गया कि फिलिप पन्द्रह सितम्बर से काम शुरू कर देगा।

"मेरे लिए अभी पूरा एक महीना पड़ा है," फिलिप ने कहा।

"और तब तुम आज़ाद हो जाओगे और मैं बंधन में बँध जाऊंगी," मिस विल्किसन ने उत्तर दिया।

उनकी छुट्टियां छः हफ्ते की थीं और वह फिलिप से एक दो दिन पहले ब्लैकस्टैबिल छोड़ने वाली थीं।

"क्या जाने फिर कभी हम मिलें या नहीं," मिस विलिकसन ने कहा।

"कोई कारण क्यों नहीं मिलेंगे।"

"ओह, ऐसे रोज़ के ढंग पर मत बोलो। इतना अभावुक आदमी मैंने नहीं देखा।"

फिलिप का चेहरा लाल हो गया। उसे भय था कि विल्किसन उसे बेवकूफ समझेंगी और नामर्द भी : आखिर वह युवती थीं, कभी-कभी बड़ी सुन्दर और वह बीस वर्ष का होने वाला था; कितना भद्दा था कि वह साहित्य और कला के बारे में ही बात करते रहें। उसे उनसे प्यार करना चाहिये। उन्होने प्यार के बारे में काफी बातें की थीं। पेरिस में एक चित्रकार था जिसके परिवार में वे बहुत दिनों तक रही थीं : उसने उनसे बैठने को कहा था, और फिर इतने जोश से उनसे प्यार करना शुरू किया था कि उन्हें दुबारा न बैठने के लिये अनेक बहाने निकालने पड़े थे। यह स्पष्ट था कि मिस विल्किसन इस तरह की बातों की अभ्यस्त थीं। बड़ा 'स्ट्रा' हैट पहने हुए वह बड़ी अच्छी लग रही थीं : उस दोपहर के बाद गर्मी थी, सबसे ज्यादा गर्मी उसी दिन पड़ी थी और उनके ऊपरी

होंठ पर पसीने की बूँदें झलक आई थीं। उसे रोमांस का अवसर मिला था। मिस विल्किसन लगभग फ्रेंच ही थीं, इससे संभव ऐडवेन्चर में और जोश आ रहा था। जब वह रात में बिस्तर पर लेट कर सोचता, या अकेले बाग में बैठा किताब पढ़ता रहता, इस विचार से उसके शरीर में सनसनी दौड़ जाती। पर जब वह मिस विल्किसन को देखता तो यह सब अधिक उत्साहमय न मालूम पड़ता।

कुछ भी हो, जो कुछ उन्होंने उससे कहा था उसके बाद, यदि वह उनसे प्यार करेगा तो उन्हें आश्चर्य नहीं होगा। उसे लगता था कि उसका कोई इशारा न करना उन्हें बड़ा अजीब लग रहा था: शायद यह उसकी कल्पना ही थी, पर पिछले एक दो दिन से एक दो बार उसने सोचा था कि उनकी आँखों में कुछ भर्त्सना सी थी।

वह सोच रहा था कि उसे वहीं, उसी समय उन्हें चूम लेना चाहिये। वह सोचता था कि शायद वह चाहती थीं कि वैसा करे; पर आखिर उसकी समझ में नहीं आता था कि बिना प्रारम्भिक बातों के वह ऐसा कैसे करे। वह उसे बेवकूक समझेंगी, या शायद उसके चेहरे पर थप्पड़ मार दें और शायद उसके चचा से शिकायत भी कर दें। अगर उन्होंने चचा से बता दिया तो बड़ा बुरा होगा: वह अपने चचा को जानता था। वह डॉक्टर और जोसिया ग्रेव्ज़ को बता देंगे; और वह पूरी तरह बेवकूफ बन जायगा। लुइज़ा चाची कहती ही रहती थीं कि मिस विल्किसन सैंतीस वर्ष से किसी हालत में कम नहीं हैं। कितनी बदनामी उसकी होगी, इस विचार मात्र से ही वह सिहर उठा। सभी कहेंगे, वह उसकी माँ होने के बराबर हैं।

मिस विल्किसन ने अपना हाथ बढ़ा दिया और उसने उसे पकड़ लिया। एक-दो बार रात में जब उन्होंने हाथ मिलाये थे, वह महसूस करता था कि वह उसका हाथ धीरे से दबा देती थीं, पर इस बार तो इस बारे में कोई संदेह ही नहीं था।

अगले दिन आसमान पर एक भी बादल नहीं था और पानी बरसने के बाद बाग़ ताजा हो गया था और उसमें से एक अनोखी महक निकल रही थी। फिलिप समुद्र के किनारे नहाने को गया और लौट कर उसने खूब खाना खाया। दोपहर के बाद विकारेज में टेनिस पार्टी थी और मिस विल्किसन ने अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनी। निश्चय ही उसे मालूम था कि अपने कपड़े किस प्रकार पहनने चाहिएँ, और फिलिप अपने को यह देखने से रोक न सका कि क्यूरेट की पत्नी और डॉक्टर की विवाहिता लड़की की बगल में वह कितनी खूबसूरत लग रही थीं। उनकी कमर की पट्टी पर दो गुलाब के फूल थे। 'लॉन' के किनारे वह बाग़ की कुर्सी पर बैठी थीं, उनके हाथों में एक स्त्रियों वाली छतरी थी और उनके चेहरे पर पड़ रही रोशनी बड़ी आकर्षक मालूम पड़ रही थी। फिलिप टेनिस का शौकीन था। वह सर्विस अच्छी करता था और जरा भद्दे तरीके से दौड़ता हुआ जाल के पास खेल रहा था। अपने फीलपाँव के बावजूद वह तेजी से खेल रहा था और गेंद उसके पार फेंकना मुश्किल था। उसने सभी 'सेट' जीते, इस कारण वह खुश था। चाय के समय वह हाँफता हुआ मिस विल्किसन के पैरों के पास लेट गया।

रात के खाने के बाद उसने ज़िद की कि मिस विल्किसन बाहर आयें।

"एक दिन के लिये काफी कसरत नहीं रही क्या ?"

"आज बाग़ में बड़ा अच्छा लगेगा। सारे तारे छिटक आये हैं।"

वह अधिक उत्साहपूर्ण था।

"तुम्हें मालूम है, तुम्हारे बारे में मिसेज़ कैरी मुझे डाँट रही थीं ?" वह रसोई के पीछे वाले बाग में टहल रहे थे, तब उन्होंने कहा, "उनका कहना है कि मैं तुम्हारे साथ 'फ्लर्ट'[1] न करूँ।"

---

१. रीझना-रिझाना—प्रेम भाव प्रदर्शित करना।

"क्या तुमने ऐसा किया है ? मैंने ध्यान नहीं दिया था।"

"वह केवल मज़ाक कर रहीं थीं।"

फिलिप ने अपना हाथ उनकी कमर के चारों ओर रक्खा और उनके होंठों को चूम लिया। वह बस थोड़ा हंसीं, अलग हटने का उन्होंने कोई उपक्रम नहीं किया। यह सब बड़ी स्वाभाविक रीति से हो गया था। फिलिप को अपने पर गर्व हो आया। उसने अपने से कहा, वह ऐसा करेगा, और उसने किया था। यह दुनिया का सबसे आसान काम था। उसने चाहा, पहले ही उसने ऐसा किया होता। उसने फिर वही किया।

"ओह, ऐसा मत करो," उन्होंने कहा।

"क्यों ?"

"क्योंकि मुझे अच्छा लगता है," वह हंसीं।

उसके बाद उनके बीच बातें ही बदल गईं। दूसरे और तीसरे दिन फिलिप ने दिखाया कि वह कितना उत्सुक प्रेमी है। यह जानकर उसे अपने ऊपर गर्व हो आया था कि मिस विल्किसन उससे प्यार करती थीं। उन्होंने उससे यह अंगरेज़ी में कहा, उन्होंने उससे यह फ्रेंच में भी कहा। वह उसकी तारीफ करतीं। अभी तक किसी ने उसे नहीं बताया था कि उसकी आँखें खूबसूरत थीं और उसका मुंह प्यार करने के लिए बड़ा अच्छा था। उसने अभी तक कभी अपनी व्यक्तिगत दिखावट की ओर ध्यान नहीं दिया था, पर अब, समय मिलने पर सन्तोष के साथ अपना प्रतिविम्ब शीशे में देखता। जब वह उन्हें चूमता, तो यह महसूस कर खुश हो उठता कि वासना से उनका शरीर सिहर उठा है। वह उन्हें काफी चूमता, क्योंकि ऐसा करना उनकी इच्छित प्रशंसाएँ कहने से अधिक आसान होता। वह निश्चय नहीं कर पाता था कि उसे जल्दी मचानी चाहिए अथवा बात को समझ लेने देना चाहिये। अब तीन हफ़्ते और रह गये थे।

"मैं यह सोचना बर्दाशत नहीं कर सकती," उन्होंने कहा, "मेरा दिल टूटा जाता है और तब शायद हम फिर कभी न मिल सकें।"

"अगर तुम मुझे थोड़ा भी चाहतीं, तो मुझ पर इतनी बेरहम न होतीं," वह फुसफुसाया।

"ओह, आखिर तुम क्यों इतने से ही संपुष्ट नहीं रहते और ऐसे ही चलने देते? पुरुष हमेशा एक से होते हैं। कभी संतुष्ट नहीं हो सकते वे।"

और जब उसने उन्हें दबाया, उन्होंने कहा।

"पर देखो न, यह असंभव है। हम यहाँ क्या कर सकते हैं?"

उसने कई तरह की तरकीब सुझाईं, पर उनमें से एक को भी उन्होंने न माना।

"मैं खतरा नहीं उठा सकती। अगर तुम्हारी चाची जान जायेंगी तो बड़ा बुरा होगा।"

एक-दो दिन बाद एक विचार उसके दिमाग़ में आया जो उसे बड़ा अच्छा लगा।

"देखो, अगर रविवार की शाम को तुम्हारे सिर में दर्द हो जाय, और तुम घर पर रह कर यहाँ की देखभाल करने का प्रस्ताव रक्खो, तो चाची गिरजे चली जायेंगी।"

साधारणतः मिसेज़ कैरी रविवार की शाम को घर पर ही रह जाती थीं, जिससे मेरी ऐन गिरजे हो आयें, पर शाम की प्रार्थना सुन सकने के अवसर का वह स्वागत ही करतीं।

फिलिप ने यह आवश्यक नहीं समझा था कि जर्मनी में हुए ईसाई धर्म के बारे में अपने बदले हुए विचारों से अपने सम्बन्धियों को परिचित कराये। वे समझ नहीं सकते थे। वह सुबह ही गिरजे में जाता था। इसे वह समाज के पक्षपात के लिये काफी कन्सेशन समझता था, और दुबारा जाने से इन्कार करने को स्वतंत्र विचारों का पर्याप्त बोध।

जब उसने यह प्रस्ताव रक्खा, तो एक क्षण तक मिस विल्किसन कुछ नहीं बोलीं, तब उन्होंने सिर हिला दिया।

"नहीं मैं नहीं करूँगी," उन्होंने कहा।

पर रविवार के दिन चाय के समय उन्होंने फ़िलिप को आश्चर्य में डाल दिया।

"मेरा ख्याल है आज मैं गिरजे नहीं जा सकती," उन्होंने एकाएक कहा, "मेरे सिर में भयानक दर्द हो रहा है।"

अधिक चिन्तित होकर मिसेज़ कैरी ने उन्हें कुछ 'ड्राप्स' देने की ज़िद की, जिन्हें वह स्वयं इस्तेमाल किया करती थीं। मिस विल्किसन ने उन्हें धन्यवाद दिया और चाय के फौरन बाद ही कहा कि वह अपने कमरे में जाकर आराम करेंगी।

"तुम्हें विश्वास है कि तुम्हें किसी चीज की जरूरत नहीं पड़ेगी ? मिसेज़ कैरी ने उत्सुकता से पूछा।

"बिल्कुल विश्वास है, धन्यवाद !"

"क्योंकि अगर ऐसा है तो मेरा ख्याल है, मैं ही गिरजे हो आऊँ। शाम को जाने का अक्सर समय मुझे नहीं मिलता।"

"जरूर जाइये।"

"मैं तो रहूंगा ही," फिलिप ने कहा, "अगर मिस विल्किसन को किसी चीज़ की जरूरत पड़ेगी तो वह मुझसे माँग सकती हैं।"

"ड्राइंग रूम का दरवाज़ा खुला छोड़ देना, फिलिप, जिससे अगर मिस विल्किसन घंटी बजायें तो तुम सुन सको।"

"जरूर," फिलिप ने कहा।

इस तरह छः बजे बाद फ़िलिप मिस विल्किसन के साथ घर में अकेला रह गया। आगे क्या होगा, यह सोच-सोचकर वह परेशान हो रहा था। अब उसे लग रहा था कि उसने यह तरकीब न सुझाई होती तो ज्यादा ठीक था; पर अब बड़ी देर हो गई थी; अपने निर्मित अवसर का लाभ उसे उठाना ही चाहिए। अगर वह नहीं करेगा तो मिस विल्किसन उसके बारे में क्या सोचेंगी ! वह हाल में जाकर सुनने लगा। जरा भी आवाज नहीं आ रही थी। वह सोचने लगा, मिस विल्किसन के सिर में सचमुच दर्द तो नहीं हो रहा था। शायद वह उसका प्रस्ताव भूल गई

थीं। उसका दिल बुरी तरह धड़कने लगा। जितने धीमे हो सकता था वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा और वे चरमरातीं तो वह एकदम एक चाल। मिस विल्किसन के कमरे के बाहर खड़ा होकर सुनने लगा। उसने अपना हाथ दरवाजे के हैंडिल की मुठिया पर रख दिया। वह इंतजार करने लगा। उसे लगा वह कम-से-कम पाँच मिनट तक प्रतीक्षा करता और निश्चय करता रहा, और उसके हाथ कांपते रहे। वह खुशी से भाग जाता, पर ऐसा करने से उसे एक प्रकार का दुःख होता, जिससे उसे भय था। फिलिप ने अपना साहस बटोरा और धीरे से हैंडिल झुकाकर अंदर चला गया। उसे लगा वह पत्ती की तरह काँप रहा है।

दरवाजे की ओर पीठ किये मिस विल्किसन ड्रेसिंग टेबिल के पास खड़ीं थीं। दरवाजे के खुलने की आवाज सुनी तो वह फौरन घूमी।

"ओह तुम हो। क्या चाहते हो ?"

उन्होंने अपना स्कर्ट और ब्लाऊज उतार दिए थे, और सिर्फ पेटीकोट पहने खड़ी थीं। वह छोटा था, और सिर्फ उनके जूतों के ऊपर तक था। उसका ऊपरी भाग काला था और किसी चमकदार चीज़ का बना हुआ था, और एक लाल पट्टी थी। वह सफेद कैलिको की 'कैमिसोल'[1] पहने थीं जिसमें छोटी-छोटी बाँहें थीं। वह बड़ी भयानक लग रही थीं। उसने उन्हें देखा तो उसका हृदय डूबने लगा। वह कभी इतनी अनाकर्षक नहीं मालूम पड़ी थीं। पर अब बड़ी देर हो चुकी थी। उसने अपने पीछे का दरवाजा बन्द करके उसमें ताला लगा दिया।

दूसरे दिन सुबह फिलिप जल्दी उठ गया। उसे नींद ठीक से नहीं आई थी, पर जब उसने पैर फैलाये और वेनीशियन[2] खिड़की से घुस कर आते और फर्श पर डिजाइनें बनाते

१. बाहरी 'बाँडिस' के भीतर पहनी जाने वाली छोटी 'बाँडिस'।
२. समानान्तर लकड़ी की पटरियों से खुलने बन्द होने वाली खिड़की।

वाली धूप को देखा, तो संतोष की साँस ली। वह अपने ऊपर बहुत खुश था। वह मिस विल्किसन के बारे में सोचने लगा। उन्होंने उससे उन्हें एमिली कहने को कहा था, पर न मालूम क्यों, वह ऐसा न कर सका था; वह उन्हें हमेशा मिस विल्किसन ही कहता था। और चूंकि नाम लेने के लिए उन्होंने ज्यादा जिद की, फिलिप ने उनका नाम लेना ही बन्द कर दिया। अपने बचपन में उसने लुइजा चाची की एक बहन के बारे में सुना था, जो एक नौसेना के अफसर की विधवा थीं, और जिन्हें एमिली चाची कहा जाता था। मिस विल्किसन को उस नाम से पुकारने में उसे बड़ी बेचैनी होती, साथ ही कोई ऐसा नाम भी वह न सोच पाता जो उन्हें अच्छा लगे। वह मिस विल्किसन से ही शुरू हुई थीं, और उस पर पड़े उनके प्रभाव से वह अलग नहीं किया जा सकता था। वह थोड़ा भुलाया; जैसे भी हो अब वह उनको सबसे बुरे रूप में देख रहा था। जब 'कैमिसोय' और छोटा पेटीकोट पहने वह उसकी ओर मुड़ी थीं तो जो निराशा उसे हुई थी, उसे वह भूला न जा रहा था, उसे उनकी त्वचा का थोड़ा खुरदरापन और गर्दन की लम्बी, गहरी रेखायें याद थीं। उसकी विजय क्षणिक ही थी। उसने उनकी उम्र का अंदाज फिर लगाया, और वह समझ न सका कि चालीस साल से वह किस प्रकार कम थीं। यानी यह व्यापार हास्यास्पद था। वह सादी और बूढ़ी थीं। वह कांपा; उसे सहसा लगा कि अब वह उन्हें फिर नहीं देखना चाहता; वह उन्हें चूमने के विचार को सहन न कर सका। वह अपने से ही डर गया। क्या वह प्रेम था?

कपड़े पहनने में अधिक-से-अधिक देर उसने लगायी, जिससे वह उन्हें अधिक-से-अधिक देर में देख सके। आखिर में जब वह डाइंनिग रूम में गया, उसका हृदय डूब रहा था। प्रार्थना समाप्त हो गई थी, और वह नाश्ता करने बैठ रहे थे।

"आलसी आदमी" मिस विल्किसन खुशी से बोलीं।

उसने उन्हें देखा और चैन की एक साँस ली। वह खिड़की की

ओर पीठ किए बैठी थीं। वह सचमुच बड़ी अच्छी थीं। वह सोचने लगा कि उनके बारे में सारी बातें उसने क्यों सोचीं। उसका आत्मसंतोष वापस उसके पास आ गया।

शेष पन्द्रह दिन बड़ी शीघ्रता से कट गये। यद्यपि हर रोज, खाना खाने के बाद जब वे बाग में जाते, मिस विल्किसन कहतीं कि एक दिन और कम हो गया, फिलिप इतना खुश था कि इस विचार से दुःखी नहीं होना चाहता था। एक रात मिस विल्किसन ने कहा कि अगर वे बर्लिन छोड़कर लन्दन चली आयें तो बड़ा अच्छा हो। तब वे लगातार एक दूसरे से मिल सकें। फिलिप ने कहा, "यह बड़ी खुशी की बात होगी," पर इससे उसमें कोई उत्साह नहीं जगा। वह लन्दन में बड़ी खूबसूरत जिन्दगी का सपना देख रहा था, और चाहता था कि उसे बाधा न पहुंचाई जाय। वह जरा खुलकर कहता कि वह क्या करना चाहता है, और मिस विल्किसन को भान करा देता कि वह अभी भी जाने का कितना इच्छुक है।

आखिर वह मिस विलिकसन के प्रस्थान का दिन आया, और वे पीली और शान्त, सफेदचारखने वाली यात्रा की पोशाक पहने नाश्ता करने आईं। वह बड़ी कुसल 'गवर्नेस' मालूम पड़ रही थीं। फिलिप भी चुप था क्योंकि उसे नहीं मालूम था कि समय के उपयुक्त वह क्या चीज कहे, और वह बहुत डरा हुआ था कि अगर वह ऐसी वैसी बात कह देगा, तो मिस विलिकसन उसके चचा के सामने ही फूट पड़ेगी और एक तमाशा खड़ा हो जायगा। पिछली रात बाग में वे अन्तिम विदा ले चुके थे। और फिलिप को खुशी थी कि उनके अकेले रहने का कोई अवसर नहीं है। नाश्ता करने के बाद भी वह डाइनिंग रूम में ही रह गया, उसे भय था कि मिस विल्किसन कहीं सीढ़ियों पर ही उसका चुम्बन लेने की जिद न करने लगें। वह नहीं चहता था कि मेरी ऐन, जो अधेड़ अवस्था की तेज जवान औरत थीं, उन्हें ऐसी स्थित में देख लें। मेरी ऐन मिस विल्किसन को बिलकुल पसन्द नहीं करती थीं,

और उन्हें बूढ़ी बिल्ली कहती थीं। लुइजा चाची की तबियत ठीक नहीं थी, और वह स्टेशन नहीं जा सकीं, पर विकार और फिलिप उन्हें भेजने गये। ट्रेन चलने ही वाली थी कि मिस विल्किसन ने झुककर मिस्टर कैरी का चुम्बन लिया।

"फिलिप, मैं तुम्हारा भी चुम्बन लूंगी," उन्होंने कहा।

"अच्छा," उसने शर्माते हुए कहा।

वह पायदान पर खड़ा हो गया, और उन्होंने उसे चूम लिया। ट्रेन चल पड़ी, और मिस विल्किसन अपने डिब्बे के एक कोने में बैठकर फूट-फूट कर रो पड़ीं। विकारेज लौटते समय फ़िलिप को बड़े चैन की अनुभूति हुई।

"आप लोग उसे ठीक से भेज आये?" उनके लौटने पर लुइजा चाची ने पूछा।

"हाँ। वह रुआसी हो रही थी। उसने मुझे और फिलिप को चूमने की जिद की।"

"ओह, उसकी उम्र में यह खतरनाक नहीं है?" मिसेज कैरी ने कहा।

: ४ :

कुछ दिनों बाद फिलिप लन्दन चला गया। क्यूरेट ने 'बार्न्स' में फ्लेट बताया था, और उसे एक पत्र लिखकर फिलिप ने चौदह शिलिंग प्रति सप्ताह पर किराये में ले लिया। शाम को वह वहाँ पहुंचा; और मकान मालकिन, जो छोटे क़द की हास्यास्पद स्त्री थी, और जिसके शरीर और चेहरे पर अनेक झुर्रियाँ थीं, ने उसके लिए चाय तैयार की। बैठने के कमरे की अधिकतर जगह तो एक साइनबोर्ड और एक वर्गाकार मेज से घिर गई थी; एक दीवार के सहारे घोड़े के बालों से ढका सोफा था और फ़ायर-प्लेस के पास एक हत्थेदार कुर्सी रक्खी थी; उसके पीछे सफेद ऐन्टीमैकासर लगा था और सीट पर, चूंकि स्प्रिंगें टूट गई थीं, एक

एक सख्त गद्दी थी ।

चाय पीने के बाद उसने सामान खोला और अपनी किताबें करीने से रक्खीं, और तब बैठकर पढ़ने की कोशिश करने लगा, पर वह अच्छे मूड में नहीं था। गली की निस्तब्धता ने उसे थोड़ा बेचैन कर दिया और उसने अपने को बिल्कुल अकेला महसूस किया।

दूसरे दिन वह जल्दी उठा। उसने अपना 'टेल-कोट' पहना और निश्चय किया कि दफ़्तर के रास्ते में देखकर किसी दूकान से वह एक नया हैट खरीद लेगा। मेसर्स हर्बर्ट कार्टर एण्ड कम्पनी का दफ्तर चांसरी लेन के पास एक छोटी गली में था, और उसे दो या तीन बार रास्ता पूछना पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने दरवाजा खटखटाया; पर किसी ने उत्तर नहीं दिया और अपनी घड़ी में उसने देखा तो पाया कि उस समय मुश्किल से साढ़े नौ बजे थे। उसने सोचा वह बड़ी जल्दी आ गया। वह चला गया और दस मिनट बाद जब लौटा तो लम्बी नाक, मुहाँसों से भरे चेहरे और स्काटलेंड के निवासियों के उच्चारण वाले एक लड़के ने दरवाजा खोला। फ़िलिप ने मिस्टर हर्बर्ट कार्टर के बारे में पूछा। वह अभी तक नहीं आये थे।

"वह कब यहाँ आयेंगे ?"

"दस और साढ़े दस के बीच में।"

"मैं इन्तजार करूँगा।"

"आपको क्या काम है ?"

फ़िलिप थोड़ा बदहवास था, परन्तु उसने हंस कर इस सत्य को छिपाने की कोशिश की।

"हाँ, अगर तुम्हें एतराज़ न हो तो मैं यहाँ काम करूँगा।"

"ओह, आप नये आर्टिकिल्ड क्लर्क हैं ? भीतर आजाइये। मिस्टर गुडवर्दी अभी आ जायेंगे।"

फ़िलिप अन्दर गया। उसने कमरे में चारों ओर देखा। उसमें अंधेरा और काफी सीलन थे। ऊपर के एक झरोखे से उसमें रोशनी आरही थी।

डेस्कों की तीन कतारें खड़ी थीं और उनके सहारे ऊँचे-ऊँचे स्टूल थे। उसी समय एक क्लर्क आया, फिर दूसरा; उन्होंने फ़िलिप को देखा और धीमी आवाज में लड़के से (फ़िलिप को मालूम हुआ उसका नाम मैकडोगल था) पूछा कि वह कौन है। एक सीटी बजी और मैकडोगल उठ खड़ा हुआ।

"मिस्टर गुडवर्दी आ गए हैं। वे मैनेजिंग क्लर्क हैं। मैं उनसे बता दूँ कि आप आ गये हैं।"

"हाँ," फ़िलिप ने कहा।

लड़का बाहर गया और एक क्षण बाद लौटकर आया।

"आप इस तरफ आयेंगे ?"

उसके पीछे फ़िलिप ने गलियारे को पार किया। जिस कमरे में उसे ले जाया गया वह छोटा था और फर्नीचर उसमें नहीं के बराबर था। 'फायरप्लेस' की ओर पीठ किये एक दुबला-पतला छोटे कद का आदमी खड़ा था। साधारण उँचाई से वह बहुत कम ऊँचा था, पर उसके बड़े सिर, जो उसके शरीर से ढिलाई से लगा हुआ था, के कारण वह बड़ा अजीब-सा मालूम पड़ता था। उसका नाक-नक्शा चौड़ा और चपटा था, और उसकी आँखें पीली, उभरी हुई थीं। उसके कम बाल धूल से भरे थे; उसकी दाढ़ी चेहरे पर बराबर नहीं उगी थी और कई जगहों पर जहाँ घने बालों की आशा हो सकती थी, बाल ही नहीं थे। उसकी त्वचा चिपचिपी और पीली थी, उसने अपना हाथ फ़िलिप की ओर बढ़ाया, और वह मुस्कराया तो बुरी तरह नष्ट हुए दाँत दिखलाई पड़े। उसने कहा, उसका ख्याल था कि फ़िलिप को अपना काम पसन्द आयेगा। काम काफी उबाऊ था, पर अभ्यस्त हो जायगा उसी में मजा आने लगेगा और फिर सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसमें पैसा काफी पैदा किया जा सकता था। वह बड़प्पन और शर्म के अजीब मिश्रण सहित हँसता।

"मिस्टर कार्टर अभी आ जायेंगे," मिस्टर गुडवर्दी ने कहा, "कभी

कभी सोमवार को सवेरे उन्हें देर हो जाया करती है। उनके आने पर मैं तुम्हें बुला लूँगा। इस बीच में कुछ काम बताये देता हूँ तुम्हें करने को।"

वह बगल के कमरे में गये और थोड़ी देर बाद एक बड़ा दफ्ती का बक्स लेकर आये। उसमें बहुत से पत्र तितर-बितर रक्खे थे। उन्होंने फ़िलिप से कहा कि उन्हें छाँट कर वह लिखने वालों के नामों के अकरादि क्रम से लगा दे।

आर्टिकिल्ड क्लर्क के बैठने के कमरे में बैठकर फ़िलिप पत्र छाँटने लगा। तब मिस्टर गुडवर्दी ने भीतर आकर कहा कि मिस्टर कार्टर आ गए हैं। अपने कमरे से अगले वाले बड़े कमरे में वह उसे ले गये। उसमें एक बड़ी डेस्क थी और दो बड़ी हत्थेदार कुर्सियाँ। टर्की की कालीन से फर्श सजा हुआ था और दीवारों पर छींट लगी थी। मिस्टर कार्टर डेस्क पर बैठे थे। फ़िलिप से हाथ मिलाने को वह उठ खड़े हुए। वह लम्बा फॉगकोट पहने हुए थे। वह किसी मिलिटरीमैन की तरह दिखलाई पड़ रहे थे; उनकी मूँछों में मोम लगा था, भूरे बाल छोटे और साफ़ थे। वह सीधे बैठे थे, वह तेजी से बातें करते थे, वह एन्फील्ड में रहते थे। वह खेलों और देश का भला करने के बड़े शौकीन थे। वह हर्टफोर्ड शायर योमैनरी में अफसर, कन्ज़रवेटिव एसोसियेशन के चेयरमैन थे। उन्होंने फ़िलिप से खुशनुमा हल्के, तरीके से बात की। मिस्टर गुडवर्दी उसकी पूरी देखभाल करेंगे। उनका लड़का कैम्ब्रिज में था, उन्होंने उसे एबी भेजा था, एबी बड़ा अच्छा स्कूल था, वहाँ के लड़के बड़े अच्छे थे। दो साल में वह आर्टिकिल्ड हो जायेगा। फ़िलिप के लिये यह बड़ा अच्छा होगा, वह उनके लड़के को पसन्द करेगा, बड़ा अच्छा खिलाड़ी है वह। उन्हें आशा थी कि फ़िलिप ठीक से काम कर सकेगा और काम उसे पसन्द आयेगा। उसे लेक्चर नहीं छोड़ने चाहियें। सभी चाहते हैं कि इस व्यवसाय में शरीफ़ आदमी भी आयें और मिस्टर गुडवर्दी तो थे ही। अगर वह कुछ जानना चाहेगा तो मिस्टर गुडवर्दी उसे बता देंगे। उसकी लिखावट

कैसी थी ? ओह, हाँ, मिस्टर गुडवर्दी उसे भी देख लेंगे ।

इतनी शराफ़त से फ़िलिप का हृदय भर आया। ईस्ट ऐंग्लिआ में सभी जानते थे कि कौन शरीफ़ है, कौन नहीं, पर शरीफ़ आदमी इस बारे में बातें नहीं करते थे ।

साल के आख़ीर में बहुत कुछ करने को रह गया था । फ़िलिप टामसन नाम के एक क्लर्क के साथ कई जगह गया और एक स्वर से खर्च का विवरण पढ़ने में उसका सारा दिन बीत जाता, जबकि दूसरा उसका मिलान करता जाता । कभी-कभी उसे लम्बे-लम्बे पृष्ठों में लिखे हुए अंक जोड़ने को दे दिये जाते । अंकों से कभी उसकी नहीं पटी थी और वह यह काम बहुत धीरे-धीरे कर पाता था । टामसन उसकी गलतियों पर खीझ उठता था । वह फ़िलिप को पसन्द नहीं करता था क्योंकि फिलिप 'आर्टिकल्ड' क्लर्क था । क्योंकि वह तीन सौ गिन्नियाँ खर्च कर सकता था, उसके सामने उज्ज्वल भविष्य था; जबकि वह, अपनी योग्यता और अनुभव के बावजूद, पैंतीस शिलिंग प्रति सप्ताह पाने वाले क्लर्क से अधिक कुछ नहीं बन सकता था । वह अस्थाई विचारों वाला आदमी था और उस पर एक बड़े परिवार का भार था और फिलिप में उसे एक प्रकार का अभिमान दिखलाई पड़ता था, जिसे वह पसन्द न करता था । वह फिलिप को चिढ़ाता, क्योंकि फिलिप उससे ज्यादा पढ़ा लिखा था और उसके उच्चारण का मजाक उड़ाता था । पहले पहल उसने कुछ सख़्ती से हतोत्साह करना शुरू किया पर जैसे ही उसे मालूम हो गया कि फिलिप को एकाउन्टैन्सी से कोई चाव नहीं है, उसे फिलिप को नीचा दिखाने में मजा आने लगा । उसके ताने भद्दे और बेवकूफी से भरे होते थे, उनसे फिलिप को चोट पहुंचती थी, और आत्मरक्षा के लिये वह ऐसे बढ़प्पन का भाव बनाये रखने की कोशिश करता था जिसे वह महसूस नहीं करता था ।

लेकिन वह अपने से भी छिपा नहीं सका कि दूसरे क्लर्क, जिन्हें कम तनख़्वाह मिलती थी और जो ज्यादा साफ नहीं रहते थे, उससे ज्यादा

फायदेमन्द थे। एक या दो बार मिस्टर गुडवर्दी अधीर हो उठे।

"वास्तव में इस समय तक तुम्हें और अच्छी तरह काम करने लगना चाहिये था," उन्होंने कहा, "तुम तो 'आफिस ब्वाय' के बराबर भी फुर्तीले नहीं हो।"

फिलिप दुःख के साथ सुनता रहा। अपराधी ठहराया जाना उसे पसंद न था और उसके हिसाब की एक साफ कापी करने के बाद असन्तुष्ट होने पर मिस्टर गुडवर्दी ने किसी दूसरे क्लर्क को वही काम करने को दिया, तो उसने अपने को बड़ा नीचा महसूस किया। पहले तो नया होने के कारण काम बर्दाश्त हो जाता था, पर अब वह सिरदर्द बन गया; और जब उसने पाया कि उसे उसमें कोई लगन नहीं है तो वह उसे घृणा करने लगा। अक्सर जब उसे अपना काम करना होता तो वह दफ्तर के कागजों पर छोटी-छोटी तस्वीरें बनाने में समय नष्ट किया करता। उसने हर सम्भव पोज़ में वाटसन की तस्वीरें बनाईं और वाटसन उसकी कला से प्रभावित हुआ। एक बार उसे वे तस्वीरें घर ले जाने की सूझी और दूसरे दिन वह अपने परिवार वालों की प्रशंसा सहित आया।

ऐसा हुआ कि दो-तीन दिन बाद मिस्टर कार्टर वाटसन के यहाँ खाना खा रहे थे और वे तस्वीरें उन्हें दिखाई गईं। दूसरे दिन सुबह उन्होंने फिलिप को बुलाया। फिलिप उनसे कभी-कभी ही मिलता था और कुछ भय भी खाता था।

"देखो, फिलिप, दफ्तर के घंटों के बाद तुम क्या करते हो इसकी मुझे परवाह नहीं, पर मैंने तुम्हारी वे तस्वीरें देखी हैं और वे दफ्तर के कागजों पर हैं, और मिस्टर गुडवर्दी ने मुझसे कहा है कि तुम काम ठीक से नहीं करते। जब तक मन लगाकर काम नहीं करोगे, सफल 'चार्टर्ड एकाउंटेंट' नहीं बन पाओगे। यह व्यवसाय बड़ा अच्छा है और इसमें बड़े अच्छे-अच्छे आदमी आ रहे हैं, पर यह ऐसा व्यवसाय है जिसमें...." वह अपने वाक्य का अन्त खोजने लगे, पर ठीक-ठीक समझ में नहीं आया कि वह क्या चाहते थे, इसलिये धीरे से बोले, "जिसमें मन लगाकर काम

करना पड़ता है।"

शायद फिलिप ऐसा करना मन्जूर कर लेता अगर वह समझौता न होता कि अगर काम पसन्द नहीं आयेगा तो एक साल बाद उसे छोड़ देगा और अपने आर्टिकिलों के लिये आधा रुपया वापस पा जायगा। उसे लगा कि वह हिसाब जोड़ने से अधिक अच्छे काम के योग्य यह है और ऐसे घृणित काम को इतनी बुरी तरह करने में वही नीचा बनता है। टाँगसन की बुरी बातों से उसे चिढ़ हो गई। मार्च में वाटसन का साल खतम हो गया और फ़िलिप ने यद्यपि उसे उसकी अधिक चिन्ता नहीं थी, उसे भारी हृदय से विदा किया। दूसरे क्लर्क उन दोनों ही को नापसन्द करते थे क्योंकि वे उनसे कुछ ऊंचे तबके के आदमी थे और यह सत्य उन दोनों को मिलाने वाला सम्बन्ध था। जब फिलिप ने सोचा अभी उन रूखे आदमियों के साथ चार साल और बिताने हैं तो उसका दिल बैठने लगा। लन्दन से उसे बहुत ही अच्छी चीज़ों की आशा थी और उसने उसे कुछ नहीं दिया था। अब वह उससे घृणा करने लगा था, वह एक आदमी को भी नहीं जानता था और कैसे किसी को जान सकेगा यह भी उसे नहीं मालूम था। हर जगह अकेले जाते-जाते वह थक जाता था। उसे महसूस होने लगा कि इस तरह का जीवन वह और अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकता। रात में बिस्तर पर लेटकर सोचा करता, वह कभी उस सीलन-भरे दफ़्तर को फिर न देखे, न वहाँ के आदमियों से न मिले और उस भद्दे मकान से बाहर भाग जाये।

बसन्त में उसे बड़ी निराशा हुई। हेवर्ड ने लिखा था कि उस ऋतु में उसका लन्दन आने का इरादा था और फ़िलिप बड़ी आशा से दुबारा उससे मिलने की राह देख रहा था। पर जब हेवर्ड ने लिखा कि इटली में ऐसा खुशनुमा बसन्त पहले कभी नहीं हुआ था और वह अपने को उससे अलग करना बर्दाश्त नहीं कर सकता, तो फ़िलिप को बड़ा दुःख हुआ। उसने यह भी पूछा था कि फ़िलिप भी क्यों नहीं वहाँ चला आता। दुनियाँ इतनी खूबसूरत है, तो उसे एक दफ़्तर में अपने

यौवन के दिन नष्ट करने से क्या ? पत्र में आगे लिखा था:

"मैं आश्चर्य करता हूँ कि क्या तुम वह सहन कर पाते होगे। मैं तो फ़्लीट स्ट्रीट और लिंकन्स इनकी याद करके घृणा से सिहर उठता हूँ। दुनियाँ में दो चीज़ें ऐसी हैं जो जीवन को रहने योग्य बनाती हैं, प्रेम और कला। किसी दफ़्तर में बैठकर 'लेजर पर झुक कर तुम्हारे बैठने की कल्पना मैं नहीं कर सकता और क्या तुम लम्बा हैट पहनते हो और छाता और छोटा-सा काला झोला लेकर चलते, हो ? मुझे लगता है कि आदमी को अपने जीवन को 'ऐडवेन्चर' समझना चाहिए, उसे तेज़, चमकदार रोशनी सहित चलना चाहिये और ख़तरा उठना चाहिये, और ख़तरों में अपने को छोड़ देना चाहिये। तुम पेरिस जाकर चित्र-कला क्यों नहीं सीखते ? मैं हमेशा सोचा करता था, कि तुममें बुद्धि है।"

फ़िलिप के मस्तिष्क में भी यह संभावना कुछ दिनों से उथल-पुथल कर रही थी, इस सुझाव ने उसे और भी अधिक बढ़ावा दिया। सभी सोचते थे कि उसमें बुद्धि है; हीडेलबर्ग में सब उसकी पानी के रंगों की तस्वीरों की तारीफ़ करते थे, मिस विल्किसन ने बार-बार उससे कहा था कि वे बड़ी खूबसूरत हैं; यहां तक कि वाटसन जैसे अजनबी भी उसके रेखा चित्रों से प्रभावित हुए थे। उसने पेरिस के बारे में सोचना शुरू किया, जैसे पहले लन्दन के बारे में वह सोचा करता था, पर उसे दूसरी बार स्वप्न भंग का भय नहीं था। वह रोमांस, सौंदर्य, और प्रेम चाहता था और लगा पेरिस उसे सब देगा। चित्रों के लिये उसके हृदय में एक तरह का प्यार था और औरों की तरह वह भी क्यों नहीं पेंटकर बन सकेगा ? उसने मिस विल्किसन को लिख कर पूछा कि उनके ख्याल से पेरिस में रहने में कितना खर्च पड़ेगा। उन्होंने लिखा कि वह ८० अस्सी पौण्ड प्रति वर्ष खर्च करके वहाँ आसानी से रह सकता है और उन्होंने अधिक उत्साह से उसके मंतव्य की सहराना की। यदि कोई महान कलाकार बन सकता है, तो क्लर्क बनना क्यों पसंद

करेगा, उन्होंने नाटकीय ढंग से पूछा था और अनुरोध किया था कि वह अपने पर विश्वास रखे ; वह सबसे बड़ी चीज़ थी। लेकिन फ़िलिप का स्वभाव हमेशा सावधान रहने का था। हेवर्ड के लिये ख़तरा उठाने की बातें करना बिल्कुल ठीक था, उनके पास तीन सौ पौंड प्रति वर्ष थे; फिलिप की सारी सम्पत्ति अधिक-से-अधिक अठारह सौ पौंड की थी। वह हिचकिचा रहा था।

तब एक दिन ऐसा हुआ कि मिस्टर गुडवर्दी ने उससे सहसा पूछा कि क्या वह पेरिस जाना चाहेगा। जो क्लर्क साधारणतः उनके साथ जाता था बीमार था और काम की अधिकता से दूसरे क्लर्क बाहर नहीं जा सकते थे। मिस्टर गुडवर्दी ने फ़िलिप के बारे में सोचा क्योंकि वह ही सबसे आसानी से खाली हो सकता था। फ़िलिप उमंग से भर उठा।

"तुम्हें सारे दिन का काम करना पड़ेगा," मिस्टर गुडवर्दी ने कहा, "पर शाम हमारी अपनी ही है और पेरिस पेरिस है।"

जब वे करले पहुंचे और फ़िलिप ने इशारा करते हुए कुलियों को देखा तो उसका हृदय उछल पड़ा।

"यही असली जीवन है," उसने स्वयं से कहा।

ट्रेन देहातों के बीच से भागने लगी, तो फ़िलिप आँखें फाड़ कर देखने लगा; बालू के टीलों की वह प्रशंसा करने लगा, उनका रंग आज तक देखी हुई सभी चीज़ों से अधिक खुशनुमा उसे लगा; नहरों और पापलरों की [1] लम्बी-लम्बी कतारों को देख कर वह असीम प्रसन्नता से भर उठा। जब वे गादेनार्द से बाहर निकले और एक टूटी-सी पुरानी बग्घी में पत्थरों से पटी सड़क पर चलने लगे तो उसे लगा कि वह नई हवा में साँस ले रहा है, जो इतनी नशीली है कि बड़ी कोशिश करके वह अपने को चिल्लाने से रोक सका। होटल के नीचे ही उसे मैनेजर

१. एक वृक्ष विशेष जो उत्तरी गोलार्द्ध में पाया जाता है।

मिला। मैनेजर स्वस्थ, प्रसन्न रहने वाला आदमी था और थोड़ी सी अंगरेजी बोल ही लेता था। खाना उन लोगों ने उसके प्राइवेट कमरे में उसकी पत्नी के साथ खाया।

मिस्टर ग्रुडवर्दी अपनी पेरिस की यात्राओं का आन्नद पूरी तरह उठाते थे; वह कहते थे कि वहाँ पहुँचकर आदमी बूढ़ा नहीं होता। शाम को, जब उनका काम ख़तम हो जाता और वे खाना खा लेते, फ़िलिप को पोलों रूम[1] और फ़ॉल बर्जेय[2] ले जाते। जब वह वेश्याओं और वेश्या-वृत्ति के बारे में बातचीत करते तो उसकी आँखें चमकने लगतीं और उसके चेहरे पर चालाकी और वासना से दीप्त मुस्कान बिखर पड़ती। विदेशियों के लिये विशेषतया प्रवन्धित सभी जगहों पर वह जाते और वहां से लौटकर कहते कि ऐसा राष्ट्र, जो इन सब बातों की आज्ञा देता हो, कभी पनप नहीं सकता। जब किसी तमाशे में लगभग कुछ न पहने हुए कोई स्त्री बाहर निकल पड़ती, तो वह फ़िलिप को धीरे से धक्का देते और हाल के भीतर घूमने वाली सबसे अधिक सुन्दर वेश्याओं की ओर इशारा करते। वह फ़िलिप को गंदा पेरिस भी दिखाते और फ़िलिप, जिसकी आँखों पर भ्रम का पर्दा पड़ा था, उन्हें देखता रहता। बड़े सवेरे जल्दी से होटल से बाहर निकलकर कैम्स एलीसीस जाकर प्लेस देला कॉकर्ड में खड़े हो जाते। जून का महीना था आर हल्की कोमलता से पेरिस रुपहला हो रहा था। फ़िलिप को लगता उसका हृदय बाहर छिटका जा रहा है। आख़िर वह सोचता, यहां है रोमांस !

लगभग एक हफ़्ता उन्होंने वहाँ बिताया और रविवार को खाना खाकर आधी रात के बाद जब फ़िलिप अपनी सीलन-भरी कोठरी में पहुंचा तो उसका निश्चय दृढ़ हो गया था; वह एकाउन्टेन्सी छोड़ कर चित्रकला सीखने पेरिस जायेगा। अगस्त के आखिरी दिनों में

१-२. पेरिस के रेस्तराँ

उसकी छुट्टी होती थी और जब वह चला जायगा तो हर्बर्ट कार्टर को लिख देगा कि उसका वापस लौटने का इरादा बिल्कुल नहीं है। लेकिन यद्यपि जबर्दस्ती अपने को दफ़्तर ले जाता, वह अपने काम में चाव रखने का वहाना भी न कर सकता। उसका मस्तिष्क अपने भविष्य में उलझा हुआ था। जुलाई के माह के बाद जब काम अधिक नहीं रह गया था, तो वह यह बहाना करके कि उसे अपने पहले इम्तहान के लिये पढ़ना है, दफ़्तर ही न जाता। इस तरह समय बचाकर वह नेशनल गैलरी में जाता। वह पेरिस के बारे में और चित्रकला के बारे में किताबें पढ़ता। वह रस्किन में गहराई तक डूब गया। उसने वेंसारी लिखित चित्रकारों के जीवन-चरित्र पढ़ डाले। उसकी हिचकिचाहट अब समाप्त हो गई थी और उसे विश्वास हो गया था कि उसमें महान् कलाकार बनने के सभी गुण उपस्थित हैं।

"आख़िर मैं कोशिश ही तो कर सकता हूँ," उसने स्वयं से कहा, "ख़तरा उठाना ही जीवन में सबसे बड़ा कार्य है।"

आखिर अगस्त का दूसरा सप्ताह भी आया। मिस्टर कार्टर उस महीने स्काटलैंड में थे और मैनेजिंग क्लर्क दफ़्तर के इनचार्ज थे। पेरिस की यात्रा के बाद से मिस्टर गुडवर्दी फ़िलिप से खुश रहने लगे थे और अब जब वह आज़ाद होने ही वाला था, तो फ़िलिप उस हास्यप्रद, नाटे आदमी का व्यवहार बर्दाश्त कर ही लेगा।

"तुम कल अपनी छुट्टी पर जा रहे हो, कैरी?" उन्होंने शाम को उससे कहा।

सारे दिन फ़िलिप अपने से यही कहता रहा था कि इस घृणात्मक दफ़्तर में बैठने का यह उनका आखिरी दिन था।

"हाँ, मेरा साल ख़तम हो गया है।"

"मुझे भय है कि तुमने बहुत अच्छा काम नहीं किया। मिस्टर कार्टर तुमसे बड़े असंतुष्ट हैं।"

"शायद उतने ज़्यादा नहीं जितना मैं मिस्टर कार्टर से असंतुष्ट

हूं," फ़िलिप ने खुशी से उत्तर दिया।

"मेरा ख्याल नहीं है कि तुम्हें ऐसे बोलना चाहिये, कैरी !"

" मैं वापस नहीं जाऊँगा। मैंने ऐसा प्रबंध कर लिया था कि अगर एकाउंटेंसी मुझे पसन्द न आई, तो मिस्टर कार्टर मेरा आधा रुपया वापस कर देंगे और एक साल बाद मैं इसे छोड़ दूँगा।"

"ऐसा निर्णय तुम्हें जल्दी में नहीं करना चाहिये।"

"दस महीने तक मैं दफ़्तर को, काम को, लन्दन को, सब को नापसन्द करता रहा हूँ। यहाँ अपने दिन बरबाद करने की अपेक्षा कुछ न करूँ तो ज़्यादा ठीक होगा।"

"हाँ, इतना तो, मुझे कहना ही चाहिये कि एकाउंटेंटी के काबिल तुम नहीं हो।"

"गुडबाई" फ़िलिप ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा, "मेरे प्रति आपकी दयालुता के लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मुझे दुःख है मैं आपकी परेशानी का कारण रहा हूँ। लगभग प्रारम्भ से ही मैं जानता था, मैं कुछ कर नहीं पाऊँगा।"

"अगर तुमने सचमुच निश्चय कर लिया है तो फिर मुझे नहीं मालूम तुम क्या करने जा रहे हो, पर अगर आस-पास कहीं रहो, तो अवश्य हम से मिलने आना।"

फ़िलिप कुछ हँसा

"मुझे भय है यह बड़ा कठोर मालूम होगा, पर मैं तहेदिल से उम्मीद करता हूँ कि अब मैं आप में से किसी को फिर कभी नहीं देखूँगा।"

: ५ :

ब्लैकस्टेबिल के विकार ने फिलिप द्वारा सामने रक्खी गई स्कीम में कोई अनुराग न दिखाया। उनका एक महान विचार था कि एक

बार एक आदमी को अपनी राह चुन लेने के बाद उसी पर दृढ़ रहना चाहिये। सभी कमज़ोर आदमियों की तरह बार-बार निश्चय न बदलने के लिये वह आवश्यकता से अधिक जोर देने लगे।

मिस्टर और मिसेज़ कैरी को फ़िलिप के चित्रकार बनने के विचार से स्पष्टतः धक्का लगा था। उनका कहना था कि उसे याद रखना चाहिये उसके माता-पिता शरीफ़ आदमी थे और चित्रकला कोई गंभीर काम नहीं है, यह चरित्रहीन अप्रशंसात्मक, असभ्य काम था और फिर पेरिस !

"शरीफ़ों और सच्चे ईसाइयों की तरह तुम्हारा पालन-पोषण किया गया है। यदि मैं इस तरह के आकर्षणों में तुम्हें फाँसकर बहक जाने दूँगा तो मैं उस विश्वास के प्रति झूठा सिद्ध होऊँगा जो तुम्हारे मृत माता-पिता ने मुझ पर रक्खा था।"

"हाँ तो मैं जानता हूँ मैं ईसाई नहीं हूँ और मुझे अपने शरीफ़ आदमी होने में भी संदेह ही होने लगा है," फिलिप ने कहा।

कलह और तीव्र हो गई। अभी एक साल और बाकी था जब वह अपनी छोटी-सी उत्तराधिकार वाली सम्पत्ति का मालिक बन सकता था और उस बीच में मिस्टर कैरी ने उसे इसी शर्त पर रुपया देना स्वीकार किया। अगर वह लन्दन जाकर काम पर लग जाये। फिलिप को यह स्पष्टतया मालूम था कि अगर वह एकाउन्टेन्सी नहीं जारी रखना चाहता था तो उसे उतने ही समय के भीतर छोड़ देना चाहिये जब तक कि वह अपने आर्टिकिलों का आधा रुपया पा सकता था। विकर ने उसकी एक न सुनी। फ़िलिप सारी शर्म छोड़ कर ऐसी बातें कहने लगा जो उन्हें ठेस पहुँचायें और चिढ़ायें।

"आपको मेरा पैसा बरबाद करने का कोई अधिकार नहीं है," उसने अन्त में कहा, "आखिर यह पैसा तो मेरा ही है, या नहीं ? अगर मैं निश्चय कर लूँ तो आप मुझे पेरिस जाने से रोक नहीं सकेंगे। आप लन्दन लौट जाने को मुझे मजबूर नहीं कर सकते।"

"मैं सिर्फ इतना कर सकता हूँ कि अगर वह न करोगे, जो मैं ठीक समझता हूं, तो मैं तुम्हें खर्च नहीं दूं ।

"तो मुझे परवाह नहीं । मैंने पेरिस जाने का निश्चय कर लिया है । मैं अपने कपड़े, अपनी किताबें, अपने पिता के ज़ेवर बेंच दूँगा ।"

अन्त में विकर ने कहा कि इस बारे में वह अधिक और नहीं सुनना चाहते और वह शान के साथ कमरे से बाहर चले गये। अगले तीन दिन तक दोनों में से कोई एक दूसरे से न बोला । फ़िलिप ने हेवर्ड को लिखा कि पेरिस के बारे में वह उसे कुछ सूचना दे और निश्चय किया कि उसका उत्तर पाते ही प्रस्थान कर देगा । मिसेज़ कैरी के मस्तिष्क में बार-बार यह बात घूम रही थी; उन्हें लग रहा था कि अपने चचा के साथ-साथ फ़िलिप उन्हें भी घृणा करता है और इस विचार मात्र से भी उन्हें बड़ा कष्ट होता है । वह उसे बहुत प्यार करती थीं । आखिर वह उससे बोलीं; फ़िलिप लन्दन के बारे में अपना भ्रम दूर होने और अपने भविष्य की उत्कट आकाँक्षा के बारे में बताता रहा और वह ध्यान पूर्वक सुनती रहीं ।

उसके सुझाव पर मिसेज़ कैरी ने सालिसिटर को पत्र लिखा, कि फिलिप अपने लन्दन के काम से असंतुष्ट है और वह काम छोड़कर दूसरा काम हाथ में लेना चाहता है । मिस्टर निक्सन ने निम्न उत्तर दियाः

"प्रिय मिसेज़ कैरी,

मैं मिस्टर हर्बर्ट कार्टर से मिला था और मुझे भय है कि आपको बताना ही पड़ेगा कि फ़िलिप ने उतना अच्छा काम नहीं किया जितनी आशा थी । अगर वह इस काम के बिल्कुल विरुद्ध है, तो शायद यही अच्छा होगा कि अपने आर्टिकिलों को बेचने का लाभ ही उठाये । स्वभावत; मैं बड़ा निराश हूँ, पर आपको मालूम ही है । घोड़े को पानी के पास लेजाया जा सकता है, उसे पानी नहीं पिलाया जा सकता ।

आपका शुभेच्छु,

अल्बर्ट निक्सन ।"

पत्र विकर को दिखाया गया, पर उसने उनकी ज़िद्द और बढ़ा दी। वह राजी थे कि फ़िलिप कोई और व्यवसाय चुन ले, उन्होंने उसके पिता का व्यवसाय, डॉक्टरी, ही सुझाया, पर फ़िलिप के पेरिस जाने पर ख़र्च देने को वह किसी भी तरह तैयार न थे।

इस समय हेवर्ड का उत्तर आ गया था। उसमें एक होटल का पता लिखा था जहाँ फ़िलिप को तीस फ्रैंक प्रतिमाह पर कमरा मिल सकता था और उसके साथ में एक स्कूल के शिक्षक के नाम एक परिचय पत्र था। फ़िलिप ने पत्र पढ़कर मिसेज़ कैरी को सुनाया और उनसे कहा कि उसका इरादा पहली सितम्बर को रवाना हो जाने का है।

"पर तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं ?" उन्होंने कहा।

"मैं जेवर बेचने आज दोपहर के बाद टरकनबरी जाऊँगा।"

अपने पिता से विरासत में उसे एक सोने की कड़ी, एक जंजीर, दो-तीन अँगूठियाँ, कुछ लिंक और दो पिन मिले थे। उनमें से एक हीरे की थी और उससे काफ़ी धन मिलने की आशा थी।

"पर चीज़ की कीमत क्या है और क्या मिलेगी, इसमें बड़ा अन्तर है," लुइज़ा चाची ने कहा।

फ़िलिप मुस्कराया, क्योंकि यह चचा के अपने मुहावरों में से एक था।

"मुझे मालूम है, पर कम-से-कम सौ पौंड तो मिल ही जायेंगे और उनसे मेरे इक्कीस साल के होने तक काम चल जायगा।"

मिसेज़ कैरी ने उत्तर न दिया, पर वह ऊपर गईं अपना बौनेट सिर पर रक्खा और बैंक गईं। एक घंटे में वह वापस आ गईं। फ़िलिप ड्राइंग रूम में पढ़ रहा था। उसके पास जाकर उन्होंने उसे एक लिफ़ाफ़ा दिया।

"यह क्या है ?" उसने पूछा।

"तुम्हारे लिये एक छोटा-सा उपहार," लजाते-मुस्कराते हुए उन्होंने

कहा।

उसने खोला, तो उसमें पाँच-पाँच पौंड के ग्यारह नोट और एक कागज के थैले में सिक्के थे।

"मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हो सका कि तुम अपने पिता के जेवर बेच दो। यह रुपया मेरा बैंक में जमा था। यह करीब सौ पौंड तो हो ही जायगा।"

फ़िलिप झेंपा, और न मालूम क्यों, आँसू उसकी आँखों में भर आये।

"ओह, मैं इसे नहीं ले पाऊँगा," उसने कहा, "इसके लिये मैं आपका बड़ा शुक्रगुजार हूँ, पर इसे मैं ले नहीं पाऊँगा।"

जब मिसेज़ कैरी की शादी हुई थी उनके पास तीन सौ पौंड थे। वर्षों के व्यतीत होने के साथ-साथ उनका यह खज़ाना भी कम होता गया, पर अब भी पादरी साहब के मजाक की वस्तु थी।

"ओह, फ़िलिप तुम ले लो इसे। मुझे दुःख है कि मैंने काफ़ी खर्च कर दिया है और अब इतना ही बच रहा है। पर तुम इसे ले लोगे तो मुझे बड़ा सुख मिलेगा।"

"परन्तु आपको भी तो जरूरत पड़ेगी," फ़िलिप ने कहा।

"नहीं मेरा ख्याल नहीं है कि मुझे जरूरत पड़ेगी। यह सोचकर मैं इसे रक्खे हुये थी कि कहीं तुम्हारे चचा की मृत्यु मुझसे पहले हो गई। पर अब मैं नहीं सोचती कि मैं ज्यादा दिन जी पाऊँगी।"

"नहीं, चाची, ऐसा न कहिये। आप हमेशा जीवित रहेंगी, मैं आपको मरने नहीं दूँगा।"

"मैं दुःखी नहीं हूँ।" उनकी आवाज रुंध गई और उन्होंने अपनी आँखें छिपा लीं। पर एक ही क्षण में, उन्हें सुखाकर वह वीरता से मुस्करा पड़ीं।

फ़िलिप ने उनके झुर्रीदार, सूखे गाल को चूमा। उसकी समझ में नहीं आया कि उस असीम प्यार को देखकर उसे एक प्रकार की शर्म क्यों महसूस होने लगी थी। समझ में आने की बात नहीं थी कि

वह ऐसे आदमी की इतनी परवाह करती थीं, जो इतना अलग, इतना स्वार्थी, इतना स्वयं में लिप्त था; उसे थोड़ा-थोड़ा आभास था कि दिल-ही-दिल में वे उसके अलगाव और उसकी स्वार्थपरता को जानती थीं, पर जानते हुये भी उसे प्यार करती ही थीं।

"तुम वह धन लोगे, फिलिप ?" धीरे-धीरे उसका हाथ थपथपाते हुये उन्होंने कहा, "मुझे मालूम है इसके बिना भी तुम काम चला सकते हो, पर इससे मुझे कितनी खुशी होगी। मैं हमेशा तुम्हारे लिये कुछ करना चाहती थी। देखो न, मेरे लिये अपना बच्चा कभी रहा नहीं और मैंने तुम्हें अपने बच्चे की तरह प्यार किया है। जब तुम छोटे से थे, यद्यपि बड़ी बुरी बात थी यह, पर मैं ईश्वर से मनाया करती थी कि तुम बीमार पड़ जाओ जिससे मुझे दिन रात तुम्हारी देख-रेख करने का अवसर मिले। पर तुम सिर्फ एक बार बीमार पड़े और वह भी स्कूल में। मैं कितना चाहती हूं कि तुम्हारी सहायता कर सकूँ। यही एक अवसर है जो मुझे कभी मिल सकेगा और शायद किसी दिन जब तुम महान कलाकार बन जाओगे तो मुझे भूलोगे नहीं, पर याद रक्खोगे कि मैंने तुम्हें आगे बढ़ाया था।"

"आपने बहुत किया है," फ़िलिप ने कहा, "मैं आपका अहसानमन्द हूँ।"

उनकी थकी हुई आँखों में मुस्कान आई, केवल प्रसन्नता की मुस्कान।

"ओह, मैं कितनी खुश हूँ।"

: ६ :

कुछ दिनों बाद मिसेज कैरी फ़िलिप को छोड़ने स्टेशन गईं। वह डिब्बे के दरवाजे पर खड़ी हो गईं और अपने आंसू पी जाने की कोशिश करने लगीं। फिलिप बेचैन और परेशान था; वह फौरन चल पड़ना चाहता था।

"एक बार मुझे और चूमो," उन्होंने कहा।

खिड़की से बाहर सिर निकालकर उसने उन्हें चूमा। ट्रेन चलने लगी और वह छोटे से स्टेशन के लकड़ी के प्लेटफार्म पर खड़ी अपना रूमाल हिलाती रहीं, जब तक कि वह आँखों से ओझल नहीं हो गई। उनका हृदय अत्यधिक भारी हो गया था और विकारेज की कुछ सौ गजों की दूरी बहुत ही लम्बी मालूम पड़ी। स्वाभाविक था कि फ़िलिप जाने को आतुर होगा, उन्होंने सोचा, वह लड़का है और भविष्य उसे पुकार रहा है। पर वह—उन्होंने अपने दाँत भींच लिये कि वह रो न पड़े।

उन्होंने मन-ही-मन प्रार्थना की कि ईश्वर उसकी रक्षा करें और उसे आकर्षणों से बचाये रक्खें और उसे खुशी और सौभाग्य प्रदान करे।

लेकिन अपने डिब्बे में ठीक से बैठते ही फ़िलिप ने उनके विषय में सोचना बन्द कर दिया। वह केवल अपने भविष्य के बारे में सोचने लगा। उसने होटल-दे-टयू-एकोले' में कमरा लिया था। यह होटल 'बुलीवार-दे-मांटपारनेस' नाम की एक गंदी सी सड़क पर था; यह ऐमिट्रानेज स्कूल के लिये सुविधा जनक था, जिसमें वह पढ़ने जा रहा था। एक वेटर ने सामान पाँच सीढ़ियां चढ़कर फ़िलिप को एक छोटे से कमरे में पहुँचाया। खिड़कियाँ बंद रहने के कारण उसमें अजीब-सी बू थी और उसका अधिक भाग एक बड़े लकड़ी के पलंग से घिरा हुआ था जिसके ऊपर लाल रेप का छाता लगा था। उसी कपड़े के भारी-भारी पर्दे खिड़कियों पर टंगे थे, 'चेष्ट आफ़ ड्रामर्स' से ही 'वाश स्टैंड' का काम लिया जाता था और किंग लुई फ़िलिप के समय की एक वार्डरोब रक्खा था। दीवार का कागज़ समय बीतने के साथ-साथ रंगहीन हो गया था; वह गहरा भूरा था और उसमें भूरी पत्तियों के हार अस्पष्ट दिखलाई पड़ रहे थे। फ़िलिप को कमरा असाधारण और सुन्दर लगा।

दूसरे दिन चाय के समय वह 'लॉयन-दे-वेलफोर्ट' की ओर चल पड़ा,

और बुलीवार एस्पेल से जाने वाली एक नई सड़क पर उसे मिसेज़ ऑटर मिलीं। उन्होंने उसे अपनी माँ से परिचित कराया। उसे मालूम हुआ कि वह पेरिस में तीन साल से अध्ययन कर रही हैं और बाद में पता लगा कि वह अपने पति से अलग रहती हैं। उनके छोटे से ड्राइंग रूम में एक-दो-पोर्टेट टँगे थे, जिन्हें उन्होंने स्वयं बनाया था और फ़िलिप की अनुभव हीनता को वे बहुत अच्छे मालूम पड़े।

वह फ़िलिप के साथ बड़ी उदारता से पेश आईं। उन्होंने उसे एक दूकान का पता बताया जहाँ उसे पोर्टफोलिओ, ड्राइंग-पेपर, चारकोल मिल सकते थे।

"मैं कल नौ बजे के लगभग 'ऐमिट्रानोज' जाऊँगी, और अगर तुम वहाँ मिल जाओगे उस समय, तो मैं कोशिश करूँगी कि तुम्हें सभी सुविधाएँ मिल जायें।"

मिसेज़ ऑटर से बिदा लेकर फ़िलिप ड्राइंग का सामान खरीदने चला गया; और दूसरे दिन सुबह नौ का घंटा बजते ही, आत्मविश्वासी प्रदर्शित करता हुआ, स्कूल में जा पहुँचा, मिसेज़ ऑटर वहाँ पहले से ही उपस्थित थीं, उसे देखकर वह मित्रतापूर्ण ढंग से मुस्कराईं।

स्टूडियो बड़ा और खाली था, उसकी दीवारें भूरी थीं और उन पर वह पेंटिंग लगी हुई थीं, जिन्हें पुरस्कार मिले थे अपने शरीर पर एक ढीला आवरण डाले एक 'माडेल'[१] कुर्सी पर बैठी थी, और उसके आस-पास एक दर्जन स्त्री पुरुष खड़े थे, जिनमें से कुछ बातें कर रहे थे और कुछ अभी भी अपने रेखाचित्रों पर काम कर रहे थे। 'माडेल' को पहली बार आराम दिया जा रहा था।

"अभी तुम कोई मुश्किल काम हाथ में न लो, तभी ठीक होगा," मिसेज़ ऑटर ने कहा, "अपना चित्राधार यहाँ रख दो। तुम्हें मालूम

---

१. वह पुरुष या स्त्री जिसे देखकर उसका किसी विशेष पोज में चित्र बनाया जाता है।

हो जायगा यही सबसे आसान पोज़ है।"

उनके बताये स्थान पर उसने चित्राधार रख दिया और मिसेज ऑटर ने उसके आगे बैठी एक युवती से उसका परिचय कराया।

"मिस्टर कैरी—मिस प्राइस। मिस्टर कैरी ने पहले कभी अध्ययन नहीं किया है। शुरू-शुरू में आप इन्हें कुछ-न-कुछ बताती रहेंगी, ठीक है न ?" तब वह 'माडेल' की ओर घूमीं। "लापोज़"[1]

'माडेल' ने वह समाचार-पत्र फेंक दिया जिसे वह पढ़ रही थी, 'ला पेतीस रिपब्लिक' और अनमनी-सी अपना गान उतार कर स्टैंड पर दोनों पैरों के बल, अपने सिर के पीछे दोनों हाथ बांधकर खड़ी हो गई। फ़िलिप अपने सामने सुन्दर कागज का नाम रक्खे, 'माडेल' की ओर बुरी तरह देखता रहा। उसे नहीं मालूम था कि कैसे वह शुरू करे। उसने पहले कभी निरावरण स्त्री नहीं देखी थी। वह युवती थी और उसका वक्ष सिकुड़ा हुआ था। उसके बाल रंगहीन और साफ थे तथा अस्त व्यस्त से माथे पर पड़े थे और उसका चेहरा बड़े, पीले धब्बों से भरा था। उसने मिस प्राइस के चित्र की ओर देखा। वह उस पर दो दिन से काम कर रही थीं और लगता था उन्हें काफी परेशानी हो रही है। बराबर रगड़ते रहने से उसका कागज भद्दा हो गया था और फ़िलिप की आँखों की आकृति बड़ी टेढ़ी मालूम पड़ी।

"मेरा ख्याल है इतना अच्छा तो मैं भी कर सकता हूँ," उसने अपने से कहा।

उसने सिर से बनाना प्रारम्भ किया। वह सोच रहा था कि धीरे-धीरे नीचे की ओर बनाता जायगा, पर उसकी समझ में न आया कि क्यों, 'माडेल' से सिर बनाना, कल्पना से सिर बनाने की अपेक्षा बड़ा मुश्किल मालूम पड़ रहा था। वह मुसीबत में पड़ गया। उसने मिस प्राइस की ओर देखा। वह अधिक गंभीरता से बातें कर रही थीं। उनकी भौंहें

---

१. फ्रेंच-पोज में हो जाओ।

आतुरता से सिकुड़ गईं थी और उनकी आँखों में एक अधीर दृष्टि थी। स्टूडियो में गर्मी थी और उनके माथे पर पसीने की बूंदें उभर आई थीं: उनकी उम्र छब्बीस वर्ष की थी और घने सुनहरे बाल थे। उनका चेहरा बड़ा था, उस पर के अंग चौड़े और चपटे थे, तथा आंखें छोटी। उसकी त्वचा चिपचिपी थी, जिसमें रंग का आश्चर्यजनक अभाव था और उनके गालों पर कोई रंग न था। लगता था कि उस दिन उन्होंने नहाया नहीं था और सोचा तो यहाँ तक जा सकता था कि वह वही कपड़े पहन कर सोई भी थीं। वह गम्भीर और शान्त थीं। जब अगली बार रुकने का समय आया, तो पीछे हट कर वह अपने चित्र को देखने लगीं।

"पता नहीं क्यों मुझे इतनी परेशानी हो रही है," उन्होंने कहा, "पर मैं इसे ठीक जरूर कर लूंगी।" वह फ़िलिप की ओर घूमीं। "तुम्हारा काम कैसा चल रहा है?"

"बिलकुल नहीं," फिलिप ने दुःखपूर्ण मुस्कान से कहा।

उन्होंने उसके चित्र की ओर देखा।

"इस तरह से तुम कुछ भी करने की आशा नहीं कर सकते। तुम्हें नापना जरूर चाहिये और अपने कागज पर वर्ग तो जरूर ही खींचो।"

उन्होंने उसे जल्दी से बताया कि किस तरह काम की सारी तैयारी करनी चाहिये। फ़िलिप उनकी सच्चाई से बहुत प्रभावित हुआ, पर उन के सौंदर्य से विकर्षित भी उतना ही हुआ। उसने उन संकेतों को देने के लिये उन्हें धन्यवाद दिया और फिर काम करने लगा। उस बीच में और व्यक्ति आ गये थे, अधिकतर पुरुष, क्योंकि स्त्रियाँ पहले ही आ जाया करतीं थीं और उस मौसम के लिये (अभी भी जल्दी ही थी) स्टूडियो काफी भर गया। तभी एक नवयुवक, जिसके सिर के बाल काले, नाक बड़ी और चेहरा इतना लम्बा था कि घोड़े की याद दिलाये, आया। वह फ़िलिप की बगल में बैठ गया और उसको पार कर मिस प्राइस की ओर

संकेत किया ।

उसका इरादा काम करने का नहीं मालूम पड़ रहा था । उसने उसके कैनवेस की ओर देखा ; वह रंग रहा था और दो दिन पहले जब 'माडेल' पोज कर रहा था, चित्र का खाका खींच चुका था । वह फ़िलिप की ओर घूमा ।

"क्या अभी-अभी तुम इंगलैंड से आये हो ?"

"हाँ ।"

"ऐमिट्रानोज का पता तुम्हें कैसे लगा ?"

"यही स्कूल सिर्फ ऐसा था जिसके बारे में मैं कुछ जानता था ।

"मुझे आशा है कि इस विचार से तुम इस स्कूल में नहीं आये हो कि यहाँ कोई ऐसी चीज सीख लोगे जो कभी काम आयेगी ।"

"यह पेरिस का सबसे अच्छा स्कूल है," मिस प्राइस ने कहा और केवल यहीं कला को गंभीरता से आँका जाता है ।"

"क्या कला को गंभीरतापूर्वक आँकना चाहिये ?" नवयुवक ने पूछा;; और चूंकि मिस प्राइस ने घृणा से कंधे उचका कर ही इसका जवाब दिया, वह कहता गया, "असल बात तो यह है कि सभी स्कूल खराब हैं । स्पष्टत: सभी में इम्तहान होते हैं । यह स्कूल दूसरों से कम हानिकारक इसलिये है कि और जगहों की अपेक्षा यहाँ का शिक्षण अधिक अयोग्य है । क्योंकि यहाँ कुछ सीखते नहीं......."

"फिर आप यहां आए ही क्यों ?" फ़िलिप बीच में बोला ।

"मुझे इससे अच्छा रास्ता दिखलाई पड़ता है, पर मैं उस पर चलता नहीं । मिस प्राइस सुसंस्कृत हैं, उन्हें इसकी लैटिन जरूर याद होगी ।"

"अपनी बात-चीत से मुझे बाहर रक्खें तो अच्छा हो, मिस्टर क्लटन मिस प्राइस ने रूखे स्वर में कहा ।

'पेंटिंग सीखने का एक ही ढंग है," वह बिना भिझके कहता गया "और वह यह कि एक स्टूडियो लेकर, एक माडेल किराये पर लो और बस अपने आप लड़ाई शुरू कर दो ।"

"यह करना तो बड़ा आसान मालूम पड़ता है," फिलिप ने कहा।

"हाँ, बस इसमें पैसे लगते हैं," क्लटन ने उत्तर दिया।

वह पेंट करने लगा और फिलिप ने अपनी आँख के कोने से उसे देखा। वह लम्बे कद का, पर बहुत दुबला था; उसकी चौड़ी हड्डियाँ शरीर से बाहर निकलती सी मालूम पड़ रही थीं; उसकी कोहनियां इतनी नोकदार थीं कि उसके गंदे कोट की बाँहों को फाड़ती लग रही थीं। नीचे की ओर उसका पेंट फटा था और दोनों ही जूतों पर गंदे थिगड़े थे। मिस प्राइस उठ कर फिलिप के चित्राधार के पास गईं।

"अगर मिस्टर क्लटन एक क्षण को चुप रहें तो मैं तुम्हारी थोड़ी सहायता कर दूँ," उन्होंने कहा।

"मैं मजाकिया हूँ इसीलिये मिस प्राइस मुझे नापसन्द करती हैं," क्लटन ने विचारमग्न से अपने कैनवेस की ओर देखते हुए कहा, "पर मुझमें 'जीनियस' है इसलिये वह मुझसे घृणा करती हैं।"

फिलिप हँस पड़ा, पर मिस प्राइस ग़ुस्से से लाल हो उठीं।

"तुम ही ऐसे आदमी हो, जिसने तुम पर 'जीनियस' होने का अपराध मंढ़ा है।"

"और मैं ही ऐसा आदमी हूं जिसकी राय का मेरे लिये कोई मूल्य नहीं है।"

जो कुछ फिलिप ने किया था, मिस प्राइस उसकी आलोचना करने लगीं। वह जल्दी-जल्दी 'एनारमी' और बनावट समतल और रेखाओं और फ़िलिप की समझ में न आने वाली और बहुत सी चीज़ें कहती रहीं। वह स्टूडियो में बहुत दिनों से थीं और मुख्य 'प्वाइंट' जिन पर मास्टर जोर दिया करते थे, जानती थीं। लेकिन यद्यपि वह यह बता सकीं कि फिलिप के काम में क्या गलती थी, वह उसे सही करने का तरीका न बता सकीं।

"मेरे लिये आप इतनी तकलीफ उठा रही हैं, यह आपकी बड़ी मेहरबानी है," फ़िलिप ने कहा।

"ओह यह कुछ नहीं है", उन्होंने बुरी तरह झेंपते हुए उत्तर दिया, "जब मैं यहाँ पहले पहल आई थी तो और लोगों ने भी मेरे साथ यही किया था। मैं ऐसा किसी के लिए भी कर सकूंगी।"

"मिस प्राइस कहना चाहती हैं कि अपने ज्ञान का लाभ वह कर्त्तव्य-वश तुम्हें उठाने दे रही हैं, तुम्हारे व्यक्तित्व के आकर्षणवश नहीं," क्लटन ने कहा।

मिस प्राइस ने बहुत गुस्से से उसे देखा और तब वह उठ कर अपनी तस्वीर पर चली गईं। घड़ी ने बारह बजाये और माडेल आराम की एक चीख के साथ स्टैंड से नीचे उतर आई।

मिस प्राइस ने अपनी चीजें सम्हालीं।

"हम में से कुछ 'ग्रेवियर्स' में खाना खाने जाते हैं," उन्होंने फ़िलिप से कहा, क्लटन की ओर एक दृष्टि फेंकते हुए, "मैं खुद तो हमेशा घर जाती हूँ।"

"अगर चाहो तो मैं तुम्हें 'ग्रेवियर्स' लिवा चलूं," क्लटन ने कहा।

फ़िलिप ने उसे धन्यवाद दिया और जाने की तैयारी करने लगा। बाहर जाते समय मिसेज आटर ने उससे पूछा कि उसने कैसा काम किया।

"फैनी प्राइस ने तुम्हारी सहायता की कुछ?" उन्होंने पूछा, "मैंने तुम्हें वहाँ इसलिये बैठाला कि चाहने पर वह अवश्य ही तुम्हारा सहायता करती। वह बड़े बुरे स्वभाव की, संग में न बैठने योग्य लड़की है और स्वयं कुछ नहीं कर सकती, पर वह कायदे कानून जानती है और अगर थोड़ी परेशानी उठाना गवारा करे तो नये आदमी को फायदेमंद हो सकती है।"

रास्ते में जाते समय क्लटन ने उससे कहा।

"तुमने फ़ैनी प्राइस पर असर डाल दिया है। अच्छा तो, सावधान रहना।"

फ़िलिप हँसा। उसने कभी किसी को नहीं देखा था जिस पर असर

डालने की उसकी इच्छा न रही हो। वह उस छोटे, सस्ते रेस्टरां में पहुँचे जहाँ कई विद्यार्थी खाना खाते थे और क्लटन उस मेज़ पर बैठ गया, जिस पर तीन चार आदमी पहले से बैठे थे। एक फ्रैंक में उन्हें एक अंडा, गोश्त की एक प्लेट, चीज़ और शराब की एक छोटी बोतल मिल जाती थी। काफ़ी अलग से मिलती थी। वह फुटपाथ पर बैठे थे और लगातार घंटियाँ बजाते हुए पीली ट्रामें बुलीवार पर इधर-से-उधर जा रही थीं।

"हाँ, तुम्हारा नाम क्या है?" वे बैठे, तो क्लटन ने कहा।

"कैरी।"

"एक बहुत पुराने और सच्चे दोस्त, जिनका नाम कैरी है, का परिचय कराने की मुझे आज्ञा दीजिये," क्लटन ने गम्भीरतापूर्वक कहा, "मिस्टर फ्लैनागन, मिस्टर लॉसन।"

वे हंसे और अपनी बातचीत जारी रक्खे रहे। वे हज़ारों चीजों के बारे में बातें कर रहे थे और सभी एक साथ बोलते थे। कोई दूसरे पर ज़रा भी ध्यान नहीं दे रहा था। गर्मी में जहाँ गये थे उनकी स्टूडियो की, अनेक स्कूलों की बातें वे कर रहे थे। वे ऐसे नाम ले रहे थे जो फ़िलिप के लिए अपरिचित थे—मॉनेट, मैनेट, रेलो, पिसारो, देगा। फ़िलिप ध्यान पूर्वक सुन रहा था और यद्यपि अपने को उससे थोड़ा अलग महसूस कर रहा था, उसका हृदय खुशी से उछला पड़ रहा था। समय उड़ गया। क्लटन ने उठ कर कहा:

"अगर यहाँ आओ तो शाम को मुझे यहीं पाओगे। इस 'क्वार्टर' में यही जगह सबसे अच्छी तुम्हें मिलेगी, जहाँ सबसे कम कीमत पर बद-हज़मी मिल सकती है।"

: ७ :

मंगलवार और शुक्रवार को मास्टर ऐमिट्रानोज़ में, काम की आलोचना करते हुए, बिताया करते थे। फ्राँस में चित्रकारों की आमदनी

कुछ नहीं होती, यदि वह 'पोर्टेट' नहीं बनाता और कोई अमीर अमेरिकन उसके पीछे नहीं होता और प्रसिद्धि प्राप्त कलाकार सप्ताह में दो या तीन घंटे एक बार अनेक स्टूडियो में, जहाँ चित्रकला सिखाई जाती है, मिलकर अपनी आमदनी वढ़ाने में प्रसन्न ही होते हैं। मंगल-वार को माइकेल रोलाँ 'ऐमिट्रानोज़' में आया करते थे। वह अधेड़ अवस्था के आदमी थे, जिनकी दाढ़ी सफेद और शरीर का रंग लाल था, जिन्होंने राज्य के लिये अनेक प्रकार की सजावटें रंगी थीं, पर उनके विद्यार्थियों के लिये वे हास्यास्पद वस्तुयें थीं। वह बड़े अच्छे शिक्षक थे, सहायक, नम्र और बढ़ावा देने वाले। दूसरी ओर, फॉयने, जो स्टूडियो में शुक्रवार को आया करते थे, के साथ काम कर सकना बड़ा मुश्किल काम था। वह छोटे कद के आदमी थे, शरीर में झुरियाँ थीं, दांत बुरे और बाल हरापन लिये हुये थे, भूरी अस्त-व्यस्त दाढ़ी और खूंख्वार आंखें थीं। उनकी आवाज़ ऊँची और ढंग व्यंगमय था। लक्जेमबर्ग ने उनके दो चित्र खरीदे थे और पचीस वर्ष की अवस्था में उनकी उन्नति की बहुत आशा की जाती थी; परन्तु उनकी योग्यता का कारण उनका व्यक्तित्व नहीं यौवन था और बीस वर्ष तक वह वही प्राकृतिक दृश्य दोहराते रहे जिससे उन्हें प्रारम्भिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी। जब एक ही तरह की चीज़ बनाते रहने का अपराध उन पर मढ़ा गया तो उन्होंने उत्तर दिया :

"कोरो ने केवल एक चीज़ पेंट की थी। मैं क्यों न करूं?"

फ़िलिप पहले फ़ॉयने के सम्पर्क में आया। जिस समय फ़िलिप स्टूडियों में पहुंचा वह पहले से वहाँ थे। वह चित्रकारों का निरीक्षण मिसेज़ ऑटर के साथ कर रहे थे और मिसेज़ ऑटर फ्रेंच न समझ पाने वाले लोगों के लिए उनकी टिप्पणियों का अनुवाद करती जाती थीं। फ़िलिप के आगे बैठी फ़ैनी प्राइस धीरे-धीरे काम कर रही थी। उसके चेहरे पर हताशता का भाव था और थोड़ी देर में वह झुक कर अपने ब्लाउज़ से अपने हाथ पोंछ लेती थी; क्योंकि आतुरता से उनके

शरीरों का तापक्रम बढ़ गया था। सहसा उसने फ़िलिप की ओर उत्कंठित आँखों से देखा, जिसे उसने दुःखमय क्रोध से बुदबुदाकर छिपाने की कोशिश की।

"तुम्हारा क्या ख्याल है, यह अच्छा है?" अपने चित्र की ओर देखकर सिर हिलाते हुए पूछा।

फ़िलिप ने उठकर उसे देखा। वह आश्चर्य में पड़ गया; उसे लगा फ़ैनी प्राइस में आँख है ही नहीं; सारा चित्र निराशा जनक रूप से भद्दा था।

"काश, मैं इसका आधा अच्छा ही खींच पाता," उसने उत्तर दिया।

"तुम्हारे लिये अभी संभव नहीं, अभी तो तुम आये ही हो। यह सोचना बहुत है कि तुम मेरे बराबर अच्छा चित्र बना सकते हो। मैं यहाँ दो साल से हूँ।"

फ़ैनी प्राइस फ़िलिप के लिये एक पहेली थी। अपने बारे में उसका ख्याल सचमुच आश्चर्यजनक था। फिलिप को अब तक मालूम हो गया था कि स्टूडियो का प्रत्येक व्यक्ति उसे प्रेमपूर्वक नापसंद करता था; और इस में आश्चर्य की भी बात नहीं, लगता था वह अपने रास्ते से अलग जाकर दूसरों को दुःख पहुंचाती थी।

उसने अपना चारकोल फिर उठा लिया, पर दूसरे ही क्षण जरा कराह कर रख दिया।

"अब और अधिक मैं नहीं कर सकती। मैं इस कदर परेशान हूँ।"

उसने फॉयने की ओर देखा जो मिसेज़ ऑटर के साथ उसकी ओर आ रहे थे। मिसेज़ ऑटर, नमित, साधारण और आत्म संतुष्ट अपने को बड़ा आवश्यक समझ रही थी। फॉयने एक गंदी, छोटे कद की अंग्रेजी स्त्री के चित्राधार के सामने बैठ गये। उस स्त्री को रूथ चैलिस के नाम से पुकारा जाता था। फ़ॉयने बड़े खुश मिज़ाज मालूम पड़ रहे थे; उन्होंने उससे कुछ अधिक नहीं कहा, परन्तु उसके चारकोल के

तेज़, निश्चित आघातों से उनकी गलतियाँ समझा दीं। मिस चैलिस जब वह उठे, खुशी से भर उठीं। वह क्लटन के पास गये और इस समय तक फ़िलिप भी थोड़ा परेशान हो गया था, परन्तु मिसेज़ ऑटर ने वायदा किया था कि उसके लिये वह सब इतना मुश्किल न होगा। फ़ॉयने एक क्षण तक क्लटन के चित्रआधार के सामने खड़े रहे, चुपचाप अपना नाखून दाँतों से काटते हुए और तब जैसे किसी विचार में खोये से उन्होंने काटा हुआ खाल का छोटा टुकड़ा कैनवस पर थूक दिया।

"यह रेखा अच्छी है," उन्होंने अंगूठे से एक ओर दिखाते हुए आखिर कहा, "तुम रेखाएं खींचना सीखने लगे हो।"

तब फाँयने उठकर फ़िलिप के पास आये।

"ये अभी दो दिन पहले आये हैं," मिसेज़ आटर बताने की जल्दी करने लगे, "ये बिल्कुल नये हैं। कभी कहीं नहीं पढ़े।"

"यही दिखलाई पड़ता," मास्टर ने कहा।

वह आगे बढ़ गये और मिसेज़ आटर ने फुसफुसा कर कहा :

"यह वह नवयुवती है, जिसके बारे में मैंने आपसे कहा।"

उन्होंने फ़ैनी प्राइस को देखा जैसे वह कोई बहुत विकर्षक जानवर हो और उनकी आवाज़ और अधिक कठोर हो गई।

"लगता है तुम सोचती हो कि मैं तुम पर ठीक ध्यान नहीं देता। तुम मिसेज आटर से शिकायत कर रही थीं। अच्छा, अपना वह काम दिखाओ, जिस पर तुम चाहती हो मैं अपना ध्यान दूं।"

फैनी प्राइस का चेहरा लाल हो गया। उसकी अस्वस्थ त्वचा के नीचे का खून अजीब तरह का बैंजनी दिखलाई पड़ रहा था। बिना उत्तर दिये उस चित्र की ओर इशारा किया जिस पर वह पिछले एक सप्ताह से काम कर रही थी। फ़ॉयने बैठ गये।

"हाँ, तुम मुझ से क्या कहलाना चाहती हो? क्या तुम चाहती हो कि मैं कहूँ यह अच्छा है? वह अच्छा नहीं है। क्या तुम चाहती हो कि मैं कहूँ यह अच्छी तरह खींचा गया है? नहीं खीचा गया क्या तुम

चाहती हो कि मैं कहूँ इसमें गुण हैं ? नहीं हैं। क्या तुम चाहती हो कि मैं इसकी गलतियाँ बताऊँ ? यह पूरा गलत है। क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें बताऊँ कि इसका तुम्हें क्या करना चाहिये ? इसे फाड़ डालो। अब तुम संतुष्ट हो ?"

मिस प्राइस का चेहरा सफ़ेद हो गया। वह बहुत नाराज़ हो उठी क्योंकि उन्होंने यह सब मिसेज़ आटर के सामने कह दिया था। यद्यपि वह फ्रांस में बहुत दिनों से थी और फ्रेंच अच्छी तरह समझ सकती थी, पर मुश्किल से दो शब्द बोल सकती थी।

"उन्हें मेरे साथ ऐसा व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है। मेरा रुपया भी औरों के रुपये के बराबर ही अच्छा है। मैं उन्हें शिक्षा देने के लिये पैसे देती हूँ। यह मुझे पढ़ना नहीं है।"

"वह क्या कर रही है ? वह क्या कह रही है ?" फ़ायने ने पूछा।

मिसेज़ ऑटर अनुवाद करने में हिचकिचाई और मिस प्राइस ने भद्दी फ्रेंच में वही बात दोहरा दी।

फ़ॉयने की आँखें गुस्से से जल उठीं। उनका स्वर ऊंचा हो गया और मुट्ठी उठ गई।

"मैं तुम्हें नहीं पढ़ा सकता। मैं किसी ऊंट को तुमसे अच्छी तरह पढ़ा सकता हूँ।" वह मिसेज़ ऑटर की ओर (घूमे) "उससे पूछिये यह वह मन बहलावे के लिये करती है, या वह इससे रुपये पैदा करने की आशा करती है ?"

"मैं कलाकार बनकर ही अपना जीवन यापन करूँगी," मिस प्राइस ने उत्तर दिया।

"तब मेरा यह कर्तव्य हो जाता है कि मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम अपना समय बरबाद कर रही हो। मेरी सलाह मानो, मैमज़ेना, तो कपड़े बनाना सीखो।"

मिस प्राइस ने धीरे-धीरे अपनी चीजें समेटीं। दूसरों के जाने के बाद फ़िलिप पीछे रह गया, जिससे वह उससे सहानुभूति के कुछ शब्द

कह सके। वह इसके अलावा कुछ न सोच सका :

"मुझे बहुत दुःख है। वह आदमी कैसा खूंख्वार जानवर है।"

वह उसकी ओर जंगलियों की तरह घूम पड़ी।

"इसीलिए तुम यहाँ इन्तज़ार कर रहे हो ? जब मुझे तुम्हारी सहानुभूति की जरूरत होगी, मैं माँग लूँगी। कृपा करके मेरे रास्ते से हट जाओ।"

वह उसको पार कर स्टूडियो के बाहर चली गई और फ़िलिप, अपने कंधे उचकाने के बाद, लंगड़ाता हुआ ग्रेबियर्स की ओर खाना खाने चल दिया।

"अच्छा सबक मिला उसे," जब फ़िलिप ने लॉसन को बताया क्या हुआ था तो उसने कहा, 'बदतमीज़ कुतिया!"

फ़िलिप को पेरिस में रहना उतना सस्ता नहीं लगा, जितना सस्ता उसे विश्वास दिलाया गया था। फरवरी के अंत तक जितने रुपये लेकर वह आया था उनका अधिकांश भाग समाप्त हो गया। वह अभिमानी था और अपने अभिभावक से नहीं माँगना चाहता था, न ही वह चाहता था कि लुइज़ा चाची जानें कि उसकी परिस्थितियाँ बड़ी प्रतिकूल हैं; क्योंकि उसे विश्वास था कि वह अपनी जेब से उसे कुछ भेजने की कोशिश करेंगी और उसे मालूम था कि कितना कम रुपया उनके पास था। तीन महीने में वह बालिग़ हो जायगा और अपनी छोटी-सी सम्पत्ति का अधिकारी बन जायगा। उसे अपने पिता से कुछ वस्तुएँ विरासत में मिली थीं, उनमें से कुछ को बेच कर उसने वह समय बिताया।

लगभग उसी समय लॉसन ने प्रस्ताव रक्खा कि बुलीवार रास्पेल से जाने वाली एक सड़क पर एक खाली स्टूडियो वे लोग ले लें। वह बहुत सस्ता था। उससे मिला हुआ एक कमरा था जिसे वे शयनकक्ष की तरह प्रयोग कर सकते थे; और चूँकि हर सुबह लॉसन स्कूल चला जाता था, लॉसन बिना बाधा के पूरा स्टूडियो इस्तेमाल कर सकता था। पहले फ़िलिप खर्च का ख्याल करके हिचकिचाया, पर उन्होंने हिसाब लगाया;

(वे अपना स्टूडियो रखने के इतने इच्छुक थे कि उन्होंने बड़ी फुर्ती से हिसाब लगाया) और ऐसा लगा कि वहाँ रहने का खर्च होटल में रहने के खर्च से अधिक न होगा।

वे उसमें आ गये, दो पलंग, एक वाश-स्टैंड, कुछ कुर्सियाँ खरीद लिये और पहली बार उन्हें किसी चीज़ को अपनाने की उत्तेजना का अनुभव हुआ। वे इतने उत्तेजित हो गये थे कि पहली रात अपने 'घर' में बिस्तरों पर पड़े तीन बजे सुबह तक बातें करते रहे; दूसरे दिन सुबह आग जला कर उन्होंने अपनी क़ॉफ़ी स्वयं बनाई, जिसे उन्होंने पैजामे पहने हुए ही पिया और यह व्यापार उन्हें इतना अच्छा लगा कि फ़िलिप लगभग ग्यारह बजे ही ऐमिट्रानोज पहुँच सका। वह बहुत खुश था। फ़ैनी प्राइस की ओर देख कर उसने सिर हिलाया।

"तुम्हारा काम कैसा चल रहा है ?" उसने खुशी से पूछा।

"उससे तुम्हें मतलब ?" उत्तर में उसने पूछा।

फ़िलिप अपनी हंसी रोक न सका।

"मेरा गला मत पकड़ो एकदम। मैं सिर्फ नम्र होने की कोशिश कर रहा था।"

"मुझे तुम्हारी नम्रता की जरूरत नहीं।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि मुझ से भी झगड़ा कर ही डालो तुम ?" फ़िलिप ने नम्र स्वर में पूछा, "बहुत ही कम आदमी ऐसे हैं जिनसे तुम बोलती हो।"

"यह मेरा काम है, है न ?"

"बिलकुल।"

वह काम करने लगा, पर वह सोच रहा था कि उसने स्वयं को क्यों इतना बुरा बना लिया है। वह इस नतीजे पर पहुंच गया था कि वह उसे पूरी तरह नापसन्द करता है। सभी करते थे। उसकी कड़वी ज़बान के कारण ही लोग उससे नम्रता से बातें किया करते थे; क्योंकि उनके सामने और पीठ पीछे वह बड़ी घृणित बाते कहा करती थी। पर

फ़िलिप इतना खुश महसूस कर रहा था कि वह नहीं चाहता था कि मिस प्राइस भी उसके प्रति बुरे ख्याल रक्खें। उसने उसी तरकीब का प्रयोग किया जिससे कई बार वह फ़ैनी प्राइस का क्रोध मिटा चुका था।

"सुनिये, आप ज़रा यहाँ आकर मेरे चित्र को देख लें। मैं बड़ी परेशानी में पड़ गया हूँ।"

"धन्यवाद, पर अपने समय में मुझे कुछ और अच्छा काम करना है।"

फ़िलिप आश्चर्य से उसे देखने लगा, क्योंकि अगर कोई काम वह ठीक से कर सकती थी तो वह क्या सलाह देगा। वह अधिक क्रोध से, धीमे स्वर में कहती गई।

"अब लॉसन चला गया है तो तुम सोचते हो कि तुम मेरे साथ रहोगे। बहुत-बहुत धन्यवाद! किसी और को अपना मददगार बना लो। मैं किसी की जूठन नहीं चाहती। जब तुम यहाँ किसी को नहीं जानते थे तब मेरे साथ रहने में बड़े खुश थे। जैसे ही तुम्हारे और दोस्त बन गये, तुमने मुझे एक किनारे फेंक दिया, पुराने दस्ताने की तरह"—उसने पुरानी उत्प्रेक्षा को संतोष के साथ दोहराया—"पुराने दस्ताने की तरह। मुझे परवाह नहीं, पर अब दुबारा मैं बेवकूफ भी नहीं बन सकती।"

उसके कथन में सत्य का कुछ अंश था और उससे फ़िलिप इतना नाराज़ हो गया कि जो चीज़ उसके दिमाग़ में सबसे पहले आई उसने कह डाली।

"हटाओ इसे, मैंने तो तुम्हारी राय इसलिये जाननी चाही थी कि इससे तुम्हें खुशी हासिल होती है।"

सहसा वह कुछ कह न सकी और उसने दर्द-भरी दृष्टि उस पर डाली। तब दो आँसू उसके गालों पर बह चले। फ़िलिप की समझ में न आया कि इस व्यापार का क्या मतलब है और वह अपना काम करने लगा। वह बड़ा परेशान था और उसकी आत्मा उसे कोस रही थी;

पर वह उसके पास जाकर कहना नहीं चाहता था कि उसके कारण उसे दुःख पहुंचा, इसलिए उसे दुःख है। उसे डर था कि वह अनुकूल अवसर समझ कर उसे नीचा दिखाने की कोशिश करेगी। दो तीन हफ्ते तक वह फिलिप से नहीं बोली और जब फिलिप उसके द्वारा अपने अपमान की बात भूल गया, तो ऐसी मुश्किल दोस्ती से छुटकारा पाकर खुश ही हुआ।

परन्तु एक दिन वह उसके पास आई। उसका चेहरा लाल था। उसने उससे पूछा कि क्या वह बाद में उससे बातें कर सकती है।

"जरूर, जितनी चाहो," फिलिप मुस्कराया "बारह बजे मैं सबके जाने के बाद आपका इंतजार करूँगा।"

दिन का काम खत्म होने के बाद वह उसके पास गया।

"क्या तुम थोड़ी दूर तक मेरे साथ चल सकते हो ?" उसने दूसरी ओर देखते हुए कहा।

"जरूर।"

दो-तीन मिनट तक वे चुपचाप चलते रहे।

"मैं तुमसे नहीं लड़ना चाहती। पेरिस में तुम्हीं अकेले मेरे दोस्त थे। मैं सोचती थी तुम मुझे पसन्द करते हो। मुझे लगता था हमारे बीच में कुछ है। मैं तुम्हारी तरफ खिंचती जा रही थी—तुम समझ रहे हो, मेरा मतलब तुम्हारा हाथी पाँव।"

फ़िलिप का चेहरा लाल हो गया और फौरन स्वभाववश बिना लंगड़ाये चलने की कोशिश करने लगा। वह फ़ैनी प्राइस का मतलब समझ गया। वह बदसूरत और गन्दी थी और चूँकि उसका एक पैर फील पाँव था, उनमें एक तरह का सामंजस्य था। वह बहुत नाराज़ हो उठा, पर बल पूर्वक बोला नहीं।

"तुमने कहा था कि सिर्फ मुझे खुश करने के लिए तुम मेरी राय पूछा करते थे। तुम नहीं सोचते कि मेरा काम अच्छा है ?"

"मैंने सिर्फ ऐमिट्रानोज वाला चित्र देखा है। उससे बताना तो बड़ा

मुश्किल है ।"

"मैं सोच रही थी कि क्या मेरे घर चल कर तुम मेरे और चित्र देख सकोगे । मैंने कभी किसी से नहीं कहा । तुम्हें दिखाने में मुझे अच्छा लगेगा ।"

"यह आपकी बड़ी मेहरबानी है । मैं जरूर देखना चाहूँगा ।"

"मैं यहाँ से बिल्कुल पास रहती हूँ," उसने क्षमा माँगने के से ढंग में कहा, "तुम्हें सिर्फ दस मिनट लगेंगे ।"

"ओह, वह ठीक है," उसने कहा ।

उसने फ़िलिप को बीस छोटे-छोटे कैनवेस दिखाये, जिनकी लम्बाई चौड़ाई बीस और बारह इंच थी । एक के बाद एक वह उन्हें, उसके चेहरे को देखते हुए, रखती जाती थी; वह एक देख चुकता तो सिर हिला देता ।

"तुम्हें पसन्द आये, है न ?" थोड़ी देर बाद उसने आतुरता से पूछा ।

"पहले मैं सब देखना चाहता हूँ," उसने उत्तर दिया, "बातें मैं बाद में करूँगा ।"

वह अपने को संयत कर रहा था । बड़ी घबराहट लग रही थी । समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे । यही नहीं कि वे बुरी तरह बनाये गये थे और नौसिखियों की तरह, जिन्हें जरा भी तमीज़ न हो, रंग पोता गया था, परन्तु उनमें 'वैल्यूज'[1] लाने का भी कोई प्रयास नहीं किया था और 'पर्सपेक्टिव'[2] तो बड़ा भयानक था । लगता था जैसे वह पाँच साल के बच्चे का काम हो, पर बच्चे के काम में स्वाभाविक

---

१. एक तस्वीर के विभिन्न भागों की छाया और प्रकाश के अनुसार तुलना; रंगों का इसमें कोई ख्याल नहीं रक्खा जाता । २. सादे कागज़ पर किसी वस्तु का चित्र बनाने की कला जिसमें वह चित्र बिल्कुल उस चीज़ की तरह मालूम पड़े ।

सरलता होती और देखी हुई चीज़ को उसी तरह बनाने की कोशिश तो की होती; पर यह किसी बदतमीज़ दिमाग़ का काम था जिसमें अनेक बदतमीज़ यादगारें भरी हों। फ़िलिप को याद आया कि वह मॉनेट और 'इम्प्रेशनिस्ट' के बारे में बड़े जोश से बातें किया करती थी, पर यहाँ तो रॉयल एकेडमी की सबसे बुरी नकल थी।

"बस," उसने आखिर कहा, "इतने ही हैं।"

फ़िलिप औरों से अधिक सच्चा नहीं था, पर जान बूझ कर एक बड़ा सफेद झूठ बोलने में उसे बड़ी कठिनाई पड़ी और जब उसने उत्तर दिया तो उसका चेहरा लाल हो गया।

"मैं सोचता हूं, ये बड़े अच्छे हैं।"

फैनी के अस्वस्थ गालों पर थोड़ा रंग आया और वह मुस्कराई।

"अगर तुम ऐसे नहीं सोचते, तो मत कहो। मैं सत्य जानना चाहती हूँ।"

"पर मैं यही सोचता हूँ।"

"तुम्हें कुछ टीका-टिप्पणी नहीं करनी ? कुछ तो ऐसे होंगे ही जिन्हें तुमने उतना पसन्द नहीं किया।"

फ़िलिप ने बड़ी निराशा से चारों ओर देखा। उसे एक 'लैंड्सकेप'[1], नौसिखियों का काम, दिखलाई पड़ा—एक पुराना पुल, लताओं से लदी एक झोंपड़ी, पानी का किनारा।

"निस्संदेह, मैं यह नहीं कहता कि मुझे सब कुछ मालूम ही है," उसने कहा, "पर मुझे इस चित्र की 'वैल्यूज़' ठीक-ठीक समझ में नहीं आई।"

उसके चेहरे पर गहरा लाल रंग पुत गया और तस्वीर जल्दी से उठाकर उसने उलट कर रख दी।

"पता नहीं यही तस्वीर क्यों तुमने चुनी। यह मेरा सबसे अच्छा

---

१. प्राकृतिक दृश्य।

काम है। मुझे विश्वास है उसकी 'वैल्यूज़' ठीक है। 'वैल्यूज़' किसी को पढ़ाई नहीं जा सकतीं, उन्हें या तो समझा जाता है या नहीं समझा जाता।"

"मैं सोचता हूँ वे सब बड़े अच्छे हैं।" फ़िलिप ने दोहराया।

उसने चित्रों को आत्म-सन्तोष से देखा।

"मेरा ख्याल है उनके लिए शर्माने की कोई बात नहीं।"

फ़िलिप ने अपनी घड़ी की ओर देखा।

"देर हो रही है। चलिये कहीं खाना खा आएं।"

"मेरा खाना तो यहीं तैयार है।"

फ़िलिप को उसका कोई निशान नहीं दिखलाई पड़ा, पर उसने सोचा कि उसके जाने के बाद नौकर ले आयेगा। वह जल्दी जाना भी चाहता था। कमरे की बदबू से उसका सिर दर्द करने लगा था।

: ८ :

मार्च में 'सैलन' में चित्र भेजने की अधिक उत्तेजना रही। क्लटन, हमेशा की तरह, के पास कुछ भी तैयार नहीं था, और लॉसन द्वारा भेजी गई दो तस्वीरों पर वह बड़ा नाराज़ था; वे स्पष्टतः किसी विद्यार्थी के बनाये मालूम पड़ते थे, सीधे-साधे 'मॉडेलों' के चित्र, पर उसमें एक शक्ति थी; कलटन का लक्ष्य पूर्णता की ओर रहता था, वह ऐसे चित्रों को बर्दाश्त नहीं कर सकता था जो उस ऊंचाई के न हों और अपने कंधे बिचका कर उसने लॉसन को बताया था कि ऐसे चित्रों को प्रदर्शित करना गुस्ताखी है जिन्हें स्टूडियो से बाहर ही न निकालना चाहिए; जब वे दोनों चित्र स्वीकार कर लिये गये तो वह और बौखलाया। फ्लेनेगन ने भी अपनी तक़दीर की आज़माइश की, पर उसके चित्र अस्वीकार कर दिये गये। मिसेज़ ऑटर ने एक अशुद्धि हीन 'पोर्टेट देमा मेयर', सुन्दर और द्वितीय श्रेणी का, भेजा; वह अच्छी जगह पर लटकाया गया।

हेवर्ड, जिसे फ़िलिप ने हीडेनबर्ग छोड़ने के बाद से नहीं देखा था, कुछ दिनों के लिये पेरिस आया। लॉसन और फ़िलिप अपने स्टूडियो में, लॉसन के चित्र स्वीकार लिये जाने के उपलक्ष्य में, एक पार्टी दे रहे थे; हेवर्ड उसके लिये समय से था। फ़िलिप दुबारा हेवर्ड को देखने को बड़ा उत्सुक था, पर जब अन्त में वे मिले तो उसे निराशा का अनुभव हुआ। हेवर्ड देखने में कुछ बदल गया था; उसके हसीन बाल कम हो गये थे, उसकी नीली आँखें पहले से अधिक पीली पड़ गई थीं और उसके शरीर को देख कर वह कुछ आश्चर्य में पड़ गया। दूसरी ओर, उसका मस्तिष्क बिलकुल बदला हुआ नहीं मालूम पड़ रहा था और जिस संस्कृति ने अठारह वर्ष के फ़िलिप को आकर्षित किया था, इक्कीस वर्ष के फ़िलिप को उससे कुछ चिढ़ और घृणा लगी। वह स्वयं काफी बदल गया था और कला, जीवन और साहित्य के विषय में अपनी पुरानी सम्मतियों को चिढ़ से देखता था और जिस आदमी की ऐसी रायें होती थीं उसके साथ व्यवहार करने में उसे बड़ी मुश्किल पड़ती थी। उसे यह ज्ञान बिलकुल नहीं था कि हेवर्ट के सामने वह बढ़ कर बातें करना चाहता था। जब वह विभिन्न गैलरियों में उसे ले गया, तो अपने तमाम क्रान्तिकारी विचार उस पर उंडेलता रहा। जिन्हें उसने कुछ दिन पहले खुद स्वीकार किया था। 'मैनेट' की 'ओलम्पिया' के पास ले जाकर उसने नाटकीय ढंग से कहा :

"मैं इस एक चित्र के लिए वेलकवे, रेम्ब्रां, और वर्नियर को छोड़कर सारे पुराने कलाकारों को कुर्बान कर सकता हूँ।"

"वर्नियर कौन था ?" हेवर्ड ने पूछा।

"ओह तुम वर्नियर को नहीं जानते ? तुम सभ्य आदमी नहीं हो। उससे परिचय किये बिना तुम्हें एक मिनिट भी जिन्दा नहीं रहना चाहिये। वह पुराना कलाकार था जो आधुनिक कलाकारों की तरह पेंट करता था।

वह हेवर्ड को 'लक्जेमबर्ग' से बाहर ले गया, और दोनों 'लावरे' जल्दी-जल्दी पहुँचे।

"क्या अब यहाँ और चित्र नहीं हैं ?" भ्रमणकर्ता की सब कुछ देख लेने की उत्कंठा से उसने पूछा।

"अब किसी काम की तस्वीरें नहीं हैं। बाद में अपने आप आकर इन्हें देख सकते हो।"

'लावरे' पहुंचकर फ़िलिप उसे 'लॉग गैलरी' में ले गया।

"मुझे मिश्रोकोन्ड' देखना है," हेवर्ड ने कहा।

"ओह, प्यारे दोस्त, वह केवल साहित्य है।"

आखिर एक छोटे कमरे में, फ़िलिप वर्नियर वान हेफ्ट के 'लेसमेकर' के सामने रुका।

"यह 'लावरे' का सबसे अच्छा चित्र है। बिलकुल मैनेट की तरह।"

समझाने और जैसे बोलने वाले अंगूठे से फ़िलिप ने उस खुशनुमा तस्वीर की ओर इशारा किया। उसने स्टूडियो की भाषा का प्रयोग अत्यधिक प्रभाव के साथ किया।

"मेरी समझ में, मुझे तो इसमें कोई आश्चर्यजनक बात दिखलाई नहीं पड़ती," हेवर्ड ने कहा।

"निस्संदेह यह चित्र कलाकारों के लिये है," फ़िलिप ने कहा, "मैं समझ सकता हूँ कि साधारण आदमी को इसमें कुछ ज्यादा नहीं दिखलाई पड़ेगा।"

"कौन ?" हेवर्ड ने पूछा।

"साधारण आदमी।"

अनेक आदमियों की तरह जो कलाओं में रुचि लेते हैं, हेवर्ड को ठीक-ठीक जानने की बहुत उत्कंठा रहती थी। जो व्यक्ति उस पर प्रभाव नहीं डाल सकते थे, उनके विरुद्ध हो जाता था, पर वह स्वयं बड़े अच्छे ढंग से दूसरों पर हावी हो जाता था। वह फ़िलिप के बोलने के ढंग से प्रभावित हुआ और चुपचाप फ़िलिप का सुझाव स्वीकार कर लिया कि किसी चित्र का सबसे अच्छा आलोचक कोई चित्रकार ही हो सकता है।

एक या दो दिन बाद फ़िलिप और लासन ने पार्टी दी। मिस चैलिस ने कहा कि वह आकर खाना तैयार कर देंगी। उन्हें अपने 'सेक्स' से कोई लगाव न था और जब यह सुझाया गया कि उनके खातिर और महिलाओं को निमंत्रित किया जाय तो उन्होंने इनकार कर दिया। क्लटन फ्लैनेगन, पाटर और दो और व्यक्तियों को मिल कर पूरी पार्टी थी।

मिस चैलिस की आँखें बड़ी और भूरी, चेहरा पतला और स्थिर, त्वचा पीली और माथा चौड़ा था, जैसे वह 'बर्न-जोन्स' की किसी तस्वीर से बाहर निकल कर आई हो। उसके हाथ लम्बे और सुन्दर थे और उंगलियों में निकोटीन के गहरे धब्बे थे। उनके चारों ओर हाईस्ट्रीट, केंसिग्टन का रोमांटिक वातावरण था। वह सौन्दर्य की पुजारिनी थी; पर वह बड़ी अच्छी लड़की थी, दयालु और अच्छे स्वभाव की; और उसका प्यार बिल्कुल उथला था।

क्लटन और पाटर उसके दोनों ओर बैठे थे और सभी को मालूम था कि उनमें से किसी से उसे जरूरत से ज्यादा शरमाते नहीं पाया। वह अधिकतर आदमियों से छः हफ़्ते में ऊब जाती थी, पर उसे मालूम था कि उन नौजवानों के साथ, जो अपने दिल उसके पैरों पर रख दिया करते थे, बाद में कैसा व्यवहार किया जाता है। उनके लिये उसके भीतर बुरी भावनायें नहीं होती थीं, यद्यपि कभी वह उन्हें प्यार करती थी पर बाद में प्यार करना बन्द कर देती थी और उनके साथ वह दोस्ताना, पर अंतरंग नहीं, व्यवहार में करती थी। कभी-कभी वह लासन की ओर खूबसूरत आँखों से देख लेती थी।

खाना समाप्त हो जाने के बाद वे आराम से सिगरेट पीने बैठ गये। रूथ चैलिस, जो कभी ऐसा काम न करती थी, जो जान बूझकर कलात्मक न बनाया गया हो, आकर्षक पोज में बैठ गई। वह समय की अंधकारमय गहराई में विचारमग्न आँखों से देखती और कभी-कभी एक विचारमग्न दृष्टि लासन पर डालकर वह गहरी साँस लेती।

: ९ :

लगभग इसी समय फ़िलिप ने एक नया दोस्त बनाया। सोमवार की सुबह स्कूल में मॉडेल इकट्ठे हुआ करते थे, जिससे कि उनमें से एक हफ़्ते के लिये चुन लिया जाय। एक दिन एक नवयुवक लिया गया जो व्यवसाय से मॉडेल नहीं था। जिस ढंग से वह बैठा था उससे फ़िलिप का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ : स्टैंड पर चढ़ कर वह दोनों पैरों पर जम कर खड़ा हो गया, हाथ बाँध लिये और फिर जैसे चुनौती देता हुआ आगे की ओर तनिक झुका। इस पोज से उसके सुन्दर शरीर का प्रदर्शन होता था। उसके शरीर पर चर्बी जरा भी न थी और उस की माँस-पेशियाँ इस तरह बाहर निकली थी जैसे लोहे की हों। वह किसी से बातें नहीं करता था पर एक दो दिन में मिसेज ऑटर ने बताया कि वह स्पेन का निवासी था और पहले कभी नहीं बैठा था।

ऐसा हुआ कि पाटर, ऐमिट्रानोज में सीखने वाले अमेरिकनों में से एक, इटली दो महीनों के लिये जा रहा था, उसने अपना स्टूडियो फ़िलिप को देना चाहा। फ़िलिप खुश हो गया। वह लॉसन की बिन मांगी सलाहों से थक गया था और अकेले रहना चाहता था। हफ्ते के अन्त में फ़िलिप मॉडेल के पास गया और यह बहाना करके कि उसका चित्र पूरा नहीं हुआ था, उसने पूछा कि क्या आकर वह स्टूडियो में एक दिन बैठ सकेगा।

"मैं माडेल नहीं हूं," स्पेन वासी ने कहा, "मुझे अगले हफ्ते दूसरे काम करने हैं।"

"आओ और मेरे साथ खाना खाओ। हम इस पर बातें नहीं करेंगे।" फ़िलिप ने कहा, दूसरा हिचकचाया तो उसने मुस्कराकर कहा, "मेरे साथ खाना खाने से तुम्हें नुकसान नहीं होगा।"

"अगर मैंने महसूस किया कि मैं अच्छा कलाकार नहीं बन सकूंगा, तो मैं चित्रकला छोड़ दूंगा," फ़िलिप ने कहा, "द्वितीय श्रेणी का चित्र-

कार बनने से कोई लाभ नहीं।"

तब एक सुबह जब वह बाहर जा रहा था, नौकर ने उससे कहा कि उसके लिए एक पत्र है। लुइज़ा चाची और कभी-कभी हेवर्ड के अलावा उसे पत्र कोई न लिखता था और इस लिखावट को वह पहचानता न था। पत्र निम्न प्रकार था :

"इस पत्र को पाकर आप फ़ौरन चले आइये। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। आप अकेले आइये। मैं यह सोचना बर्दाश्त नहीं कर सकती कि कोई और मुझे छुए। मै चाहती हूँ कि आप सब ले लें।

एफ़ प्राइस।"

"तीन दिन से मैंने कुछ भी नहीं खाया।"

फ़िलिप सहसा भयभीत हो उठा। वह उसके कमरे की ओर भागा। उसे आश्चर्य हुआ कि वह पेरिस में थी। महीनों से वह उससे नहीं मिला था और सोचता था कि वह इंगलैण्ड वापस लौट गई होगी।

उसके कमरे का दरवाज़ा बन्द था। झुककर उसने देखा कि चाबी ताले में ही थी।

"ओह, भगवान, मुझे आशा है उसने कोई भयानक काम तो नहीं कर डाला," वह ज़ोर से चीख़ पड़ा।

एक लुहार बुलाया गया। उसने अपना काम शुरू किया और आखिर वे कमरे के भीतर घुसे। फ़िलिप चीख पड़ा और फौरन हाथों से आंखें ढक लीं। बेचारी औरत एक रस्सी से लटक रही थी। उन्होंने रस्सी काटकर उसे नीचे उतारा। शरीर बिल्कुल ठण्डा पड़ गया था।

फ़िलिप उस अप्रिय घटना को अपने मस्तिष्क से बाहर न कर सका। जिस चीज से उसे सबसे अधिक कष्ट हो रहा था, वह थी फ़ैनी के प्रयत्नों की व्यर्थता। उससे अधिक परिश्रम से और उससे अधिक मन लगाकर कोई काम नहीं कर सकता था। वह स्वयं पर पूर्ण विश्वास करती थी। पर यह स्पष्ट था कि आत्मविश्वास कुछ मानी नहीं रखता। उसके

सभी मित्रों में आत्मविश्वास था, माइग्ुएल एज्योरिया में भी; और स्पेनवासी के सतत प्रयत्नों और फलस्वरूप मिली चीजों की नगण्यता में विरोधाभास देखकर वह काँप उठा था। वह महसूस करता था कि कला का उस पर दूसरों से भिन्न प्रभाव पड़ता था। किसी अच्छी तस्वीर को देख कर लासन फौरन उछल पड़ता था। उसकी प्रशंसा अनुप्रेरित होती थी। फ्लौबेगन भी कुछ चीजें महसूस करता था, जिन्हें फ़िलिप सोचता था। उसकी अपनी प्रशंसा बौद्धिक होती थी। उसे बरबस यह ख्याल आ ही जाता था कि यदि उसका स्वभाव ही कलात्मक होता तो वह भी कारण-रहित आवेग में सुन्दरता के दर्शन करता, जैसे और करते थे। वह सोचने लगा कि क्या उसके पास हाथ की सतह पर की चतुरता के अतिरिक्त भी कुछ और है, जिससे वह दूसरी वस्तुओं की नकल ठीक-ठीक कर सकता था। कुछ नहीं था वह यांत्रिक कुशलता को ही घृणा करने लगा था सबसे आवश्यक बात थी रंगों में महसूस करना। इससे वह स्वयं को अयोग्य समझता था। अपने मस्तिष्क से वह पेंट करता था और जानता था—न जानने का बहाना भी नहीं कर सकता था—किसी काम का चित्र केवल हृदय से बनता है।

इन बातों को सोचते हुए उसे लगा कि सच्चे चित्रकारों, लेखकों, संगीतज्ञों में ऐसी शक्ति होती थी, जिसके कारण वे अपने काम में इतना डूब जाते थे, कि स्वभावतः जीवन कला से नीचा हो जाता था। इस प्रभाव में आकर वे कभी महसूस नहीं करते थे, वे केवल अपनी भावना के दास थे और जीवन उनकी अंगुलियों के बीच से बिना रहे निकल जाता था। पर उसे लगता था कि जीवन रहने के लिये है, चित्र बनाने के लिये नहीं। वह जीवन के अनेक अनुभवों को खोजना चाहता था और हर एक से उसका सारा आवेग खींच लेना चाहता था। आखिर उसने एक कदम उठाने का निश्चय किया, यह भी निश्चय किया कि उसके परिणाम के अनुसार काम करने का भी निश्चय किया और यह निश्चय करके उसने वह कदम फौरन उठाने का निश्चय किया

सौभाग्य से अगला दिन फायने का था, और उसने उनसे स्पष्टतः पूछने का इरादा किया कि कला का अध्ययन करना उसके लिये ठीक होगा। फ़ैनी प्राइस को दी हुई मास्टर की कठोर सलाह उसे भूली नहीं थी। वह बिल्कुल ठीक थी। फ़िलिप कभी भी फ़ैनी प्राइस को एकदम नहीं भूल सका था। उसके बिना स्टूडियो बड़ा अजीब मालूम पड़ता था। कभी-कभी वहां काम करने वाली किसी औरत का संकेत, या आवाज उसे चौंका देती और उसे फ़ैनी की याद आजाती। उसके मर जाने के बाद उसकी उपस्थिति का अधिक भान होता था, उसके जीवित रहते उतना नहीं। कभी-कभी वह रात में सपने में उसे देखता और भय की चीख के साथ जाग पड़ता। कितना कष्ट उसने उठाया होगा, यह सोचना ही बड़ा भयानक था।

फिलिप को मालूम था कि जब फायने स्टूडियो में आते थे, तो रूद 'ओडेसा' में एक छोटे रेस्तराँ में दोपहर का खाना खाते थे। उसने अपना खाना जल्दी-जल्दी खाया जिससे कि वह जाकर बाहर उनके निकलने का इन्तजाम करे। फ़िलिप भीड़ से भरी सड़क पर चहलकदमी करता रहा और आखिर में सिर झुकाये मोशिये [1] फायने को अपनी ओर आते देखा। वह बहुत घबरा रहा था और बलपूर्वक स्वयं को उनके पास ले गया।

क्षमा कीजियेगा, मोशिये, मैं एक क्षण को आपसे बातें करना चाहता हूँ।"

"फायने ने एक तेज़ दृष्टि से उसे देखा, पहचाना, और मुस्करा कर उसका स्वागत किया।

"कहो," उन्होंने कहा।

"मैं आपके नीचे लगभग दो साल से यहाँ काम कर रहा हूँ। मैं आपसे स्पष्टतः पूछना चाहता हूँ कि मेरा यह काम जारी रखना आप ठीक

१. मोशियो (फ्रेंच=मिस्टर)

समझते हैं।"

फ़िलिप की आवाज थोड़ा काँप रही थी। फायने बिना ऊपर देखे चलते गये। फ़िलिप उनकी ओर देख रहा था, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।

"मैं समझा नहीं।"

"मैं बहुत गरीब हूँ। अगर मुझमें योग्यता न हो तो कोई और काम मैं करूं।"

"तुम्हें नहीं मालूम, तुममें योग्यता है?"

"मेरे सभी मित्र जानते हैं कि मुझमें योग्यता है, पर मुझे मालूम है उनमें से कुछ गलती पर हैं।"

फायने के कठोर मुंह पर मुस्कान की छाया की रेखा खिच गई, और उन्होंने पूछा :

"क्या तुम यहीं कहीं पास में रहते हो?"

फ़िलिप ने उन्हें अपने स्टूडियो का पता बताया। फायने घूमे।

"चलो, हम वहाँ चलें? काम मुझे दिखाओ।"

"अभी?" फ़िलिप चीख पड़ा।

"क्यों नहीं?"

वे भीतर गये और नौकर ने एक लिफाफा फ़िलिप के हाथ पर रख दिया। उसने उसे देखा और अपने चचा की लिखावट पहचान ली। फायने ने उसके पीछे-पीछे सीढ़ियाँ चढ़ीं। फ़िलिप सोच नहीं पारहा था कि वह क्या कहे। फायने चुप थे, पर उस निस्तब्धता ने उसे परेशान कर दिया। प्रोफेसर बैठ गये। फ़िलिप ने उनके सामने दो 'पोर्टेर' दो-तीन प्राकृतिक दृश्य, और कई रेखाचित्र रख दिये।

"बस इतना ही है," परेशानी से हँसकर फ़िलिप ने कहा।

मोशिये फायने ने एक सिगरेट बनाई और उसे जलाया।

"तुम्हारे अपने रास्ते बहुत कम हैं?" उन्होंने आखिर पूछा।

"बहुत कम," फिलिप ने कहा, उसे लगा उसके दिल में ठंडक पड़

रही है, रहने के लिये काफी नहीं।

उसने प्रदर्शित की हुई चीजें चुपचाप अलग रखदीं।

मोशियो फायने ने अपने कन्धे तनिक उचकाये।

"तुममें थोड़ी हाथ की योग्यता है। परिश्रम और अध्यवसाय से कोई कारण नहीं कि तुम सावधान, न अयोग्य पेंटर बन सको। तुम्हें अनेक ऐसे मिलेंगे जो तुमसे खराब पेंट करते थे सेंकड़ों तुम्हारे जितना अच्छा ही पेंट करते थे। मुझे किसी में असाधारण योग्यता नहीं दिखाई पड़ी। उन चित्रों में मुझे परिश्रम और बुद्धि दिखलाई पड़ी। तुम साधारण से अधिक नहीं बन सकते।"

फ़िलिप ने काफी दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

"मैं आपका बड़ा शुक्रगुजार हूं कि आपने इतनी तकलीफ की। मैं धन्यवाद नहीं दे सकता।"

मोशियो फायने उठ खड़े हुये जैसे जारहे हों, पर इरादा बदल कर, रुककर उन्होंने अपना हाथ फ़िलिप के कंधे पर रख दिया।

"लेकिन अगर तुम मेरी सलाह चाहते हो, तो मैं कहूँगा: अपनी सारी हिम्मत समेट कर किसी और काम में लग जाओ। यह बड़ा मुश्किल मालूम पड़ता है, पर मैं यह कहना चाहता हूँ: जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो अगर किसी ने मुझे यह सलाह दी होती और मैंने मान ली होती, तो उसे अपना सब कुछ दे डालता।"

फ़िलिप ने आश्चर्य से उन्हें देखा। मास्टर अपने होंठ पर बरबस मुस्कान ले आये, पर उनकी आँखें गम्भीर और उदास बनी रहीं।

"अगर बहुत देर में किसी को अपने साधारण होने का पता चलता है, तब बड़ा कष्ट होता है। इससे स्वभाव बहुत अच्छा नहीं बन जाता।

अन्तिम शब्द कहते-कहते वह थोड़ा हँसे और फौरन कमरे से बाहर चले गये।

फ़िलिप ने यन्त्रचालित सा चाचा का पत्र उठाया। लिखावट देखकर

वह आतुर हो उठा था, क्योंकि उसकी चाची ही हमेशा उसे लिखा करती थीं। वह पिछले तीन महीने से बीमार थीं। फ़िलिप ने लिखा था कि उन्हें देखने इंगलैंड आने वाला हूँ; पर उन्होंने इस भय से कि उसके काम में बाधा पड़ेगी, इन्कार कर दिया। वह नहीं चाहती थीं कि फिलिप को किसी प्रकार की असुविधा हो; उन्होंने लिखा था कि वह अगस्त का इन्तजार करेंगी और तब उन्हें आशा थी कि वह आयेगा और दो-तीन हफ़्ते ठहरेगा। अगर उनकी तबियत ज्यादा खराब हो गई तो वह उसे सूचित कर देंगी, क्योंकि वह बिना उसे दुबारा देखे मरना नहीं चाहती थीं। पत्र चचा ने लिखा था, इसका मतलब यह था कि चाची ज्यादा बीमार थीं। फ़िलिप ने उसे खोला। वह निम्न प्रकार था :

"प्रिय फ़िलिप,

"यह सूचित करते हुए मुझे बहुत दुःख हो रहा है कि तुम्हारी चाची आज सवेरे इस शरीर को त्याग गई, एकदम अकस्मात पर शान्तिपूर्वक उनकी मृत्यु हुई। उनकी हालत इतनी जल्दी खराब हुई कि हम तुम्हें सूचना भी न दे सके। वह अपने अन्त के लिये बिल्कुल तैयार थीं और मुक्ति की पूरी आशा के साथ, लार्ड जेम्स क्राइस्ट की ईश्वरीय इच्छा पर अपने को छोड़कर चिर विश्राम करने लगीं। तुम्हारी चाची अवश्य चाहतीं कि तुम अन्तेष्टि में सम्मिलित हो, इसलिये मुझे विश्वास है कि तुम शीघ्रातिशीघ्र यहाँ आओगे। सम्भवतः मेरे ऊपर काफी काम आ पड़ा है और मैं बड़ा परेशान हूँ। मुझे विश्वास है तुम मेरे लिये सब कुछ करोगे।

तुम्हारा स्नेही चचा,
"विलियम कैरी"

दूसरे दिन फ़िलिप ब्लैकस्टेबिल पहुँच गया। अपनी माँ की मृत्यु के बाद से उसने अपना कोई निकट सम्बन्धी नहीं खोया था; चची की मृत्यु से उसे धक्का लगा और साथ ही उसमें एक अजीब तरह का भय संचारित हो उठा। प्रथम बार उसे अपनी नश्वरता का भान हुआ। वह नहीं

सोच सका कि जिस स्त्री के साथ उसका सदा सम्पर्क रहा था और जिसने ४० वर्ष तक उन्हें प्यार किया था और उनकी चिन्ता की थी, उसके बिना उसके चचा का जीवन कैसा हो जायगा। दुःख से उन्हें टूटा हुआ पाने की उसे आशा थी। पहली भेंट से उसे भय लग रहा था; उसे मालूम था कि वह कोई काम की बात नहीं कह पायेगा। उसने कई उपयुक्त भाषणों को दोहराया।

बगल के दरवाजे से वह विकारेज में घुसा और डायनिंग रूम में चला गया। विलियम चाचा अखबार पढ़ रहे थे।

"तुम्हारी ट्रेन लेट आई," उन्होंने ऊपर देखते हुए कहा।

फ़िलिप अपने मानसिक आवेग को व्यक्त करने को तैयार था, पर शुष्क स्वागत ने उसे चौंका दिया। पराजित परन्तु शान्त, उसके चचा ने अखबार उसे दे दिया।

"ब्लैकस्टेबिल टाइम्स में उनके बारे में एक बड़ा अच्छा पैराग्राफ है" उन्होंने कहा।

फ़िलिप ने उसे यंत्रचालित सा पढ़ लिया।

फ़िलिप ने सिर हिलाया और दोनों व्यक्ति साथ-साथ ऊपर गये। बड़े पलंग के बीच में चाची पड़ी थीं और उनके चारों ओर फूल थे।

"प्रार्थना करना चाहोगे ?" विकार ने कहा।

वह अपने घुटनों के बल बैठ गये और चूंकि उससे यही आशा की जाती थी, फ़िलिप ने उनका अनुसरण किया। उसने छोटे, झुर्रीदार चेहरे को देखा। उसे केवल एक आन का भान था, कैसा व्यर्थ जीवन ! एक मिनट में मिस्टर कैरी रंज से उठ खड़े हुये।

"मैं स्वयं अन्त्येष्टि संस्कार करूंगा। मैंने लुइजा से वादा किया था कि मैं और किसी को उन्हें नहीं दफनाने दूंगा।"

फिलिप ने केक का दूसरा टुकड़ा उठाते समय चचा को नापसन्दगी से देखा। ऐसी परिस्थिति में इसे वह लालच के अलावा कुछ न समझ

सका।

उसने एक सिगरेट निकाली, पर उसके चचा ने उसे जलाने से रोक दिया।

"अंत्येष्टि तक नहीं, फिलिप," उन्होंने मुलामियत से कहा।

"बहुत अच्छा," फ़िलिप ने कहा।

"जब तक लुइजा चाची ऊपर हैं, सिगरेट पीने से उनका आदर नहीं होगा।"

जोसिया ग्रेम्ज, चर्चवार्डेन और बैंक के मैनेजर, अन्त्येष्टि के बाद विकारेज में खाना खाने आये। परदे खींच दिये गये थे और फ़िलिप को उसकी इच्छा के विरुद्ध, अजीब तरह के सुख का आभास हो रहा था। घर में पड़े मृत शरीर ने उसे बेचैन कर दिया था; अपने जीवन में बेचारी स्त्री हमेशा नम्र और दयावान रही थी; और अब, जब वह अपने सोने के कमरे में, मृत और ठंडी पड़ी थी लग रहा था जैसे बच गये व्यक्तियों पर नाशमय प्रभाव डाल रही थी। इस विचार से फ़िलिप डर गया। एक या दो मिनट के लिये वह और चर्चवार्डेन डाइनिंग रूम में अकेले रह गये।

"मुझे आशा है तुम अपने चचा के साथ कुछ ठहरोगे," उन्होंने कहा, "मेरा ख्याल नहीं है कि अभी उन्हें अकेले छोड़ना चाहिये।"

"मैंने अभी कोई स्कीम नहीं बनाई," फ़िलिप ने उत्तर दिया, "अगर वह चाहेंगे तो मैं खुशी से रुक जाऊंगा।"

कुछ दिन बाद उसके चचा ने आशा प्रकट की कि अगले कुछ हफ्तों तक वह वहीं रह जायेगा।

"हाँ, मेरे लिये भी यह ठीक है," फ़िलिप ने कहा।"

"मेरा ख्याल है सितम्बर में तुम्हारा पेरिस लौट जाना ठीक रहेगा।"

फ़िलिप ने उत्तर दिया। उसने फ़ायने के कथन के बारे में बहुत कुछ सोचा था और वह अब भी इतना अनिश्चित था कि अपने भविष्य

के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता था। उसे विश्वास हो गया था कि चित्रकला में वह असाधारण नहीं बन सकता था, इसलिये उसे छोड़ देना अच्छा होगा; परन्तु अभाग्यवश ऐसा केवल उसे लगेगा; दूसरों को यह पराजय-स्वीकार सा मालूम पड़ेगा और वह नहीं कहना चाहता था कि वह हार गया है। वह जिद्दी आदमी था। वह यह नहीं सहन कर सकता था कि उसके मित्र उस पर हँसें। परन्तु परिवर्तित वातावरण में वह सारी वस्तुओं को परिवर्तित दृष्टि से देखने लगा और अनेक व्यक्तियों की तरह उसे भी लगा कि आवश्यक मालूम पड़ने वाली सभी चीजें चैनेल पार करके बिलकुल व्यर्थ मालूम पड़ने लगती हैं। जो जीवन इतना सुन्दर था कि वह उसे छोड़ नहीं सकता था, अब बिल्कुल सारहीन मालूम पड़ने लगा; कैफ़े बुरी तरह खाना पकाने वाले रेस्तराँ, उनके रहने के गन्दे ढंग, सभी से उसमें एक विरक्ति भर उठी। अब उसे परवाह नहीं रही कि उसके मित्र उसके विषय में क्या सोचते थे : मिसेज़ ऑटर से अपने सम्मान सहित, रूथ चैलिस अपने कपट सहित, लॉसन और क्लाटन अपनी लड़ाइयों सहित। सबके लिए उसमें आकस्मिक परिवर्तन हो गया। उसने लॉसन को लिखा कि वह उसका सारा सामान भेज दे। एक हफ्ते बाद सामान आ गया। जब उसने अपना कैनवेस खोला तो उसने स्वयं को बिना आदेश के अपने काम के निरीक्षण करने योग्य पाया। यह सत्य देखकर उसे आनन्द आया। उसके चाचा उसके चित्र देखने को आतुर थे। यद्यपि उन्होंने फ़िलिप की पेरिस जाने की इच्छा का अधिक विरोध किया था, पर फिर उन्होंने परिस्थिति को शान्तिपूर्वक स्वीकार कर लिया था ; वह विद्यार्थियों के जीवन के बारे में जानना चाहते थे और फ़िलिप से लगातार सवाल पूछे रहे थे। वास्तव में वह उस पर थोड़ा अभिमान कर रहे थे, क्योंकि वह चित्रकार था और जब अन्य व्यक्ति उपस्थित होते तो उसकी प्रशंसा करने की कोशिश करते। आतुरता पूर्वक मॉडलों के चित्रों को वह देखते। फ़िलिप ने उनके सामने माइगुएल एज्योरिया का पोर्टेट रख दिया।

"तुमने उसे क्यों बनाया ?" मिस्टर कैरी ने पूछा।

"ओह, मैं एक मॉडेल चाहता था और उसका सिर मुझे पसन्द आ गया।"

"यहाँ तुम्हारे पास कुछ करने को तो है नहीं। मेरा ख्याल है तुम मेरा एक पोर्ट्रेट बना दो।"

"बैठने में आपको ऊब लगेगी।"

"मेरा ख्याल है मुझे पसन्द आयेगा।"

"हम देखेंगे।"

फ़िलिप को अपने खोखले अभिमान पर बड़ा मजा आया। स्पष्ट था कि अपना पोर्ट्रेट बनवाने को वह मर रहे थे। ऐसा अवसर जिसमें कुछ नहीं के बदले कुछ मिलने वाला हो, छोड़ा नहीं जाता। दो-तीन दिन तक वह इशारे करते रहे। आलसी होने के लिये वह फिलिप की महिमा करते, पूछते कि वह कब काम शुरु करने जा रहा है और अन्त में हर मिलने वाले आदमी से कहने लगे कि फ़िलिप उनकी तस्वीर बनाने जा रहा है। आखिर एक दिन जब पानी बरस रहा था तो मिस्टर कैरी ने नाश्ते के बाद फिलिप से कहा :

"अब आज सुबह मेरा पोर्ट्रेट शुरू करने के बारेमें क्या कहते हो ?" फिलिप एक किताब पढ़ रहा था। उसने उसे नीचे रख दिया, और कुर्सी से टिक गया।

"मैंने चित्रकला छोड़ दी है," उसने कहा।

"क्यों ?" उसके चचा ने आश्चर्य से पूछा।

"दूसरी श्रेणी का चित्रकार बनने में मैं कोई लाभ नहीं देखता। और मैं इसी नतीजे पर पहुंचा कि उससे अधिक मैं बन भी नहीं सकता।

"मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। पेरिस जाने के पहले तुम्हें विश्वास था कि तुममें असाधारण प्रतिभा है।

"मैं गलती पर था," फ़िलिप ने कहा।

"मेरा ख्याल था कि अब तुमने ऐसा काम चुन लिया है, अपने

अभिमान के लिये ही तुम नहीं छोड़ोगे। मुझे लगता है कि तुममें अध्य-वसाय की कमी है।

फ़िलिप थोड़ा चिढ़ गया कि उसके चचा ने यह भी नहीं देखा कि उसका कार्य कितना वीरतापूर्ण था।

"अब तुम बच्चे नहीं हो, समझ गये; तुम्हें ठिकाने से लगने की सोचनी चाहिये। पहले तुम चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट बनना चाहते थे, फिर उससे ऊब गये और चित्रकार बनने की सोचने लगे और अब फिर अपना इरादा बदल रहे हो। ये एब···"

वह क्षण भर हिचकिचाये, सोचने लगे कि चरित्र के किन दोषों को यह बताते हैं और फिलिप ने वाक्य पूरा कर दिया।

"अस्थिरचित्तता, अयोग्यता, अदूरदर्शिता और अदृढ़ निश्चिय को बताते हैं।"

विकर ने फौरन अपने भतीजे की ओर देखा, कहीं वह उन पर हँस तो नहीं रहा है। फिलिप का मुखमंडल गंभीर था, पर उसकी आँखों में एक चमक थी, जिससे वह चिढ़ गये। फ़िलिप को और अधिक गंभीर होना चाहिये।

"तुम्हारे रुपये-पैसों के मामले से अब मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। तुम स्वयं अब अपने मालिक हो। पर मेरा ख्याल है तुम्हें यह याद रखना चाहिये कि तुम्हारा धन हमेशा नहीं बना रहेगा। साथ ही अभा-ग्यवश तुम्हारे पैर में जो रोग है, उससे अपना जीवन यापन करने में आसानी नहीं होगी।"

फिलिप अब तक जान गया था कि जब भी कभी उससे कोई गुस्सा होता तो उसका पहला विचार उसके फीलपाँव के बारे में कुछ कहना ही होता था। मानव-जाति के बारे में वह इसी से अनुमान लगाया करता था, कि कोई भी अपने को वैसा करने से रोक नहीं पाता पर उसने अपने को ऐसा बना लिया था कि दूसरों को मालूम न हो सके कि उसकी याद दिलाये जाने से उसे कष्ट हुआ है। उसने अपने झेंपने पर अधिकार कर

लिया था, जिसमे बचपन में उसे बड़ा कष्ट मिलता था।

"आपका कहना ठीक है," उसने उत्तर दिया, "मेरे धन के मामले से अब आपका कोई सम्बन्ध नहीं है और मैं स्वयं अपना मालिक हूँ।"

"कुछ भी हो, यह स्वीकार करके मेरे साथ न्याय अवश्य करोगे कि जब तुम चित्रकला सीखने जाना चाहते थे तो मैं अपने विरोध में सही था।"

"मैं उसके बारे में इतना नहीं जानता। मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि अपने आप की गलतियों से आदमी दूसरों के बताये हुए ठीक रास्ते से जाने की तुलना से अधिक सीखता है। मैं एक आवेशमय काम कर बैठा और अब जमकर एक ही काम करना पसन्द करूँगा।"

"क्या ?"

फ़िलिप ऐसे प्रश्न के लिए तैयार न था क्योंकि उसने अभी तक निश्चय नहीं किया था। उसने एक दर्जन कामों के बारे में सोचा था।

"सबसे अच्छा और उपयुक्त काम तुम यह कर सकते हो कि अपने पुराने के व्यवसाय को अपना कर डॉक्टर बन जाओ।

"आश्चर्य है, ठीक यही तो मेरा भी इरादा है।"

और इस तरह सितम्बर के आखिरी दिन छः सौ पौंड फीस-देकर दुबारा लन्दन की ओर, तीसरी बार अपना जीवन आरंभ करने चल दिया।

चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट के यहाँ क्लर्क होने से पहले फ़िलिप ने जो इम्तहान पास किया था, वह उसके मेडिकल स्कूल में प्रवेश पाने को काफी था। उसने सेंट ल्यूकस चुना क्योंकि उसके पिता वहीं के विद्यार्थी थे और गर्मी का सेशन समाप्त होने से पहले सेक्रेटरी से मिलने एक दिन के लिए लन्दन गया था। सेक्रेटरी से उसे कमरों की एक सूची मिली और एक सीलन-भरे मकान में वह रहने लगा। मकान का एक लाभ यह था कि अस्पताल से वह केवल दो मिनट का रास्ता था।

फ़िलिप ने अपने छोटे कमरों में ही स्वयं को व्यवस्थित किया।

उसने अपनी किताबें सजाकर रख दीं और तस्वीरों पर अपने चित्र और रेखा-चित्र टाँग दिये। उसके ऊपर, ड्राइंग रूम की छत पर, पाँचवे वर्ष में पढ़ने वाला ग्रिफ़िथ्स रहता था, पर फ़िलिप उससे नहीं मिला। जब फ़िलिप अपने कमरे में अकेला पढ़ता होता, उसे ग्रिफ़िथ्स के विषयों की चिल्लाहट और ज़ोरे दम हंसी सुनाई पड़ती। उसे पेरिस की उन खुशनुमा शामों की याद आती जब वे स्टूडियो में बैठे होते वह और लॉसन फ़्लैनगन और काल तथा चरित्र, वर्तमान की प्रेम गाथायें और भविष्य की प्रसिद्धि के बारे में बातें किया करते। उसका हृदय रीस उठा। उसे लगा एक वीरता मय संकेत करना तो, आसान है, पर उसके परिमाणों को सहना बड़ा मुश्किल था। सब से बुरी बात यह थी कि काम उसे बड़ा मुश्किल मालूम पड़ाता था। डिमान्स्ट्रेटरों द्वारा प्रश्न पूछे जाने का अभ्यास उसे नहीं रहा था। लोकाचारों के समय उसका ध्यान इधर-उधर बँट जाया करता। ऐनाँट भी बड़ा नीरस विज्ञान था। अधिक संख्या में सत्यों को केवल रट लेना; चीर फाड़ से ऊब बड़ी मेहनत से नाड़ियाँ और धमनियाँ चीरने का अर्थ उसकी समझ में नहीं आता था, जब कि बहुत कम परेशानी से किसी किताब के चारों पैथोलोजिकल अजायब घर के नमूनों में देखा जा सकता था, कि वे ठीक किस प्रकार की हैं।

उसके मित्र आकस्मिक ढंग से बन जाते थे, पर अंतरंग मित्र नहीं क्योंकि उसके पास अपने साथियों से कहने को कोई खास बात नहीं होती थी। वह डंसकोर्ड का मित्र बन गया, परन्तु इसमें उसका प्रयत्न नहीं था। डंसकोर्ड फ़िलिप के साथ इसलिये रहता था, क्योंकि वह पहला आदमी था जिससे उसे सेंट ल्यून्स में जाना था। लन्दन में उसके दोस्त न थे और शनिवार की रातों में फ़िलिप और वह म्यूज़िक टाल के पिट थियेटर की गैलरी में जा बैठते, यह उनकी आदत हो गई। वह मूर्ख था, पर हंसमुख था और किसी बात का बुरा नहीं मानता था; पर हमेशा ही प्रत्यक्ष बात कहता, पर जब

फ़िलिप उस पर हँसता, वह केवल मुस्करा पड़ता। उसकी मुस्कान बड़ी मधुर थी। फ़िलिप यद्यपि उसे अपना निशाना बताया करता, पर उसे पसन्द करता; उसकी निष्कपटता से उसे आनन्द मिलता और उसके मिलनसार स्वभाव से खुशी होती। डंसफ़ोर्ड में एक प्रकार का आकर्षण था, जिसकी उपस्थिति का उसे तनिक भी भान न था।

वे अक्सर पार्लियामेंट-स्ट्रीट पर एक दूकान में चाय पीने जाया करते थे, क्योंकि वहाँ काम करने वाली युवतियों में से एक को वह पसन्द करता था। फ़िलिप को उनमें कोई आकर्षण न मिला। वह लम्बी और पतली थी, कूल्हे संकरे थे और वक्ष लड़कों जैसा।

"पेरिस में कोई उसकी ओर नज़र तक नहीं उठायेगा,' फ़िलिप ने कहा।

डंसफ़ोर्ड स्त्रियों के सामने बहुत शरमाता था और कभी उनसे बातचीत करने में सफल न हो सका था उसने फ़िलिप से सहायता करने का अनुरोध किया।

"मैं केवल रास्ता देखना चाहता हूँ," उसने कहा, "और तब मैं स्वयं ठीक कर लूंगा।"

उसे खुश करने के लिये फिलिप ने एक-दो बातें कहीं,पर युवती ने एक-एक शब्द में उत्तर दिये। उसने उन्हें नाप लिया था। वे लड़के थे और उसका ख्याल था कि वे विद्यार्थी थे, उनसे उसे क्या करना! डंसफोर्ड ने देखा था कि कम बालों और सख्त मूँछों वाले एक आदमी पर, जो जर्मन जैसा दिखाई पड़ता था, युवती का ध्यान अधिक रहता था, जब कभी भी वह दूकान में आता था तो तब दो तीन बार बुलाने पर ही वह उसे अपना आर्डर दे सकने में असमर्थ होते थे। एक दिन डंस-फोर्ड ने उसे बताया उसका नाम मिल्ड्रेड था। उसने दूकान की दूसरी लड़कियों को यह नाम लेकर उसे पुकारते सुना था।

"कैसा विरक्तिजनक नाम है," फ़िलिप ने कहा।

"क्यों?" डंसफोर्ड ने पूछा है, "मैं इसे पसन्द करता हूँ।"

"यह बड़ा आडम्बर पूर्ण है।"

ऐसा हुआ कि उस दिन जर्मन वहाँ नहीं था और जब वह चाय लाई, फ़िलिप ने मुस्कराते हुए कहा :

"आज तुम्हारे दोस्त यहाँ नहीं हैं।"

"मैं आपका मतलब समझी नहीं," उसने रूखे स्वर में कहा।

"मैं कम बालों वाले सज्जन की बात कर रहा हूँ। क्या उसने तुम्हें छोड़कर किसी दूसरे का दामन पकड़ लिया ?"

"यह ज़्यादा अच्छा हो कि आदमी अपना-अपना काम करें," उसने कड़े स्वर में कहा।

वह उनके पास से अलग हट गई और चूंकि एक दो मिनट के लिये किसी का आर्डर उसे नहीं लेना था, बैठकर शाम का अखबार देखने लगी, जो एक ग्राहक वहाँ छोड़ गया था।

वह आघात फ़िलिप के गर्व पर हुआ था। जब वह किसी स्त्री से बात करना चाहता था और वह बुरा मान जाती थी तो उसे बुरा लगता था। जब उसने बिल माँगा तो, उसने एक बात कही जो और आगे बढ़ाने वाली थी।

"क्या अब हम कभी एक दूसरे से नहीं बोलेंगे ?" वह मुस्करायी।

"मैं यहाँ आर्डर लेने और ग्राहकों की सेवा करने को हूँ। मेरे पास उनसे कहने को कुछ नहीं है और मैं नहीं चाहती कि वे मुझ से कुछ कहें।"

उसने वह कागज रख दिया जिस पर उसने वह रुपया लिख दिया था जो उन्हें देना था। तब उस मेज़ के पास चली गई, जहां वे बैठी हुई थी। फ़िलिप का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

"बदशऊर कुतियाँ," फ़िलिप ने कहा, "मैं कभी वहाँ जाऊँगी।"

डंसफ़ोर्ड पर उसका प्रभाव इतना था कि वह उसे और कहीं चाय पीने के लिये राज़ी कर सकता और डंसफ़ोर्ड को दिल बहलाने के लिये एक और औरत मिल गई। लेकिन वेटर-स्त्री द्वारा किया गया

अपमान कसकता रहा। अगर उसने उसके साथ सभ्य व्यवहार किया होता तो वह उसके प्रति पूर्णतः विरक्त हो जाता; परन्तु यह स्पष्ट था कि उसका व्यवहार ही असभ्य नहीं था, वरन् वह बिल्कुल नापन्द करती थी और उसका अभिमान घायल हो उठा था। उसके साथ वैसा ही बर्ताव करने की इच्छा को वह दबा न सका। एक दिन दोपहर के बाद एक 'एपाइन्टमेंट' का बहाना करके, क्योंकि अपनी कमज़ोरी पर वह बहुत शर्मिंदा था, डंसफोर्ड को छोड़कर सीधा उसी दूकान में गया, जहाँ कभी न जाने का प्रण कर चुका था। अन्दर घुसते ही उसने वेटर-स्त्री को देखा और उसकी ही मेज़ों में से एक पर बैठ गया। उसे आशा थी कि उसके एक हफ़्ते तक न आने की बात के बारे में वह कुछ कहेगी, पर जब वह उसका आर्डर लेने आई तो उसने कुछ नहीं कहा। उसने दूसरे ग्राहकों से उसे कहते हुए सुना था :

"यहाँ के लिये आप नये हैं"

उसने कोई संकेत नहीं दिया कि उसने पहले कभी उसे वहाँ देखा है। यह जानने के लिये कि क्या वह वास्तव में उसे भूल गई है, जब वह उसकी चाय लाई तो उसने पूछा :

"आज रात तुमने मेरे दोस्त को देखा है ?"

"नहीं, वह यहाँ कई दिनों से नहीं आये।"

इसे वह बात-चीत प्रारंभ की तरह प्रयोग करना चाहता था, पर वह आश्चर्यजनक रूप से हतोत्साह हो उठा और कुछ भी कहने को न सोच सका। युवती ने उसे अवसर नहीं दिया, फ़ौरन चली गई। अपना बिल मांगने से पहले उसे कुछ कहने का अवसर न मिल सका।

"बड़ा रद्दी मौसम है, है न ?" उसने कहा।

बड़े दुःख और निराशा की बात थी कि उसे ऐसे वाक्य का क्या प्रयोग करना पड़ रहा था। उसकी समझ में न आ सका कि युवती की उपस्थिति से उसमें इतनी हिचकिचाहट क्यों भर जाती है।

"मुझे सारे दिन यहाँ रहना पड़ता है, इसलिये मौसम कैसा भी हो, मेरे लिये अन्तर नहीं पड़ता।"

उसके स्वर में एक तरह का तीखापन था जिसके कारण उसमें एक विशेष चिड़-चिड़ाहट पैदा हो गई। एक व्यंग उठकर उसके होटों तक आया परन्तु उसने बलपूर्वक अपने को शान्त किया।

"ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि वह कुछ वास्तव में ऐसी वैसी-बात कह दे," स्वयं से उसने जोर से कहा, "कि मैं उसकी शिकायत करके उसकी नौकरी खतम करा दूँ। यही उसके लिये ठीक सबक होगा।"

वह उसे अपने मस्तिष्क से बाहर न निकाल सका। अपनी बेवकूफी पर वह क्रोध पूर्वक हँसा; उस बेवकूफी में वेटर स्त्री ने जो कुछ कहा था उसकी चिन्ता करना बड़ा भद्दा था; पर वह आश्चर्यजनक रूप से तुच्छ बना दिया गया था। यद्यपि डंसफ़ोर्ड के अलावा और कोई इस अनादर के बारे में न जानता था और निश्चय ही वह भूल चुका था, फ़िलिप को लगता था जब तक वह उसे मिटा नहीं डालेगा, शान्ति से न रह पायेगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह रोज़ दूकान जायेगा; यह स्पष्ट था उसने उस पर बुरा प्रभाव डाला था, पर उसका ख्याल था कि वह उसे मिटा सकने योग्य बुद्धिमान है; वह ध्यान रखेगा कि ऐसी कोई बात न कहे जिससे अधिक संवेदनशील व्यक्ति को बुरा लग जाये। उसने यह सब किया, पर कोई प्रस्ताव न पढ़ा। जब वह जाता और गुडइवनिंग कहता तो वह भी उतने ही शब्दों में उत्तर देती, पर जब उसने यह कहा यह देखने के लिये कि वह स्वयं कहती है या नहीं, तो वह कुछ भी न बोली। अविचलित चेहरे से अपनी चाय का आर्डर दिया। उसने निश्चय किया कि अब वह एक भी शब्द न बोलेगा और हमेशा की 'गुडनाइट' कहे बिना ही उसने दूकान छोड़ दी। उसने स्वयं से वायदा किया कि अब वहाँ वह कभी न जायगा, पर अगले दिन चाय के समय वह परेशान हो उठा। उसने दूसरी बातों के बारे में सोचना चाहा, पर

उसे अपने विचारों पर कोई अधिकार नहीं रह गया था। उसने निराश होकर कहा :

"आखिर अगर मैं जाना चाहता हूं तो क्यों न जाऊं।"

अपने साथ के इस युद्ध में काफी समय लग गया था और जब वह दूकान में घुसा, तो सात बजने वाले थे।

"मैंने सोचा आप नहीं आयेंगे," युवती ने उससे कहा, जब वह बैठ गया।

उसके सीने में उसका हृदय धड़क उठा और उसे लगा उसका चेहरा लाल पड़ता जा रहा है। "मुझे रुक जाना पड़ा था। इसके पहले आना संभव न हो सका।"

"लोगों से बातें कर रहे होंगे, मेरा ख्याल है ?"

"इतना बुरा काम नहीं।"

"आप विद्यार्थी हैं, हैं न ?"

"हाँ।"

परन्तु लगा इतने से ही उसकी उत्कंठा शान्त हो गई। वह चली गई और चूँकि इतनी देर हो जाने के कारण उसकी मेज़ों पर कोई न था, एक लघु-उपन्यास में डूब गई। फ़िलिप को लगा वह बहुत ऊँचा उठ गया है; आज उसने अपने आप उससे बातचीत की थी। उसने देखा कि वह समय आ रहा है, जब उसका मौका आयेगा और वह उसे ठीक ठीक बता देगा कि वह उसके बारे में क्या सोचता है। अपने क्रोध और घृणा की गम्भीरता व्यक्त करके उसे कितना सुख मिलेगा। उसने उसकी ओर देखा। यह सत्य था कि उसका 'प्रोफाइल' सुन्दर था। अपनी जेब में रक्खे कागज के आधे भाग पर उसने उसका रेखाचित्र बनाया—जैसे वह अपनी किताब पर झुकी बैठी थी (पढ़ते समय अपने होंठों से वह शब्दों की रेखायें बनाती चलती थी), और जाते समय उसे वहाँ छोड़ता गया। यह एक (Inspiration) था, क्योंकि दूसरे दिन जब वह वहां पहुंचा, तो वह उसे देखकर मुस्कराई।

"मुझे नहीं मालूम था कि आप तस्वीर बना सकते हैं उसने कहा।

"दो साल तक मैं पेरिस में चित्र-कला का विद्यार्थी रहा हूँ।"

"कल रात जो तस्वीर आप यहां छोड़ गये थे उसे मैंने आप को दिखाया था। उसे देखकर वे बहुत प्रभावित हुईं। क्या वह मेरी तस्वीर थी ?"

"हाँ," फ़िलिप ने कहा।

जब वह उसकी चाय लेने गई, दूसरी युवतियों में से एक एक उसके पास आई।

"मैंने आपकी बनाई हुई मिस रॉजर्स की तस्वीर देखी थी। वह बिल्कुल उसका प्रतिरूप थी" उसने कहा।

यह प्रथम बार था जब फ़िलिप ने उस युवती का नाम सुना था। जब उसे अपने बिल की जरूरत पड़ी तो उसने उसे नाम लेकर बुलाया।

"ओह, आप मेरा नाम जानते हैं," जब वह आई तो उसने कहा।

"उस तस्वीर के बारे में बातें करते समय आपकी मित्र ने उसे बताया था।"

"वह चाहती है कि एक चित्र आप उसका भी बना दें। आप ऐसा न करें। एक बार आप शुरू कर देंगे तो फिर आपको करते रहना पड़ेगा और वे चित्र बनवाना चाहती जायेंगी।"

दूसरे दिन वह बेचैन रहा। चाय की दूकान पर लंच खाने की बात सोची। पर उसे विश्वास था कि उस समय वहाँ बहुत आदमी होंगे और मिल्ड्रेड उससे बातें न कर पायेंगी। इसके पहले ही उसने डंसफोर्ड से अलग चाय पीने का प्रबन्ध कर लिया था और ठीक साढ़े चार बजे (उसने अपनी घड़ी एक दर्जन बार देखी थी), वह दूकान में गया।

मिल्ट्रेड की पीठ उसकी ओर थी। वह बैठी उसी जर्मन से बातें कर रही थी जिसे फ़िलिप पन्द्रह दिन पहले देखा करता था, फिर उसके बाद बिल्कुल नहीं देख पाया था। उसकी बातों पर वह हँस रही थी। फ़िलिप ने सोचा उसकी हँसी बहुत साधारण है और इस विचार

से वह काँप उठा। उसने उसे बुलाया, पर उसने ध्यान नहीं दिया; उसने उसे फिर बुलाया; तब क्रोधित होकर, क्योंकि वह अधीर था, उसने अपनी छड़ी से मेज़ पर जोर से आवाज़ की। वह चिढ़ी-सी उसके पास आई।

"आप कैसी हैं ?" उसने पूछा।

"आप बड़ी जल्दी में मालूम पड़ते हैं।"

उसने फ़िलिप की ओर उसी अपमान-जनक ढंग से देखा, जिससे वह अच्छी तरह परिचित था।

"मैं पूछता हूं बात क्या है ?" उसने पूछा।

"यदि आप कृपा करके अपना आर्डर दे दें, तो मैं आपकी चीज़ें ले आऊँ। मैं सारी रात खड़े रहकर बातें नहीं कर सकती।"

"चाय और टोस्टेड बन," फ़िलिप ने संक्षेप में उत्तर दिया।

वह उस पर बहुत नाराज हो उठा। वह ट्रिस्टार लिये हुए था और जब वह चाय लाई, उसे तेज़ी से पढ़ने लगा था।

"अगर आप अभी मेरा बिल भी ले आयें, तो मैं आपको दुबारा परेशान नहीं करूँगा," उसने सर्द आवाज में कहा।

उसने स्लिप लिखी, मेज पर रख दी और वह जर्मन के पास चली गई। शीघ्र ही वह फिर जर्मन से बातें करने लगी। फिलिप सोच रहा था कि दूसरी युवतियाँ उससे लेकर उन दोनों तक देख रही थीं और अर्थ-पूर्ण दृष्टि-विनिमय आपस में कर रही थी। उसे विश्वास हो गया कि वह उस पर हँस रही हैं और उसका खून खौल उठा। वह अब मिलड्रेड को संपूर्णतः घृणा करने लगा। उसे मालूम था कि सबसे अच्छी बात जो वह कर सकता था, वह यह थी चाय की दूकान में आना बन्द कर दे, पर वह यह सोचना सहन नहीं कर सकता था कि एक प्रेम पथ में वह असफल रहा। उसने उसके प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित करने की एक युक्ति सोची। दूसरे दिन वह दूसरी मेज़ पर बैठा और अपनी चाय उसने दूसरी वेटर स्त्री से मंगवाई। मिल्ड्रेड का दोस्त फिर वहाँ था और वह उससे बातें कर रही थी। उसने फ़िलिप की ओर कोई ध्यान नहीं

दिया, जब वह बाहर गया उसने ऐसा क्षण चुना जब उसे मिल्ड्रेड का रास्ता काटना पड़ा; उसके पास से गुज़रते समय वह उसकी ओर ऐसे देखता जैसे उसने उसे पहले कभी भी न देखा हो। उसने तीन या चार दिन तक यही किया। उसे आशा थी कि किसी दिन वह अवसर निकाल कर उससे कुछ कहेगी; उसने सोचा वह उससे पूछेगी कि अब वह उसकी किसी मेज पर क्यों नहीं बैठता और उसने एक ऐसा उत्तर तैयार कर रक्खा था, जिसमें उसके प्रति उसका सारा वैमनस्य निहित था। उसे मालूम था, परेशान होना व्यर्थ है, पर वह कैसे स्वयं को मना पाता। उसने फ़िलिप को फिर हरा दिया। जर्मन सहसा गायब हो गया, पर वह अब भी दूसरी मेजों पर ही बैठता रहा। मिल्ड्रेड ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। सहसा उसने महसूस किया कि उसकी करनी के प्रति वह बिल्कुल उदासीन है; इस तरह वह प्रलय तक करता चला जायगा, तो भी उस पर कोई प्रभाव न पड़ेगा।

दूसरे दिन वह अपनी पुरानी सीट पर बैठा और जब वह आई उसने गुडईवनिंग कहा; जैसे एक हफ्ते तक उसके प्रति वह उदासीन न रहा हो। उसका चेहरा शान्त था, पर अपने हृदय की पागल धड़कनों के रोकने में वह असमर्थ रहा।

"मैं सोचता हूं," उसने एकाएक कहा, "कि किसी रात तुम मेरे साथ खाना खाओगी और 'दि बेले ऑफ न्यूयार्क' देखने चलोगी। मैं दो टिकट स्टाल से खरीद लूँगा।"

उसने आखरी वाक्य उसे लुभाने को जोड़ दिया था। उसे मालूम था कि जब युवतियाँ नाटक देखने जाती थीं, तो वे 'पिट' में बैठती थीं, या, अगर कोई उन्हें लिवा जाते थे, तो अपर सर्किल से ऊपर की सीटों पर शायद ही कभी। मिल्ड्रेड के रंग हीन चेहरे पर कोई भाव न आया।

"मुझे एतराज नहीं" मिल्ड्रेड ने कहा।

"कब चलोगी?"

"वृहस्पतिवार को मुझे जल्दी छुट्टी मिल जाती है।"

मिल्ड्रेड ने कोई प्रसन्नता प्रदर्शित नहीं की, पर उसने निमंत्रण इस तरह स्वीकार किया जैसे वह कोई अहसान कर रही हो। फिलिप को को कुछ चिढ़ लग आई।

वह उसे नापसंद करता था और फिर भी, उसे नहीं मालूम था क्यों, वह उसके साथ रहना चाहता था। नाटक से घर की ओर लौटते समय उसने पूछा :

"मेरा ख्याल है तुमने पूरा आनन्द उठाया ?"

"हाँ।"

"किसी शाम को तुम फिर मेरे साथ आओगी ?"

"मुझे एतराज नहीं।"

ऐसे वाक्यों से आगे वह कभी नहीं जा सका था। उसकी उदासीनता उसे पागल बना रही थी।

जब वह बिस्तर पर लेट गया, उसे असंभव लगा कि वह मिल्ड्रेड रॉजर्स को प्यार करता था। उसका नाम ही भयानक था। वह उसे सुन्दर नहीं सोचता था; पर उसके दुबलेपन को घृणा करता था, उसी शाम को उसने देखा था कि शाम की पोशाक में उसके सीने की हड्डियाँ कितनी उभरी हुई थीं; वह उसके मुँह को पसंद नहीं करता था और उसके शरीर का अस्वास्थाकर रंग एक तरह से उसे विकर्षित कर रहा था। वह बिल्कुल साधारण था। उसके वाक्य, इतने असाहित्यिक और कम, लगातार दोहराये जाते थे और उसके मस्तिष्क का खोखलापन जाहिर करते थे। संगीतमय सुखान्त नाटक में हो रहे मज़ाकों, उसकी अशोभन हँसी उसे याद आई और गिलास मुँह से लगाते समय उसकी आगे बढ़ी हुई छोटी अंगुली भी उसे याद आई। उसका व्यवहार, उसकी बातचीत की तरह, घृणात्मक रूप से फैशन परस्त था। उसे उसका अपमानजनक व्यवहार याद था; कभी-कभी उसे लगता था कि वह उसके कानों को खींच ले; और सहसा, उसे मालूम नहीं क्यों, शायद उसे मरने के

ख्याल, या उसके छोटे सुन्दर कानों की याद से, वह भावनाओं के ज्वर में फँस जाता। वह उसे चाहता था। वह उसके पतले, कमजोर शरीर को अपने हाथों में लेकर उसका पीला मुख चूमने की सोचता था। वह उसके हरे पड़ रहे से गालों पर अपनी अंगुलियाँ फिराना चाहता था। वह उसे चाहता था।

प्रेम को वह ऐसी खुशी समझता था, जो व्यक्ति को इस तरह पकड़ लेती है कि सारी दुनियाँ उसके लिये बसन्त के समान हो जाती है, वह असीम प्रसन्नता की आशा किया करता था। पर यह प्रसन्नता नहीं थी; यह उसकी आत्मा की भूख थी, यह एक बड़ी दर्दनाक चाहत थी, यह एक कड़ुवा दर्द था, इसे उसने पहले कभी नहीं जाना था। उसने सोचने की कोशिश की कि कब उसने इसे महसूस किया था। वह जान सका। उसे केवल इतना याद आया कि पहली दो तीन बार के बाद जब वह दुकान में गया था, तब उसके दिल में एक प्रकार का भाव रहता था, जो दर्द था और उसे याद आया कि जब वह उससे बातें करती थी तो आश्चर्यजनक रूप से उसकी सांस ठहरती न थी। जब वह उसे छेड़ देती, उसमें अधिक दर्द भर उठता और जब वह फिर उसके पास आती वह निराश हो उठता।

वह एक कुत्ते की तरह बिस्तर पर लेट गया। वह सोचता था कि अपनी आत्मा की कभी न रुकने वाली दुश्मन को वह कैसे बर्दाश्त कर पायेगा।

: १० :

फ़िलिप ने शनिवार की रात के लिये टिकट खरीद लिये। यह उन दिनों में से एक नहीं था जब मिल्ड्रेड को ज़ल्दी छुट्टी मिल जाती थी और इसलिये उसके पास घर जाकर कपड़े बदलने का समय नहीं रहेगा; लेकिन सुबह ही अपने साथ एक फ्रॉक लेकर आने का उसका इरादा था जिससे वह दूकान में ही कपड़े बदल सके। यदि मैनेजर अच्छे 'मूड' में

होगी तो उसे सात बजे चली जाने देगी । सवा सात बजे के बाद फ़िलिप ने बाहर उसकी प्रतीक्षा करना स्वीकार कर लिया था ।

लेकिन शनिवार की दोपहर के बाद जब वह चाय पीने और सारे प्रवन्ध को एक बार और निश्चित करने गया, तो दूकान से बाहर आता हुआ वह मूंछों वाला आदमी उसे मिला । अब तक उसे मालूम हो गया था कि उसका नाम मिलर था । उसका दिल डूब गया क्योंकि उसका पहला ख्याल था कि मिलर की आकस्मिक उपस्थिति उसके बहुत प्रतीक्षित प्रोग्राम में बाधा पहुँचा सकती है । चिन्ता में डूबता-उतराता वह भीतर पहुँचा । वेटर-स्त्री उसके पास आई, उसका चाय का आर्डर लिया और थोड़ी देर बाद ले आई ।

"मुझे बड़ा दुःख है," उसने अपने चेहरे पर वास्तविक दुःख का भाव लाकर कहा," मैं आज रात को आ नहीं सकूंगी ।"

"क्यों ?" फ़िलिप ने कहा ।

"इस बारे में इतने कठोर मत बनो," वह हंसी, "यह मेरी गलती नहीं है । कल रात मेरी चाची बीमार पड़ गईं और आज रात मेरी छुट्टी है । इसलिये मुझे जाकर उनके पास रहना है । उन्हें अकेला तो नहीं छोड़ा जा सकता, है न ?"

"कोई बात नहीं मैं तुम्हें घर पहुंचा दूंगा ।"

"पर तुमने टिकट खरीद लिये हैं । उन्हें बरबाद करना बड़ी बुरी बात होगी ।"

उसने उन्हें अपनी जेब से बाहर निकाला और जानबूझ कर फाड़ दिया ।

"ऐसा तुम क्यों कर रहे हो ?"

"क्या तुम्हारा खयाल है कि मैं वह बेकार संगीत-प्रधान सुखान्त नाटक अकेले देखूंगा, क्यों ? मैंने सिर्फ तुम्हारे लिये ही तो सीटें ली थीं ।"

"अगर तुम्हारा मतलब मुझे घर पहुंचाने का है, तो तुम ऐसा नहीं

कर सकते ।"

"तुमने दूसरा इन्तजाम कर लिया है ।"

"मैं नहीं समझी तुम्हारा क्या मतलब है । तुम भी औरों की तरह ही स्वार्थी हो । तुम सिर्फ अपने बारे में सोचते हो । चाची बीमार है तो इसमें मेरी गलती तो नहीं है ।"

जल्दी से बिल लिख कर वह उसके पास से चली गई। फ़िलिप स्त्रियों के बारे में बहुत कम जानता था, नहीं तो उसे मालूम होता कि पुरुषों को उनके बिलकुल सफेद झूठ भी मान लेने पड़ते हैं। उसने निश्चय किया कि वह दूकान का पहरा देगा और निश्चयात्मक ढंग से देखेगा कि मिल्ड्रेड उसी जर्मन के साथ गई है । उसे निश्चयपूर्वक जानने की प्रसन्नताहीन लालसा रहती थी। सात बजे वह दूसरे फुटपाथ पर खड़ा हो गया। वह मिलर को खोजने लगा, पर मिलर उसे कहीं न दिखलाई पड़ा। दस मिनट में वह बाहर आई। वह वही लबादा पहने और शाल ओढ़े थी, जो उसने उसके साथ थियेटर जाते समय पहना था। स्पष्ट था कि वह घर नहीं जा रही थी। उसके वहाँ से हट सकने से पहले ही मिल्ड्रेड ने उसे देख लिया। वह थोड़ा चली, तब सीधे उसके पास आई।

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?" उसने कहा।

"हवा खा रहा हूं," फ़िलिप ने उत्तर दिया।

"तुम मुझ पर जासूसी कर रहे हो, गंदे कुत्ते ! मैं सोचती थी कि तुम शरीफ आदमी हो।"

"क्या तुम सोचती थीं कि कोई शरीफ़ आदमी कभी तुम्हें चाहेगा ?" वह बुदबुदाया।

उसके अन्दर एक शैतान था, जो बातों के बिगाड़ने को उसे मजबूर कर रहा था। वह उसे उतना ही घायल करना चाहता था जितना वह उसे कर रही थी।

"मैं सोचती हूँ, अगर मैं चाहूँ तो अपना इरादा जरूर बदल सकती

हूँ। कोई जरूरी नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ बाहर चलूं ?"

मैं तुमसे कहती हूँ मैं घर जा रही हूं और मैं पीछा किया जाना या जासूसी किया जाना पसन्द नहीं करती।"

"आज तुम मिलर से मिली हो ?"

"इसका तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं। यों मैं उससे नहीं मिली। तुमने फिर गलती की है।"

"मैंने उसे आज दोपहर के बाद देखा था। जब मैं भीतर गया था, उसी समय वह बाहर निकला था।"

"तो इससे क्या ? अगर मैं चाहती हूं तो उसके साथ बाहर जा सकती हूँ, है न ? मेरी समझ में नहीं आता इस बारे में तुम क्या कहना चाहते हो।"

"वह तुमसे इन्तजार करा रहा है, है न ?"

"मैं तुम्हारे मेरे लिये इन्तजार करने से ज्यादा अच्छा उनके लिये स्वयं इन्तजार करना समझूंगी। अब तुम अपने घर लौट जाओगे और भविष्य में अपना काम देखोगे।"

उसका 'मूड' सहसा क्रोध से निराशा में बदल गया और जब वह बोला तो उसकी आवाज काँपी।

"मैं कहता हूँ, मेरे साथ ऐसा भयानक व्यवहार मत करो मिल्ड्रेड ! तुम्हें मालूम हे मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। मेरा ख्याल है मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं। क्या तुम अपना इरादा नहीं बदलोगी ? मैं आज तुम्हारी बाट कितनी आशा से जोह रहा था। देखो, वह नहीं आया और वास्तव में वह तुम्हारी जरा ही परवाह नहीं करता। क्या तुम मेरे साथ खाना नहीं खाओगी ? मैं और टिकट खरीद लूंगा और जहाँ तुम चाहोगी, वहीं हम चलेंगे।"

"मैंने तुमसे कहा मैं नहीं चल सकती। तुम्हारे बातें करने से कोई लाभ नहीं। जब मैं अपना इरादा पक्का कर लेती हूँ तो उसे बदलती

नहीं।"

फिलिप ने एक क्षण को उसे देखा, उसका हृदय पीड़ा से छलनी हो गया था। फुटपाथ पर लोग उनके बगल से गुजर रहे थे और 'कैब'[1] और बसें शोर करती हुई आ-जा रही थीं। उसने देखा मिल्ड्रेड की आँखें इधर-उधर देख रही हैं। उसे भय था भीड़ में वह मिलर को खो न दे।

"मैं इस तरह नहीं रह सकता," फिलिप बोला, यह बड़ा अपमान-जनक है। अगर अब मैं जाता हूं, तो हमेशा के लिये जाऊंगा। अगर तुम आज रात मेरे साथ नहीं चलोगी तो फिर मुझे कभी नहीं देखोगी।"

"तुम शायद सोचते हो, वह मेरे लिये बड़ा भयानक होगा। मैं केवल इतना कहना चाहती हूँ, बुरे कूड़े से छुटकारा ही पाना अच्छा है।"

"तब गुडबाई।"

उसने सिर हिलाया और धीरे-धीरे लंगड़ाता हुआ वह चल पड़ा, क्योंकि वह अपने तहेदिल से यही मना रहा था कि वह उसे वापस बुला ले। अगले लैम्प-पोस्ट पर रुक कर उसने कंधे के ऊपर से पीछे देखा। वह सोच रहा था, शायद वह उसे इशारा करे—वह सब कुछ भूल जाने को राजी था, वह किसी भी तुच्छता को स्वीकार करने को तैयार था, पर वह दूसरी ओर घूम गई थी और स्पष्टतः उसके बारे में परेशान नहीं हो रही थी। उसने महसूस किया कि उससे मुक्ति पाकर मिल्ड्रेड प्रसन्न है।

: ११ :

उसे ठीक से नींद नहीं आई। अगला दिन इतवार था और वह जीव विज्ञान पढ़ने लगा। अपने सामने किताब रखकर वह बैठा, ध्यान एकाग्र करने के लिये अपने होंठों से वह शब्दों के आकार बनाने लगा,

---

१. दो पहियों वाली बग्घी।

पर वह याद कुछ नहीं रख पा रहा था। हर मिनट अपने विचारों को उसने मिल्ड्रेड की ओर भटकते पाया और अपने आप वह आपस में हो गई तकरार के ठीक शब्दों को दोहराने लगा। उसे जबर्दस्ती अपनी किताब की ओर लौटना पड़ता था। वह बाहर घूमने चला गया। वह इतना थक गया कि रात में गम्भीर नींद में सोया और जब सोमवार का सबेरा हुआ, दृढ़ निश्चय के साथ उसने जीवन में प्रवेश किया। बड़ा दिन पास आ रहा था और बहुत से विद्यार्थी जाड़े के 'सीज़न' के दोनों भागों के बीच की छोटी छुट्टी मनाने देहातों में चले गये थे; परन्तु फ़िलिप ने ब्लैकस्टेबिल आने का अपने चाचा का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था। समीप आ रहे इम्तहान को उसने बहाना बनाया, पर वास्तव में लन्दन और मिल्ड्रेड छोड़ना उसे रुचिकार न था। उसने अपने काम में इतनी ढील दे रक्खी थी कि अब उसके पास वह सब सीखने के लिये पन्द्रह दिन का समय था, कैरीक्यूलम में जिसके लिये तीन महीने का समय नियत किया गया था। वह गम्भीरतापूर्वक काम करने में जुट गया। हर दिन के साथ मिल्ड्रेड को याद न करना उनके लिये आसान होता गया। उसने अपने चरित्र की शक्ति पर अपने को बधाई दी। जो दर्द अब वह सह रहा था इसमें टीस नहीं थी, पर एक तरह का दर्द अनुभव था, जैसे घोड़े से गिरने वाले उस आदमी से अनुभव करने की आशा की जा सकती है, जिसकी कोई हड्डी तो न टूटी हो, पर खरोंच पूरे शरीर पर लग गई हो और वह हिल गया हो।

परन्तु कभी-कभी सड़क पर वह किसी ऐसी लड़की को देखता जो मिल्ड्रेड से बहुत मिलती-जुलती होती, तो उसे लगता उसके हृदय की धड़कन बन्द होती जा रही है। तब वह अपने को सम्हाल न पाता, आतुर और विकल होकर उसके पास पहुँचता, तब उसे केवल यही पता लगता कि वह बिल्कुल अजनबी है। उसके साथी देहातों से वापस लौट आए और वह डंसफ़ोर्ड के साथ एक ए० बी० सी० दुकान में चाय पीने जाने लगा। जानी पहचानी पोशाक को देख कर वह इतना दुःखी हो

जाता कि बोल तक न पाता ।

तब उसके इम्तहान का दिन आया । इम्तहान के बाद उसे विश्वास हो गया कि वह पास हो गया था; लेकिन अगले दिन, जब इम्तहान की इमारत पर चिपके परीक्षा फल को देखने गया, तो उसे उस सूची में अपना नम्बर न देखकर घोर आश्चर्य हुआ, जिन्होंने परीक्षकों को सन्तुष्ट किया था । आश्चर्य से उसने सूची को तीन बार पढ़ा । डंसफ़ोर्ड उसके साथ था ।

"मुझे बड़ा दुःख है कि तुम पास नहीं हो सके," उसने कहा ।

उसने अभी-अभी फ़िलिप का नम्बर पूछा था । फ़िलिप घूमा और उसके चहरे को देखकर समझ गया कि डंसफ़ोर्ड पास हो गया है ।

"ओह, इससे फ़र्क नहीं पड़ता," फ़िलिप ने कहा, "मुझे बहुत खुशी है कि तुम बिल्कुल ठीक हो । मैं फिर जुलाई में इम्तहान दूँगा ।"

वह यह बहाना करने के लिये बड़ा आतुर था कि इसका उसे कोई दुःख नहीं है, पर बाद में, वह एकदम अकेले पन के भाव से घिर गया । वह स्वयं अपने को बेवकूफ़ और व्यर्थ समझने लगा । उसे सहानुभूति की तीव्र आवश्यकता प्रतीत हुई और मिल्ड्रेड को देखने की लालसा तीव्र हो उठी । कड़वे पन के साथ उसने सोचा कि मिल्ड्रेड की ओर से सहानुभूति मिल सकने की आशा नहीं है; आख़िरकार वह वेटर थी और उसकी सेवा करना ही उसका काम था । दुनियां में वह ही ऐसा व्यक्ति था जिसकी वह परवाह करता था । इस सत्य को अपने से छिपाने से क्या काम ! बेशक दुकान में फिर जाता, जैसे कुछ हुआ ही न हो, बड़ा लज्जास्पद होगा, परन्तु अब उसमें अधिक आत्मसम्मान रह भी तो न गया था । यद्यपि उसने अपने से यह कभी स्वीकार न किया था, पर वह आशा करता था कि वह उसे लिखेगी; उसे मालूम था कि अस्पताल के पते पर लिखा हुआ पत्र उसे मिल जायगा । पर मिल्ड्रेड ने पत्र नहीं लिखा; स्पष्ट था कि उसे परवाह न थी, वह दुबारा लिखे या न लिखे, यही फ़िलिप स्वयं से बार-बार कहता रहा ।

"मैं अवश्य उससे मिलूँगा। मैं अवश्य उससे मिलूँगा।"

इच्छा इतनी बलवती हो उठी कि पैदल चलने में समय न गवाँकर वह एक कार में जा बैठा। एक दो मिनट वह दूकान के बाहर खड़ा रहा। ख़्याल आया कि कहीं उसने वहाँ काम करना छोड़ न दिया हो और इस भय से वह फौरन भीतर चला गया। उसने उसे देख लिया। वह बैठ गया और वह उसके पास आई।

"एक प्याला चाय और एक 'मफ़िन'[१]" उसने कहा।

बड़ी मुश्किल से बोल पाया। एक क्षण के लिये वह डर गया कि वह रो पड़ेगा।

"मैं सोच रही थी तुम मर गये हो," मिल्ड्रेड ने कहा।

वह मुस्करा रही थी। मुस्करा रही थी! लगा वह आखरी दृश्य एकदम भूल गई, जिसे फ़िलिप ने अपने आप सौ बार दोहराया था।

"मैंने सोचा था कि अगर तुम मुझसे मिलना चाहोगी तो मुझे ख़त लिखोगी," उसने उत्तर दिया।

"मेरे पास ख़त लिखने की बात सोचने के लिये बहुत काम है।"

उसके लिये कोई अच्छी बात कह सकना असंभव था। फ़िलिप ने भाग्य को कोसा जिसने उसे ऐसी औरत से बाँध दिया था। वह उसकी चाय लाने चली गई।

"एक दो मिनट के लिये मेरा बैठना पसन्द करोगे?" जब वह चाय लेकर आई तो उसने पूछा।

"हाँ।"

"इतने समय तुम कहाँ थे?"

"लन्दन में।"

"मैंने सोचा तुम छुट्टियाँ मनाने बाहर चले गये हो। आख़िर गये क्यों

---

१. एक मुलायम, हल्की, छेददार केक जो मक्खन के साथ गर्म-गर्म खाई जाती है।

नहीं ?"

फिलिप उसकी ओर अत्याधिक आशामय आँखों से देख रहा था ।

"तुम्हें याद नहीं मैंने कहा था कि अब कभी में तुम्हें नहीं देखूंगा ?"

"तो अब तुम क्या कर रहे हो ?"

लगा, वह आतुर है कि फ़िलिप अपनी बेइज्जती का प्याला पी जाये; फ़िलिप उसे जानता था, कि वह बिना सोचे समझे बोल रही है; वह भयानक रूप से उसे घायल कर रही थी, बिना कोशिश किये हुए ही। उसने उत्तर नहीं दिया ।

"उस तरह मेरे पीछे जासूसी करके तुमने मेरे साथ अच्छा सलूक नहीं किया था। मैंने सोचा था कि हर मायने में तुम शरीफ़ आदमी हो।"

"इतनी बेरहम मत बनो, मिल्ड्रेड । मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"तुम अजीब आदमी हो; मैं तुम्हें समझ नहीं पाई।"

"यह बड़ा आसान है। मैं इतना बड़ा बेवकूफ हूँ कि मैं तुम्हें अपनी सारी शक्ति से प्यार करता हूँ और मैं जानता हूँ कि तुम मेरी रत्ती भर भी परवाह नहीं करतीं।"

"अगर तुम शरीफ़ आदमी हो तो मेरा ख़्याल है अगले दिन आकर मुझसे माफ़ी माँगते।"

वह निदर्य थी। फ़िलिप ने उसकी गर्दन को देखकर सोचा कि अपनी 'मफ़िन' के लिये आए हुए चाकू से वह उसका गला तराश दे। और साथ ही वह उसके पीले, पतले चेहरे को चुम्बनों से भर देना चाहता था।

"अगर मैं केवल तुम्हें इतना समझ पाता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।"

"तुमने मुझसे अभी तक माफ़ी नहीं माँगी।"

वह बिल्कुल सफेद हो उठा। मिल्ड्रेड का विश्वास था कि उसने

अवसर पर कोई ग़लत काम नहीं किया था। अब वह उसे नीचा दिखलाना चाहती थी। वह बड़ा अभिमानी था। एक क्षण के लिये उसने सोचा वह उसे नर्क में जाने को कह दे, पर उसका साहस न हुआ। उसकी कामना ने उसे नीच बना दिया था। उसे न देख पाने की अपेक्षा वह किसी भी तुच्छता को स्वीकार कर सकता था।

"मुझे दुःख है, मिल्ड्रेड! मुझे क्षमा कर दो।"

उसे ये शब्द जबर्दस्ती मुँह से बाहर करने पड़े थे। यह प्रयत्न बड़ा भयानक था।

"अब तुमने माफी माँग ली है तो मैं बता सकती हूँ कि अगर उस शाम मैं तुम्हारे साथ गई होती तो ज्यादा अच्छा होता। मैं सोचती थी कि मिलर शरीफ आदमी है, पर अब मैं अपनी गलती समझ गई हूं। मैंने उससे कह दिया है कि वह अपना काम देखे।"

फ़िलिप का मुँह आश्चर्य से जरा खुल गया।

"मिल्ड्रेड, आज रात तुम मेरे साथ बाहर नहीं चलोगी? चलो, हम लोग चलकर कहीं खाना खायें।"

"ओह मैं नहीं चल सकती। मेरी चाची घर में मेरा इन्तजार कर रही हैं।"

"मैं उन्हें तार भेज दूँगा। तुम कह देना कि तुम्हें दूकान में रोक लिया गया था; इससे अधिक वह कुछ न जान पायेंगी। ओह तुम भगवान् के लिये जरूर चलो। इतने दिनों से मैंने तुम्हें नहीं देखा और मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ।"

मिल्ड्रेड ने अपने कपड़ों की ओर देखा।

"उनकी परवाह न करो। हम किसी ऐसी जगह में जायेंगे जहाँ कपड़ों की परवाह कोई नहीं करता। बाद में हम लोग म्यूज़िक-हाल में जायेंगे। इस से मुझे मिलेगी बड़ी खुशी।"

मिल्ड्रेड एक क्षण को हिचकिचायी। फ़िलिप ने उसकी ओर दर्द और प्रार्थना की आँखों से देखा।

"अच्छा, मुझे एतराज नहीं। न मालूम कितने दिनों से मैं बाहर नहीं गई।"

उसी समय और वहीं उसका हाथ पकड़ने और तब उसे चुम्बनों से ढक देने से फ़िलिप स्वयं को बड़ी कठिनाई से रोक सका।

मार्च के आखिर में फ़िलिप एनॉटमी के इम्तहान में पास नहीं हो सका। इस दूसरी असफलता ने उसे आवश्यक रूप से अपने वर्ष के सुस्त और अयोग्य विद्यार्थियों की श्रेणी में रख दिया।

उसने ज़्यादा चिन्ता नहीं की। सोचने के लिये उसके पास और बातें थीं। वह अपने से कहा करता था कि मिल्ड्रेड में हर व्यक्ति की तरह समझ होगी, बस उसे जगाने का प्रश्न था। औरत के बारे में उसके अपने विचार थे, हृदय में छाप और वह सोचता था कि कभी न कभी हर एक के लिये ऐसा समय अवश्य आता होगा, जब वह लगातार कोशिश करने पर झुक ही जायेगी। यह अवसर पाने का अपने को सम्हाले रखने, छोटी-छोटी बातों से उसे तोड़ने, शारीरिक थकान, जो हृदय में कोमलता पैदा कर देती है, का लाभ उठाने, उसके काम की छोटी-छोटी परेशानियों का स्वयं को रक्षक बनाने का प्रश्न था। उससे वह अपने पेरिस के मित्रों और जिन सुन्दर महिलाओं का वह प्रशंसक था, उनके बारे में बताया करता। उसके द्वारा वर्णित जीवन में एक सुन्दरता, एक सरल प्रसन्नता होती थी और कोई भोंडापन नहीं था। मिल्ड्रेड के कानों में वह गीत और हंसी से खुशनुमा बनगई गरीबी और सौन्दर्य और यौवन से रूमानी बन गये अनियंत्रित प्यार की बातें उडेला करता था। उसके पक्षपातों पर वह कभी सीधा आघात न करता था, वरन् यह कह कर उनसे लड़ने की कोशिश करता था कि वे बाहरी अणु हैं। उसके ध्यान न देने से यह कभी अव्यवस्थित न होता और न ही उसकी विरक्ति से चिढ़ उठता। वह सोचता उसने उसे उठा दिया था। कोशिश करके वह अपने को आसानी से बातें करने देने वाला और मजाकिया बनाने लगा। वह कभी स्वयं को नाराज़ न होने देता, कभी कुछ न

माँगता, कभी शिकायत न करता, कभी न डाँटता। जब वह एंगेजमेंट करती और उन्हें तोड़ देती, वह अगले दिन उससे मुस्कराते हुये चेहरे से मिलता; जब वह क्षमा माँगती, वह कहता 'कोई बात नहीं।' वह कभी उसे न देखने देता कि वह उसे कष्ट पहुँचाती है। वह समझता था कि अत्यधिक कष्ट ने उसे थका दिया है और तनिक भी कष्टकर प्रत्येक भाव को छिपा लेता। उसका यह काम वीरतापूर्ण था।

यद्यपि मिल्ड्रेड ने इस परिवर्तन के बारे में कुछ कहा नहीं, क्योंकि कभी उसने जानबूझ कर इस ओर ध्यान ही नहीं दिया था, परन्तु इस परिवर्तन ने उस पर प्रभाव अवश्य डाला। वह उस पर अधिक विश्वास करने लगी; वह अपनी छोटी-छोटी शिकायतें उसके पास ले जाने लगी और उसके पास हमेशा दूकान के मैनेजर, उसके साथ काम करने वाली वेटरों में से एक, या अपनी चाची के खिलाफ़ कोई-न-कोई शिकायत रहती ही थी; अब वह काफी बातें करने लगी थी और यद्यपि उसने व्यर्थ बातों के अतिरिक्त और कोई बात नहीं की, फिलिप कभी उसकी बातें सुनने में न थकता।

"जब तुम मुझे प्यार नहीं करना चाहते, मैं तुम्हें पसन्द करती हूँ," एक बार उसने फ़िलिप से कहा।

"यह मेरे लिये बड़े अभिमान की बात है," वह हँसा।

वह कभी न महसूस करती कि उसके शब्दों से उसका हृदय किस प्रकार बैठने लगता, न ही इतने हलके ढंग से उत्तर देने के लिये उसे कितना प्रयत्न करना पड़ता।

"ओह, कभी-कभी तुम्हारे चुम्बन ले-लेने को मैं बुरा नहीं मानती। उससे मुझे तकलीफ नहीं होती और तुम्हें खुशी भी मिल जाती है।"

कभी-कभी वह उससे स्वयं को कहीं खाने के लिये लिवा जाने को भी कहती और उसके यह कहने पर फ़िलिप प्रसन्नता से खिल उठता।

अप्रैल के अन्त में, एक शाम को उसने फ़िलिप से कुछ खिलाने को

कहा।

अब तक 'सोहो' के उस छोटे रेस्तराँ के वे पुराने ग्राहक हो गये थे। जैसे ही वे अन्दर घुसे, मालिक उन्हें देख कर मुस्कराया। वेटर हाजिर था।

"आज मुझे डिनर का आर्डर देने दो," मिल्ड्रेड ने कहा।

फ़िलिप ने उसे हमेशा से अधिक आकर्षक समझकर मेनू उसे दे दिया और उसने अपनी पसन्द की चीज़ें चुनीं। फ़िलिप बड़ा खुश था। वह उसकी आँखों में देखता और उसके पीले गालों की हर एक पूर्णता पर उसकी दृष्टि जाती। जब वे खा चुके तो, मिल्ड्रेड ने एक सिगरेट ले ली। वह कभी-कभी ही ऐसा करती थी। वह सिगरेट बहुत कम पीती थी।

वह एक क्षण को हिचकिचाई और तब बोली।

"क्या आज मेरे बाहर ले चलने और मुझे डिनर खिलाने की बात कहने पर तुम्हें आश्चर्य हुआ था ?"

"मुझे खुशी हुई थी।"

"मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूं, फ़िलिप !"

फ़िलिप ने फौरन उसकी ओर देखा, उसका दिल डूबने लगा, पर उसने अपने को अच्छी तरह शिक्षा दी थी।

"तो कहो," उसने कहा, मुस्कराते हुए।

"इस बारे में तुम बेवकूफी तो न करोगे, है न ? बात यह है कि मैं शादी करने जा रही हूँ।"

"सचमुच ?" फ़िलिप ने कहा। वह कुछ और कहने की बात सोच भी न सका।

"देखो न, मेरी उम्र बढ़ती जा रही है," उसने कहा, "मैं चौबीस साल की हूँ और अब मुझे घर बसाना ही चाहिये।"

वह चुप था। उसने काउन्टर के पीछे बैठे मालिक को देखा और उसकी आँखें खाना लाने वाली स्त्रियों में से एक के हैट पर लगे लाल रंग पर टिक गईं। मिल्ड्रेड चिढ़ गई।

"तुम मुझे बधाई दे सकते हो," उसने कहा।

"सकता हूँ, है न ? विश्वास नहीं होता मुझे, कि यह सच है। किसके साथ शादी करने जा रही हो ?"

"मिलर," उसने जरा लजाते हुए उत्तर दिया।

"मिलर ?" आश्चर्य से फिलिप चीख पड़ा, "पर तुमने उसे महीनों से नहीं देखा।"

"पिछले हफ्ते एक बार वह लंच खाने गया था। तभी उसने मुझसे पूछा। वह काफी कमा रहा है। अभी हफ्ते में सात पौंड मिलते हैं और भविष्य में उन्नति की आशा है।"

फ़िलिप फिर चुप हो गया। उसे याद आया कि मिल्ड्रेड हमेशा ही मिलर को पसन्द करती थी; उससे उसे खुशी मिलती थी; उसके विदेशीय जन्म में कुछ ऐसा आकर्षक सौन्दर्य था जिसकी अनुभूति मिल्ड्रेड के अंतर्मन में होती थी।

"मेरा ख्याल है ऐसा होना ही था," उसने आखिर में कहा," सबसे ऊंचा दाँव लगाने वाले को ही स्वीकार करने को तुम बाध्य हो। कब शादी करने जा रही हो ?"

"अगले शनिवार को। मैंने नोटिस दे दी है।"

फिलिप को सहसा धक्का लगा।

"इतनी जल्दी ?"

हम लोग रजिस्ट्री-आफिस में शादी करेंगे। मिलर को यही पसन्द है।"

फ़िलिप को लगा वह भयानक रूप से थक गया है। वह मिल्ड्रेड से दूर जाना चाहता था। उसने सोचा वह सीधे जाकर सो जायगा। उसने बिल मंगाया।

"एक कैब में बिठा कर मैं तुम्हें विक्टोरिया भेज दूंगा। मेरा ख्याल है ट्रेन के लिए तुम्हें ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा।"

"तुम मेरे साथ नहीं चलोगे ?"

"मेरा ख्याल है, अगर तुम बुरा न मानो तो।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," उसने तनिक कठोर स्वर में उत्तर दिया, "मेरा ख्याल है, कल चाय के समय मैं तुम्हें वहाँ देख पाऊँगी ?"

"नहीं, मैं सोचता हूँ अब हमारा पूर्णविराम लग जाना ही ज्यादा अच्छा होगा। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्यों स्वयं को दु:खी बनाता जाऊँ। मैंने कैब का किराया दे दिया है।"

उसकी ओर देखकर फ़िलिप ने सिर हिलाया, जबर्दस्ती अपने होठों पर वह एक मुस्कान लाया, तब एक बस में बैठकर अपने घर चला गया। बिस्तर पर लेटने से पहले वह पाइप पीता रहा, पर वह अपनी आँखें खुली न रख सका। उसे दर्द नहीं महसूस हुआ। जैसे ही उसके सिर ने तकिये को छुआ, लगभग फौरन वह गंभीर नींद में डूब गया।

: १२ :

फ़िलिप उसी दिन की आकुल प्रतीक्षा में था जिस दिन मिलड्रेड का विवाह होने वाला था; उसे आशंका थी कि उसे असह्य पीड़ा होगी; उसे बहुत सुख मिला जब शनिवार की सुबह उसे हेवर्ड का एक पत्र मिला कि वह उसी दिन सवेरे आ रहा है और मकान खोजने के लिये फ़िलिप की सहायता चाहेगा। फ़िलिप आतुर था कि उसका ध्यान बँट जाये। उसने टाइमटेबिल खोजकर उस अकेली ट्रेन का पता लगाया जिससे हेवर्ड आ सकता था; वह उससे मिलने गया और मित्रों का यह पुर्नमिलन बहुत उत्साहपूर्ण था। सामान उन्होंने स्टेशन पर ही छोड़ दिया। वह प्रसन्न मन घूमने निकल पड़े। हेवर्ड ने प्रस्ताव रक्खा था कि सबसे पहले वे नेशनल गैलरी में एक घन्टा गुज़ारेंगे; उसने बहुत दिनों से कोई तस-वीर नहीं देखी थी और उसने कहा कि उसे जिन्दगी के साथ चलने के लिए चित्रों का देखना बहुत आवश्यक है। महीनों से फ़िलिप के पास कोई ऐसा आदमी नहीं था जिससे वह कला और पुस्तकों की बातें कर सकता था। पेरिस के दिनों के बाद हेवर्ड ने स्वयं को आधुनिक फ्रेंच

कवियों में डुबो दिया था और वे इतने अधिक थे कि वह फ़िलिप को अनेक उन सबके बारे में बताना चाहता था। अपनी-अपनी पसन्द के चित्रों की ओर इशारा करते हुए वे गैलरी में घूमते रहे, एक विषय से दूसरा विषय उपजता गया; वे आवेशपूर्ण बातें करते रहे। सूरज चमक रहा था और हल्की सी गरमी थी।

"चलो हम लोग पार्क में बैठें,' हेवर्ड ने कहा "लंच के बाद तालाश करेंगे।"

बसन्त का मौसम बड़ा खुशनुमा था। वह दिन वैसा था जब कि आदमी को महसूस होता है कि जिन्दा रहना कितनी अच्छी बात है। आसमान के कैनवस पर पेड़ों का हलका हरा रंग बहुत अच्छा लग रहा था; और आसमान पीला और नीला, छोटे सफेद बादलों से भरा हुआ था। फ़िलिप का हृदय हलका हुआ। जो कुछ उसने पहले कभी पढ़ा था उसकी उसे अनुभूति हुई—कि कला (क्योंकि प्रकृति की ओर उसके देखने के ढंग में कला थी) आत्मा को पीड़ा मुक्त कर सकती है।

वे इटैलिक रेस्ट्राँ में लंच खाने गये। खाना धीरे-धीरे खाते हुए वे बातें करते रहे। हीडेलवर्ग में जिन आदमियों से वे परिचित थे, एक दूसरे को उनकी याद दिलाते रहे; पेरिस में फ़िलिप के दोस्तों की बातें हुईं, किताबों, चित्रों, चरित्र और जीवन के विषय में बातें करते रहे; और सहसा किसी घड़ी के तीन बजाने की आवाज़ फ़िलिप को सुनाई दी। उसे याद आया कि इस समय तक मिल्ड्रेड का विवाह हो गया होगा। उसके हृदय में एक सुई सी चुभी और एक दो मिनट तक वह नहीं सुन सका कि हेवर्ड क्या कह रहा है। परन्तु उसने अपना गिलास "शैन्टी" से भरा। वह शराब पीने का अभ्यस्त नहीं था, और उसका सिर भारी हो गया। उसका तेज़ दिमाग महीनों से सुस्त पड़ा था, अब बातचीत के कारण उसे नशा सा हो आया।

---

१. एक प्रकार की शराब।

हेवर्ड के आगमन से फ़िलिप को काफी फायदा हुआ। हर दिन उसके विचार मिल्ड्रेड पर कम-से-कम केन्द्रित रहने लगे। अतीत की ओर वह घृणा से देखने लगा। उसकी समझ में न आ सका कि ऐसे प्रेम के असम्मान के सम्मुख वह कैसे झुक गया था; और जब वह मिल्ड्रेड के बारे में सोचता तो क्रोधपूर्ण घृणा के साथ ही, क्योंकि उसी के सम्मुख उसे अपनी हीनता प्रदर्शित करनी पड़ी।

फिलिप को लगा, उसका पुर्नजन्म हो रहा है। वह अपने को घेरने वाली हवा में इस तरह साँस लेने लगा जैसे उसमें उसने कभी साँस न ली हो, और दुनियाँ की हर बात में उसे बच्चों का सा आनन्द आने लगा।

हेवर्ड को लन्दन में रहते हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे कि फ़िलिप के ब्लैकस्टेबिल से, जहाँ वह भेजा गया था, आया हुआ किसी पिक्चर गैलरी में व्यक्तिगत रूप से देखने के लिये एक कार्ड मिला। हेवर्ड को उसने साथ लिया, कैटेलॉग में देखने पर उसे मालूम हुआ कि उसमें लॉसन की भी एक तस्वीर है। "मेरा ख्याल है, कार्ड उसी ने भेजा था," फिलिप ने कह, "चलो उसका पता लगायें, वह जरूर अपने चित्र के सामने खड़ा होगा।"

चित्र रूथ चैलिस का एक 'प्रोफाइल'[1] एक कोने में टंगा हुआ था और लॉसन उससे अधिक दूर नहीं था। अपने बड़े मुलायम हैट और ढीले पीले कपड़ों में लिपटा हुआ, व्यक्तिगत रूप से चित्र देखने के लिये आई हुई फैशनेबिल भीड़ के बीच में वह कुछ खोया सा मालूम पड़ रहा था। उसने उत्साह से फ़िलिप का स्वागत किया और अपनी हमेशा ज्यादा बोलने की आदत के अनुसार बताया कि वह लंदन में रहने आया है रूथचैलिस उसने स्टूडियो वापस ले लिया है। पेरिस में अब कुछ नहीं रह गया है। उसे पोर्ट्रेट बनाने का काम मिल गया है। अच्छा तो

---

१. किसी व्यक्ति का 'चित्र' बगल से देखने पर।

यह होगा कि वे साथ साथ खाना खाकर बातें करें । फिलिप ने उससे हेवर्ड की जान-पहचान की याद दिलाई और यह देखकर उसे मजा आया कि हेवर्ड के कीमती कपड़े और बढ़िया ढंग देखकर लॉसन कुछ हैरत में पड़ गया था। उस गन्दे छोटे स्टूडियो, जिसमें लॉसन और फिलिप साथ रहे थे, में रहने की तुलना में अब वे उससे काफी अच्छे थे।

फिलिप ठीक से और आसानी से काम करने लगा; उसे काम काफी करना था क्योंकि वह जुलाई में परीक्षा के तीनों भागों का इम्तहान देना था, जिनमें से दो में वह पहले फेल हो चुका था; पर उसे जीवन खुशनुमा मालूम पड़ने लगा । उसने एक दोस्त बनाया । लॉसन ने मॉडेलों की खोज करते समय, एक लड़की का पता लगा था जो एक थियेटर में काम सीख रहे थे। उसे 'वैठनें' के लिये राजी करने के लिए उसने एक इतवार को एक लंचपार्टी का इन्तजाम किया । युवती ने फ़िलिप से कहा कि वह कभी उसके घर आये; उसके कमरे विन्सेंट स्क्वायर में थे और पाँच बजे वह हमेशा चाय पीने आती थी। वह गया । अपने स्वागत से उसे बड़ी खुशी हुई । वह फिर गया । मिसेज़ नेविस्ट की उम्र पच्चीस वर्ष से अधिक न थी, उनका कद छोटा था और खुशनुमा, बदसूरत चेहरा । आँखें बहुत चमकदार थीं, गालों की हड्डियों ऊँची, चौड़ा मुँह : उसके शरीर के रंगों के विरोध को देखकर किसी आधुनिक फ्रेंच चित्रकार की पेंटिंग का ध्यान आता था; उनकी त्वचा बहुत सफेद थी, गाल बहुत लाल, मोटी भवें, बाल बहुत काले । प्रभाव बड़ा अजीब था, थोड़ा अप्राकृतिक पर खुशनुमा; वह अपने पति से अलग रहती थी और अपना और अपने बच्चे की जीविका यापन सस्ते उपन्यास लिखकर करती थी । पारिश्रमिक कम मिलता था, तीस हजार शब्दों की कहानी के लिये उन्हें पन्द्रह पौंड मिलते थे, पर वह संतुष्ट थीं ।

इसके अलावा वह अनेक थियेटरों में जाती थी, जहाँ लोग खाना

माँगते थे और इस काम से हर हफ़्ते सोलह शिलिंग से लेकर एक गिन्नी तक कमा लेती थी। कभी-कभी जब प्रबन्ध गड़बड़ हो जाता था और उनके पास जरा भी पैसा न होता, तो उनकी छोटी-मोटी चीजें बॉक्सल ब्रिज रोड़ की गिरवी रखने की दुकान का रास्ता पकड़ती और जब तक परिस्थतियाँ सुधर न जातीं वे रोटी और मक्खन खाती रहती, अपनी खुशी वे कभी न खोती।

जल्दी ही फ़िलिप को हमेशा उनके साथ चाय पीने की आदत पड़ गई, और इस भय से कि उसके बार-बार आने का वह बुरा न मानें वह एक केक या एक पौंड मक्खन, या कुछ चाय ले जाता। वे एक दूसरे को क्रिस्चियन नामों से पुकारने लगे। स्त्री की सहानुभूति उसके लिए नई थी और जो उसकी परेशानियों को सुनने को तैयार होता उससे उसे बड़ी खुशी मिलती। घंटे बड़ी जल्दी बीत जाते। उनके प्रति अपनी प्रशंसा उसने छिपाई नहीं। वह बड़ी अच्छी,साथिन थी। वह मिल्ड्रेड से उनकी तुलना करने से स्वयं को रोक न सका; उसका हृदय डूबने लगता जब उसे ख्याल आता कि वह मिल्ड्रेड जैसी स्त्री से जीवन भर के लिये बंध जाता। एक शाम को उसने नोरा को अपने प्रेम की सारी कहानी बताई।

"मैं सोचता हूं कि अब तुम इससे पूरी तरह बाहर हो गये," जब फिलिप समाप्त कर चुका तो नोरा ने कहा।

कभी-कभी एबर्डीन के पिल्लों की तरह अपना सिर एक ओर को डालकर बैठने की नोरा की आदत थी। वह एक सीधी कुर्सी पर बैठी सिलाई कर रही थी, क्योंकि वह हमेशा कुछ काम करती ही रहती थी और फिलिप आराम से उसके पैरों के पास बैठा था।

"मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि इसके खत्म हो जाने से मैं कितना खुश हूं," उसने लम्बी साँस ली।

"सचमुच तुम्हारा समय बड़े बुरे ढंग से बीता होगा," वह बुदबुदाई। अपनी सहानुभूति दिखलाने के लिये उसने अपना हाथ फिलिप

के कंधों पर रक्खा।

उसने पकड़कर उसे चूम लिया, पर उसने उसे फौरन पीछे कर लिया

"तुमने वैसा क्यों किया ?" उसने शर्माते हुये पूछा।

"तुम्हें कोई ऐतराज है ?"

उसने चमकती आँखें से एक क्षण को उसे देखा और वह मुस्कराई-नहीं," ।

वह अपने घुटनों के बल ठीक उसके सामने बैठ गया। वह दृढ़ता से उसकी आँखों में देखती रही और चौड़ा मुँह एक मुस्कान से काँपा।

"हाँ ?" उसने कहा।

"तुम जानती हो तुम चोर हो। तुम मुझ पर मेहरवान हो इसके लिये मैं तुम्हारा बड़ा शुक्र गुजार हूं। तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो।"

"बेवकूफ़ी की बातें मत करो" नोरा ने कहा।

फ़िलिप ने उसकी कहानियाँ पढ़कर उसे अपनी ओर खींचा। उसने विरोध नहीं किया, पर वह जरा आगे झुकी और फ़िलिप ने उसके लाल होंठ चूम लिये।

"तुमने वैसा क्यों किया ?" उसने फिर पूछा।

"क्योंकि यह बड़ा आरामदेह है।"

नोरा ने उत्तर नहीं दिया पर उसकी दृष्टि में एक कोमलता आगई, और वह धीमे-धीमे उसके बाल सहलाने लगी।

"देखो, तुम्हारा इस तरह का व्यवहार करना बहुत बड़ी बेवकूफ़ी है। हम कितने अच्छे दोस्त थे। उतने तक ही सीमित रहना कितना अच्छा होगा।"

"अगर तुम सचमुच मेरे अच्छे स्वभाव पर प्रभाव डालना चाहती हो," फ़िलिप ने उत्तर दिया, "तो ऐसा करते समय मेरे गालों को थपकना ठीक न होगा।"

वह थोड़ा हँसी, पर रुकी नहीं।

"मैं बड़ा गलत काम कर रही हूं, है न ?" उसने कहा।

फ़िलिप ने आश्चर्य और कुछ प्रसन्नता से उसकी आँखों में देखा, और देखते देखते उसे लगा कि वह नरम पड़कर द्रवित हो गई है, और उनमें ऐसा भाव आ गया जिससे वस प्रफुल्लित हो उठा। उसका हृदय सहसा मथ उठा और उसकी आँखें भर आईं।

"नोरा, तुम मुझे नहीं चाहतीं, है न?" उसने अविश्वासपूर्ण ढंग से पूछा।

"चालाक लड़के, बड़ी बदमाशी के सब पूछते हो।"

"ओह, मुझे कभी गुमान भी न था।"

अपने हाथ चारों ओर पहना कर उसने उसे चूम लिया और उसने हँसते, लजाते, हुए स्वीकारोक्ति पूर्ण ढंग से स्वयं को उसके आलिंगन में समर्पित कर दिया।

थोड़ी देर में उसने उसे मुक्त कर दिया और ऐडियों के बल बैठते अजीब दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"ओह, मैं साँस नहीं ले पा रहा हूँ," उसने कहा।

"क्यों?"

"मुझे इतना आश्चर्य है।"

"और खुशी?"

"बहुत खुशी," वह पूरी शक्ति से चीखा, "और इतना गर्व और इतनी खुशी और इतना अभारी।"

उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर चुम्बनों से भर दिया। फ़िलिप के लिये यह एक ऐसी प्रसन्नता का कारण था, जो गाढ़ी और स्थायी मालूम पड़ी। वे प्रेमी हो गये, पर दोस्त भी बने रहे। नोरा में एक प्रकार की मातृत्त्व की भावना थी जिसे फ़िलिप के प्रति प्यार में संतोष मिलता था; प्यार करने भिड़कने, और लड़ाई करने के लिये वह किसी को चाहती थी; उसका स्वभाव गृहस्थी में उलझे रहने वाला था और फ़िलिप के स्वास्थ्य और कपड़ों के बारे में चिन्ता करने में उसे सुख मिलता था। वह यौवना, स्वस्थ्य और पुष्ट थी और प्यार करना उसे

बिल्कुल स्वाभाविक मालूम पड़ा। वह बड़ी उत्साही और प्रसन्नमना थी। वह फ़िलिप को पसन्द करती थी क्योंकि उसे हास्यप्रद लगने वाली जीवन की सभी वस्तुओं पर वह उसके साथ हंसता था और सर्वोपरि वह उसे पसन्द करती थी क्योंकि वह वह थी।

फ़िलिप उसे तनिक भी प्यार नहीं करता था। वह उसे बहुत ज्यादा पसन्द करता था, उसके साथ खुश रहता था, उसकी बातचीत में मज़ा उठाता था और डूबा रहता था। उसके कारण उसमें खोया हुआ आत्मविश्वास फिर लौट आया था और जैसे उसकी आत्मा के घावों पर वह मरहम लगाती थी। वह उसकी परवाह करती थी और इससे फ़िलिप को बड़े गर्व का अनुभव होता था। वह उसकी शक्ति, उसकी आशा वादिता, भाग्य के प्रति उसकी उदासीनता का प्रशंसक था; नोरा का अपना छोटा सा दर्शन था, स्वयं उसका आविष्कृत और प्रयोगिक।

"तुम समझो, मैं गिरजा और पादरी और ऐसी ही अनेक बातों में विश्वास नहीं करती," नोरा ने कहा, "पर ईश्वर में करती हूँ। और अगर तुम अपना पल्ला भारी रक्खो और जरूरत पड़ने पर लंगड़े, कुत्ते की सहायता कर दो तो मुझे विश्वास नहीं कि और तुम क्या करते हो ईश्वर उसका बुरा मानता है। और मैं सोचती हूँ कि कुल मिलाकर आदमी बहुत अच्छे होते हैं, और जो नहीं हैं उनके लिये मुझे दुःख है।"

"और बाद के लिये?" फ़िलिप ने पूछा।

"ओह, हाँ, उसके बारे में मैं निश्चयपूर्वक कुछ नहीं जानती," वह मुस्कराई, "पर मैं हमेशा सर्वोत्तम की आशा करती हूँ। कुछ भी हो तब किराया देना नहीं पड़ेगा और उपन्यास नहीं लिखने पड़ेंगे।"

कोमलता पूर्वक बड़ाई करने का उसमें स्त्रियोचित गुण था। उसका विचार था कि पेरिस छोड़कर उसने बहादुरी का काम किया था क्योंकि उसे ज्ञान हो गया था कि वह महान् कलाकार नहीं बन सकता और जब वह उसकी आवेशमय प्रशंसा करती तो वह बहुत प्रसन्न होता। वह कभी भी निश्चय नहीं कर पाया था कि उसका यह कार्य साहस

का द्योतक था। या उद्देश्य की कमजोरी का। यह मालूम होना बड़ी प्रसन्नता की बात थी कि वह इसे वीरता का काम समझती थी। उसने उस विषय पर बात करने का निश्चय किया जिससे उसके मित्र स्वभावतः दूर भागते थे।

"अपने हाथी पाँव के विषय में तुम्हारा इतना संवेदनशील होना बड़ी बेवकूफी है," उसने कहा। उसने उसे जोर से शर्माते देखा, पर वह कहती गई, 'तुम समझो कि और आदमी इसके बारे में इतना नहीं सोचते जितना तुम सोचते हो। जब वे पहली बार तुम्हें देखते हैं तो इस पर ध्यान देते हैं और फिर इस के बारे में भूल जाते हैं।"

फिलिप ने उत्तर दिया।

"तुम मुझसे नाराज नहीं हो, है न ?"

"नहीं।"

उसने अपनी बाँह फिलिप की गर्दन के चारों ओर लपेट दी।

"मैं इसके बारे में सिर्फ इसलिये बातें कर रही हूं, क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। में नहीं चाहती कि इसके कारण तुम अप्रसन्न हो।"

"मैं सोचता हूँ कि तुम मुझ से कोई भी बात कह सकती हो," उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "मैं चाहता हूँ कि मैं यह दिखाने के लिये कुछ कर सकता कि मैं तुम्हारा कितना कृतज्ञ हूँ।"

उसने दूसरे तरीकों से भी उस पर अधिकार कर लिया। वह उसे शुष्क न होने देती, और जब वह आपे में न होता तो उस पर हँसती। उसने उसे अधिक पालतू बना लिया।

"तुम मुझ से कोई भी काम करा सकती हो," एक बार फिलिप ने उससे कहा।

"क्या तुम्हें बुरा लगता है ?"

"नहीं' मैं वही करना चाहता हूँ जो तुम्हें पसन्द है।"

उसमें अपनी प्रसन्नता को जान सकने की समझ थी। उसे लगता कि नोरा उसे सब कुछ देती थी। जो एक पत्नी दे सकती थी और उस

की स्वतंत्रता में कोई बाधा नहीं पड़ती थी; अब तक के उसके मित्रों में से वह सब से अधिक सुन्दर थी और उसमें एक तरह की सहानुभूति थी जिसे उसने कभी पुरुष में नहीं पाया था। यौन-सम्बन्ध उनकी मित्रता की सबसे मजबूत कड़ी के अलावा और कुछ नहीं था। यह मित्रता का पूरक था परन्तु आवश्यक नहीं और चूँकि फिलिप की भूख शान्त हो जाती थी, तो वह अधिक शान्ति और आसानी के साथ रहने लगा था। वह महसूस करने लगा था कि अब वह अपने पर पूर्ण अधिकार कर सकता है।

उसके इम्तहान नजदीक आ रहे थे और नोरा भी उनसे उतनी गम्भीरतापूर्वक सम्बन्धित थी जितना कि स्वयं फिलिप। नोरा की आतुरता देख कर वह बहुत गर्वित और दुखित हो उठता अतः नोरा ने उससे वायदा करा लिया कि परीक्षाफल मालूम होते ही वह उसके पास आयेगा। इस बार फिलिप बिना किसी दुर्घटना के तीनों भागों में पास हो गया और जब उसे बताने गया तो वह फूट-फूट कर रो पड़ी।

"ओह, मैं कितनी खुश हूँ। मैं कितनी आतुर थी।"

"बेवकूफ औरत," वह हंसा, परन्तु उसका गला रुंध रहा था।

एक सुबह जब फिलिप जगा तो उसे लगा कि उसका सिर चक्कर खा रहा है। वह फिर बिस्तर पर लेट गया और उसे मालूम पड़ा कि वह बीमार पड़ गया है। उसके अंग-प्रत्यंग में पीड़ा थी और सर्दी से वह कांप रहा था। जब मकान मालकिन उसका नाश्ता लेकर आई तो उसने खुले दरवाजे से नोरा से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं है और उससे एक प्याला चाय और टोस्ट का टुकड़ा लाने को कहा। कुछ मिनटों बाद उसके दरवाजे पर दस्तक हुई और ग्रिफिथ्स अन्दर आया। एक साल से वे उसी मकान में रह रहे थे। परन्तु रास्ते में एक दूसरे को देख कर सिर हिलाने के सिवा उन्होंने कुछ नहीं किया था। ग्रिफिथ्स ने उसका तकिया झाड़ा-अभ्यस्त हाथों से बिस्तर ठीक किया और उसे ठीक से लिटा दिया। फिलिप की कमरे में वह साइफन की

तलाश में गया था परन्तु पा न सका और अपने कमरे से ही ले आया। पर्दा उसने खींच दिया।

"अब तुम सो जाओ और जैसे ही डाक्टर डीकन वार्डों का निरीक्षण कर चुकेंगे, मैं उन्हें लेकर आ जाऊँगा।"

फिलिप को लगा कि घण्टों तक कोई उसके पास नहीं आया। सिर फटा सा जा रहा था, पीड़ा उसके अंग-अंग को चीरे डाल रही थी और उसे भय था कि वह रो पड़ेगा। तब दरवाजे पर एक खटका हुआ और ग्रिफिथ्स, स्वस्थ, दृढ़ और प्रसन्नमन, आन्दर आया।

"ये रहे डाक्टर डीकन," उसने कहा।

डाक्टर साहब आगे बढ़े। उन्हें फिलिप केवल देख कर ही जानता था। कुछ प्रश्न, संक्षिप्त सी परीक्षा और डायगनॉसिस।

"इन्फलुयेन्ज़ा।"

पाँच दिन तक वह बिस्तर पर पड़ा रहा।

नोरा और ग्रिफिथ्स मिल कर उसकी सुश्रूषा करते रहे। यद्यपि ग्रिफिथ्स फिलिप की ही उम्र का था, फिलिप के प्रति उसने एक तरह का हास्यप्रद माता का सा व्यवहार करना शुरु दिया। यह विचारवान पुरुष था बहुत भला और साहस प्रदान करने वाला। परन्तु उसका सब से बड़ा गुण था एक शक्ति, जो लगता था, उसके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक आदमी को स्वास्थ्य प्रदान करती थी। फिलिप को दूसरों की तरह, माताओं और बहनों द्वारा पुचकारे जाने का अनुभव न था और इस शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा व्यक्त स्त्रियोचित की मानता से वह विचलित हो उठा। फिलिप अच्छा होने लगा। तब ग्रिफिथ्स, फिलिप के कमरे में बे काम बैठे हुए, उसका मनोरंजन अपने आसक्तिपूर्ण ऐडवेन्चरों की कहानियाँ सुनाकर किया करता। कर्ज से वह लंगड़ा हो गया था, थोड़ी भी कीमती चीज जो उसके पास थी गिरवी रक्खी जा चुकी थी, परन्तु वह हमेशा खुश, शाहखर्च और रहम दिल रहने का प्रबन्ध कर ही लेता। वह स्वभाव से ही ऐडवेंचर-प्रेमी था। वह संदेह जनक व्यवसाय और

चलायमान निश्चयों वाले आदमियों को पसन्द करता था और लन्दन में रहने वाले धुनियों-जुलाहों से उसकी गहरी दोस्ती थी। चरित्र-हीन स्त्रियाँ, उसे दोस्त मानकर, अपने जीवन की कठिनाइयाँ, मुश्किलें, और सफलतायें सुनाया करतीं; और ताश के खेल में ठगने वाले उसकी धन-हीनता का आदर करके उसे 'डिनर' खिलाते और पाँच पौंड के नोट उधार देते। वह अपने इम्तहानों में बार-बार फेल होता रहा; पर वह खुशी से यह सब सहता और अपने पिता के विरोध के सामने ऐसी शान से जाता कि उसके पिता, लीड्स के डॉक्टर, उस पर गम्भीरता-पूर्वक क्रोधित भी न हो पाते।

जिन्दगी बहुत ज़्यादा खुशनुमा है। परन्तु यह स्पष्ट था कि जब वह यौवन की प्रचुरता को पार कर चुकेगा और आखिर इम्तहान में पास हो जायेगा तो वह अपनी प्रैक्टिस में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेगा। वह सिर्फ़ अपनी कार्यप्रणाली की सुन्दरता से लोगों को ठीक कर दिया करेगा।

फ़िलिप उसकी पूजा करने लगा, जैसे स्कूल में वह लम्बे और सीधे और उत्साही की पूजा किया करता था। जब तक वह बिल्कुल स्वस्थ हुआ वे गहरे मित्र बन गये थे और फ़िलिप के लिये यह एक अजीब सन्तुष्टि का विषय था कि ग्रिफ़िथ्स को उसके कमरे में बैठने, अपनी खुशनुमा बातचीत से फ़िलिप का समय बरबाद करने और अनगिनत सिगरेटें पीने में आनन्द आता था। फ़िलिप कभी-कभी रीजेन्ट स्ट्रीट के पास वाली सराय में ले जाया जाता। हेवर्ड को वह मूर्ख मालूम पड़ता परन्तु लॉसन उसके आकर्षण को समझ गया और उसका चित्र बनाने को आतुर हो उठा। अपनी नीली आँखों, सफेद त्वचा और घुंघराले बालों में वह चित्रोपयगी आकृति पाता था। कभी-कभी वे ऐसी बातें करते जिनके बारे में उसे कुछ भी नहीं मालूम था और तब, अपने सुन्दर चेहरे पर भली-सी मुस्कान लाकर वह चुपचाप बैठा रहता; उसका सोचना बिल्कुल ठीक था कि उसकी उपस्थिति ही उपस्थित व्यक्तियों के

मनोरंजन में काफ़ी सहयोग थी। जब उसे मालूम हुआ कि मैकालिस्टर शेयर मार्केट का एक दलाल था, वह 'टिप्स' के लिये आतुर हो उठा; और मैकालिस्टर ने, अपनी गंभीर मुस्कान के साथ, उसे बताया कि अगर वह कुछ मौकों पर वह कुछ 'स्टाक' ख़रीद लेगा तो वह कितना धन कमा लेता। सुन कर फ़िलिप के मुंह में पानी आने लगा, क्योंकि किसी-न-किसी प्रकार वह अपनी आशा से अधिक खर्च कर रहा था और मैकालिस्टर के बताए आसान ढ़ंग से कुछ रुपया बना लेना उसे अच्छा लगता।

"अगली बार जब किसी अच्छी चीज़ का पता लगेगा, मैं तुम्हें बताऊँगा," शेयर-मार्केट के दलाल ने कहा, "कभी-न-कभी ऐसा मौका आ ही जाया करता है।"

फ़िलिप यह सोचने से स्वयं को रोक न सका कि पचास पौंड पैदा कर सकना कितनी खुशी का विषय होगा,जिससे वह नोरा के लिए समूर खरीद सकेगा, जिसकी उसे जाड़ों के लिये कितनी जरूरत थी, रीजेन्ट्रस्ट्रीट में उसने उस दुकान में देखा और तय कर लिया कि उस धन से वह कौन-कौन सी चीजें खरीदेगा। वह हर चीज पाने का अधिकारी भी है। उसने फिलिप का जीवन आनन्दमय बना दिया है।

: १३ :

एक दिन दोपहर के बाद जब वह अस्पताल से अपने कमरों में वापस गया जिससे हमेशा की तरह नोरा के यहाँ चाय के लिये जाने से पहले वह हाथ मुंह धोकर अपने को ठीक कर ले, उसकी मकान-मालकिन ने उसके लिये द्वार खोला।

"एक महिला, आपसे मिलने का इन्तज़ार कर रही हैं" मकान मालकिन ने कहा।

"मुझसे ?"

उसे आश्चर्य हुआ। वह नोरा ही होगी, पर आखिर वह इस समय

क्यों आई ?

मकान-मालकिन को पार कर वह अपने कमरे में घुसा। उसका दिल बैठ गया। वह मिल्ड्रेड थी। वह बैठी हुई थी, पर वह अन्दर आया तो वह जल्दी से खड़ी हो गई। वह उसकी ओर नहीं बढ़ी, न कुछ बोली। वह इतने आश्चर्य में पड़ गया क्योंकि उसकी समझ में न आया कि वह क्या कह रहा है।

"तुम क्या चाहती हो ?" उसने पूछा।

उसने उत्तर न दिया, पर वह रोने लगी। वह किसी नौकरी की तलाश में आई थी नौकरानी सी मालूम पड़ रही थी। उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में उस समय एक प्रकार की दीनता थी। फ़िलिप को मालूम न हो सका, सहसा उसमें कौन सा भाव आया। सहसा उत्तेजना आई कि वह घूमकर कमरे से बाहर भाग जाए।

"मेरा ख्याल न था कि फिर कभी मैं तुम्हें देखूँगा," उसने आखिर कहा।

"काश, मैं मर गई होती।" वह कराही।

"क्या बात है ?" उसने पूछा।

"मिलर ने मुझे छोड़ दिया है।"

फ़िलिप का हृदय उछल पड़ा। तभी उसे पता लगा कि वह उसे हमेशा की तरह उतनी ही गंभीरता से अब भी प्यार करता था। उसके प्रति उसका प्यार अभी खत्म हुआ ही न था। वह उसके सामने खड़ी थी, लज्जित और निर्विरोध। उसे लगा अपने हाथों में लेकर उसके आँसुओं से भरे चेहरे को चुम्बनों से ढक दे। ओह, यह विछोह कितना लम्बा था। उसकी समझ में न आया, कैसे वह उसे सहन कर सका था।

उसने कुर्सी आग के समीप घसीटी और मिल्ड्रेड उस पर बैठ गई। उसने उसके लिये ह्विस्की और सोडा मिलाये। सिसकते हुए उसने उसे पी लिया। वह फ़िलिप की ओर बढ़ी, पीड़ित आँखों से देख रही थी।

उसके मुँह पर लम्बी, काली रेखाएं थीं। पहले की अपेक्षा वह अधिक दुबली और पीली पड़ गई थी।

"कॉश तुम्हारे कहने पर मैं तुम्हारे साथ शादी कर लेती," उसने कहा।

फ़िलिप समझ न सका कि इस काव्य को सुनकर उसके दिल में क्या आया। उसने उसके कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

"मुझे दुःख है कि तुम कष्ट में हो।"

मिल्ड्रेड ने अपना सिर उसके वक्ष पर टिका दिया और उन्माद-ग्रस्त सी रोना शुरू कर दिया। उसका हैट बीच में बाधा था, उसने उसे हटा दिया। फ़िलिप को स्वप्न में भी गुमान न था कि वह इस तरह रो सकती है। उसने उसे बार-बार चूमा। लगा, इससे उसे कुछ शान्ति मिली है।

थोड़ा-थोड़ा करके अपनी कहानी वह फ़िलिप को सुनाने लगी। कभी-कभी तो वह इतनी सिसकती कि फ़िलिप समझ ही नहीं पाता कि वह क्या कह रही है।

"पिछले हफ़्ते सोमवार के दिन वह बर्किघम गया था। उसने वादा किया था कि वह वृहस्पतिवार को लौट आयेगा। पर वह नहीं आया, शुक्रवार को भी नहीं आया। मैंने उसे लिखा कि बात क्या है, पर उसने खत का जवाब भी न दिया और मैंने उसे लिखा कि अगर वह लौटती डाक से जवाब नहीं देता तो मैं बर्किघम आ जाऊंगी। आज सुबह एक वकील का पत्र मेरे पास आया है कि मेरा उस पर कोई अधिकार नहीं है और अगर मैंने उसे बदनाम करने की कोशिश की तो वह कानून की शरण लेगा।

"पर यह तो बिल्कुल न्याय-विरुद्ध है," फ़िलिप चीखा, "कोई आदमी अपनी पत्नी से ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता। क्या तुम्हारी उससे लड़ाई हो गई थी?"

"ओह हाँ, रविवार को हममें लड़ाई हो गई थी और उसने कहा

वह मुझसे आजिज़ आ गया है। पर ऐसा वह पहले भी कह चुका था और वापस आ चुका था। मैंने उससे बताया था कि मेरे बच्चा होने वाला है और वह डर गया। जब तक संभव था मैंने उसे यह नहीं बताया पर तब मुझे बताना पड़ा। उसने कहा यह मेरी गलती है, मुझे पहले से सावधान रहना चाहिये था। उसने मुझसे क्या-क्या कहा, तुम सुन भर पाते ! पर मैं शीघ्र ही समझ गई कि वह कोई शरीफ़ आदमी नहीं है। उसने मुझे बिना एक पेनी के छोड़ दिया। उसने किराया भी नहीं दिया और मेरे पास चुकाने के लिये पैसे न थे। मकान मालिकन ने मुझसे कैसी-कैसी बातें कहीं—उसकी बातों के अनुसार तो मैं चोर थी।"

"मेरा ख्याल था तुम फ़्लैट किराये पर लोगी।"

"यही उसने कहा था, पर उसने भी हाईबरी में सजे सजाये कमरे लिये। वह इतना नीच था। वह कहता था मैं शाह-खर्च थी, उसने कभी मुझे खर्च करने को पैसे नहीं दिये।"

फिलिप एक-दो मिनट तक सोचता रहा। उसके कष्ट से वह इतना विचलित हो उठा था कि अपने आप सोच भी न सका।

"तुम कहती हो कि मैं बर्मिंघम जाऊं ? मैं उससे मिलकर बात सुधारने की कोशिश कर सकता हूँ।"

"और यह संभव नहीं। मैं जानती हूँ, अब वह कभी लौट कर नहीं आयेगा।"

"पर उसे तुम्हें गुज़ारा देना चाहिये। वह उससे नहीं बच सकता। अच्छा होगा इस बारे में किसी वकील से मिल लो।"

"कैसे ? मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

"मैं सब खर्च दूंगा। मैं अपने वकील को एक पत्र लिख दूंगा। क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूं ? मुझे आशा है, अब भी वह अपने दफ़्तर में होंगे।"

"नहीं, मुझे खत देदो। मैं अकेली चली जाऊँगी।"

अब वह कुछ शान्त हो गई थी । बैठकर उसने एक पत्र लिखा । तब उसे याद आया कि उसके पास पैसे नहीं हैं । पिछले दिन ही सौभाग्य से उसने एक चेक भुनाया था और वह उसे पांच पौंड दे सका ।

"तुम बड़े अच्छे हो, फ़िलिप," उसने कहा ।

"मुझे खुशी है कि मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सका हूं ।"

"क्या तुम अब भी मुझे चाहते हो ?"

"उतना ही जितना हमेशा चाहता था ।"

उसने अपने होंठ ऊपर कर दिये और फ़िलिप ने उन्हें चूम लिया । मिल्ड्रेड के कार्यकलाप में समर्पण था, जिसे फ़िलिप ने पहले कभी न देखा था । जितनी पीड़ा उसने सही थी, वह उसका उचित पारिश्रमिक था ।

वह चली गई और फ़िलिप ने देखा वह दो घंटे वहां रही थी । वह बहुत खुश हो उठा ।

उसे नोरा का ख्याल भी न आया, जब कि आठ बजे के करीब उसका तार आया ।

"कोई बात हो गई है क्या ? नोरा ।"

उसकी आत्मा उस शाम नोरा के यहां जाने के विचार के विरुद्ध विद्रोह कर रही थी । उसने तार देने का निश्चय किया ।

"दु:ख है कि फ़ुरसत नहीं पा सका, फ़िलिप ।"

अगले दिन उसने फिर तार दिया ।

"दु:ख है आ नहीं सकूंगा । फिर लिखूंगा ।"

मिल्ड्रेड ने कहा था कि वह शाम को चार बजे आयेगी और वह उसे बता नहीं सका था कि उस समय उसे असुविधा होगी । आखिर वह आई । वह अधीरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था । खिड़की के सामने खड़ा होकर वह उसकी बाट जोह रहा था और सामने का द्वार उसने स्वयं खोला ।

"हां, निक्सन से तुम मिलीं ?"

"हां", उसने उत्तर दिया, "उनका कहना है कि इससे कुछ लाभ

नहीं। कुछ नहीं किया जा सकता। बुदबुदाते हुए मुझे सब कुछ सहना होगा।"

"पर यह असंभव है," फ़िलिप चीखा।

वह थकी सी बैठ गई।

"उन्होंने कोई कारण बताया ?"

मिल्ड्रेड ने उसे एक मुड़ा हुआ पत्र दिया।

"यह तुम्हारा पत्र है, फ़िलिप ! मैं गई ही नहीं। कल मैं तुमसे नहीं बता सकी, सचमुच। उसने मुझसे शादी नहीं की थी। वह नहीं कर सकता था। उसकी पत्नी और तीन बच्चे हैं।"

फ़िलिप को ईर्षा और पीड़ा का एक धक्का लगा। अब यह उसकी सहनशक्ति के बाहर होता जा रहा था।

"इसी कारण मैं अपनी चाची के पास नहीं जा सकी। तुम्हारे अलावा मैं और किसी के पास नहीं जा सकती।"

"तुम उसके साथ क्यों गईं ?" फ़िलिप ने धीमी आवाज को दृढ़ बनाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"मैं नहीं जानती। उसने मुझसे कहा और मैं नहीं जानती मुझे क्या हो गया। मुझे लगा मैं इससे बच नहीं सकती। मुझे उसके साथ जाना ही पड़ा।"

"क्या तुम उसे प्यार करती थीं ?"

"मैं नहीं जानती। उसकी बातों पर हँसने से अपने को रोक न पाती थी मैं। उसने कहा था वह पन्द्रह पौंड प्रति सप्ताह कमाता है। मैं हर रोज दूकान जाते-जाते ऊब गई थी। फिर चाची से भी पट नहीं रही थी।......ओह मैं चाहती हूँ, उसके साथ न गई होती। पर जब दूकान में आकर उसने मुझसे पूछा तो मैं इनकार न कर सकी।"

फ़िलिप उससे दूर हट गया। मेज पर बैठ कर अपना सिर उसने हाथों में गड़ा लिया। उसे ज्ञान हुआ, उसका भयानक रूप से अपमान हुआ है।

"तुम मुझ पर नाराज तो नहीं हो, फ़िलिप ?" उसने पीड़ित स्वर में पूछा ।

"नहीं," उसने दृष्टि ऊपर उठा कर पर उससे परे देखते हुए कहा, "केवल मुझे बड़ी ीड़ा हुई है ।"

"क्यों ?"

"मैं तुम ो बहुत प्यार करता था । तुम्हारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये मैंने सब कुछ किया । म सोचता था तुम किसी को भी प्यार करन के योग्य नहीं हो । यह जानकर मुझे बड़ा भय लगा है कि उस शैतान के लिये तुम सब कुछ छोड़ने को तैयार थीं । मुझे आश्चर्य है, तुमने उसमें क्या देखा ।"

"मुझे दुःख है, फ़िलिप ! बाद में मैं बहुत पछताई थी, सच ।"

फ़िलिप को मिलर की याद आई । उसने एक लम्बी साँस ली । वह उठ कर उसके पास आई और उसके अपने हाथ उसकी गर्दन के चारों ओर पहना दिये ।

"मैं कभी नहीं भूलूंगी कि तुमने मुझसे शादी करने का प्रस्ताव रक्खा था, फिलिप," उसने कहा ।

फ़िलिप ने उसका हाथ पकड़ कर उसे देखा । झुककर मिल्ड्रेड ने उसे चूम लिया ।

"फ़िलिप, अगर अब भी तुम मुझे चाहते हो तो मैं तुम्हारे लिये कुछ भी करने को तैयार हूँ ।"

उसके हृदय की धड़कन बन्द हो गई । उसके शब्दों से वह कुछ-कुछ ऊबने लगा ।

"तुम्हरी बड़ी कृपा है, पर मैं नहीं कर सकता ।"

"अब तुम मुझे नहीं चाहते ?"

"हाँ, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ ।"

"तब मौका रहते हम लाग क्यों न समय मजे से बितायें ? देखो न, अब तो फर्क नहीं पड़ सकता ।"

फ़िलिप ने अपने को उससे मुक्त कर लिया।

"तुम समझती नहीं। जब से मैंने तुम्हें देखा है, तुम्हारे प्यार में मैं पागल हूँ, पर अब—वह आदमी। अभाग्यवश मेरी कल्पना-शक्ति बहुत विस्तृत है, उस विचार-भाव से ही मुझे घृणा होने लगती है।"

"तुम अजीब हो," उसने कहा।

फ़िलिप ने उसका हाथ पकड़ा और तब वह उसकी ओर देख कर मुस्कराया।

"तुम यह मत सोचना कि मैं तुम्हारा कृतज्ञ नहीं हूं। तुम्हारा अह-सान मैं कभी भुला ही नहीं सकता, पर देखो न, ये बस मुझसे, ज्यादा मजबूत हैं।"

"तुम अच्छे दोस्त हो फ़िलिप।"

वे बातें करते रहे और जल्दी ही वे पुराने दिनों की आत्मीय मित्रता में फिर वापस लौट गये। देर हो गई, फ़िलिप ने सुझाया कि वे साथ खाना खायें और फिर किसी म्यूजिम-हॉल में जायें। मिल्ड्रेड ने उससे उसे सोहों के उसी छोटे रेस्ट्रां में ले चलने को कहा जहाँ वे अकसर जाया करते थे। खाना खाते-खाते वह बहुत अधिक खुश हो गई। कोने के पब्लिक हाउस की बराण्डी ने उसके हृदय में गर्मी पहुँचाई और वे भूल गये कि उसे अपने चेहरे पर दुःख का भाव बनाये रखना चाहिये। फिलिप ने सोचा अब वह उसके भविष्य के बारे में बात कर सकता है।

"मैं सोचता हूँ कि तुम्हारे पास एक भी फार्दिंग नहीं है, या है?" अवसर मिलते ही उसने क.ा।

"बस वही जो कल तुमने मुझे दिया था और उसमें से तीन पाउण्ड मुझे मकान-मालकिन को देने पड़ गये थे।"

"अच्छा अभी काम चलाने के लिये मैं तुम्हें दस पौंड का नोट दिये देता हूँ। मैं जाकर अपने वकील से मिलूंगा और उनसे मिलर को चिट्ठी लिखवाऊँगा। मुझे विश्वास है हम उससे कुछ धन अवश्य ले सकते हैं। अगर हम उससे सौ पौण्ड पा सकें तो बच्चे का जन्म होने तक काम

चल जायगा ।"

"मैं उससे एक पेनी भी नहीं लूंगी । भूखे मरना मैं ज्यादा पसन्द करूंगी ।

"लेकिन उसका इस तरह तुम्हें मुसीबत में छोड़ देना तो दानवीय कृत्य है ।"

"मुझे अपने अभिमान का भी तो खयाल रखना है ।"

फ़िलिप के लिये यह जरा परेशानी की बात थी । डॉक्टरी की परीक्षा पास करने तक का समय व्यतीत करने के लिये उसे बहुत मितव्ययता से रहने की आवश्यकता थी । एक वर्ष तक वह अपने ही या किसी दूसरे अस्पताल में हाउस-सर्जन बनने का इरादा किये हुये था, उस एक वर्ष में भी उसे धन की जरूरत पड़ेगी ही । परन्तु मिल्ड्रेड ने एमिल की नीचता की अनेक कहानियाँ उसे सुनाई थीं और यदि वह दयालुता की कमी का अपराध उसके सिर पर मढ़ती तो उसका विरोध करने में वह डर रहा था ।

"मैं उससे एक भी पेनी नहीं लूंगी । इससे अच्छा यह है कि भीख माँग लूं । अब से बहुत पहले ही मुझे किसी की तलाश कर लेनी चाहिये थी । मेरी इस हालत में वह ठीक न होगा । आखिर तुम्हें अपना भी तो ख़्याल रखना है, है न ?"

"उसके लिये चिन्तित होने की जरूरत नहीं," फ़िलिप ने कहा, "तुम्हारे ठीक हो जाने तक मैं तुम्हारा सारा प्रबन्ध करता रहूँगा ।"

"मैं जानती थी, मैं तुम पर भरोसा कर सकती थी । मैंने एमिल से कह दिया था कि वह यह न सोचे कि मैं किसी के पास जा नहीं सकती । मैंने उसे बता दिया था कि तुम इस तरह के शरीफ़ आदमी हो ।"

थोड़ा-थोड़ा करके फ़िलिप को मालूम हो गया कि उसका संबंध विच्छेद किस तरह हुआ था । लगता था कि उस आदमी की पत्नी को उन ऐडवेन्चरों के बारे में मालूम हो गया था, जिनमें वह अपनी लन्दन की समय-समय की यात्राओं में डूबा रहा करता था । यह जानकर वह उस फर्म के मालिक के पास गई थी, जिसमें वह काम करता था । उसने

धमकी दी कि वह उसे तलाक दे देगी और फर्म वालों ने कह दिया कि अगर उसकी पत्नी ने तलाक दे दिया तो वह उसे नौकरी से बरखास्त कर देंगे। वह अपने बच्चों को बहुत प्यार करता था और उनसे अलग होने के विचार को वह सहन न कर सका। जब उसके सामने अपनी पत्नी और अपनी रखैल में से एक को चुनने का मौका आया तो उसने अपनी पत्नी को चुन लिया। वह हमेशा आतुर रहा करता था कि उस सम्बन्ध को और अधिक उलझाने के लिए किसी बच्चे का जन्म न हो; और जब मिल्ड्रेड ने उसके आगमन की बात छिपाने में अपने को असमर्थ पाकर, उस सत्य के बारे में उसे बताया, तब वह बहुत डर गया। उसने लड़ाई की और बिना बात बढ़ाये ही छोड़ दिया।

"तुम्हें कब प्रसव की 'आशा है ?" फिलिप ने पूछा।

"मार्च के शुरू में।"

"तीन महीने हैं।"

सारी स्कीम पर बातें कर लेना आवश्यक था। मिल्ड्रेड ने कहा कि वह हाईबरी के कमरों में नहीं रहेगी और फ़िलिप ने भी इसे अधिक सुविधा जनक समझा कि वह उसके अधिक पास रहे। उसने अगले दिन कमरे तलाश करने का वादा लिया। मिल्ड्रेड वॉक्साल ब्रिज रोड को एक संभव स्थान बतलाया।

"और बाद के लिए भी वहाँ ठीक रहेगा," उसने कहा।

"क्या मतलब तुम्हारा ?"

"हाँ, मैं वहाँ दो महीने या उससे कुछ अधिक तक रहूंगी और तब मुझे एक 'हाऊस' में जाना पड़ेगा। मुझे एक बड़ी अच्छी जगह मालूम है, जहाँ बहुत अच्छे दरजे के आदमी जाते-आते हैं और जहाँ चार गिन्नियां प्रति सप्ताह रहने का दिया जाता है, अलग से कुछ नहीं। अवश्य डॉक्टर को अलग से देना पड़ता है, पर बस इतना ही। मेरी एक मित्र वहाँ गई थी और उसे रखने वाली महिला बड़ी शरीफ है। मेरा उससे यह बतलाने का इरादा है कि मेरे पति भारतवर्ष में एक अफसर

हैं और मैं अपने बच्चे की परवरिश के लिये लन्दन आई हूं, क्योंकि यहाँ का जलवायु मेरे स्वास्थ्य के लिये हितकर है।"

उसे इस तरह बातें करते पाकर फ़िलिप को बड़ा अजीब लगा। अपने कोमल, छोटे अंगों और पीले चेहरे सहित वह रूखी और कुंवारी मालूम पड़ती थी। जब उसे उसके अन्दर जलने वाली वासना का ख्याल आया, इतनी अप्रत्यक्षित, उसके दिल में एक अजीब तरह की टीस होने लगी। उसकी नाड़ी की गति तेज हो गई।

: १४ :

फ़िलिप आशा कर रहा था कि अपने कमरों में पहुंच कर उसे नोरा का खत मिलेगा, पर वह कुछ नहीं था; न ही उसे कोई खत अगली सुबह मिला। उस चुप्पी से उसे चिढ़ लगने लगी। साथ ही आशंका भी हुई। पिछली जून से लगातार लन्दन में रहते समय वह प्रतिदिन उससे मिला करता था; और उसे सचमुच बड़ा अजीब लग रहा होगा कि उसने बिना उससे मिले या अपनी उपस्थिति का कारण बताये बिना दो दिन गुजर जाने दिये। वह सोच रहा था कि कहीं अभाग्यवश उसने उसे मिल्ड्रेड के साथ तो नहीं देख लिया। यह विचार मात्र ही उसे सहन न हो सका कि वह दुःखी या अप्रसन्न रहे और उसने उस दिन दोपहर के बाद उससे मिलने का निश्चिय किया; उसे लगा वह उसकी भर्तस्ना करे, क्यों उसने स्वयं को नोरा से इतनी घनिष्टता बढ़ाने दी। अब उन घनिष्ट संबन्धों को कायम रखने के विचारमात्र से उसे घृणा हो आई।

वॉक्साल ब्रिज रोड पर एक मकान की दूसरी मन्जिल पर उसने मिल्ड्रेड के लिए दो कमरे खोज निकाले। वहाँ शोर बहुत होता था, पर उसे मालूम था कि मिल्ड्रेड को अपनी खिड़की के नीचे ट्राफिक की आवाजें पसन्द थीं।

तब वह अपने पाँव पर दबाव डालकर विन्सेट स्क्वायर गया।

बेचैन ख्याल परेशान कर रहा था कि वह नोरा के साथ बुरा व्यवहार कर रहा है। उसे डर था कि वह उसकी भत्सर्ना करेगी। उसे मालूम था उसका स्वभाव बड़ा तेज़ था और वह झगड़ों से घृणा करता था। शायद सबसे अच्छा रास्ता यह होगा कि वह उसे बता दे कि मिल्ड्रेड उसके पास लौट आई है और उसके प्रति उसका प्यार अब भी उतना ही अधिक है, जितना पहले कभी था। उसे दुःख है पर अब वह नोरा को कुछ न दे सकेगा। तब उसने नोरा को पीड़ा पहुँचाई क्योंकि वह उसे प्यार करती थी; इसे जान कर वह पहले फूल उठा करता था और बहुत शुक्रगुज़ार होता था। पर यह भयानक था। उसने ऐसा कोई काम नहीं किया था कि वह उसे पीड़ा पहुँचाये। उसने अपने से पूछा कि अब वह कैसे स्वागत करेगी और सीढ़ियाँ पार करते समय उसके व्यवहार के हर समय के ढंग उसके मस्तिष्क में कौंध गये। उसने दरवाजा खटखटाया; उसे लगा वह पीला पड़ गया है और वह सोच रहा था कि वह कैसे अपनी घबराहट छिपा पायेगा।

वह बड़ी व्यस्तता के साथ लिख रही थी, पर उसके अन्दर प्रवेश करते ही वह उछल कर खड़ी हो गई।

"मैं तुम्हारी पदचाप पहचान गई थी," उसने आवेश-भरे स्वर से कहा, "तुम अपने को कहाँ छिपाये फिर रहे थे, शैतान लड़के ?"

खुश-खुश उसके पास पहुंचकर उसने अपने हाथ उसके गले के चारों ओर पहना दिये। उसे देखकर वह बहुत खुश हो गई थी। फ़िलिप ने उसे चूम लिया।

फ़िलिप ने उसकी ओर देखा, उसकी आँखों में भत्सर्ना की कोई छाया नहीं थी; पर वे हमेशा की तरह उतनी ही स्पष्ट और खुश थी; उसे देखकर वह असीम आनन्द-भर रही थी। उसका चित्त बैठने लगा। वह कठोर सत्य उसे वह बता नहीं पायेगा।

तब वह पास आकर उसके घुटनों पर बैठ गई, ऐसा करना वह हमेशा पसन्द करती थी। वह बहुत हल्की थी। उसके हाथों में वह

पीछे की ओर झूल गई, उसके होंठों से अतीव प्रसन्नता की चीत्कार निकल पड़ी।

"मुझसे कुछ प्यारी-प्यारी बात कहो," वह बुद-बुदाई।

"क्या कहूँ ?"

"अपनी कल्पना की शक्ति लगाकर कहो कि तुम मुझे चाहते हो।"

"तुम्हें मालूम है, मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

उसमें नोरा को उस समय बताने का साहस नहीं रह गया था। कुछ भी हो, उस दिन तो वह उसे लिख देगा और तब शायद उसे लिख देगा। यह ज्यादा आसान होगा। वह रोने लगेगी, यह विचार उसे सहन न हो सका। नोरा ने उसे चूमने को कहा और उसे चूमते समय उसे मिल्ड्रेड और मिल्ड्रेड के पतले, पीले होंठ याद आये। मिल्ड्रेड की याद हर समय उसके साथ रहती थी, एक मिश्रित शक्ल की तरह, परन्तु छाया से अधिक वास्तविक और सामने का दृश्य लगातार उसका ध्यान भंग कर रहा था।

"आज तुम बहुत चुप हो," नोरा ने कहा।

"तुमने कभी एक शब्द भी बोलने नहीं दिया पहले और अब मेरी बातें करने की आदत नहीं रह गई है।"

"आज तुम बहुत चुप हो," नोरा ने फिर कहा।

"कहा तो, तुमने कभी एक शब्द भी बोलने नहीं दिया पहले, और अब मेरी बातें करने की आदत नहीं रह गई है।"

"परन्तु तुम सुन भी नहीं रहे थे और यह बुरी आदत है।"

उसका चेहरा थोड़ा लाल हो गया, वह सोचने लगा कि उसके रहस्य का उसे पता लग गया है क्या; उसने बेचैनी से अपनी आँखें दूसरी ओर घुमा लीं। आज उसका भार उसे थका रहा था और वह नहीं चाहता था कि नोरा उसे स्पर्श करे।

"मेरा पैर सुन्न पड़ गया है," उसने कहा।

"मुझे बड़ा दुःख है," वह चीखी और उछलकर खड़ी हो गई।

वह बड़ी देर तक अपना पैर फटकाता रहा और इधर-उधर टहलता रहा। तब वह आग के सामने खड़ा हो गया जिससे वह अपनी पूर्व स्थिति न ग्रहण कर सके। वह बातें करती रही और वह सोचता रहा कि वह दस मिल्ड्रेडों के बराबर है; वह उसे बहुत अधिक आनन्द देती थी और बातें करने में अधिक खुशदिल थी; वह अधिक होशियार थी और स्वभाव अधिक अच्छा था। वह वीर, ईमानदार स्त्री थी और मिल्ड्रेड, उसने कड़वाहट के साथ सोचा, इनमें से किसी विशेषता के योग्य न थी। यदि उसमें तनिक भी बुद्धि होगी तो वह नोरा के पास ही रहेगा, वह उसे इतना सुखी बना देगी, जितना मिल्ड्रेड के साथ वह कभी न हो सकेगा: आखिर वह उसे प्यार करती थी और मिल्ड्रेड उसकी सहायता के लिये केवल आभारी थी। पर सब कुछ कहे जाने पर भी सबसे आवश्यक चीज़ थी प्यार करना, न कि प्यार किया जाना; और अपनी सम्पूर्ण आत्मा सहित वह मिल्ड्रेड को चाहता था। वह नोरा के साथ दोपहर के बाद का सारा समय बिताने की अपेक्षा मिल्ड्रेड के साथ दस मिनट बिताना ज्यादा पसन्द करेगा, नोरा के सम्पूर्ण समर्पण से अधिक मूल्यवान उसके लिये मिल्ड्रेड के ठंडे होठों का एक चुम्बन था।

वह हृदयहीन, चरित्रभ्रष्टा और अशिष्ट थी, मूर्ख और लोभी थी। पर फ़िलिप को परवाह न थी, वह उसे प्यार करता था। वह एक के साथ की प्रसन्नता की तुलना में दूसरे के साथ की पीड़ा चाहेगा।

अब वह जाने के लिये उठा, नोरा ने साधारण ढंग से कहा:

"मैं कल तुम्हें देख पाऊँगी, है न?"

"हाँ," उसने उत्तर दिया।

उसे मालूम था कि वह नहीं आ पायेगा, क्योंकि वह मिल्ड्रेड को मकान बदलने में सहायता करने जा रहा था, पर उसमें यह कहने का साहस न था। उसने निश्चय किया कि वह उसे एक तार भेज देगा। मिल्ड्रेड ने कमरे सुबह देख लिये और वह सन्तुष्ट हुई। लंच के बाद फिलिप उसके साथ हाईबरी गया। सामान लेकर लौटते समय जब वे

विक्टोरिया स्ट्रीट से गुजर रहे थे तो फ़िलिप कैब में पीछे टिककर बैठ गया, जिससे नोरा अगर उधर से निकले तो उसे न देख सके। उसे तार देने का अवसर न मिला था और वाक्साल ब्रिज रोड के डाकखाने से वह ऐसा कर नहीं सकता था, क्योंकि वह सोचने लगती कि उस बस्ती में वह क्या कर रहा था; और अगर वह वहाँ था, तो पास के ही 'स्कावयर' में नोरा के पास न जाने का कोई बहाना उसके पास न था। उसने निश्चय किया कि यह ज़्यादा अच्छा होगा कि वह उससे आध घंटे के लिये मिल आये।

"मुझे दुःख है कि मैं रुक कर तुम्हारे साथ चाय नहीं पी सकता," उसने दुःख पूर्ण स्वर में कहा, "एक गन्दी जगह मुझे जाना है। पर मैं आधे घण्टे में वापिस आ जाऊँगा।"

वह सोच रहा था कि अगर वह उससे पूछेगी कि वह कहाँ जा रहा है तो वह क्या कहेगा, पर मिल्ड्रेड ने कोई आतुरता नहीं दिखाई। कमरे लेते समय उसने दो आदमियों के लिये डिनर का आर्डर दे दिया था और उसके साथ शान्ति पूर्वक शाम बिताने का इरादा किया था। वह लौटने की इतनी जल्दी में था कि वॉक्साल ब्रिज रोड़ पर उसने ट्राम पकड़ ली। वह सोच रहा था कि वह फौरन नोरा को बता देगा कि कुछ मिनटों से अधिक रुकना उसके लिये संभव न होगा।

"बस, मैं सिर्फ तुम्हारा हाल-चाल पूछने चला आया हूँ," नोरा के कमरे में पहुँचते ही उसने कहा, "आज मैं बहुत अधिक व्यस्त हूँ।"

"क्यों, क्या बात है ?"

उसे क्रोध लग आया कि नोरा उसे झूठ बोलने को बाध्य करती है और उसे मालूम होगया कि उसने यह उत्तर देते समय कि अस्पताल में एक प्रदर्शन था, उसका चेहरा लाल हो गया था। उसे लगा वह उसका विश्वास नहीं कर रही है और इससे उसे और चिढ़ लगी।

"ओह, अच्छा, उसमें कोई बात नहीं।" उसने कहा "कल तो अपना समय मेरे साथ बिताओगे ही।"

उसने कुछ न समझकर उसकी ओर देखा। कल इतवार था और वह मिल्ड्रेड के साथ पूरा दिन व्यतीत करने की आशा कर रहा था। उसने स्वयं से कहा कि ऐसा उसे परस्पर सौजन्य के नाते भी करना ही चाहिये; एक अजनबी मकान में वह उसे अकेला छोड़ नहीं सकता था।

"मुझे बड़ा दुःख है। कल मुझे दूसरी जगह जाना है।"

वह समझ गया कि यह ऐसे झगड़े का सूत्रपात है जिसे न होने देने के लिये वह कुछ भी करने को तैयार था। नोरा के कपोलों का रंग और चमक उठा।

"पर मैंने गॉर्डन-दम्पत्ति को लंच पर बुलाया है"—वे एक अभिनेता और उसकी पत्नी थे जो सूबे का दौरा कर रहे थे और इतवार के लिये लन्दन में थे—"मैंने एक हफ़्ते पहले तुम्हें बताया था।"

"मुझे बहुत दुःख है, मैं भूल गया।" वह हिचकिचाया। "मुझे भय है, मैं शायद नहीं आ पाऊँगा। किसी और को तुम नहीं बुला सकतीं ?"

"तब कल तुम क्या कर रहे हो ?"

"मैं चाहता हूँ तुम मुझ से सवाल-जवाब मत करो।"

"तुम मुझे बताना नहीं चाहते ?"

"तुम्हें बताने में मुझे कोई एतराज नहीं है, पर किसी को अपनी हर बात के बारे में जबर्दस्ती बताने में चिढ़ लगती है।"

नोरा सहसा बदल गई। आत्म-संमय के एक प्रयास से उसने अपने स्वभाव पर विजय पा ली और उसके पास जाकर उसका हाथ पकड़ लिया।

"कल मुझे निराश मत करो, फिलिप, मैं कितने दिनों से यह दिन तुम्हारे साथ बिताने की आशा में हूँ। गॉर्डन-दम्पत्ति तुमसे मिलना चाहते हैं और हमारा समय कितनी अच्छी तरह बीतेगा।"

"संभव होता तो मैं जरुर आता।"

"मैं तुम्हें बहुत दुःख नहीं देती, या देती हूँ ? मैं तुमसे ऐसा काम करने को कभी नहीं कहती जिसमें तुम्हें परेशानी हो। क्या तुम किसी

तरह अपना कल का प्रोग्राम रद्द नहीं कर सकते—बस इस बार ?"

"मुझे दुःख है, मैं नहीं समझ पाता कैसे ऐसा हो सकता है," उसने मौन भाव से क्रुद्ध होते हुए कहा।

"मुझे बताओ वह क्या है ?" नोरा ने फुलसाते हुए कहा।

उसे कोई बहाना बनाने का समय मिल गया था।

"ग्रिफिथ्स की दो बहनें सप्ताहान्त के लिये आई हैं और हम उन्हें घुमाने ले जा रहे हैं।"

"बस ?" उसने खुशी से कहा, "ग्रिफिथ्स इतनी आसानी से दूसरा आदमी पा जायेगा।"

काश, वह कोई और जरुरी काम के बारे में सोच पाया होता। यह बड़ा भद्दा झूठ था।

"नहीं, मुझे बहुत दुःख है, मैं नहीं आ सकता—मैंने वादा किया है और मेरा इरादा उसे पूरा न करने का है।"

"पर तुमने मुझ से भी तो वादा किया था। निश्चय ही मैं पहले आती हूँ।"

"मैं चाहता हूँ कि तुम जिद न करो," उसने कहा।

वह उबल उठी।

"तुम नहीं आना चाहते इसलिये नहीं आओगे। मेरी समझ में नहीं आता इधर कुछ दिनों से तुम क्या कर रहे हो, तुम पहले जैसे नहीं रहे हो।"

फिलिप ने अपनी घड़ी की ओर देखा।

"मुझे भय है, अब मैं जाऊँगा," उसने कहा।

"तुम कल नहीं आओगे ?"

"नहीं।"

"ऐसी दशा में तुम्हें फिर कभी आने का कष्ट करने की जरुरत नहीं," वह हमेशा के लिये नाराज होती हुई चीखी।

"जैसी तुम्हारी मरजी," फिलिप ने कहा।

"अब मुझे और अधिक तुम्हें नहीं रोकना है," नोरा ने व्यंग-आत्मक स्वर में कहा।

उसने अपने कंधे उचकाये और वह बाहर चला गया। उसे संतोष था कि बात उससे ज्यादा नहीं बिगड़ी थी। आँसू नहीं बहाये गये थे। चलते-चलते उसने स्वयं को इस व्यापार से इतनी आसानी से अलग हो जाने के लिये बधाई दी। विक्टोरिया-स्ट्रीट में जाकर उसने मिल्ड्रेड के लिये कुछ फूल खरीदे।

फिलिप और मिल्ड्रेड का छोटा सा डिनर बड़ा सफल रहा।

जब वे खा चुके, फिलिप ने दो आराम कुर्सियां आग के सामने घसीट लीं और वे बैठ गये। वह आराम से अपना पाइप पीने लगा। उसे लगा कि वह बड़ा खुश और उदार है।

"कल तुम क्या करना चाहोगी ?" उसने पूछा।

"ओह, मैं टल्सहिल जा रही हूँ। तुम्हें दूकान वाली मैनेजर की याद है, उनकी अब शादी हो गई है और उसने मुझसे कहा है कि एक दिन मैं उसके साथ बिताऊँ। अवश्य ही उसका विचार है कि मेरी भी शादी हो चुकी है।"

फिलिप का दिल बैठ गया।

"पर मैंने एक निमन्त्रण इसलिये अस्वीकार कर दिया कि इतवार मैं तुम्हारे साथ बिता सकूँ।"

उसका ख्याल था कि अगर वह उसे प्यार करती होगी तो कहेगी कि ऐसी दशा में वह नहीं जायेगी। उसे अच्छी तरह मालूम था कि नोरा कभी न हिचकिचाती।

"वैसा करके बड़ी बेवकूफी की तुमने मैंने तीन हफ़्ते पहले ही वादा कर लिया था।"

"पर तुम अकेली कैसे जा सकती हो ?"

फिलिप चुप हो गया, और कड़ुवी भावनाएँ उसके दिल को सताने लगीं। मिल्ड्रेड ने उसे आँखों की कोरों से देखा।

"मेरी थोड़ी खुशी में तुम्हें ऐतराज नहीं है न, फिलिप ? देखो न, न मालूम कितने दिनों के लिये यह मेरा आखरी बार कहीं जाना होगा। और मैं वादा कर चुकी हूँ।"

फिलिप उसका हाथ पकड़ कर मुस्कराया।

"नहीं, डार्लिंग, मैं चाहता हूँ कि अपना समय खूब अच्छी तरह व्यतीत करो। मैं इतना ही चाहता हूँ कि तुम खुश रहो।"

सोफा पर, नीले कागज से बँधी एक पतली किताब, खुली, उलटी रक्खी हुई थी और फिलिप ने उसे यों ही उठा लिया। वह एक दो पेनी वाला लघु उपन्यास था और उसका लेखक कर्टने पैजेट था इसी नाम से नोरा लिखती थी।

"मैं उसकी किताबें पसन्द करती हूँ," मिल्ड्रेड ने कहा, "मैं सारी किताबें पढ़ चुकी हूँ, वे बड़ी सभ्य हैं।"

उसे याद आया नोरा ने अपने बारे में क्या कहा था :

"रसोई घर की नौकरानियों में मैं बड़ी प्रसिद्ध हूँ। वे मुझे बड़ी शरीफ़ समझते हैं।"

: १५ :

ग्रिफ़िथ्स द्वारा विश्वास किये जाने पर फ़िलिप ने, बदले में, अपनी उलझी हुई आसक्ति की कहानी सविस्तार सुनाई और सोमवार की सुबह, जब वे ड्रेसिंग गाउन पहने हुए आग के सामने बैठे थे और सिगरेट पी रहे थे, उसने पिछले दिन का दृश्य भी उसे बता दिया। ग्रिफिथ्स ने बधाई दी कि वह अपनी कठिनाइयों से इतनी आसानी से मुक्ति पा गया।

फिलिप को लगा कि वह अपनी व्यवहार-कुशलता पर अपनी पीठ थपथपाये। हर हालत में उसे बड़ी शान्ति मिली थी। उसे टल्सहिल पर आनन्द का उपभोग करती हुई मिल्ड्रेड की याद आई और उसने वास्तविक सन्तोष पाया, क्योंकि वह खुश थी। उसकी ओर से यह एक

आत्मत्याग मय काम था कि वह मिल्ड्रेड की खुशी का बुरा नहीं मानता था, चाहे उसकी कीमत उसकी अपनी निराशा ही क्यों न रही हो और इससे उसके हृदय को एक आरामदेह रोशनी ने भर दिया।

परन्तु सोमवार की सुबह अपनी मेज पर नोरा का एक खत रक्खा मिला। उसने लिखा था।

"प्रिय,

मुझे दुःख है शनिवार को मैं नाराज होगई। मुझे क्षमा कर दो और दोहपर के बाद हमेशा की तरह चाय पीने आओ। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।

तुम्हारी नोरा।"

उसका दिल बैठ गया और उसकी समझ में न आया वह क्या करे। वह खत ग्रिफिथ्स के पास ले गया और उसे दिखाया।

ग्रिफिथ्स ने कहा, "देखो, एक ही काम है जो तुम कर सकते हो। उसे लिखो और बल दो कि अब सारी बातें खत्म हो गई हैं। इस तरह लिखो कि उसमें कोई संशय न रह जावे। इससे उसे कष्ट होगा, पर तुम्हारे निर्दयतापूर्वक ऐसा करने से उसे कम कष्ट होगा, वरन् इसके कि तुम हिचकिचाते हुए वह सब करो।"

फिलिप बैठ गया और उसने निम्न पत्र लिखा।

"प्रिय नोरा,

मुझे दुःख है कि मेरे कारण तुम दुःखी हुईं, पर मैं सोचता हूँ कि अच्छा यही होगा कि अब हम बातों को वहीं रहने दें जहां वे शनिवार को पहुँची थीं। मैं नहीं समझता कि जब वे बातें खुशनुमा नहीं रही हैं, तो उन्हें और आगे घसीटने में क्या लाभ है। तुमने मुझसे जाने को कहा और मैं चला गया। मेरा वापस आने का कोई इरादा नहीं है। गुडबाई।

फिलिप कैरी।

उसने खत ग्रिफिथ्स को दिखाया और पूछा कि वह क्या सोचता

है ग्रिफिथ्स ने उसे पढ़ा और चमकती आँखों से फिलिप की ओर देखा; जो उसे महसूस हुआ था वह उसने नहीं कहा।

"मेरा खयाल है, यह पत्र सब ठीक कर देगा" उसने कहा।

बाहर जाकर फ़िलिप ने उसे डाक में छोड़ दिया। सुबह उसने बड़ी बेचैनी से गुजारी क्योंकि वह अपना पत्र मिलने पर नोरा को पहुंचाने वाले दु:ख की कल्पना बड़े विस्तार से कर रहा था। नोरा के आँसुओं के ख्याल से वह अपने को और पीड़ित कर रहा था। पर साथ ही उसे आराम भी मिला था। काल्पनिक दु:ख से दिखलाई पड़ने वाला दु:ख बर्दाश्त करने में अधिक आसान था और अब मिल्ड्रेड को पूर्णतया प्यार करने के लिये वह स्वतन्त्र था। दोपहर के बाद जब अस्पताल में दिन भर का काम खत्म हो जायेगा, उसके पास जाने के ख्याल से उसका दिल उछल उठा।

जब वह अपने को व्यवस्थित करने कमरों में गया, जैसे ही दरवाजे में उसने चाबी लगाई, उसने अपने पीछे एक आवाज सुनी।

"मैं अन्दर आ सकती हूं? मैं आध घंटे से तुम्हारा इन्तजार कर रही हूं।"

वह नोरा थी। उसे लगा, वह पोर-पोर में शर्मा उठा है। वह खुशी से बोल रही थी। उसकी आवाज में क्रोध का कोई चिन्ह न था और न कोई इंगित था कि उसके बीच किसी प्रकार की आशा है। फ़िलिप को लगा वह उसकी परवाह करता है। उसे बहुत भय महसूस हो रहा था, पर बड़ी कोशिश करने पर मुस्कराया।

"हाँ, आओ," उसने कहा।

उसने दरवाजा खोला और नोरा ने बैठने के कमरे में उसके आगे-आगे प्रवेश किया। वह थोड़ा घबराया हुआ था और साहस एकत्रित करने के लिये, उसने एक सिगरेट नोरा को दी और एक खुद जला ली। नोरा ने चमकती आँखों से देखा।

"तुमने इतना भयानक खत क्यों लिखा, शैतान कहीं के? अगर मैंने

उसे गंभीरतापूर्वक लिया होता, तो मैं कितनी दुःखी हो जाती।"

"मैंने उसे गंभीरतापूर्वक ही लिखा था," उसने गंभीरता से उत्तर दिया।

जिस कुर्सी पर वह बैठी थी, उससे उठ खड़ी हुई और आवेग से वह उसकी ओर बढ़ी; उसके हाथ फैले हुए थे।

"हमें फिर दोस्त हो जाना चाहिये, फ़िलिप ! मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हारे अभिमान को धक्का पहुंचाया।"

अपना हाथ पकड़ने से वह उसे रोक न सका, पर वह उसकी ओर देख न सका।

"मुझे भय है कि अब बड़ी देर हो गई है," उसने कहा।

वह फर्श पर उसके बगल में बैठ गई, और उसके घुटनों से लिपट गई।

फ़िलिप, बदमाशी मत करो। मुझे जल्दी गुस्सा आ जाता है और मैं समझ सकती हूँ कि मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है, पर उस एक बात पर ही मान किये बैठे रहना मूर्खता है। हम दोनों को ही दुःखी बनाने से क्या लाभ। हमारी मित्रता बड़ी अच्छी रही है।" उसने अपनी अंगुलियां धीरे-धीरे उसके हाथ पर फिराईं। "मैं तुम्हें प्यार करती हूँ फ़िलिप।"

वह उठ खड़ा हुआ और अपने को उससे अलग करके कमरे के दूसरे भाग में चला गया।

"मुझे बहुत दुःख है, मैं कुछ नहीं कर सकता। अब सब खत्म हो चुका है।"

"तुम्हारा मतलब है अब तुम मुझे प्यार नहीं करते ?"

"मुझे भय है कि बात यही है।"

"तुम मुझे निकाल फेंकने का मौका ताक रहे थे और वह तुम्हें मिल गया।"

उसने उत्तर नहीं दिया। वह धीरे-धीरे अपना मुँह छिपाने की कोशिश किये बिना रोने लगी और बड़े-बड़े आँसू एक के बाद एक

उसके गालों पर ढ़लकने लगे। वह सिसक नहीं रही थी। उसे देखकर बड़ा दर्द मालूम हो रहा था। फ़िलिप दूसरी ओर देखने लगा।

"तुम्हें दु:खी करने में मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। मैं तुम्हें प्यार नहीं कर सकता, इसमें मेरा तो दोष नहीं।"

नोरा ने उत्तर नहीं दिया। वह सिर्फ वहाँ बैठी रही, जैसे उसका मन भर आया हो और आंसू उसके गालों पर बहते रहे। यदि वह उसकी भर्त्सना करती तो उसके लिये बर्दाश्त करना आसान हो जाता। उसके मस्तिष्क के पिछले भाग में एक भावना थी कि एक असली लड़ाई, जिसमें दोनों एक दूसरे को कड़े शब्द कहें,उसके अपने व्यवहार पर एक हद तक न्यायोचित होगा। समय बीतता गया। आखिर वह उसके चुपचाप आँसू बहाने से डर गया; अपने सोने के कमरे में जाकर वह एक गिलास पानी ले आया। वह उसके ऊपर झुक गया।

'थोड़ा पानी नहीं पियोगी ? इससे तुम्हें आराम मिलेगा।"

नोरा ने अनिच्छा से गिलास मुँह लगा लिया और दो-तीन घूंट पानी पी लिया। तब एक फुसफुसाहट में उसने एक रूमाल मांगा। उसने अपनी आंखें सुखाईं।

"निःसंदेह मैं जानती थी कि तुम मुझे उतना प्यार नहीं करते जितना प्यार मैं करती हूँ," वह कराही।

"मुझे भय है, यह तो हमेशा ही होता है," उसने कहा," हमेशा एक प्यार करने वाला होता है और एक अपने को प्यार करने देता है।" उसे मिल्ड्रेड की याद आई और उसके हृदय को एक कड़वा दर्द चीर गया।

"मुझे बहुत दु:ख है, नोरा, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुमने जो कुछ किया है उसके लिये मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ।"

वह सोच रहा था, आखिर नोरा ने उसमें क्या देखा था।

"ओह हमेशा यही होता है।" उसने एक लम्बी सांस ली, 'अगर कोई चाहे कि पुरुष उसके साथ अच्छा व्यवहार करें तो उसे उनके साथ

कठोर व्यवहार करना चाहिए। यदि उनके साथ अच्छा बर्ताव किया गया तो वे दुःख देते हैं।"

वह फर्श से उठ खड़ी हुई और बोली, उसे जाना चाहिये। उसने फ़िलिप को देर तक, स्थिर दृष्टि से देखा। तब एक निश्वास खींचा।

"यह सब कुछ समझ में नहीं आता। इसका मतलब क्या है।"

फ़िलिप ने सहसा निश्चय कर लिया।

"मैं सोचता हूँ मेरा बता देना ही ज्यादा अच्छा होगा। मुझे बहुत बुरा मत समझो। मैं चाहता हूँ कि तुम समझ जाओ, मैं स्वयं पर अधिकार नहीं रख सकता। मिल्ड्रेड वापिस आ गई है।"

नोरा के चेहरे का रंग वापस लौट आया।

"तुमने मुझे फौरन ही क्यों नहीं बताया? अवश्य ही इतना अधिकार तो मेरा था ही।"

"मैं डर रहा था।"

नोरा ने शीशे में अपना प्रतिबिम्ब देखा और अपना हैट सीधा किया।

"मेरे लिये एक 'कैब' बुला दोगे?" उसने कहा," मैं सोचती हूँ मैं चल नहीं सकती।"

"अगर तुम्हें ऐतराज़ न हो तो मैं तुम्हारे साथ चला चलूँ।"

'कैब' से उतर कर वह अपने मकान पर चली गई।

किराया देकर फिलिप मिल्ड्रेड के कमरों की ओर चल पड़ा उसके हृदय में एक अजीब तरह का भारीपन था। उसे लग रहा था कि वह अपनी भर्त्सना करे। परन्तु क्यों? उसकी समझ में नहीं आया कि इसके अलावा वह क्या कर सकता था। एक फल की दूकान के सामने से गुजर रहा था तो उसे याद आया कि मिल्ड्रेड को अंगूर बहुत पसन्द हैं। उसका हरएक कहना याद करके वह अपना प्रेम प्रदर्शित कर रहा था।

अगले तीन महीनों तक फ़िलिप प्रतिदिन मिल्ड्रेड को देखने जाता रहा। वह अपनी किताबें साथ ले जाता और चाय पीने के बाद काम

करने लगता। जबकि मिल्ड्रेड उपन्यास पढ़ती हुई सोफे पर पड़ी रहती। कभी-कभी आँखें उठाकर एक मिनट तक वह उसे देखता रहता। उसके होंठों पर खुशी की एक मुस्कान आकर चली जाती।

मिल्ड्रेड के मन की गहराइयों में एक आशा थी कि बच्चा मृत पैदा होगा। वह इसका इशारा ही भर करती, अधिक नहीं पर फ़िलिप देखता कि विचार उपस्थित था। पहले तो उसे बड़ा धक्का लगा और तब स्वयं विचार करके, उसे मानना ही पड़ा कि सभी सम्बन्धित आदमियों की भलाई के लिये ऐसा होना ही अच्छा होगा।

"तुमने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है, फ़िलिप," उसने कहा।

"ओह, यह बेकार की बात।"

"तुम यह नहीं कह सकते कि बदले में मैंने तुम्हें कुछ नहीं दिया।"

"हे ईश्वर, मैं बदला नहीं चाहता। मैंने तुम्हारे लिये सब कुछ किया है, मैंने किया है क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम मेरी कर्जदार तो नहीं हो। अगर तुम मुझे प्यार नहीं करतीं, तो मैं नहीं चाहता कि मेरे लिये कुछ करो।"

उसके इस विचार पर—कि उसका शरीर एक चीज़ है जिसे किसी की सेवाओं की स्वीकृति में उदासीन भाव से वह देख सकती थी—फ़िलिप अधिक भयभीत हो उठा।

"पर मैं चाहती हूँ, फ़िलिप तुम मेरे लिये इतने अच्छे रहे हो।"

"तो थोड़ा इन्तजार करने में तकलीफ न होगी। जब तुम फिर ठीक हो जाओगी, हम लोग अपने 'हनीमून' पर चलेंगे।"

फिर उसके 'नर्सिंग' होम में जाने का समय आया, जहाँ उसे प्रसूति-गृह में रहना था। फ़िलिप अब उससे केवल दोपहर के बाद ही मिलने जाने लगा। मिल्ड्रेड ने अपनी कहानी बदल दी और अपने को एक सैनिक-पत्नी बताया जो अपनी रेजीमेंट में सम्मिलित होने के लिये भारतवर्ष चला गया था। फ़िलिप का अपने देवर की तरह उससे परिचित कराया गया था।"

मिल्ड्रेड ने एक लड़की को जन्म दिया और जब फ़िलिप को उसे देखने की आज्ञा मिली तो वह मिल्ड्रेड की बगल में लेटी हुई थी। मिल्ड्रेड बड़ी कमज़ोर हो गई थी, पर चैन से थी कि सब कुछ खत्म हो गया था । उसने बच्ची फ़िलिप को दिखाई और स्वयं भी उसे आश्चर्य से देखा।

बच्ची लाल झुर्रियोंदार और अजीब थी। उसे देखकर फ़िलिप मुस्कराया। उसकी समझ में नहीं आरहा था वह क्या कहे और उसे बड़ी परेशानी मालूम हो रही थी क्योंकि उस मकान की मालकिन उसके बगल में खड़ी थी और जिस तरह वह उसकी ओर देख रही थी उससे उसे लगा कि मिल्ड्रेड की उलझी हुई कहानी पर विश्वास न करके वह सोच रही थी कि फ़िलिप ही उसका पिता है।

"तुम इसका क्या नाम रक्खोगी ?" फ़िलिप ने पूछा।

"मेंडेलीन या सेसिलिता, अभी कुछ निश्चय नहीं किया।"

नर्स ने थोड़ी देर के लिये उन्हें अकेला छोड़ दिया और फ़िलिप ने झुककर मिल्ड्रेड का मुँह चूम लिया।

"मुझे बड़ी खुशी है, सब ठीक से हो गया डार्लिंग !"

उसने अपनी पतली बाँहें फ़िलिप के गले में पहना दीं।

"मेरे लिये तुम बड़े अच्छे हो, फ़िलिप प्रिय !"

"अब मुझे लगने लगा है कि तुम मेरी हो। मैंने तुम्हारी कितनी प्रतीक्षा की है, प्रिय !"

दरवाजे पर नर्स की आहट उन्हें मिली और फ़िलिप जल्दी से खड़ा हो गया। नर्स अन्दर आई। उसके होठों पर हल्की सी मुस्कराहट थी।

तीन सप्ताह बाद फ़िलिप ने मिल्ड्रेड और उसकी बच्ची को ब्राइटन विदा कर दिया। मिल्ड्रेड ने बड़ी जल्दी अपना स्वास्थ्य वापस पा लिया और वह हमेशा से ज्यादा अच्छी लगने लगी। वह एक बोर्डिंग हाउस में ठहरने वाली थी, वहाँ एमिल मिलर के साथ भी वह दो सप्ताहान्त व्यतीत कर चुकी थी। उसने लिख दिया था कि उसके पति

व्यापार के सिलसिले में जर्मनी चले गये हैं और वह अपनी बच्ची सहित आ रही है। मिल्ड्रेड का ब्राइटन में किसी ऐसी स्त्री का पता लगाने का इरादा था जो उसकी बच्ची का पालन-पोषण कर सके। जिस कठोरता से वह उससे जल्दी-से-जल्दी छुटकारा पा लेना चाहती थी उसे देखकर फ़िलिप चकित रह गया,पर उसने साधारण ज्ञान का परिचय देकर उसे समझाया कि उससे हिल जाने के पहले ही उसे कहीं और रखवा देना ज्यादा अच्छा होगा। फ़िलिप को आशा थी कि जब दो-तीन माह तक बच्ची उसके पास रह लेगी, तब उसका मातृत्व जाग उठेगा, और भरोसा था कि वह उसे बच्ची को अपने पास रखने पर राजी कर लेगा। पर वैसा नहीं हुआ। मिल्ड्रेड बच्ची के प्रति निर्दय न थी; वह उसके सारे आवश्यक काम करती थी; उसे कभी-कभी बड़ा मज़ा आता था और वह उसके बारे से बहुत सी बातें करने लगती थी; पर मन में वह उसके प्रति उदासीन थी। वह उसे अपना ही एक भाग नहीं समझती थी। वह कल्पना करती थी कि उसकी शक्ल अपने पिता से बहुत मिलती जुलती थी। वह हमेशा सोचा करती थी कि उसके बड़े हो जाने पर वह कैसे सारा प्रबन्ध करेगी और उसे पैदा करने की बेवकूफी पर वह अपने पर बहुत नाराज़ हो रही थी।

"जितना मैं आज जानती हूं उतना अगर तबजानती होती," वह कहती।

अधिक आत्म-विश्वास के साथ वह इम्तहान में बैठा। किसी परचे में उसे कठिनाई नहीं हुई। उसे मालूम हो गया कि उसने ठीक किया है। यद्यपि इम्तहान का दूसरा भाग वाइवा वोसी था और वह ज्यादा घबराया हुआ था, उसने ठीक-ठीक उत्तर दे ही दिये। परीक्षाफल निकला तो उसने विजय के गर्व से पूर्ण एक तार भेजा।

उसने उसे दूसरे दिन एक पत्र लिखा, पाँच पौंड का एक नोट भेजा और उसके आखिर में लिखा कि अगर वह बड़ी अच्छी है और उसे प्यार करती है और सप्ताहान्त में उसे देखना चाहती है तो वह आकर खुश होगा: पर अगर उसने कोई स्कीम बना रक्खी है तो उसे बतलाने

की जरूरत नहीं। आतुरता से वह उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। उसमें उसने लिखा कि अगर उसे पहले से मालूम होता तो वह अवश्य ही उसका प्रबंध कर लेती, पर शनिवार की रात में उसने 'म्यूज़िक हॉल में जाने का वादा कर लिया था; फिर उसने ठहरने पर बोर्डिंग हाउस के आदमी तरह-तरह की बातें करने लगेंगे। क्यों न वह रविवार की सुबह आकर दिन वहीं बिताये? वे मेट्रोपोल में लंच खायेंगे और बाद में वह उस शरीफ़ औरत के पास उसे ले चलेगी जो बच्ची को लेने को तैयार थी।

रविवार। दिन बड़ा अच्छा था उसने उसे धन्यवाद दिया। ज्यों-ज्यों ट्रेन ब्राइटन के समीप पहुंचती गई, धूप खिड़की से होकर उसके डिब्बे में आती रही। मिल्ड्रेड प्लेटफार्म पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

वह अपना नया हैट पहने बड़ी अच्छी मालूम पड़ रही थी। एक बड़ा काला तिनकों का हैट, जिस पर अनेक सस्ते फूल लगे थे और उसकी गर्दन के चारों ओर नकली 'स्कन्सडाइन'[1] की बो थी। वह अब भी बड़ी दुबली थी, चलते समय थोड़ा झुकती थी। वह हमेशा ऐसा ही करती थी। पर उसकी आँखें उतनी बड़ी नहीं दिखलाई पड़ रही थीं; और यद्यपि उसकी त्वचा में अभी भी कोई रंग न था, वह अभी मिट्टी की तरह नहीं मालूम पड़ती थी। वह समुद्र तक पैदल गये। फ़िलिप को याद आया कि महीनों से उसके साथ घूमने नहीं निकला। सहसा अपनी लंगड़ाहट का अनुभव करके, उसे छिपाने के लिये अकड़ कर चलने लगा।

"मुझे देखकर तुम खुश हो?" उसने पूछा, प्यार उसके दिल में पागल सा नाच रहा था।

"निश्चय ही मैं खुश हूँ। तुम्हें पूछने की जरूरत न थी।"

---

१. मुलायम ऊनी कपड़ा।

"हाँ ग्रिफ़िथ्स ने तुम्हें अपना प्रेम भेजा है।"

'कैसा ढीट है !"

उसने उसे ग्रिफ़िथ्स के बारे में बहुत कुछ बताया था। उसने उसे बताया था कि वह कितना शैतान था और जिन कहानियों को ग्रिफ़िथ्स ने गुप्त रूप से बताया था उनसे उसने अक्सर मिल्ड्रेड का मन बहलाया था। मिल्ड्रेड सुना करती थी, कभी-कभी घृणा का बहाना करते हुए, पर साधारणतः आतुरता से और फ़िलिप ने प्रशंसा करते हुए अपने मित्र के सौंदर्य और आकर्षण को बढ़ा कर बताया था।

फ़िलिप ने अब उसे बताया कि किस तरह जब वह बिल्कुल अजनबी थे, ग्रिफ़िथ्स ने एक बीमारी में उसकी सेवा की थी; और इस वर्णन में ग्रिफ़िथ्स के आत्म त्याग में कमी नहीं पहुंची।

"उसे न पसन्द करना संभव ही नहीं," फ़िलिप ने कहा।

"मैं सुन्दर पुरुषों को पसन्द नहीं करती," मिल्ड्रेड ने कहा, "वे मुझे बड़े अभिमानी मालूम पड़ते हैं।"

"वह तुम्हें जानना चाहता है। मैंने उसे तुम्हारे बारे बहुत कुछ बताया है।"

खाना खाने के बाद वे स्टेशन की ओर चलने लगे और फ़िलिप ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसने उसे बताया कि फ्रांस की यात्रा के लिये उसने क्या प्रबन्ध किया है। हफ़्ते के अन्त में मिल्ड्रेड को लन्दन आना था, पर उसने कहा कि अगले हफ़्ते के शनिवार को वह नहीं आ सकती। फिलिप ने पेरिस में एक काम पहले से ले लिया था। अब टिकट ख़रीदने की प्रतिक्षण वह आतुरता कर रहा था।

"तुम चलना तो चाहती हो, है न ?" उसने कहा।

"अवश्य," वह मुस्कराई।

"तुम नहीं जानतीं मैं कैसे इन्तज़ार कर रहा हूँ। मुझे नहीं मालूम मेरे अगले दिन कैसे कटेंगे। मुझे इतना डर लग रहा है कि किसी-न-किसी तरह ऐसा हो न पड़ेगा। कभी-कभी मैं पागल हो उठता हूं कि तुम्हें बता

नहीं पाता मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं और अब अन्त में, अन्त में…"

वह रुक गया। वे स्टेशन पर पहुँच गये, देर लग गई थी और गुडनाइट, कहने का समय फ़िलिप को मुश्किल से मिला। उसने मिल्ड्रेड को चूमा और जितनी तेज़ी से संभव था प्लेटफार्म की ओर दौड़ा। वह वहीं खड़ी रही जहाँ उसने उसे छोड़ा था। दौड़ते समय वह अजीब तरह से विकृत मालूम पड़ रहा था।

अगले शनिवार को मिल्ड्रेड वापस लौट आई। उस शाम फ़िलिप ने उसे अपने पास ही रक्खा। नाटक में उसने सीटें रिज़र्व करा लीं और खाने के साथ उन्होंने शैम्पेन पी। फ़िलिप ने उसके लिये पिमलिको में कमरा लिया था। जब वह थियेटर से कमरे की ओर कैब में चले, वह फ़िलिप से सट कर बैठ गई।

"मुझे विश्वास है कि तुम मुझसे मिलकर खुश हो," उसने कहा।

मिल्ड्रेट ने उत्तर नहीं दिया, पर धीरे से उसका हाथ दबाया। प्रेम-प्रदर्शन वह इतना कम करती थी कि फ़िलिप प्रफुल्लित हो उठा।

"कल अपने साथ खाने के लिये मैंने ग्रिफ़िथ्स को बुलाया है," उसने मिल्ड्रेड को बताया।

"ओह, मुझे खुशी है तुमने ऐसा किया। मैं उससे मिलना चाहती थी।"

फ़िलिप ने इन शब्दों को कहकर मिल्ड्रेड से विदा ली।

"अब सिर्फ छ: दिन और हैं।"

इतवार को उन्होंने रोमैनो की गैलरी में खाना खाने का प्रबन्ध किया था क्योंकि वहाँ खाना बहुत अच्छा होता था और अपनी असली कीमत से ज्यादा का मालूम पड़ता था। फ़िलिप और मिल्ड्रेड पहले पहुंचे और उन्हें कुछ समय तक ग्रिफ़िथ्स का इन्तज़ार करना पड़ा।

"वह समय की पाबन्दी न करने वाला शैतान है," फ़िलिप ने कहा, "वह शायद अपनी अनेक ज्वालाओं में से एक से प्यार कर रहा है।"

परन्तु तभी वह आ गया। वह सुन्दर व्यक्ति था, लम्बा और पतला; उसका सिर शरीर के ऊपर अच्छी तरह रक्खा था, उसके कारण उसमें विजय का अहंकार सा आ गया मालूम होता था, जो आकर्षक था; और उसके घुंघराले बाल, उसकी शोख, मित्रतासूचक नीली आँखें, उसका लाल मुँह सब बड़े सुन्दर थे। फ़िलिप ने देखा मिल्ड्रेड उसकी ओर प्रशंसा भरी दृष्टि से देख रही थी और उसे एक अजीब तरह का संतोष महसूस हुआ। फ़िलिप ने मुस्कान के साथ बधाई दी।

"मैंने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुना है," मिल्ड्रेड का हाथ पकड़ते हुए ग्रिफ़िथ्स ने कहा।

"उतना नहीं, जितना मैंने तुम्हारे बारे में सुना है," मिल्ड्रेड ने उत्तर दिया।

"न उतना बुरा ही," फ़िलिप ने कहा।

"क्या वह मेरा चरित्र काला करता रहा है?"

ग्रिफ़िथ्स हँसा और फ़िलिप ने देखा मिल्ड्रेड ध्यान से देख रही थी कि ग्रिफिथ्स के दाँत कितने सफ़ेद और सुव्यवस्थित थे और उसकी मुस्कान कितनी खुशनुमा थी।

"तुम लोगों को पुराने दोस्त ही महसूस करना चाहिये," फ़िलिप ने कहा, "मैंने तुम दोनों को एक दूसरे के बारे में इतना बताया है।"

ग्रिफिथ्स आखिर अपने फ़ाइनल इम्तहान में पास हो गया था और उतरी लन्दन के एक अस्पताल में हाउस-सर्जन नियुक्त किया गया था, इस कारण वह बड़े अच्छे 'मूड' में था। उसे अपनी ड्यूटी मई के प्रारंभ में शुरु करनी थी और उसी बीच में वह छुट्टियाँ मनाने घर जा रहा था। शहर में यह उसका आख़री हफ़्ता था और उसने निश्चय किया था इसमें वह जितना अधिक आनन्द लूट सकेगा, लूटेगा। वह खुशी से भरी बेकार की बातें करने लगा, जिनका फ़िलिप बड़ा प्रशंसक था क्योंकि वह स्वयं उसकी नकल न कर सकता था। उसके कथन में अधिक स्तर नहीं था, परन्तु उसकी सजीवता उसे आकर्षक

बना रही थी। उसके जीवन का उत्साह प्रवाहित होता था, जो उसके हर परिचित व्यक्ति को प्रमाणित करता था; वह शरीर की गर्मी की तरह ही संवेदनशील था। उतना खुश मिल्ड्रेड को फ़िलिप ने कभी न देखा था और उसे खुशी थी कि उसकी छोटी पार्टी सफल हुई। वह बहुत आनन्द उठा रही थी। वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। वह शरीफाना तौर पर चुपचाप रहने की आदत भूल गई, जो उसकी दूसरी आदत सी बन गई थी।

थोड़ी देर में ग्रिफिथ्स ने कहा:

"तुम्हें मिसेज़ मिलर कहना मेरे लिये बड़ा मुश्किल काम है। फ़िलिप तुम्हें मिल्ड्रेड के सिवा कुछ नहीं कहता।"

"अगर तुम भी उसे वही कहोगे तो वह तुम्हारी आँखें नहीं नोच लेगी," फ़िलिप हँसा।

"तब उसे हैरी कहना चाहिये।"

वह बातें करते रहे और फ़िलिप चुप बैठा रहा। वह सोच रहा था कि दूसरों को खुश देखकर कितना सुख होता है। कभी-कभी ग्रिफिथ्स उसे थोड़ा चिढ़ा देता, क्योंकि वह हमेशा इतना गंभीर रहता था।

वह जाने के लिये उठे, तो मिल्ड्रेड ने उससे गुडबाई, कहा और बोली :

"कल मैं चाय पीने फ़िलिप के कमरे में आ रही हूँ। संभव हो तो तुम भी आ जाओ।"

"बहुत अच्छा," वह मुस्कराया :

पिमलिको की ओर लौटते समय मिल्ड्रेड ने ग्रिफ़िथ्स के अलावा और बातें ही नहीं कीं। उसकी सुन्दरता, उसके अच्छी तरह सिले कपड़े, उसकी आवाज़, उसकी खुशदिली से वह बड़ी प्रभावित हुई थी।

मिल्ड्रेड ने अपना चेहरा ऊपर उठा दिया जिससे फ़िलिप उसे चूम सके, ऐसा वह बहुत कम करती थी।

उसने दरवाज़ा खोला और भीतर जाने के ठीक पहले वह फ़िलिप

की ओर घूमी ।

"हैरी से कह देना मैं उसे बहुत प्यार करने लगी हूँ," उसने कहा ।

"बहुत अच्छा," फ़िलिप हँसा, "गुडनाइट ।"

दूसरे दिन जब वह चाय पी रहे थे, ग्रिफ़िथ्स भीतर आया। वह एक आराम कुर्सी पर सुस्ती से बैठ गया । उसके चौड़े अंगों की धीमी हरकतों में अजीब सी व्याकुलता थी । फ़िलिप चुप रहा जब कि दूसरे बातें करते रहे, पर वह खुशी महसूस कर रहा था । वह उन दोनों की ही इतनी प्रशंसा करता था कि यह स्वाभाविक ही लगा कि वह भी परस्पर प्रशंसा करें। उसे परवाह नहीं थी कि ग्रिफ़िथ्स ने मिल्ड्रेड का ध्यान अपनी ओर खींच लिया था । शाम को तो वह अकेला उसके साथ रहेगा; उसका भाव कुछ-कुछ एक प्यार करने वाले पति की तरह था, जिसे अपनी पत्नी के प्रेम पर भरोसा हो, और मज़े से उसे किस अजनबी के साथ थोड़ा नखरे से बातें करते देख रहा हो । परन्तु साढ़े सात बजे उसने अपनी घड़ी देखी और कहा :

"मिल्ड्रेड हमारे डिनर के लिये जाने का समय हो गया है ।"

एक क्षण की निस्तब्धता रही, जैसे ग्रिफिथ्स कुछ सोच रहा हो।

"अच्छा, मैं अब चलूँगा," उसने आखिर कहा, मुझे नहीं मालूम था कि इतनी देर होगई है ।"

"आज रात तुम कुछ कर रहे हो ?" मिल्ड्रेड ने पूछा ।

"नहीं ।"

दूसरी निस्तब्धता रही । फ़िलिप को चिढ़ लगी ।

"तो हमारे साथ चलकर खाना क्यों नहीं खाते ?" मिल्ड्रेड ने कहा ।

ग्रिफ़िथ्स ने फ़िलिप की ओर देखा और उसे अपनी ओर उदासी से देखते हुए पाया ।

"मैंने कल रात भी तुम लोगों के साथ खाया था," वह हँसा, "मैं किसी के रास्ते में नहीं अड़ना चाहता ।"

"ओह, उससे कुछ नहीं होता," मिल्ड्रेड ने ज़ोर दिया, फ़िलिप, उससे, आने को कहे। "वह रास्ते में नहीं अड़ेगा। है न ?"

"अगर वह चलना चाहे तो अवश्य चले।"

"तब ठीक है," ग्रिफिथ्स ने कहा, "मैं ऊपर जाकर जरा कपड़े ठीक से पहन आऊँ।"

उसके कमरा छोड़ते ही फ़िलिप क्रोधित होकर मिल्ड्रेड की ओर घूम पड़ा।

"तुमने उससे साथ-साथ खाना खाने को क्यों कहा ?"

"मैं अपने को रोक नहीं सकी। उसने कहा था कि वह रात में कुछ नहीं कर रहा है। ऐसी दशा में उससे कुछ न कहना कैसा अजीब लगता।"

"ओह, क्या बेकार की बात है और तुमने उससे यह क्यों पूछा कि वह कुछ कर रहा है या नहीं ?"

मिल्ड्रेड के पतले होठ एक दूसरे पर जमकर बैठ गये।

"कभी-कभी मैं थोड़ा दिल बहलाना चाहती हूँ। तुम्हारे साथ हमेशा अकेले रहते-रहते मैं थक जाती हूँ।"

पास के एक इटालियन रेस्तराँ में उन्होंने, खाना खाया। फ़िलिप खुद और नाराज था, पर जल्दी ही वह समझ गया कि ग्रिफिथ्स की तुलना में वह अपने को नीचा दिखा रहा है और जबर्दस्ती उसने अपनी चिढ़ छिपा ली। अपने दिल को खरोंचने वाले दर्द को मिटाने के लिये उसने काफ़ी शराब पी और वह बातें करने लगा। मिल्ड्रेड, जैसे अपने कथन का उसे पछतावा हो रहा हो, अपने को उसके लिये खुशनुमा बनाने के लिये सब कुछ करने लगी। वह भद्रता और प्रेम से बातें कर रही थी। थोड़ी देर में फ़िलिप सोचने लगा कि ईर्षा की भावना के सामने से समर्पण करके बड़ी बेवकूफ़ी की है; खाना खाने के बाद जब एक म्यूज़िक हॉल की तरफ़ जाने के लिये एक हैन्सम में बैठे, तो मिल्ड्रेड ने, दोनों आदमियों के बीच में बैठकर अपना एक हाथ

फिलिप का अपनी इच्छा से पकड़ा दिया। फिलिप का क्रोध गायब हो गया। सहसा, न मालूम कैसे, उसे लगा, ग्रिफिथ्स मिल्ड्रेड का दूसरा हाथ पकड़े है। उसे फिर भयानक दर्द महसूस होने लगा, यह एक वास्तविक शारीरिक दर्द था और भयार्त्त होकर उसने अपने से पूछा, जो वह पहले ही पूछ सकता था, क्या मिल्ड्रेड और ग्रिफिथ्स एक दूसरे को प्यार करने लगे हैं। सन्देह, क्रोध, निराशा और दुःख के कोहरे के कारण यह थोड़ा भी नाटक देख न सका; पर उसने अपने को यह छिपाने पर जोर दिया कि वैसी कोई बात न थी : वह बातें करता रहा और हँसता रहा, तब अपने को पीड़ित करने की एक अजीब इच्छा उसे हो आई और वह उठ खड़ा हुआ। बहाना करते हुए कि बाहर जाकर वह कुछ पियेगा। ग्रिफिथ्स और मिल्ड्रेड कभी एक क्षण के लिये भी अकेले नहीं रहे थे। वह उन्हें अकेला छोड़ना चाहता था।

"मैं अभी आता हूँ," ग्रिफ़िक्स ने कहा, "मुझे प्यास लग रही है।"

"बेकार की बात ! यहीं रह कर तुम मिलेड्रड से बातें करो।"

फ़िलिप को नहीं मालूम था कि उसने यह क्यों कहा। वह अब उन्हें एक साथ बिठा रहा था जिससे उसकी पीड़ा असह्य हो जाये। वह 'बार' में नहीं गया, परन्तु ऊपर छज्जे पर गया, जहां से उन्हें देख सकता था, और स्वयं नहीं देखा जा सकता था। उन्होंने स्टेज की ओर देखना बन्द कर दिया था और अब वे एक दूसरे की आँखों में देखकर मुस्कराने लग गये थे। ग्रिफ़िथ्स अपनी हमेशा की तरह खुशी से धाराप्रवाह में बोल रहा था और मिल्ड्रेड उसके होठों से अटकी सी मालूम पड़ रही थी। फिलिप का सिर भयानक रूप से दर्द करने लगा। वह वहीं स्तब्ध खड़ा रह गया। वह समझ गया लौटकर वह उनके रास्ते में आयेगा। वे उसके बिना आनन्द ले रहे थे और वह पीड़ित हो रहा था, बहुत पीड़ित हो रहा था। समय बीतता गया और अब उनके पास फिर से जाने में उसे एक अजीब तरह की शर्म लगने लगी। उसे मालूम था कि वे उसके बारे में जरा भी नहीं सोच रहे थे और वह बड़ी कड़वाहट से सोच रहा

था कि उसने खाने और म्यूजिक-हाल की सीट के पैसे दिये थे। वे उसे कैसा बेवक़ूफ़ बना रहे थे! वह शर्म से गड़ गया। वह देख सकता था कि उसके बिना वे कितने खुश थे। उसे लगा कि वह उन्हें वहीं छोड़ कर घर चला जाये, पर वह अपना हैट और कोट नहीं लिये था और फिर अनेक बार समझाना पड़ेगा कि वह क्यों चला गया था। वह वापस लौट गया। मिल्ड्रेड की आंखों में चिढ़ की छाया उसे दिखी। जब उसने फ़िलिप को देखा और उसका दिल बैठ गया।

"तुम बड़ी देर बाहर रहे," ग्रिफ़िथ्स ने उसके स्वागत में मुस्कराते हुए कहा।

"मेरे कुछ परिचित मिल गये थे। उन्हीं से बातें कर रहा था। जल्दी ही भाग नहीं सका। पर सोच रहा था कि तुम दोनों साथ-साथ ठीक ही रहोगे।"

"मैं तो पूरी तरह आनन्द ले रहा था," ग्रिफ़िथ्स ने कहा, "मिल्ड्रेड की बात मैं नहीं जानता।"

वह प्रसन्न आत्मिक तुष्टि से हंसी। उसकी गूंज में एक प्रकार की अशिष्ट ध्वनि थी। उसने फ़िलिप को डरा दिया। उसने कहा कि उन्हें अब चलना चाहिये।

"आओ," ग्रिफ़िथ्स ने कहा, "हम दोनों तुम्हें घर तक छोड़ आयेंगे।"

फ़िलिप को सन्देह हुआ कि यह प्रबन्ध मिल्ड्रेड ने सुझाया था, जिससे वह फ़िलिप के साथ अकेली न छूटे। 'कैब' में उसने न तो मिल्ड्रेड का हाथ अपने हाथ में लिया और न उसने दिया ही और इस समय उसे मालूम था कि वह ग्रिफ़िथ्स का हाथ पकड़े हुए थी।

"कैब को जाने मत दो," जब वे उस मकान में पहुंचे जहाँ मिलड्रेड रह रही थी, तो फ़िलिप ने कहा, "मैं इतना थक गया हूँ कि पैदल नहीं चल सकता।"

लौटते समय ग्रिफिथ्स खुशी से बातें करता रहा और लगा कि वह इस सत्य से असावधान था कि फ़िलिप एक-आध शब्द में उत्तर दे रहा था।

फ़िलिप को लगा, ग्रिफ़िथ्स को समझ जाना चाहिये कि कोई बात जरूर है। आखिर फ़िलिप की चुप्पी इतनी अर्थपूर्ण हो गई कि उसे जीत सकना असम्भव हो गया और ग्रिफिथ्स सहसा घबड़ाकर चुप हो गया। फ़िलिप कुछ कहना चाहता था, परन्तु वह इतना शर्मीला था कि मुश्किल से कोशिश कर पा रहा था और समय बीत रहा था और अवसर चला जा रहा था। सबसे अच्छा यही था कि फौरन ही सत्य का पता लगा लिया जाये। बल लगाकर उसने स्वयं को बोलने योग्य बनाया।

"क्या तुम मिल्ड्रेड को प्यार करते हो ?" उसने सहसा पूछा।

"मैं ?" ग्रिफ़िथ्स हंसा। "क्या इसी कारण आज शाम से तुम परेशान हो ? निस्संदेह, नहीं, मेरे प्यारे दोस्त।"

उसने अपनी बाँह से फ़िलिप की बाँह बाँधनी चाही। पर फ़िलिप अलग हट गया। उसे मालूम था ग्रिफिथ्स झूठ बोल रहा था। कोशिश करके भी वह ग्रिफिथ्स से न कह सका कि वह मिल्ड्रेड का हाथ पकड़े हुए था। सहसा उसे लगा, वह बड़ा कमजोर है और टूट गया है।

"तुम्हारे लिये यह कोई बात नहीं है," हैरी, उसने कहा, "तुम्हारे पास अनेक औरते हैं—उसे मुझसे मत छीनो। वह मेरी जिन्दगी है। मैं बड़ा दुःखी रहा हूँ।"

उसकी आवाज़ टूट गई और वह टूटी हुई हिचकी को रोक न सका। वह अपने पर बुरी तरह लज्जित था :

"मेरे प्यारे दोस्त, तुम्हें मालूम है, तुम्हारा दिल दुखाने वाली कोई बात मैं न करूँगा। मैं तुम्हें ऐसा करने के लिये बहुत ज्यादा प्यार करता हूं। मैं सिर्फ़ बेवकूफ बना रहा हूँ। अगर मुझे मालूम होता, तुम पर यह असर पड़ेगा तो मैं और सावधान रहता।"

"क्या यह सच है ?" फ़िलिप ने पूछा।

"मैं उसकी जरा भी परवाह नहीं करता। मैं तुम्हे वचन देता हूं।"

फ़िलिप के नासापुटों से सन्तोष की साँस निकली। 'कैब' उनके दरवाज़े पर रुक गई।

: १६ :

दूसरे दिन वह बड़े अच्छे 'मूड' में था। वह बहुत आतुर था कि अपने बहुत ज्यादा साथ से वह मिल्ड्रेड को उबाये नहीं और उसने ऐसा प्रबन्ध किया था वह उसे 'डिनर' के समय ही मिले।

मिल्ड्रेड ने गिफ़िथ्स के बारे में कुछ नहीं कहा और बड़ी देर में जब वे खाना खा रहे थे, फ़िलिप ने, कुछ शरारत से, क्योंकि उसके ऊपर अपनी शक्ति का उसे पूरा विश्वास था, उसने कहा :

"मुझे लगता है कल रात तुम हैरी के साथ काफ़ी अच्छा व्यवहार कर रही थीं।"

"मैं तुमसे बता चुकी थी मैं उसे प्यार करती हूँ," वह हँसी।

"परन्तु मुझे यह जानकर खुशी है कि वह तुम्हें प्यार नहीं करता।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"मैंने उससे पूछा था।"

वह फ़िलिप की ओर देखती हुई एक क्षण को हिचकिचाई और उसकी आँखों में एक अजीब रोशनी आ गई।

"क्या तुम उसका एक ख़त पढ़ोगे, जिसे मैंने आज सबेरे पाया था ?"

उसने फ़िलिप को एक लिफाफ़ा दिया और फ़िलिप ने ग्रिफ़िथ्स की स्पष्ट लिखावट पहचान ली। उसमें आठ पृष्ठ थे। वह अच्छी तरह लिखा गया था, स्पष्ट और आकर्षक; वह ऐसे आदमी का पत्र था जो औरतों को प्यार करने का आदि था। उसने मिल्ड्रेड को लिखा था कि वह उसे प्यार करता है, पहले ही क्षण जब उसने उसे देखा था तभी वह उसे प्यार करने लगा था; वह उसे प्यार नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसे मालूम था फ़िलिप उसे कितना चाहता है, पर वह अपने वश में न था। उसने उसकी खुशनुमा तारीफ़ भी की थी। अन्त में उसने 'लंच' पर अपने के लिये उसने उसे धन्यवाद दिया था और लिखा था कि वह उसे देख पाने को कितना आतुर था।

वह पढ़ता गया और उसके हृदय की धड़कन जैसे कम होती गई। पर उसने ग्राश्चर्य का कोई वाह्य इंगित न किया। उसने उसे शान्ति पूर्वक मिल्ड्रेड को वापस कर दिया।

"लंच में ग्रानन्द आया तुम्हें ?"

"हां" उसने ज़ोर देकर कहा।

उसे लगा उसके हाथ कांप रहे हैं। उसने उन्हें मेज़ के नीचे कर लिया।

मिल्ड्रेड ने पत्र हाथ में लेकर उसे फिर देखा।

"मैं ग्रपने वश में नहीं हूँ," उसने ऐसे स्वर में कहा जिसे उसने लापरवाह बनाने की कोशिश की थी, "मुझे नहीं मालूम मुझे क्या हो गया है ?"

"यदि तुम उसे प्यार करती हो, तब तुम्हारे वश की बात नहीं। जितनी ग्रच्छी तरह हो सकता है मैं बर्दाश्त करने की कोशिश करूँगा। तुम और मैं परस्पर बड़ी ग्रच्छी तरह रहते हैं ग्रौर मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार नहीं किया, या किया है ? मुझे हमेशा मालूम रहा है कि तुम मुझे प्यार नहीं करतीं, पर तुम मुझे पसन्द तो करती ही हो। जब हम पेरिस पहुँच जायेंगे तो तुम ग्रिफ़िथ्स के बारे में भूल जाओगी। यदि तुम उसे ग्रपने विचारों से बाहर रखने का निश्चय कर लो तो उतना मुश्किल नहीं मालूम होगा ग्रौर मैं इस योग्य हूँ कि तुम मेरे लिये कुछ करो।"

मिल्ड्रेड ने उत्तर नहीं दिया ग्रौर वे खाना खाते रहे। जब निस्तब्धता ग्रसह्य हो गई तो फ़िलिप इधर-उधर की बातें करने लगा। आख़ीर में मिल्ड्रेड ने उसके कथन के बीच में कहा :

"फ़िलिप, मुझे भय है मैं शनिवार को नहीं चल सकती। डाक्टर की राय है मुझे नहीं जाना चाहिये।"

उसे मालूम था यह सही नहीं है, पर उसने उत्तर दिया :

"तब कब चल सकोगी ?"

मिल्ड्रेड ने उसकी ग्रोर देखा, देखा कि चेहरा सफेद ग्रौर कठोर

हो गया है और वह उत्तेजित होकर दूसरी ओर देख रहा है। उस क्षण उसे फिलिप से थोड़ा भय लगा।

"मैं तुमसे साफ़-साफ़ बतादूँ कि मैंने अपना इरादा बदल दिया है। मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल नहीं चल सकती।"

"मैं सोच रहा था तुम यही कहना चाहती हो। अब इरादा बदलने के लिये बड़ी देर हो चुकी है। मैंने टिकट वगैरह सब ले लिये हैं।"

"तुमने कहा था अगर मैं चाहूँगी तभी तुम मुझे ले चलोगे, नहीं तो नहीं, और मैं नहीं चाहती।"

"मैंने अपना इरादा बदल दिया है। अब मैं और बेवकूफ़ नहीं बनना चाहता। तुम्हें चलना ही पड़ेगा।

"एक मित्र की तरह मैं तुम्हें बहुत पसन्द करती हूँ, फ़िलिप! पर मैं और कुछ सोचना सहन नहीं कर सकती। मैं इस तरह तुम्हें नहीं चाहती। नहीं चाह सकती, फ़िलिप!"

"एक हफ़्ते पहले तक तुम तैयार थीं।"

"तब दूसरी बात थी।"

"तब तुम ग्रिफ़िथ्स से नहीं मिली थीं।"

"अभी तुम्हीं ने कहा था, अगर मैं उसे प्यार करती हूँ तो मेरा वश नहीं है।"

मिल्ड्रेड के चेहरे पर उसके प्रति उदासीनता का भाव स्थिर हो गया और उसकी आँखें प्लेट पर स्थिर थीं। फ़िलिप क्रोध के कारण सफेद हो उठा। वह उसके चेहरे पर घूसा मारना बड़ा पसन्द करता और अपनी कल्पना में उसने देखा कि चोट खाकर वह कैसी दिखलाई पड़ेगी। मिल्ड्रेड ने शान्ति भंग की।

"हमारे साथ-साथ जाने से क्या लाभ? मैं हमेशा उसके बारे में सोचती रहूंगी और वह तुम्हें बहुत अच्छा नहीं लगेगा।"

"यह मेरा काम है।"

"वह सोचने लगी कि फ़िलिप के उत्तर का सम्पूर्ण अर्थ क्या था।

उसका चेहरा लाल हो गया।

"पर यह तो पशुता है।"

"इससे क्या ?"

"मैं सोचती थी तुम सचमुच शरीफ़ आदमी हो।"

"तुम गलती पर थीं।"

अपने उत्तर पर उसे मजा आया और वह हंसा।

"भगवान के लिये हंसो मत," वह चीखी, "मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकती, फ़िलिप ! मुझे बड़ा दुःख है। मैं जानती हूं मैंने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया, पर मैं जबर्दस्ती तो वैसा नहीं कर सकती।"

"क्या तुम भूल गईं कि जब तुम मुसीबत में थीं, मैंने तुम्हारे लिये सब कुछ किया ?"

"अगर तुम शरीफ आदमी हो तो यह सब मेरे मुंह पर बताने की क्या जरूरत ?"

"ओह, भगवान के लिये, चुप रहो। तुम्हारा क्या ख्याल है कि मैं शरीफ हूँ या नहीं, मैं इसकी क्या परवाह करता हूँ ? अगर मैं शरीफ होता तो तुम्हारी जैसी कमीनी कुतिया पर अपना समय बरबाद न करता। मुझे जरा भी परवाह नहीं कि तुम मुझे पसन्द करती हो या नहीं। मैं मूर्ख बनते-बनते परेशान हो गया हूं। या तो तुम शनिवार को मेरे साथ पेरिस चलो या फिर फल भोगो।"

मिल्ड्रेड के गाल क्रोध से लाल हो गये। जब उसने उत्तर दिया उसकी आवाज में एक कठोर धारणा थी, जिसे वह कोमलता के पीछे छिपाये रहा करती थी।

"मैंने तुम्हें कभी पसन्द नहीं किया, शुरू से ही नहीं, पर तुमने अपने को मुझ पर जबर्दस्ती लाद दिया। जब तुम मुझे चूमते थे, मैं हमेशा घृणा करती थी। अब चाहे मैं भूखी ही क्यों न मरती रहूँ, तुम्हें अपना शरीर न छूने दूंगी।"

फ़िलिप ने अपनी प्लेट में रक्खा खाना निगलने की कोशिश की, पर उसके गले की मांसपेशियों ने काम करने इन्कार कर दिया। उसने कुछ पिया और एक सिगरेट जला ली। एक घंटा बिना किसी के बोले बीत गया और आखिर फ़िलिप ने सोचा कि वेटर उनकी ओर अजीब दृष्टि से देखने लगा है। उसने बिल मंगाया।

"अब हम चलें ?" तब उसने कहा।

मिल्ड्रेड ने उत्तर नहीं दिया, पर अपना बैग और दस्ताने सम्हाले और कोट पहना।

"ग्रिफ़िथ्स से फिर कब मिलोगी ?"

"कल," मिल्ड्रेड ने उदासीनता से उत्तर दिया।

"अच्छा होगा कि तुम उससे सारी बातें कर डालो।"

मिल्ड्रेड ने यंत्र चलित-सी अपना बैग खोला और उसमें कागज का एक टुकड़ा देखा। उसे बाहर निकाला।

"यह इस पोशाक का बिल है," उसने कहा।

"तो ?"

"मैंने वादा किया था कि कल मैं पैसे दे दूंगी।"

"सचमुच ?"

"क्या इसका यह मतलब है कि कहकर भी तुम इसका दाम नहीं दोगे ?"

"बिल्कुल नहीं।"

"मैं हैरी से माँग लूंगी," उसने बहुत शर्माते हुए कहा।

"वह तुम्हारी सहायता करने में खुश होगा। इस समय सात पौंड मेरे उस पर उधार हैं और उसके पास पैसे नहीं थे, सो उसने अपना माइक्रोस्कोप पिछले हफ्ते गिरवीं रख दिया है।"

"यह सब कहकर मुझे डराने की जरूरत नहीं। मैं अपना जीवन यापन स्वयं कर सकती हूँ।"

"यह सबसे अच्छा काम है जो तुम कर सकती हो। अब मैं तुम्हें

एक फार्दिग भी नहीं देना चाहता।"

मिल्ड्रेड को शनिवार को दिये जाने वाले मकान के किराये और बच्ची की परवरिश के लिये रुपये देने की याद आई, पर उसने कुछ कहा नहीं। रेस्तरां उन्होंने छोड़ दिया और सड़क में आकर फ़िलिप ने उससे पूछा;

"क्या मैं तुम्हारे लिये एक 'कैब' बुला दूँ? मैं तो टहलता हुआ जाऊंगा।"

"मेरे पास पैसे नहीं हैं। आज दोपहर के बाद मुझे एक बिल अदा करना पड़ा।"

"टहलने में तुम्हें तकलीफ़ नहीं होगी। अगर कल तुम मुझ से मिलना चाहो, तो मैं आज के समय मिल सकता हूँ।"

अपना हैट उठा कर वह चल पड़ा। एक क्षण बाद घूम कर उसने देखा कि वह असहाय सी हो खड़ी ट्रैफिक को देख रही थी, जहाँ उसने उसे छोड़ा था। वापस लौट कर हंसते हुए उसने एक सिक्का उसके हाथ में दबा दिया।

"घर पहुंचने के लिये ये दो बाब काफी हैं।"

उसके कुछ बोलने से पहले वह जल्दी से चला गया।

: १७ :

दूसरे दिन, दोपहर के बाद, अपने कमरे में बैठा फ़िलिप सोच रहा था कि मिल्ड्रेड आयेगी या नहीं। रात में वह ठीक से सो नहीं सका था। मेडिकल स्कूल के क्लब में उसने एक के बाद दूसरा अखबार पढ़ते हुए सुबह गुजारी थी। दिन भर उसने ग्रिफिथ्स को नहीं देखा था। उसे स्पष्ट मालूम पड़ रहा था कि ग्रिफिथ्स उससे दूर रहने की चेष्टा कर रहा है। सहसा उसके दरवाजे पर एक हल्की दस्तक हुई। फिलिप उछलकर खड़ा हो गया और उसने द्वार खोला। मिल्ड्रेड देहली पर खड़ी थी। वह हिली नहीं।

"अन्दर आओ," फ़िलिप ने कहा।

उसके पीछे उसने द्वार बन्द कर लिया। वह बैठ गई। बात शुरू करने में उसे हिचकिचाहट हो रही थी।

वह उसकी ओर देखकर हल्के से मुस्कराई। फ़िलिप को कायरतापूर्ण, कृपापात्र बनने वाली किसी पिलिया की याद आई, जिसे शैतानी करने के लिये पीटा गया हो और वह अपने मालिक से सुलह करना चाहती हो।

"मैंने हैरी के साथ लंच खाया," उसने कहा।

"सचमुच ?"

"फ़िलिप अगर तुम चाहते हो कि शनिवार को मैं तुम्हारे साथ चलूं, तो मैं चलूँगी।"

फ़िलिप के हृदय में विजय की एक चपल सिहरन दौड़ गई, पर यह भाव केवल एक क्षण तक ही रह पाया। उसे सन्देह हुआ।

"धन के कारण ?" उसने पूछा।

"किसी हद तक।"

"हैरी ने भी अपने बारे में वही कहा जो तुमने कहा था कि वह स्वभावतः चंचल है, वह तुम्हारी तरह नहीं है और तुम्हें खोकर मैं बेवकूफ़ी करूँगी। वह अधिक दिन तक साथ नहीं देगा, पर तुम दोगे, यह वह खुद कहने लगा।"

"तुम मेरे साथ चलना चाहती हो ?" फ़िलिप ने पूछा।

"मुझे एतराज़ नहीं।"

फ़िलिप ने उसे देखा और उसके होठों के कोनों पर एक दुःख का भाव आया और वे नीचे झुक गये। वह वास्तव में विजय पा गया था और अब वह अपने मन की कर सकेगा। अपने मानमर्दन पर वह उपहास की हँसी हँसा। मिल्ड्रेड ने फौरन उसकी ओर देखा, पर कहा कुछ नहीं।

"अपनी सम्पूर्ण आत्मा से मैं तुम्हारे साथ जाने की बात सोचता

रहा हूँ, और मैंने सोचा, आखिर में, इतने सब दुःख के बाद, मैं खुश होने जा रहा था....''

वह जो कुछ कहना चाहता था, कह नहीं पाया और तब सहसा, अप्रत्याशित रूप से मिल्ड्रेड फूट-फूटकर रो पड़ी। वह उसी कुर्सी पर बैठी थी, जिस पर बैठकर नोरा रोई थी।

हिचकियों से उसका पतला शरीर हिल रहा था। फ़िलिप ने कभी किसी औरत को इस तरह रोते नहीं देखा था। यह बहुत दर्दनाक था, और उसका हृदय फटा जा रहा था। बिना जाने हुए वह क्या कर रहा है, वह उसके पास गया और अपने हाथ उसने मिल्ड्रेड के चारों ओर डाल दिये; मिल्ड्रेड ने विरोध नहीं किया, पर अपनी पीड़ा के कारण उसने स्वयं को फ़िलिप की सान्त्वना को सौंप दिया। वह उसके कानों में शान्ति प्रदान करने वाले शब्द गुनगुनाने लगा। वह नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा है, वह उस पर झुक गया और बार-बार उसे चूमने लगा।

''क्या तुम बहुत दुःखी हो ?'' उसने आखिर में कहा।

''मैं चाहती हूँ कि मैं मर गई होती,'' पर कराही, ''मैं चाहती हूँ बच्चे के पैदा होते समय मैं मर गई होती।''

फिलिप ने उसका सिर अधिक आराम से कुर्सी पर टिका दिया और तब जाकर, कुर्सी पर बैठकर उसे देखने लगा।

''मैं तुम्हें दुःखी नहीं करना चाहता। अगर तुम नहीं चाहतीं तो मेरे साथ जाने की जरूरत नहीं। मैं तुम्हें रुपये फिर भी दे दूँगा।''

मिल्ड्रेड ने अपना सिर नकारात्मक ढंग से हिलाया।

''नहीं। मैं कह चुकी हूँ मैं आऊँगी और मैं जरूर चलूँगी।''

''फायदा ही क्या है, अगर तुम उसके प्यार में मर रही हो ?''

''हाँ, यही बात है। मैं उसके प्यार में मर रही हूँ। मैं जानती हूँ, और वह भी जानता है, यह स्थायी नहीं है, पर अभी....''

रुककर उसने आँखें बन्द कर लीं, जैसे वह बेहोश होने जा रही हो।

एक अजीब विचार फ़िलिप के मस्तिष्क में आया और उसके आने के साथ ही वह बोला, सोचने के लिये भी नहीं रुका।

"उसके साथ क्यों नहीं चली जातीं ?"

"कैसे जा सकती हूँ ? तुम्हें मालूम है हमारे पास धन नहीं है।"

"मैं तुम्हें धन दूँगा।"

"तुम ?"

वह सीधी बैठ गई और उसने फ़िलिप को देखा। उसकी आँखें चमकने लगीं और रंग फिर उसके गालों पर लौट आया।

"शायद सबसे अच्छी चीज़ यही होगी, कि इसे भी ख़त्म कर लो। तब तुम मेरे पास लौट आओगी।"

आँखें फाड़कर वह उसे घूरने लगी।

"ओह, हम कैसे जा सकते हैं, तुम्हारे धन पर ? हैरी ऐसा सोचेगा भी नहीं।"

"वह मान जायेगा, अगर तुम उससे कहो और ज़िद करो।"

उसके इन्कार करने पर वह और ज़िद करता गया और तब भी वह हृदय से चाहता था कि मिल्ड्रेड बल लगाकर इन्कार कर दे।

"मैं तुम्हें पाँच पौंड दे दूँगा और तुम शनिवार से सोमवार तक के लिये जा सकती हो। तुम आसानी से ऐसा कर सकती हो। सोमवार को वह उत्तरी लंदन में अपनी नियुक्ति होने तक के लिये घर चला जायेगा।"

"ओह, फ़िलिप, क्या सचमुच तुम्हारा यह मतलब है ?" वह अपने हाथ जोड़ती हुई चीखी, "अगर तुम हमें चला जाने दो—बाद में मैं तुम्हें बहुत प्यार करूँगी, मैं तुम्हारे लिये कुछ भी करूँगी। मुझे विश्वास है अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं इससे छुटकारा पा जाऊँगी। क्या तुम सचमुच हम लोगों को पैसे दे दोगे ?"

"हाँ," उसने कहा।

अब वह बिल्कुल बदल गई। हँसने लगी। वह देख सकता था कि

वह बहुत खुश थी। उठकर वह फिलिप की बगल में झुक गई और उसका हाथ पकड़ लिया।

"तुम बहुत बड़े सहारे हो, फिलिप। अब तक मैंने जितने आदमियों को जाना है उनमें से तुम सबसे अच्छे आदमी हो। बाद में तुम मुझसे नाराज़ नहीं होओगे ?"

फिलिप ने मुस्कराते हुए नकारात्मक ढंग से सिर हिलाया, पर हृदय में बड़ी पीड़ा थी !

"क्या मैं अभी जाकर हैरी को बता दूँ ? क्या मैं उससे कह दूँ कि तुम्हें एतराज़ नहीं है। अगर तुम यह नहीं करोगे तो वह राजी नहीं होगा। ओह, तुम नहीं जानते मैं उसे कितना प्यार करती हूँ और बाद में तुम्हारी पसन्द की कोई भी चीज़ करूँगी। मैं तुम्हारे साथ सोमवार को पेरिस या कहीं भी चलूँगी।"

वह उठ खड़ी हुई और हैट अपने सिर पर रक्खा।

'तुम कहाँ जा रही हो ?"

"मैं उससे पूछने जा रही हूँ, क्या वह मुझे ले चलेगा ?"

"अभी ?"

"क्या तुम चाहते हो मैं रुकूँ ? अगर चाहो तो मैं रुक सकती हूँ।"

वह बैठ गई, पर फिलिप धीरे से हँसा।

"नहीं, उससे फर्क नहीं पड़ता, अच्छा यही होगा कि तुम फौरन चली जाओ। बस एक बात है : मैं ग्रिफिथ्स को देखना अभी बरदाश्त नहीं कर सकता, उससे मुझे बड़ा कष्ट मिलेगा। उसके लिये मेरे दिल में बुरी भावना नहीं है, या वैसी ही कोई चीज़, पर उससे कह देना वह मुझसे दूर रहे।"

"अच्छा।" वह उठ खड़ी हुई और अपने दस्ताने पहनने लगी। "मैं तुम्हें बता दूँगी कि वह क्या कहता है।"

मेडिकल स्कूल की नीचे की मंजिल में खाना खाकर फिलिप अपने कमरों में वापस लौट गया। शनिवार की दोपहर बीत चुकी थी और

मकान मालकिन सीढ़ियों पर झाड़ू लगा रही थी।

"मिस्टर ग्रिफिथ्स अन्दर हैं ?" उसने पूछा।

"नहीं, श्रीमान् जी, सुबह आपके जाने के फौरन बाद ही वह चले गये थे।"

"वह वापस नहीं आयेंगे क्या ?"

"मैं नहीं सोचती। वह अपना सामान ले गये थे।"

फिलिप सोचने लगा इसका क्या मतलब हो सकता है। उसे आशा थी कि ग्रिफिथ्स, बिना मिल्ड्रेड को लिये, कम्बरलैंड में अपने घर चला गया है। मिल्ड्रेड अभी पैसों के लिये आती होगी। एक काम वह यह कर सकता था कि बाहर चला जाये और आधी रात तक वापस न लौटे; तब वे नहीं जा सकते; और उसने देखा कि वे हर घंटे आकर पूछ रहे हैं कि वह वापस आया या नहीं। उनकी निराशा के विचार पर उसे आनन्द आया। पर वह ऐसा कर नहीं सकता था। उन्हें आकर पैसे ले जाने दो और तब उसे मालूम हो जायेगा कि आदमी नीचता की कितनी गहराई तक उतर सकता है। वह अपनी कुर्सी से टिक गया और आँखें बन्द करके, दुःख से कातर होकर, मिल्ड्रेड की प्रतीक्षा करने लगा।

मकान मालकिन भीतर आई।

"आप मिसेज़ मिलर से मिलेंगे, श्रीमान् ?"

"उन्हें अन्दर भेज दीजिये।"

फ़िलिप ने अपने को एकत्रित किया, जिससे अपनी भावनाओं को प्रदर्शित किये बिना वह उसका स्वागत कर सके। सहसा उसे लगा कि घुटनों के बल बैठकर, उसके हाथ पकड़कर, वह उससे न जाने की भीख मांगे; पर उसे मालूम था कि मिल्ड्रेड को पिघलाने का कोई रास्ता न था। वह ग्रिफिथ्स से बतायेगी कि उसने क्या कहा था और क्या किया था। वह शर्मिंदा हुआ।

"हाँ, उस सैर का क्या हुआ ?" उसने खुशी से पूछा।

"हम लोग जा रहे हैं। हैरी बाहर है। मैंने उससे बता दिया था कि

तुम उससे मिलना नहीं चाहते, इसलिये वह तुमसे अलग ही रहा है। परन्तु जानना चाहता है कि क्या एक मिनट को वह तुमसे गुडबाई कहने आ सकता है।"

"नहीं, मैं उससे नहीं मिलूँगा," फिलिप ने कहा।

वह देख सकता था कि मिल्ड्रेड को परवाह न थी कि वह ग्रिफिथ्स से मिले या न मिले। अब जब वह यहाँ आ गई थी, फिलिप को लगा वह जल्दी-से-जल्दी चली जाये।

"देखो, यह पाँच पौंड का नोट है। अब तुम जाओ।"

उसने नोट लेकर उसे धन्यवाद दिया। कमरा छोड़ने को वह घूमी।

तुम कब वापस आ रही हो ?" उसने पूछा।

"सोमवार को। हैरी तब घर जायेगा।"

उसे मालूम था जो कुछ वह कहने जा रहा है, उसके लिये अपमान-जनक है, पर वह ईर्षा और वासना से टूट गया था।

"तब तुम मुझसे मिलोगी, है न ?"

अपनी आवाज़ में एक प्रार्थना का भाव आने से वह रोक न सका।

"अवश्य। आते ही मैं तुम्हें सूचना दूंगी।"

फ़िलिप ने उससे हाथ मिलाये। परदे के पीछे से उसने उसे दरवाज़े पर खड़ी कैब में बैठते देखा। कैब चली गई। तब वह बिस्तर पर लेट गया और चेहरा हाथों में गड़ा लिया। उसे लगा आँसू उसकी आँखों में आ रहे हैं और वह अपने ऊपर क्रोधित हो उठा। उसने हाथ बाँध लिये और उन्हें रोकने को शरीर सिकोड़ लिया; पर वह रोक न सका; और दर्द भरी हिचकियाँ बरबस उसके भीतर से फूट पड़ीं।

आख़िर सोमवार आया। ग्रिफ़िथ्स के प्रति फिलिप के हृदय में कड़ी घृणा का भाव था, परन्तु मिल्ड्रेड के लिये, जो कुछ हुआ था उसके बावजूद, भी हृदय को चीरने वाली लालसा। यह भीषण और घृणित था, तो उसे क्या परवाह ? वह किसी भी समझौते के लिये तैयार था, अब भी और अधिक अपमानजनक परिस्थितियों के लिये प्रस्तुत था,

यदि वह केवल अपनी इच्छा को तृप्त कर सके।

शाम के समय उसके पैर उसकी इच्छा के विपरीत उस मकान की ओर ले चले जहाँ मिल्ड्रेड रहती थी और उसने उसकी खिड़की की ओर देखा। वह अंधेरी थी। उसने पूछा नहीं कि वह आई या नहीं। उसे मिल्ड्रेड के वादे पर विश्वास था, परन्तु सवेरे उसका कोई पत्र नहीं आया और दोपहर के समीप जब वह गया तो नौकरानी ने बताया वह आई नहीं है। उसकी समझ में न आ सका। उसे मालूम था, कि ग्रिफ़िथ्स परसों घर चला गया होगा क्योंकि उसे एक शादी में 'बेस्ट-मैन' बनना था और मिल्ड्रेड के पास पैसे नहीं थे। वह दोपहर के बाद फिर गया और एक पत्र लिखा कि वह शाम को उसके साथ खाना खाये। इतनी शान्तिपूर्वक उसने यह लिखा जैसे पिछले दो हफ़्ते की घटनाएं हुई ही न हों। उसने समय और स्थान लिख दिया, जब और जहाँ उन्हें मिलना था और आशा के विरुद्ध वह ठीक समय पर वहाँ पहुँचा; यद्यपि उसने एक घन्टे प्रतीक्षा की पर वह नहीं आई : बुधवार की सुबह उसे स्वयं उसके मकान पर जाने में शर्म महसूस हुई और उसने एक लड़के को पत्र-वाहक बनाकर भेजा और उसे ताकीद की कि वह पत्र का उत्तर लेता आए। परन्तु एक घण्टे में लड़का वापस लौट आया, उसका लिफ़ाफ़ा खोला नहीं गया था और उत्तर था कि वह महिला देहात से अभी वापस नहीं लौटी है। फ़िलिप को बड़ा क्रोध आया। इस अन्तिम धोके को वह सहन न कर सका। उसने बार-बार अपने से कहा कि वह मिल्ड्रेड से घृणा करता है। इस नई निराशा की जिम्मेदारी उसने ग्रिफिथ्स पर रक्खी और उसे लगा वह ग्रिफिथ्स से इतनी घृणा करता है कि उसे हत्या करने के आनन्द का पता चल गया था ; टहलते हुए वह सोचने लगा कि किसी अंधेरी रात में उस पर हमला करके गले में कैरॉटिड धमनी के लगभग पास छुरा भोंक देने और उसे कुत्तों की तरह सड़क पर मरने के लिये छोड़ देने में क्या आनन्द आयेगा। दुःख और क्रोध के कारण फ़िलिप अपने आपे में

नहीं था। उसे ह्विस्की पसन्द नहीं थी, पर अपने को संज्ञाशून्य करने के लिये उसने पी। मंगलवार और बुधवार की रातों को वह शराब पिये हुए बिस्तर पर गया।

वृहस्पतिवार को वह बहुत देर में उठा। आँखें धुंधली तथा पीली, अपने को घसीटकर बैठने के कमरे में ले गया, यह देखने के लिये कि उसके लिये कोई पत्र तो नहीं है। जब उसने ग्रिफ़िथ्स की लिखावट पहचानी तो एक अजीब तरह का भाव उसके हृदय में उठा।

"प्रिय दोस्त,

मेरी समझ नहीं आता कि मैं कैसे तुम्हें कुछ लिखूं परन्तु फिर भी मुझे महसूस होता है कि मुझे अवश्य लिखना चाहिये। मुझे आशा है, तुम मुझ पर बहुत ज्यादा नाराज़ नहीं हो, मुझे मालूम है कि मुझे मिली के साथ नहीं चले जाना चाहिये था, पर मैं अपने पर काबू न रख सका। जब उसने मुझे बताया कि जाने के लिये पैसे दे रहे हो, मैं विरोध न कर सका। अब सब ख़त्म हो चुका है और मैं अपने पर बहुत शर्मिंदा हूँ, सोचता हूं कि ऐसी बेवकूफ़ी न करता तभी ठीक था। चाहता हूँ कि तुम मुझे लिखो कि तुम मुझ पर नाराज़ नहीं हो और चाहता हूँ कि मुझे आकर स्वयं से मिलने दो। मिली से तुम्हारे यह कहने पर कि तुम मुझसे मिलना नहीं चाहते, मुझे बड़ा क्लेश पहुँचा था। एक पंक्ति लिखना। तुम बड़े अच्छे हो और लिखो कि तुमने मुझे क्षमा कर दिया है, इससे मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी। मैंने सोचा था कि तुमने बुरा नहीं माना, नहीं तो पैसे न देते। परन्तु मुझे मालूम है पैसे मुझे लेने नहीं चाहिये थे। मैं सोमवार को घर चला आया और मिली दो दिन तक ऑक्सफोर्ड में रहना चाहती थी। वह बुधवार को लन्दन वापस जायेगी और इस पत्र को पाने तक तुम उससे मिल चुके होगे और मुझे आशा है कि सब कुछ ठीक हो गया होगा। जरूर लिखो कि तुमने मुझे माफ कर दिया। कृपा करके फौरन लिखो।

सदैव तुम्हारा

हैरी।"

फ़िलिप ने अधिक क्रोध से पत्र फाड़ डाला। उत्तर देने का उसका क़तई इरादा न था। उसकी क्षमा-याचना के लिये फ़िलिप के मन में ग्रिफिथ्स के प्रति उपजी, उसकी आत्मा की पीड़ा के लिये उसके मन में सहनशीलता न थी; कोई भी आदमी चाहने पर कोई नीच काम कर सकता है, पर बाद में शोक करना घृणा है। उसने सोचा कि वह पत्र साहसहीन और दम्भ मय है। उसकी मुस्कान से उसे घृणा हो आई।

उसने पूरी आशा की कि किसी दिन उसे अवसर मिल सकेगा कि वह ग्रिफ़िथ्स का बुरा चेत सके।

आज उसे पता लग गया था कि मिल्ड्रेड शहर में है। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने, दाढ़ी बढ़ाने का इन्तजार नहीं किया, एक प्याला चाय पी और मिल्ड्रेड के कमरों में जाने के लिये एक कैब किराये पर की। लगा 'कैब' रेंग रही है। उसे देख पाने की उसकी उत्सुकता व्यथामयी थी और अचेतन रूप से वह उस ईश्वर की प्रार्थना करने लगा, जिस पर विश्वास नहीं करता था, कि मिल्ड्रेड कोमलता से उसका स्वागत करे। वह सिर्फ़ भूल जाना चाहता था। धड़कते दिल से उसने घंटी बजाई। एक बार मिल्ड्रेड उसे अपने आलिगन में बांध ले इस लालसामय इच्छा के सामने वह अपनी सारी पीड़ा भूल गया।

"मिसेज़ मिलर अन्दर हैं?" उसने खुशी से पूछा।

"वह चली गई हैं," नौकरानी ने उत्तर दिया।

फ़िलिप ने जैसे कुछ न समझ कर उसकी ओर देखने लगा।

"वह लगभग एक घंटा पहले यहां आई थीं और सामान ले गई।"

एक क्षण को उसकी समझ में न आया वह क्या कहे।

"तुमने मेरा पत्र उन्हें दिया था? क्या उन्होंने बताया था वह कहाँ जा रही हैं?"

तब उसकी समझ में आया कि मिल्ड्रेड ने उसे फिर धोखा दिया है। वह उसके पास वापस नहीं आ रही थी। उसने अपना सामान बचाने की कोशिश की।

"ओह, अच्छा, मेरा ख्याल है मुझे उनका पत्र मिलेगा । उन्होंने शायद दूसरे पत्र पर पते भेज दिया हो।"

घूमकर वह निराश अपने कमरे में पहुंचा। उसे मालूम होना चाहिये था कि वह ऐसा करेगी; उसने कभी फ़िलिप की चिन्ता नहीं की थी, उसने उसे शुरू से ही बेवकूफ बनाया था; उसमें दया नहीं थी, उसमें कोमलता नहीं थी, उसमें उदारता नहीं थी। अब आवश्यंभावी को स्वीकार करना भर रह गया था। वह पीड़ा जिससे वह पीड़ित था भयावह थी, उसे वहन करने की अपेक्षा मर जाना ज्यादा ठीक होगा; और उसे ख़्याल आया कि सब कुछ समाप्त कर देना ज्यादा अच्छा होगा। वह नदी में कूद पड़े या रेलवे लाइन पर अपना सिर रख दे; पर जैसे ही इस विचार को उसने शब्दों में व्यक्त किया वह उसके विरुद्ध हो उठा। उसकी विचार-शक्ति ने उसे बताया कि समय पर वह इस दुःख से मुक्ति पा जायगा; सारी शक्ति लगाने पर वह उसे भुला सकेगा; और एक कुतिया के लिये अपने को मार डालना बड़ा भद्दा लगेगा। उसका केवल एक जीवन था और उसे फेंक देना पागलपन होगा। उसने महसूस किया कि वह अपनी वासना को कभी पराजित नहीं कर पायेगा, परन्तु उसे मालूम था कि यह केवल समय का प्रश्न था।

वह लन्दन में नहीं रहेगा वहाँ हर चीज उसे उसके दुःख की याद दिलाती है। उसने अपने चचा को तार दिया कि वह ब्लैकस्टेबिल आ रहा है और जल्दी से सामान बाँधकर, सबसे पहली गाड़ी पकड़ी। वह उन गंदे कमरों से दूर चला जाना चाहता था जिनमें उसने इतनी यातना सही थी। वह शुद्ध वायु में साँस लेना चाहता था। वह स्वयं से अब रूँठा था। उसे लगा वह थोड़ा पागल हो गया है।

सेशन शुरू होने से दो दिन पहले फ़िलिप लन्दन चला गया, क्योंकि रहने के लिये उसे कमरे तलाश करने थे। उसे केनिंगटन रोड पर एक कमरा मिला, जिसमें बड़ी शान्ति थी, जैसे वह पुरानी दुनियाँ का कमरा हो।

अपनी यात्राओं के बीच में इकट्ठा किया हुआ कुछ फर्नीचर फ़िलिप के पास था, पेरिस में खरीदी हुई एक आराम कुर्सी, एक मेज, कुछ तस्वीरें फ़िलिप ने नौ दस पौंड और खर्च करके सारी आवश्यक वस्तुएं खरीद लीं। दस शिलिंग लगाकर उसने उस कमरे की दीवारों पर अनाज के रंग का कागज लगा दिया जिसे उसका बैठने का कमरा बनाने का इरादा था। दीवारों पर उसने क्वे-द-ग्रॉंड्स आगस्टिन्स का एक सेवा-चित्र, जिसे लॉसन ने उसे दिया था, इंग्रेज का ओडालिस्क का फोटोग्राफ़ और मैनेट का ओलम्पियम लगा दिया। अपने को याद दिलाने के लिये कि कभी वह भी कला का अभ्यास किया करता था उसने नवयुवक स्पैनिश माइगुएल एज्योरिया की चार कोना ड्राइंग लगा दी। उसके बनाये हुए चित्रों में वह सबसे अच्छा था. हाथ बाँधे खड़ा एक नंगा पुरुष, उसके पैर फर्श को एक अजीब शक्ति से दबाये हुए और उसके चेहरे पर दृढ़ निचश्य की वह छाया थी जो कितनी प्रभावशाली थी। यद्यपि इतने लम्बे समय के बाद उसे अपने काम के दोष स्पष्ट दिखलाई पड़ रहे थे, उसके साथ जुड़ी स्मृतियों ने उसे बाध्य किया कि वह उसे उदारता से देखे। वह सोचने लगा माइगुएल क्या कर रहा होगा। असाधारण बुद्धिहीन व्यक्तियों द्वारा कला के परिशीलन से बढ़ कर भयानक और कुछ नहीं है।

फ़िलिप ने लॉसन और हेवर्ड से कहा कि वे आकर उसके नये कमरे देखें और वे आये; और जब उन्होंने उसकी रुचि की प्रशंसा की तो वह खुश हुआ। वह स्कॉटलेंड वासी दलाल को भी निमंत्रण देगा, परन्तु, उसके पास केवल तीन कुर्सियाँ थीं और इसलिये वह केवल निश्चित संख्या में अतिथियों का स्वागत कर सकता था।

फ़िलिप अब औषधि और सर्जरी के लेकचरों में जाने लगा था। हफ्ते में किन्हीं सुबहों में वह बाहर के रोगियों की पट्टियाँ बाँधा करता था और कुछ पैसे कमाकर खुश था। उसे पक्ष-परीक्षा और स्टेथेस्कोप का इस्तेमाल सिखाया जाने लगा। वह दवायें देना सीखने लगा। वह

बड़ी उत्सुकता से उस चीज को ग्रहण करता जिससे वह मानवीय लालसा का कोई संकेत निकाला पाता।

एक बार उसने ग्रिफ़िथ्स को दूर से देखा, परन्तु, उसका अपमान करके स्वयं को होने वाली पीड़ा का ध्यान करके, वह उससे कतरा गया। ग्रिफ़िथ्स के दोस्तों के साथ फ़िलिप को कुछ अजीब मालूम पड़ने लगता था। उनमें से कुछ अब उसके दोस्त थे और उसे मालूम हो गया था कि वे उसकी और ग्रिफ़िथ्स की लड़ाई जानते हैं और कल्पना करना चाहिये कारण भी जानते ही होंगे। उनमें से एक, बहुत लम्बा, छोटे सिर और सुस्त दिखाई पढ़ने वाले का नाम रैम्सडेन था। वह ग्रिफ़िथ्स का बड़ा वफ़ादार प्रशंसक और उसकी टाइयाँ, उसके जूतों, उसके बात करने के ढंग और उसके अंग विक्षेपों की नकल करता था। एक दिन उसने फ़िलिप को बताया कि फ़िलिप के उत्तर न देने से ग्रिफ़िथ्स को बड़ी पीड़ा हुई थी। वह उससे सुलह करना चाहता था।

"क्या उसने तुम्हें यह समचार लेकर भेजा है ?" फ़िलिप ने पूछा।

"ओह नहीं। मैं अपने आप कह रहा हूँ," रैम्सडेन ने कहा, उसे अपने कृत्य पर बहुत दुःख है। वह कहता है कि तुम हमेशा उसकी मदद को आये थे। मुझे मालूम है समझौता करके उसे बड़ी खुशी होगी। वह अस्पताल नहीं जाता क्योंकि उसे डर है कि तुमसे भेंट हो जायेगी, और वह सोचता है तु ा उसका अपमान करोगे।"

"मुझे करना चाहिये।"

"उसे इस बात से बड़ा कष्ट होता है, समझ लो।"

"मैं उसे महसूस होने वाली छोटी सी असुविधा को बड़े धैर्य से सहन कर सकता हूँ।"

"वह सुलह करने के लिये कुछ भी करने को तैयार है।"

"कैसी बचपने और उन्माद की बात है। उसे परवाह क्यों ? मैं एक बहुत मामूली आदमी हूँ और मेरे साथ के बिना भी उसका काम चलता रहेगा। मुझे उसमें अब कोई दिलचस्पी नहीं है।"

रैम्सडेन ने सोचा कि फ़िलिप कठोर और रूखा है। परेशानी से इधर-उधर देखते हुए वह एक-दो क्षण को रुका।

"हैरी भगवान् से मना रहा है कि कभी उस औरत से उसका सम्पर्क न हुआ होता।"

"सचमुच ?"

जिस उदासीनता से वह बोला उससे, उसे सन्तोष हुआ। कोई नहीं समझ सकता था कि उसका हृदय कितनी जोर से धड़क रहा था। वह आतुरता से रैम्सडेन के बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

"मैं सोचता हूं, अब तुम बिल्कुल इस पर विजय पा गये हो, है न ?"

"मैं ?" फ़िलिप ने कहा, "बिल्कुल।"

थोड़ा-थोड़ा करके मिल्ड्रेड और ग्रिफ़िथ्स के सबंध का इतिहास उसे पता लगा। वह होठों पर मुस्कान लिये सुनता रहा, बहाना बिल्कुल शान्त होने का किये रहा, जो उसके सामने बैठे बातें करते हुए युवक को आसानी से धोखा देती रहीं। ग्रिफ़िथ्स के साथ आक्सफ़ोर्ड में बिताये सप्ताहान्त ने मिल्ड्रेड के भीतर की वासना को बुझाने के बजाय भड़का दिया; और जब ग्रिफ़िथ्स घर चला गया, एक अप्रत्याशित भावना सहित उसने आक्सफोर्ड में दो दिन अकेले रहने का निश्चय किया, क्योंकि वहाँ पर वह इतनी खुश रही थी। उसे लगा किसी दशा में भी वह फ़िलिप के पास वापस न लौटेगी। उससे उसे चिढ़ थी। ग्रिफ़िथ्स ने जिस आशा को भड़का दिया था, उसे देखकर स्तब्ध रह गया, क्योंकि देहात में बिताये हुए दो दिन उसे बड़े उकताने वाले लगे थे; और उसे एक आनन्द जनक कहानी को क्लान्ति जनक प्रेम व्यापार बनाने की कोई इच्छा न थी। उसने ग्रिफ़िथ्स से वादा करा लिया कि वह उसे लिखेगा और ईमानदार तथा अच्छे आदमी होने के कारण स्वाभाविक शिष्टता और अपने को प्रत्येक आदमी के साथ खुशदिल बनाने की इच्छा से। जब वह घर पहुंचा तो उसने एक लम्बा सुन्दर-सा

पत्र लिखा। उसने वासना से मढ़ा बहुत लम्बा पत्र लिखा, क्योंकि उसमें लिखने की इच्छा नहीं थी, बुरी तरह लिखा हुआ और अशिष्ट; पत्र ने उसे डुबा दिया और जब उसके बाद दूसरे दिन दूसरा, और तीसरे दिन दूसरा, और तीसरे दिन तीसरा पत्र आया, तो वह सोचने लगा कि उसका प्यार. अब अच्छा नहीं रह गया है, बस खतरा उत्पन्न करने वाला हो गया है। उसने उत्तर नहीं दिया; और मिल्ड्रेड ने उस पर तारों की बौछार कर दी, पूछा कि क्या वह बीमार है और उसे उसके पत्र न मिले थे; उसने लिखा कि उसकी चुप्पी से वह बड़ी आतुर हो उठी है। उसे जबर्दस्ती लिखना पड़ा, परन्तु उसने अपने उत्तर को अपमानजनक न बनाते हुए यथासंभव बेकार बनाने की कोशिश की: उसने उससे प्रार्थना की कि वह तार न दे, क्योंकि उसकी माँ के सामने तारों की कैफियत देना बड़ा मुश्किल था; वे बड़े पुराने खयालों की थीं और तार का आना अब भी उनके लिये भयप्रद घटना होती थी। मिल्ड्रेड ने उत्तर दिया कि वह उसे अवश्य देखेगी और अपना इरादा लिखा कि अपनी चीजें गिरवी रख देगी। (उसके पास विवाह की भेंट स्वरूप फ़िलिप द्वारा दिया हुआ एक 'ड्रेसिंग केस' था जिससे वह आठ पौंड पा सकती थी) जिससे आकर वह उस कस्बे में रह सके जहाँ से चार मील दूर ग्रिफ़िथ्स के पिता प्रैक्टिस करते थे:। इससे ग्रिफ़िथ्स डर गया; और उसने इस बार, तार भेज कर कहा कि वह ऐसा कोई काम न करे, उसने वादा किया कि लन्दन पहुँचते ही वह उसे अपने आने के बारे में बतायेगा और जब वह पहुँचा तो उसे पता लगा कि उस अस्पताल में वह पहले से ही उसके बारे में पूछती फिर रही है, जिसमें उसकी नियुक्ति होनी थी। उसे यह पसन्द नहीं आया और मिल्ड्रेड से मिलने पर उसने उसे बताया कि किसी भी बहाने उसे वहाँ नहीं आना है; और अब तीन हफ़्ते की गैर हाजिरी के बाद, उसने पाया कि वह निश्चय ही उसे उबाने लगी थी; उसे आश्चर्य हुआ कि उसके लिये वह परेशान ही क्यों हुआ और उसने

उससे जल्दी-से-जल्दी संबंध तोड़ने का निश्चय कर लिया। वह झगड़ों से डरने वाला आदमी था और न ही वह किसी को पीड़ा पहुंचाना चाहता था; परन्तु साथ ही उसे और भी काम करने थे, और वह निश्चय कर चुका था कि अब वह मिल्ड्रेड द्वारा परेशान नहीं किया जायेगा। जब वह उससे मिलता खुश, खुश करने वाला, प्यार से भरा रहता। पिछली बार मिलने के बाद इतने दिनों तक न मिल पाने के लिये वह विश्वासोत्पादक बहाने खोज निकालता; पर उससे दूर रहने की हर संभव कोशिश करता। जब वह जबर्दस्ती उससे किसी जगह मिलने का वादा कर लेती। आखिरी समय पर तार देकर आने से मजबूरी प्रकट कर देता; और उसकी मकान मालकिन (अपने नियुक्ति के पहले तीन महीने वह कमरों में गुजार रहा था) को चेतावनी दी कि अगर मिल्ड्रेड आये तो कह दे ग्रिफिथ्स घर पर नहीं है। वह सड़क पर खड़ी रह कर उसकी प्रतीक्षा करती और जानते हुए कि वह दो घन्टे से उसके बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रही है, वह प्यारे-प्यारे, दोस्ताना शब्द कहकर यह बहाना करके भाग जाता कि उसे एक आवश्यक जगह जाना है। अस्पताल से बिना देखे निकल जाने में वह बड़ा पटु हो गया। एक बार जब वह आधी रात में अपने कमरे में वापस लौट कर गया, उसने बाहर दीवार में रेलिंग के पास एक औरत को खड़े देखा और वह कौन है यह सन्देह करके वह रैम्सडेन के कमरे में जमीन पर पड़ रहा। दूसरे दिन मकान मालिकन ने उसे बताया कि मिल्ड्रेड दरवाजे की सीढ़ियों पर घन्टों रोती रही थी और आखिर में उसे कहना पड़ा था कि अगर वह नहीं जाती तो उसे पुलिस बुलानी पड़ जायेगी।

"मैं कहता हूं, दोस्त," रैम्सडेन ने कहा, "तुम इससे बाहर निकल गये, अच्छा ही हुआ। हैरी कहता है कि अगर उसे आधे सेकेंड के लिये भी यह संदेह हो गया होगा कि वह ऐसी बदतमीज़ी करेगी तो, उसके साथ संपर्क रखने से पहले वह शैतान के यहाँ पहुंच जाना ज़्यादा पसन्द

करता।

फ़िलिप ने देखा, मिल्ड्रेड उसके दरवाजे की सीढ़ियों पर रात के लम्बे घन्टों में बैठी रही। उसने उसका चेहरा देखा, जब मकान मालकिन ने उसे बाहर निकाल दिया था।

"सोचता हूँ वह अब क्या कर रही होगी।"

"ओह, कहीं उसे कोई काम मिल गया है, ईश्वर का धन्यवाद है। उसी में वह दिन भर व्यस्त रहती है।"

गर्मी के सेशन के अन्त से पहले, फ़िलिप ने आखिरी बात जो सुनी वह थी कि ग्रिफ़िथ्स की नागरिकता ने भी लगातार परेशान किये जाने पर क्रोध के कारण जवाब दे दिया। उसने मिल्ड्रेड से कह दिया कि वह परेशान किये जाने से तंग आ गया है और अच्छा यह होगा कि वह अपने को अलग कर ले और उसे परेशान न करे।"

"यही वह कर सकता था," रैम्सडेन ने कहा, "उसके लिये बड़ी मुसीबत होती जा रही थी।"

'तब अब सब खत्म हो गया है ?"फ़िलिप ने पूछा।

"ओह मिल्ड्रेड से वह दस दिन से नहीं मिला। हैरी बड़ी आसानी से लोगों को छोड़ सकता है। यह नारियल ही फोड़ने में उसे सबसे ज्यादा मुश्किल पड़ी है, पर फोड़ तो दिया ही उसने आखिर।"

तब फ़िलिप को मिल्ड्रेड के बारे में कुछ न मालूम होने लगा। वह लन्दन की असीम अनजान जनसंख्या में गायब हो गई।

बसन्त में, बाहरी मरीजों के डिपार्टमेंट में अपनी ड्रेसिंग समाप्त करने के बाद, वह अस्पताल के मरीजों का क्लर्क हो गया। यह नियुक्ति छः महीने तक के लिये हुई। रोज़ सुबह क्लर्क को वार्डों में जाना पड़ता, पहले पुरुषों के वार्ड में, फिर स्त्रियों के वार्ड में और 'हाउससर्जन' साथ में रहते। वह 'केस' लिखता परीक्षाएं करता और दिन का समय नर्सों के साथ बिताता। हफ़्ते में दो दिन दोपहर के बाद 'हाउस सर्जन' कुछ विद्यार्थियों को साथ लेकर सभी वार्डों का दौरा करते, 'केसों' का

परिक्षरण करते और सूचनायें देते। काम में उत्तेजना, लगातार परिवर्तन, वास्तविकता से आंतरिक संपर्क नहीं था, जैसा कि बाहरी रोगियों के विभाग में था; परन्तु फिलिप ने अपना ज्ञान काफी बढ़ा दिया। मरीजों के साथ उसकी खूब निभती और जब वह उनकी परिचर्या करता तो वे खुश हो जाते, तो उसे अभिमान हो आता। मरीजों की पीड़ा के प्रति किसी गहरी सहानुभूति का भान उसे नहीं था,पर उन्हें वह पसन्द करता था; और चूँकि वह घमण्ड नहीं करता था, वह उनके बीच और क्लर्कों से अधिक सर्वप्रिय था। वह खुशदिल, बढ़ावा देने वाला और दोस्त था। अस्पताल से संपर्क रखने वाले हर आदमी की तरह उसे मालूम हो गया कि पुरुष मरीज़ों के साथ स्त्री मरीज़ों की अपेक्षा आसानी से काम किया जा सकता है। औरतें अक्सर बुरे स्वभाव की और लड़ाका भी होती थीं। वे मेहनत से काम करने वाली नर्सों की शिकायत करतीं कि उनकी वे देखभाल नहीं करतीं जितना कि उनका ख्याल था, उनका अधिकार है और वे मुश्किल से पेश आने वाली, अकृतज्ञ और रूखी होती थीं।

उन्हीं दिनों फ़िलिप का सौभाग्य था कि उसने एक दोस्त बना लिया। एक दिन सबेरे 'हाउस-सर्जन' ने उसे एक नया केस दिया, एक पुरुष और बिस्तर के पास बैठ कर, फ़िलिप 'लेटर' में खाना पूरी करने लगा। उसने देखा कि उस पर उस व्यक्ति को पत्रकार बताया गया था। उसका नाम थॉर्प ऐथेल्नी था। अस्पताल के मरीजों के लिये वह असाधारण था, और उसकी अवस्था अड़तालीस वर्ष थी। वह पाँडुरोग से बहुत बुरे आक्रमण से पीड़ित था और वार्ड में इसलिये भर्ती कर लिया गया था कि कुछ छिपे लक्षणों को देखा जा सके, जिनका देखा जाना आवश्यक था। फ़िलिप का कर्तव्य था कि वह उससे कुछ पूछे और उसने खुशनुमा पढ़े लिखे व्यक्ति की सी आवाज में उनके उत्तर दिये। चूंकि वह बिस्तर पर लेटा हुआ था यह बतलाना मुश्किल है कि वह लम्बा है या नाटा, परन्तु छोटे हाथों और छोटे सिर से संभावना होती थी कि वह साधारण

से कम लम्बाई का है। फ़िलिप को लोगों के हाथ देखने की आदत थी, और ऐथेल्नी के हाथों ने उसे आश्चर्य में डाल दिया : वे बहुत छोटे थे, लम्बी मोमबत्ती सी अंगुलियाँ थीं और सुन्दर गुलाबी नाखून; वे बड़े चिकने थे और अगर वह पाँडुरोग से पीड़ित होता तो आश्चर्यजनक रूप से सफेद होते। मरीज़ ने उन्हें बिस्तर के कपड़ों से बाहर कर रक्खा था। एक कुछ फौरन हुआ था, दूसरी और तीसरी अंगुलियों के साथ थीं और फ़िलिप से बोलते समय, लगता था वह संतोष पूर्वक सोच रहा है। आँखों में चमक लिये हुए उस आदमी के चेहरे को फ़िलिप ने देखा। पीलेपन के बावजूद भी वे अलग मालूम पड़ती थीं; उसकी आँखें नीली थीं, नाक चित्ताकर्षक, कुछ ऊपर उठी, आगे बढ़ी पर भद्दी नहीं थी और एक छोटी दाढ़ी थी, नुकीली और भूरी। वह लगभग गंजा था, पर स्पष्टतः उसके बाल बहुत बारीक थे, सुन्दर घुंघराले और अब भी वे बड़े थे।

"तो आप पत्रकार हैं," फ़िलिप ने कहा, "आप किन अखबारों में लिखते हैं ?"

"मैं सब अखबारों लिखता हूं। बिना मेरे लेख के आप कोई अखबार नहीं पायेंगे।"

बिस्तर के बगल में एक अखबार रक्खा था और उसकी ओर हाथ बढ़ाकर उसने एक विज्ञापन की ओर इशारा किया। बड़े-बड़े अक्षरों में फ़िलिप की सुपरिचित 'फ़र्म' का नाम था, लिन ऐंड सेडली, रीजेन्ट स्ट्रीट लन्दन; और नीचे अपेक्षाकृत छोटे पर फिर भी बड़े अक्षरों में दम्भ से भरा वक्तव्य था; निरन्तर स्थगितकरण समय का चोर है। तब एक प्रश्न अपने औचित्य के लिये विस्मय में डाल देने वाला; क्यों नहीं आप आज ही आर्डर देते ? बड़े अक्षरों में, किसी हत्यारे के हृदय पर आत्मा की चोट की तरह, दुबारा लिखा गया था; क्यों नहीं ? तब स्पष्ट, उभरे अक्षरों में: दुनियाँ के प्रसिद्ध बाज़ारों के हजारों जोड़ी दस्ताने आश्चर्य जनक मूल्यों पर। संसार के सबसे अधिक विश्वसनीय उत्पादकों के हज़ारों जोड़ी मौजे सनसनी खेज़ कम दामों पर। अन्त में प्रश्न फिर

दोहराया गया था, परन्तु इस वार अखाड़े में फेंके गये चेतावनी देने वाले लोहे के दस्ताने की तरह : क्यों नहीं आप अभी आर्डर देते ?

"मैं लिनऐंड सेडली का प्रेस प्रतिनिधि हूँ," उसने अपने सुन्दर हाथ को थोड़ा हिलाया, कितने रद्दी ढ़ंग से..."

फ़िलिप खानापूरी करने के लिये प्रश्न पूछता गया, उनमें से कुछ केवल नियम भर के लिये थे, दूसरे ऐसे थे जिनसे मरीज़ से उन बातों का पता लग सके, जिन्हें वैसे वह छिपाना चाहता हो।

"क्या आप कभी विदेशों में रहे हैं ?" फ़िलिप ने पूछा ।

"मैं स्पेन में ग्यारह साल रहा हूँ।"

"आप वहाँ क्या करते थे ?"

"टोलेडो में इंगलिश कटर कम्पनी का सेक्रेटरी था।"

पत्रकार के उत्तर से उसने उसकी ओर अधिक रुचि से देखा; पर उसे लगा कि अपनी रुचि दिखाना उचित न होगा : अस्पताल के मरीज़ों और 'स्टाफ़' के बीच का अन्तर बनाये रखना आवश्यक था। अपना परीक्षण समाप्त करने के बाद वह दूसरे बिस्तरों की तरफ बढ़ गया।

थार्प ऐथेल्नी की बीमारी बहुत गम्भीर न थी और यद्यपि वह बहुत पीला था, जल्दी ही वह अपने को बेहतर महसूस करने लगा। वह बिस्तर में पड़ा रहता था, सिर्फ इसलिये कि सर्जन का कहना था कि उसे निरीक्षण में रक्खा जाय, जब तक कि कुछ प्रतिक्रियाएं साधारण न हो जायें।

अगले कुछ दिनों में, यथासंभव अवसर पाकर कुछ क्षण निकालकर, फ़िलिप ने अपनी जान पहचान पत्रकार के साथ बढ़ा ली। थार्प ऐथेल्नी बड़ा अच्छा बातचीत करने वाला था। वह बहुत बुद्धिमानी की बातें न कहता था, पर बड़े जोश से बातें करता था, जिसमें एक आतुर विस्तार होता, जो कल्पना को उत्तेजित कर देता; फिलिप, जो एक बनी बनाई दुनिया में रहा था, को महसूस हुआ कि

उसकी कल्पना में नई तस्वीरें आने लगी हैं। ऐथेल्नी के आचरण बड़े अच्छे थे। वह फिलिप से बहुत अधिक जानता था, दुनियाँ और पुस्तकों दोनों के बारे में; वह काफी उम्र का था और उसके वार्तालाप की तत्परता उसे एक प्रकार से ऊंचा उठा देती है; परन्तु अस्पताल में वह दान का पाने वाला था; और उसके ऊपर भी वे ही कड़े कायदे कानून लागू थे और दोनों स्थितियों के बीच उसने स्वयं को आराम और खुशी से रख छोड़ा था। एक बार फिलिप ने उससे पूछा वह अस्पताल क्यों आया है।

"ओह मेरा सिद्धान्त है कि समाज द्वारा दी गई हर सुविधा से फायदा उठाया जाय। मैं अपने युग का, जिसमें मैं रहता हूँ, लाभ उठाता हूँ। जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो अस्पताल में अपनी परवरिश करता हूँ और मुझे झूठी शरम नहीं लगती और मैं अपने बच्चों को पढ़ने के लिये 'बोर्ड स्कूल' में भेजता हूँ।"

"सचमुच ?" फ़िलिप ने कहा।

"और वहाँ उन्हें बड़ी अच्छी शिक्षा मिलती है, विंचेस्टर में मुझे मिली शिक्षा से कहीं अच्छी। आप क्या सोचते हैं, मैं हर एक को किस तरह शिक्षा दे सकता था ? मेरे नौ बच्चे हैं। जब मैं फिर घर पहुँच जाऊँ, आप अवश्य आकर उन्हें देखिये। आयेंगे आप ? मुझे बड़ा अच्छा लगेगा," फ़िलिप ने कहा।

दस दिन बाद थार्प ऐथेल्नी इतना अच्छा हो गया कि उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई। उसने फ़िलिप को अपना पता दिया और फ़िलिप ने वायदा किया कि वह आगामी सोमवार को एक बजे उसके साथ खाना खायेगा। ऐथेल्नी ने उसे बताया था कि वह इनिगोजोन्स[1] के बनाये एक मकान में रहता है। उसने पुरानी ओक की लकड़ी के जंगल की बड़ी

---

१. इंग्लैंड का प्रसिद्ध एवं बहुत होशियार मकान बनाने वाला कारीगर।

तारीफ की थी, जैसे वह हर चीज की जरूरत से ज्यादा तारीफ किया करता था और जब वह फ़िलिप के लिये दरवाजा खोलने को आया, वह फौरन दरवाजे के चौखटे की भव्य खुदाई की प्रशंसा करने लगा। मकान बड़ा गंदा था, उसे पुताई की बड़ी आवश्यकता थी, पर उसमें अपने समय का एक सम्मान था और चांसरी लेन और हाल्बार्न के बीच एक छोटी गली में था, जो कभी फैशनपरस्त थी, पर अब गंदी और घनी आबादी से कुछ भारी थी : एक योजना ऐसी थी कि वहाँ के सारे घर गिरा कर भव्य दफ्तर बनाये जायं; हाँ, किराये कम थे और ऐथेल्नी को ऊपरी मंज़िलें अपनी आमदनी के उपयुक्त किराये पर मिल गई थीं। फ़िलिप ने पहले कभी उसे खड़े नही देखा था और उसके छोटे कद पर वह आश्चर्य में पड़ गया। वह पाँच फुट, पांच इंच से अधिक ऊंचा नहीं था। नीली लीनेन की पतलून वह विलक्षण रूप से पहने था, वैसे पतलून फ्रांस में मजदूर पहनते हैं। साथ में एक बड़ा पुराना भूरा मखमल का कोट था। कमर में चमकीली लाल पेटी थी, नीचा कालर था और टाई के लिये एक हुक के साथ उड़ने वाला बो पहने था, जैसी पंच के पन्नों में मजाकिये फ्राँसीसी पहना करते हैं। उसने बड़े जोश से फिलिप का स्वागत किया। वह फौरन मकान के बारे में बातें करने लगा और प्यार से उसने जंगले पर हाथ फिराया।

"देखो इसे, महसूस करो, यह रेशम की तरह है। कैसा अलौकिक सौंदर्य है! और पाँच साल में मकान तोड़ने वाला इसे जलने वाली लकड़ियों की तरह बेंच देगा।"

पहली मंजिल के एक कमरे में चलने को उसने फ़िलिप से जोर दिया जहाँ आस्तीनदार कमीज पहने एक आदमी, एक ढीली ढाली औरत और तीन बच्चे अपना रविवार का खाना खा रहे थे।

"मैं इन महानुभाव को तुम्हारी छत दिखाने ले आया हूँ। क्या आपने कभी ऐसी आश्चर्यजनक चीज देखी थी? आपकी तबियत तो ठीक है, मिसेज़ हॉगसन? ये मिस्टर कैरी हैं, जिन्होंने अस्पताल में मेरी

देख भाल की थी।"

"अन्दर आइये, श्रीमान्," पुरुष ने कहा "मिस्टर ऐथेल्नी के किसी भी मित्र का यहाँ स्वागत है। मिस्टर ऐथेल्नी अपने हर मित्र को छत दिखाते हैं और इसमें फर्क नहीं पड़ता कि क्या कर रहे हैं, बिस्तर पर हैं या नहा रहे हैं, वे हमेशा अन्दर चले आते हैं।"

फिलिप देख सकता था कि वे ऐथेल्नी को कुछ अजीब समझते थे; पर फिर भी वे उसे पसन्द करते थे और मुंह खोलकर सुनते रहते थे जबकि ऐथेल्नी अपनी प्रचंड वेगशीलता से सत्रहवीं शताब्दी की छत की सुन्दरता पर बोलते चले जाते।

"इसे गिरा देना कितना बड़ा अपराध है, हॉगसन ? तुम प्रभावशाली नागरिक हो, क्यों नहीं तुम अखबारों में लिखकर इसके विरुद्ध आवाज उठाते ?"

आस्तीनदार कमीज पहने आदमी हंसा और फ़िलिप से बोला :

"मिस्टर ऐथेल्नी अपना मजाक जरूर करेंगे। वह कहते तो हैं कि ये मकान इतने गन्दे हैं, और यहाँ रहना सुरक्षित नहीं है।"

"सफाई भाड़ में जाय, मुझे कला चाहिये," ऐथेल्नी चीख पड़ा, "मेरे नौ बच्चे है और वे नालियों में ही पलते बढ़ते हैं। नहीं, नहीं, मैं खतरा उठाने को तैयार नहीं। मैं इन नई योजनाओं में से किसी को नहीं मानूंगा ! जब मैं यहाँ से दूसरी जगह जाऊंगा तो मकान लेने से पहले यह निश्चय कर लूंगा कि नालियाँ बुरी हैं।"

दरवाजे पर खटका हुआ और एक छोटी, साफ बालों वाली लड़की ने प्रवेश किया।

"डैडी, ममी कहती हैं अब बातें बन्द करके, अन्दर खाना खा लीजिये।"

"यह मेरी तीसरी लड़की है," ऐथेल्नी ने नाटकीयता से अपनी उंगुली लड़की की ओर उठाते हुए कहा, "इसका नाम मारियादेता पाइलर है, पर 'जेन' नाम से यह ज्यादा आसानी से उत्तर देती है। जेन,

तुम्हारी नाक चाहती है कि उसे साफ कर दिया जाय।"

"मेरे पास सामान नहीं है, डैडी !"

"ट् ट्, बच्ची," उसने एक बड़ा चमकदार रेशमी रूमाल निकालते हुए उत्तर दिया, "तुम्हारा क्या ख्याल है सर्व शक्तिमान ने उंगलियाँ तुम्हें क्यों दी थीं ?"

वे ऊपर गये और फ़िलिप एक कमरे में ले जाया गया, जिसकी दीवारों पर काली ओक की लकड़ी के तख्ते लगे हुए थे। बीच में सागौन की एक संकरी मेज़ थी, जिसके पाये अस्थायी थे और सहायता देने के लिये उसमें लोहे की दो छड़ें लगी थीं। उन्हें वहीं खाना खाना था, क्योंकि दो आदमियों के बैठने का प्रबन्ध किया गया था और दो बड़ी हत्थों वाली कुर्सियाँ थीं, जिनके हत्थे ओक के चौड़े, चपटे थे पीछे और सीट पर चमड़ा लगा था। वे मजबूत, कीमती और आराम न दे सकने वाली थीं। दूसरा फर्नीचर एक 'बारगुएनों' था, जो मुलम्मेदार लोहे के काम से अच्छी तरह सजाया गया था, जो धार्मिक ढंग पर बने हुए, बिना ज्यादा मेहनत पर अच्छी तरह खोदे हुए, स्टैंड पर रक्खा था। उस पर दो-तीन चमकीली तश्तरियाँ रक्खी थीं : यद्यपि विषय में भयंकर, समय और बुरे ढंग से बनाये जाने के कारण नष्ट हो गई थी और धारणा में दूसरी श्रेणी की थी, उनमें प्रेम की एक ज्वाला थी। कमरे में कोई मूल्यवान चीज न थी, पर प्रभाव सुन्दर था। वह सब बड़ा सुन्दर था और गम्भीर भी। ऐथेल्नी उसे 'बारगुएनों' के भीतर का भाग दिखा रहा था, उसमें कितना सुन्दर काम था और गुप्त दराजें थीं और फ़िलिप को महसूस हो रहा था कि वह पुराने स्पेन की आत्मा ही प्रदान कर रही थी। उसी समय एक लम्बे कद की लड़की, जिसकी पीठ पर चमकदार भूरे रंग के बालों की दो चोटियाँ लटक रही थीं, भीतर आई।

"माँ कहती हैं कि खाना तैयार है और जैसे ही आप लोग बैठ जायेंगे, मैं उसे लेकर आती हूँ।"

"सैली, आकर मिस्टर कैरी से हाथ मिलाओ।" वह फ़िलिप की ओर घूमा, "क्या अच्छी नहीं है ? यह मेरी सबसे बड़ी सन्तान है। तुम्हारी क्या उम्र है, सैली ?"

"अगली जून को पन्द्रह पूरी हो जायगी, डैडी !"

"मैंने इसका नाम मारियादेता रक्खा था, क्योंकि वह मेरी पहली सन्तान थी और मैंने उसे कैस्टील के शानदार सूर्य को समर्पित कर दिया था। पर इसकी माँ इसे सौमी कहती है और भाई 'पुडिंग फेस'।"

लड़की धीमे से मुस्कराई, उसके दाँत सम और श्वेत थे और वह लजा गई। उसका शरीर बड़ा अच्छा था, अपनी उम्र के लिये लम्बी थी, खुशनुमा भूरी आँखें और चौड़ा माथा था, कपोल लाल थे।

"अन्दर जाकर अपनी माँ से कहो कि मिस्टर कैरी के बैठने से पहले वह उनसे हाथ मिला जाये।"

"मां कहती हैं कि वह 'डिनर' के बाद आयेंगी। उन्होंने अभी तक नहाया नहीं है।"

"तब हम चलकर स्वयं उनसे मिलेंगे। उन्हें यार्कशायर-पुडिंग[1] नहीं ही खाना चाहिये जब तक कि वे उसे बनाने वाले हाथों से हाथ न मिला लें।"

फ़िलिप अपने निमन्त्रण देने वाले के पीछे-पीछे रसोईघर में गया। वह छोटा और चीजों से बहुत भरा था। बड़ा शोर हो रहा था, पर अजनबी के पहुंचते ही वह थम गया। बीच में एक बड़ी मेज रक्खी थी और उसके चारों ओर, खाने को उत्सुक, ऐथेल्नी के बच्चे बैठे थे। भट्टी के सामने एक औरत खड़ी, एक-एक करके भुँजे हुए आलू निकाल रही थी।

"ये हैं मिस्टर कैरी, बेटी," ऐथेल्नी ने कहा।

---

१. आटा, चावल आदि से बना हुआ एक भोजन विशेष।

"ज़रा सोचो तो तुम इन्हें यहाँ ले आए हो ! ये क्या सोचेंगे ?"

वे एक गन्दा 'ऐप्रन'[1] पहने हुए थीं और उनकी सूती पोशाक की बाहें कुहनियों से ऊपर तक मुड़ी हुई थीं; उनके बालों में लहरियोंदार पिनें लगी थीं। मिसेज़ ऐथेल्नी लम्बी चौड़ी महिला थीं, अपने पति से तीन इंच ज्यादा लम्बी, खुले ढंग की, नीली आंखों वाली और दयालु; वे सुन्दर थीं, पर बढ़ती उम्र और अधिक बच्चों के जन्म ने उन्हें मोटा बना दिया था; उनकी नीली आँखें पीली पड़ गई थीं, उनकी त्वचा खुरदरी और लाल हो गई थी, उनके बालों का रंग जा चुका था। उन्होंने स्वयं को सीधा किया, ऐप्रन से अपना हाथ पोंछा और उसे बढ़ा दिया।

"आपका स्वागत है, श्रीमान्," उन्होंने धीमी आवाज और ऐसे उच्चारण के साथ, जो उसे आश्चर्यजनक रूप से परिचित लगा, कहा, "ऐथेल्नी कहते थे कि आप अस्पताल में उनके ऊपर बड़े मेहरबान थे।

"अब आपका परिचय बच्चों से होना चाहिये," ऐथेल्नी ने कहा, "वह कार्थ हैं," उसने मोटे चेहरे और घुंघराले बालों वाले एक लड़के की ओर इशारा किया, "वह मेरा सबसे बड़ा लड़का है, नाम जायदाद और परिवार की जिम्मेदारियों का उत्तराधिकारी। वे हैं ऐशेल्स्टन, हैरल्ड, एडवर्ड।" उसने अपनी अंगुली से तीन लड़कों की ओर इशारा किया, सभी लाल, स्वस्थ मुस्कराते हुए, यद्यपि जब उन्होंने फिलिप की मुस्कराती आँखें अपने पर महसूस कीं तो वे शर्म से नीचे प्लेट की ओर कर लीं।" अब शुरू से तरतीब में लड़कियाँ : मारिया देता साल······"

"पुडिंगफेस," छोटे बच्चों में से एक ने कहा।

"तुम्हारा मज़ाक करने का स्वभाव बड़ी प्रारम्भिक अवस्था में है,

---

१. कपड़ों को गन्दा होने से बचाने के लिये आगे पहने जाने वाला एक कपड़ा।

मेरे बेटे। मारिया दे लास मरसीडीस, मारिया देता पाइलर, मारियादेता कन्सेप्शन, मारियादेता रोसारियो।"

"मैं उन्हें सैली, माली, कोनी, रोजी और जेन कहती हूँ," मिसेज़ ऐथेल्नी ने कहा, "अब, ऐथेल्नी अपने कमरे में जाओ और तुम्हारा डिनर भेजती हूँ। बाद में अब मैं उनकी सफाई कर दूंगी, बच्चे को थोड़ी देर के लिये भेज दूंगी।"

"माई डियर, अगर मैं तुम्हारा नाम रखता तो तुम्हें 'सोपसड्स की मारिया' कहता। तुम इन बेचारे बच्चों को हमेशा साबुन से परेशान किये रहती हो।"

"आप पहले चले जाइये, मिस्टर कैरी, नहीं तो मैं कभी भी इन्हें निकाल कर डिनर खिलाने में सफल नहीं हो सकूंगी।"

ऐथेल्नी और फ़िलिप बड़ी पादरियों की कुर्सियों पर बैठ गये और सैली उनके लिये दो प्लेट बीफ़[1], यार्कशायर पुडिंग, भुंजे हुए आलू और गोभी ले आई। ऐथेल्नी ने जेब से छः पेन्स निकालकर उसे 'बियर' लाने भेज दिया।

"मुझे आशा है आपने मेरे कारण यहाँ मेज नहीं लगवाई है," फ़िलिप ने कहा, "मैं बड़ी खुशी से बच्चों के साथ खाना खा सकता था।"

"ओह, नहीं। मैं हमेशा अपना खाना अकेले खाता हूँ। मुझे ये पुराने कायदे पसन्द हैं। मैं नहीं सोचता कि स्त्रियों को पुरुषों के साथ मेज पर बैठना चाहिये। ऐसा करने से उनके दिमागों में खुराफात भरती हैं और जब खुराफात भर जाती हैं तब वे कभी शान्ति से नहीं बैठ सकतीं।"

मेहमाननवाज़ और मेहमान दोनों खूब खा रहे थे।

"क्या कभी आपने ऐसी यार्कशायर पुडिंग खाई था? मेरी पत्नी

१. गाय का गोश्त।

की तरह कोई नहीं बना सकता। यही किसी 'लेडी' से शादी न करने का मज़ा है। आपने देखा था वह 'लेडी' नहीं है, है न ?"

यह बड़ा अजीब सवाल था और फिलिप की समझ में न आया कैसे उत्तर दे।

"मैंने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं," उसने धीरे से कहा।

ऐथेल्नी हँसा। उसकी हंसी एक विशेष प्रकार की, खुशी से भरी होती थी।

"नहीं, न वह 'लेडी' है, न उस तरह की कोई चीज। उसके पिता किसान थे और अपने जीवन में उसने कभी पढ़ने की चिन्ता नहीं की। हमारे बारह बच्चे हो चुके हैं जिनमें ये नौ जिन्दा हैं। मैं उससे कहता हूं कि अब समय आ गया है जब वह पैदा करना बन्द कर दे, पर वह जिद्दी औरत है और अब उसे इसकी आदत पड़ गई है और मुझे विश्वास नहीं है कि बीस के पहले वह सन्तुष्ट होगी।"

उसी क्षण सैली 'बियर' लेकर आई और फिलिप के लिए एक गिलास देने के बाद, मेज के दूसरी ओर अपने पिता के लिये डालने गई तो पिता ने उसकी कमर को अपने हाथ से लपेट लिया।

"क्या कभी आपने ऐसी सुन्दर, बालिका देखी है ? सिर्फ पन्द्रह साल की है, पर बीस की मालूम पड़ती है। इसके गाल देखिये। अपने जीवन में कभी एक दिन के लिये भी बीमार नहीं पड़ी। इससे शादी करने वाला आदमी बड़ा भाग्यवान होगा, है न, सैली ?"

सैली बिना घबराये, धीमी, हल्की मुस्कान के साथ सुनती रही, क्योंकि अपने पिता के इस तरह के उद्‌गारों की वह अभ्यस्त हो चुकी थी। वह बड़ी सरल शालीनता से सुन रही थी जो बड़ी आकर्षक थी।

"आप अपना खाना ठंडा मत होने दीजिये, डैडी," उसने अपने को उसके हाथ से दूर खींचते हुए कहा, "जब आप तैयार होंगे तो पुडिंग के लिये आवाज देंगे, है न ?"

वे अकेले रह गये और ऐथेल्नी ने शराब का प्याला उठा कर अपने मुंह से लगाया। उसने एक घूंट में काफी पी।

"शर्त है, अंग्रेजी बियर से बढ़कर कोई चीज नहीं!" उसने कहा, "हमें साधारण खुशियों, भुंजे हुए गोश्त और चावल की पुडिंग, अच्छी भूख और बियर के लिये ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये। मैंने एक बार एक 'लेडी' से शादी की थी। हे भगवान! कभी किसी 'लेडी' से शादी मत करो मेरे दोस्त!"

फिलिप हँसने लगा। वह उस दृश्य से, अपने अजीब कपड़ों में मज़ा-किया छोटे से आदमी से, तख्तों लगे कमरे से और स्पैनिश फर्नीचर, अंग्रेजी मेले से, उल्लसित हो उठा था; सारी चीज में एक तीव्र असंगति थी।

"तुम हंस रहे हो, मेरे बच्चे, अपने से नीचे शादी करने की बात तुम सोच नहीं सकते। तुम ऐसी पत्नी चाहते हो जो बुद्धि में तुम्हारे बराबर हो। तुम्हारा मस्तिष्क सहयोगिता के रटे-रटाये विचारों से भरा पड़ा है। यह सब बेवकूफी है, मेरे बच्चे! कोई आदमी अपनी बीवी से राजनीति की बातें नहीं करना चाहता और तुम क्या सोचते हो 'डिफ़रेंशियल कैल्कुलस'[1] के बारे में बेटी के विचारों की मैं क्या परवाह करता हूँ? आदमी ऐसी पत्नी चाहता है जो उसका खाना बना सके और उसके बच्चों की देखभाल कर सके। मैंने दोनों की परीक्षा ली है और मैं जानता हूँ। हमें पुडिंग मंगा लेनी चाहिये।"

उसने ताली बजाई और तुरन्त सैली आगई। जब वह प्लेट उठाने लगी फिलिप उसकी मदद करना चाहता था, पर एथेल्नी ने उसे रोक दिया।

"उसे अकेले काम करने दो, मेरे बच्चे। वह नहीं चाहती कि तुम

१. उच्चगणित की एक शाखा विशेष।

तमाशा करो, या चाहती हो, सैली ? और वह इसे कठोरता भी नहीं समझेगी कि तुम बैठे रहो और वह परोसती रहे। वह बहादुरी की जरा भी परवाह नहीं करती, या करती हो, सैली ?"

"नहीं, डैडी," सैली ने विनीत भाव से कहा।

"क्या तुम जानती हो मैं क्या बातें कर रहा हूँ सैली ?"

"नहीं, डैडी ! पर आप जानते हैं, ममी यह नहीं पसन्द करती कि आप कसम खायें।"

एथेल्नी खुल कर हँसा। सैली उनके लिये चावल की पुडिंग की प्लेटें ले आई, स्वादिष्ट, मलाईदार और खूब मीठी। ऐथेल्नी ने जोश के साथ आपना भाग खाना शुरू कर दिया।

"इस मकान का एक कायदा है कि इतवार का खाना कभी बदला न जाय। यह एक धार्मिक कृत्य है। साल के पचास इतवारों को भुंजा हुआ गोश्त और चावल की पुडिंग। ईस्टर[1] के इतवार को बकरे का गोश्त और हरे मटर और मइु के नमाज[2] को भुंजी हुई बत्तख और सेव की चटनी। इस तरह हम अपनी परिपाटी निभाते चले आरहे हैं। जब सैली शादी करेगी बहुत सी बुद्धिमत्ता की बातें जो मैंने सिखाई हैं, भूल जायेगी, पर वह कभी नहीं भूलेगी कि अच्छे और खुश होने के लिये इतवार को भुंजा हुआ गोश्त और चावल की पुडिंग अवश्य खाना चाहिये।"

"जब आप तैयार हों चीड़ा[3] के लिये पुकारें," सैली ने शान्त स्वर में कहा।

'क्या तुम 'हैल्क्यान' की लोक-कथा जानते हो ?" उसकी जल्दी-जल्दी एक विषय से उछल कर दूसरे पर पहुंचने की आदत का अभ्यस्त फिलिप धीरे-धीरे होता जा रहा था। जब किंग फिशर[4] समुद्र के ऊपर

१. ईसाइयों का एक त्योहार २. सेंट माइकेल का त्योहार जो २९ सितम्बर को मनाया जाता है। ३. दूध का एक व्यन्जन। ४. समुद्री चिड़िया।

उड़ते समय, थक जाता है तो उसकी साथिन अपने को उसके नीचे कर देती है और अपने मजबूत डैनों पर उसे लेकर उड़ती जाती है। यही एक आदमी अपनी पत्नी में चाहता है, एक हैल्कयान। मैं अपनी पहली पत्नी के साथ तीन साल रहा था। वह एक लेडी थी, उसके पास पन्द्रह सौ पौंड सालाना आते थे और हम लोग केंसिग्टन के अपने छोटे लाल बंगले में छोटी-छोटी खुशनुमा डिनर पार्टियाँ दिया करते थे। वह बड़ी सुन्दर स्त्री थी; बैरिस्टर और उनकी पत्नियाँ जो हमारे यहाँ खाते थे, साहित्यिक दलाल और उगते हुए राजनीतिज्ञ, सभी यह कहा करते थे; ओह, वह सुन्दर स्त्री थी। उसके कहने से मैं 'फ्राक कोट' और रेशमी हैट पहनकर गिरजे जाता था, वह मुझे उच्चकोटि के संगीत-उत्सवों में ले जाती थी और इतवार की दोपहर के बाद के भाषणों की वह बड़ी शौकीन थी। और हर सुबह वह साढ़े आठ बजे नाश्ता करती थी और मुझे देर हो जाने पर नाश्ता ठंडा हो जाता था; और वह सही किताबें पढ़ती थी, सही तस्वीरों की प्रशंसा करती थी, सही संगीत की प्रेमिका थी। हे भगवान्, वह औरत मुझे कैसे उठाती थी। वह अब भी सुन्दर है, और केंसिग्टन में छोटे लाल मकान में मारिस के कागजों और ह्विसलर की दीवारों पर बनी तस्वीरों के बीच आज भी रहती है और वैसी ही खुशनुमा छोटी डिनर पार्टियां देती है, बछड़े के मांस की क्रीम और गुंटर की आइसक्रीम के साथ, जैसा वह बीस साल पहले करती थी।"

फ़िलिप ने नहीं पूछा कि किस कारण यह बेमेल का जोड़ा अलग हो गया, पर ऐथेल्नी ने उसे बताया।

"तुम समझो, वे मेरी पत्नी नहीं है। मेरी पत्नी मुझे तलाक ही नहीं देती। बच्चे सब जारज हैं, उनमें से हर एक और इस कारण क्या वे कुछ ख़राब हैं? केन्सिगटन के छोटे लाल मकान में बेटी एक नौकरानी थी। चार पाँच साल पहले मैं ऊँचे पद पर था और मेरे सात बच्चे हो गये और मैंने अपनी धर्म पत्नी के पास जाकर मदद करने को कहा। उसने कहा कि अगर मैं बेटी को छोड़कर विदेश चला

जाऊँगा तो वह मुझे कुछ खर्च देगी। क्या तुम समझ सकते हो कि बेटी को छोड़ देता? बदले में हम कुछ दिनों भूखे मरे। मेरी पत्नी कहती थी कि मैं नर्तकियों को प्यार करता हूँ। मैं नीच हो गया हूं; मैं दुनिया की निचली सतह पर आ गया हूँ; मैं एक फिनेन बेचने वाले का प्रेस-एजेंट बनकर तीन पौंड प्रति सप्ताह बचा लेता हूँ और रोज़ ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि केन्सिंगटन के छोटे लाल मकान में नहीं हूँ।"

सैली 'शेबर चीज़' ले आई और ऐथेल्नी अपनी धाराप्रवाह बात-चीत करते रहे।

"यह सोचना दुनियां की सबसे बड़ी बेवकूफी है कि परिवार के पालन पोषण के लिये धन की आवश्यकता पड़ती है। उन्हें 'लार्ड' और 'लेडी' बना लेने के लिये धन की आवश्यकता पड़ती है, पर मैं उन्हें लार्ड या लेडी नहीं बनाना चाहता। अगले साल सैली खुद अपनी रोज़ी कमायेगी। वह एक पोशाक बनाने वाले के यहाँ उम्मीदवार बनेगी, है न सैली? और लड़के अपने देश की सेवा करेंगे। मैं उन सभी को नेवी में भेजना चाहता हूं; यह खुशी और तन्दुरुस्ती की ज़िन्दगी है, अच्छा खाना, अच्छी तनख्वाह और अपने दिन समाप्त करने के लिये पेंशन।"

फ़िलिप ने अपना पाइप जला लिया। ऐथेल्नी हवाना की तम्बाकू की सिगरेट पीता था, जिन्हें वह स्वयं बनाता था। सैली सामान उठाकर ले गई। फ़िलिप चुप बैठा था और इतने सारे भेदों को जानकर उसे बड़ी उलझन हो रही थी। अपने छोटे से शरीर में शक्तिमान स्वर अपने बड़े-बड़े शब्दों, अपनी विदेशी आकृति, अपने जोर देने के ढंग के कारण ऐथेल्नी एक आश्चर्यजनक व्यक्ति हो गया था। ऐथेल्नी देहात के इसी परिवार पर बड़ा अभिमान करता था, जिसका अंश वह था; उसने फ़िलिप को एलिज़ाबेथ के युग की एक इमारत की तसवीर दिखाकर कहा:

"यहाँ ऐथेल्नी परिवार वाले सात शताब्दियों से रह रहे हैं मेरे बच्चे। आह! अगर तुम चिमनी और छत देख पाते!"

दीवार पर लगी लकड़ी में एक आला था और उसमें से उसने एक परिवार की वंशावली निकाली। उसने बच्चों की तरह संतोष के साथ उसे फ़िलिप को दिखाया वास्तव में वह प्रभावशाली था।

"तुम देखते हो न किस तरह परिवार के नाम रहे हैं: थार्प, एकेलस्टन,, हैरल्ड, एडवर्ड; अपने लड़कों के लिये मैंने अपने परिवार के नाम ही प्रयोग किये हैं और लड़कियों को देखना मैंने स्पैनिश नाम दिये हैं।"

एक बेचैन ख्याल फ़िलिप के दिमाग़ में आया कि संभवतः यह कहानी पूरी तरह गढ़ी हुई है पर किसी बुरे इरादे से नहीं, वरन् केवल प्रभाव डालने, चौंका देने और आश्चर्य में डाल देने के लिये कही जाती है। ऐथेल्नी ने उसे बताया था कि वह विंचेस्टर में था; परन्तु फ़िलिप को, जो ढंगों का अन्तर बड़ी आसानी से जान लेता था, नहीं लगता था कि उसके मेहमाननवाज़ में एक बड़े पब्लिक स्कूल में पढ़े आदमी की विशेषतायें नहीं हैं। जब कि ऐथेल्नी अपने पुरखों के बड़े-बड़े विवाह-सम्बन्धों के बारे में बता रहा था, फ़िलिप यह सोच-सोच कर अपना मनोरंजन कर रहा था कि ऐथेल्नी विंचेस्टर के किसी व्यापारी, नीलाम करने वाले या कोयला फरोश, का लड़का तो नहीं है, और फिर 'सरनेम' की 'समानता' ही तो उस पुराने वंश से एकमात्र संबन्ध नहीं है, जिसकी वंशावली वह दिखा रहा था।

दरवाजे पर खटका हुआ और बच्चों की एक सेना भीतर आई। अब वे साफ़ और अच्छे कपड़े पहने थे; उनके चेहरे साबुन से चमक रहे थे और उनके बाल नीचे चमका दिये थे; वे सैली के 'चार्ज' में इतवार के स्कूल में जा रहे थे। ऐथेल्नी ने अपनी नाटकीय, प्रसन्न मुद्रा में उनसे मज़ाक किया, और स्पष्ट था कि वह सबको समान रूप से प्यार करता था। उनकी अच्छी तन्दुरुस्ती और सुन्दर शरीर पर उसका अभिमान भ्रम स्पर्शी था। फ़िलिप को लगा उसकी उपस्थिति के कारण बच्चे कुछ लजाये से हैं और जब उनके पिता ने उनसे जाने को

कहा, तो वे स्पष्टतः सुख से कमरे से भाग गये। कुछ मिनटों में मिसेज़ ऐथेल्नी आ गईं। उन्होंने बाल लहरदार पिनों से बाहर निकाल लिये थे, जिससे वे गुच्छों में लटक रहे थे। उनके शरीर पर एक काली सादी पोशाक थी, सस्ते फूलों वाला एक हैट था और ज्यादा काम करने से लाल और खुरदरे पड़ गये हाथों को वे काले बकरी की खाल के दस्तानों में डाल रही थीं।

"मैं गिरजे जा रही हूँ, ऐथेल्नी," उन्होंने कहा, "तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है न?"

"सिर्फ़ तुम्हारी प्रार्थनाओं की, मेरी बेटी।"

"वे तुम्हें ज्यादा फ़ायदा नहीं पहुंचायेंगी, तुम उनके लिये बहुत आगे जा चुके हो," वे मुस्कराईं। तब फिलिप की ओर बोलीं।

"मैं इन्हें गिरजे नहीं ले जा पाती। ये नास्तिक से अच्छे नहीं।"

"क्या यह रूबें की दूसरी पत्नी सी मालूम नहीं पड़ती?" ऐथेल्नी चीखा, "सत्रहवीं शताब्दी की पोशाक में क्या वह बहुत खूबसूरत नहीं लगेगी? इस तरह की औरत से शादी करनी चाहिये, मेरे बच्चों। देखो इसे।"

"मुझे विश्वास है कि तुम गधे की पिछली टांग के बारे में भी इसी तरह बातें कर सकते हो, ऐथेल्नी," शान्तिपूर्वक उसने उत्तर दिया।

अपने दस्तानों के बटन लगाये और फिर जाने के पहले वह फिलिप की ओर घूमकर मृदुल, कुछ अजीब सी मुस्कान मुस्कराई।

"आप चाय तक रुकेंगे, है न? ऐथेल्नी बातें करने के लिये फ़िलिप को चाहते हैं और अक्सर ऐसा नहीं होता कि उन्हें बातें करने के लिये एक बुद्धिमान आदमी मिल जाये।"

"निस्संदेह, वे चाय तक रुकेंगे," ऐथेल्नी ने कहा। तब जब उसकी पत्नी चली गई; "बच्चों को इतवार के स्कूल में भेजना मैं याद रखता हूँ और बेटी का गिरजे जाना पसन्द करता हूं। मैं सोचता हूँ

कि स्त्रियों को धार्मिक होना चाहिये। मै स्वयं विश्वास नहीं करता, पर चाहता हूं कि पत्नी और बच्चे करें।

दस बजे तक फ़िलिप ने ऐथेल्नी-परिवार नहीं छोड़ा। आठ बजे बच्चे 'गुडनाइट' कहने आए और स्वभावतया उन्होंने फिलिप के चूमने के लिये अपने चहरे ऊपर उठा दिये। उसका हृदय भर आया। केवल सौमी ने अपना हाथ बढ़ाया।

"सैली दोबार किसी आदमी के देखने से पहले उसे चूमती नहीं," उसके पिता ने कहा।

"तब आपको मुझे बुलाना न चाहिये," फ़िलिप ने कहा।

"आपको डैडी की बात पर ध्यान देने की कोई जरूरत नहीं," सैली ने मुस्कराकर कहा।

"वह बड़ी आत्मसंयत लड़की है," उसके पिता ने कहा।

उन्होंने रोटी, चीज़ और बियर का खाना खाया, जब कि मिसेज़ ऐथेल्नी बच्चों को सुलाती रहीं; और जब फिलिप रसोई घर में उनसे गुडनाइट करने गया (वे वहाँ आराम करती बैठी 'वीकली डिस्पेंच' पढ़ रही थीं) उन्होंने बड़ी आत्मियता से फिर आने का निमंत्रण दिया।

"जब तक ऐथेल्नी का काम चल रहा है, हर इतवार को बढ़िया डिनर मिलता रहेगा," उन्होंने कहा, "और आकर उससे बातें करना बड़े पुण्य का काम है।"

अगले शनिवार को फ़िलिप को ऐथेल्नी का एक पोस्टकार्ड मिला जिसमें लिखा था कि वह अगले दिन डिनर के लिये उसका इन्तजार कर रहे हैं; पर इस भय से कि उनकी आमदनी इतनी नहीं है कि मिस्टर ऐथेल्नी चाहें कि वह निमंत्रण स्वीकार करलें उसने उत्तर लिख दिया कि वह सिर्फ चाय पर आयेगा। उसने एक बड़ी केक ख़रीदी जिससे उसके मनोरंजक का मूल्य कुछ न पड़े। उसने पाया कि उसे देखकर सारा परिवार प्रसन्न है और केक ने बच्चों पर उसकी विजय पूरी कर दी। उसने जोर देकर कहा कि वह सभी एक साथ रसोई घर में

चाय पियें और खाना पकाते खूब शोर था और खुशी थे।

जल्दी ही फ़िलिप को हर इतवार को एथेल्नी परिवार में जाने की आदत पड़ गई। वह बच्चों का बड़ा प्यारा हो गया, क्योंकि वह सरल और अभिमानरहित था और क्योंकि यह इतना स्पष्ट था कि बच्चों को प्यार करता था। जैसे ही वे दरवाजे से उसकी घण्टी सुनते, उनमें से एक खिड़की से झाँक कर निश्चय करता कि यह वही है और अब वे सभी प्रसन्नता से शोर करते हुए उसे भीतर लाने नीचे भाग जाते। वे उसकी बाँहों में आ जाते। चाय के समय उसकी बगल में बैठने के लिए लड़ते। जल्दी ही वे उसे फिलिप चाचा कहने लगे।

एथेल्नी बड़ा बातूनी था और थोड़ा-थोड़ा करके फ़िलिप उसके जीवन की अनेक दशायें जान गया। उसने कई व्यवस्था की थीं और फ़िलिप को लगा कि हर चीज को, जिसे उसने शुरू किया होगा, गड़बड़ करने में वह सफल हो गया। वह सीलोन में चाय के बाग में था, और इटली की शराबों के लिये अमेरिका में दौरा करता था; टोलैडो की पानी कम्पनी में उनकी सेक्रेटरी की जगह उसकी और नौकरियों से अधिक स्थायी थी; वह पत्रकार था और कुछ समय तक उसने एक शाम के अखबार के लिये पुलिस कोर्ट के रिपोर्टर का काम किया था; मिडलैंड्स में वह एक अखबार का सहकारी सम्पादक था और सिवियोग में दूसरे का सम्पादक। अपने सभी व्यवस्थायों से उसने मनोरंजन-घटनाएं छाँट ली थीं, जिन्हें वह तीव्र प्रसन्नता के साथ अपनी स्वयं की मनोरंजन की शक्ति के साथ सुनाया करता था। उसने काफी पढ़ा था, विशेष असाधारण पुस्तकें; और अपने आश्चर्यचकित सुनने वालों के सामने बच्चों की तरह खुशी से अपना गम्भीर ज्ञान उड़ेला करता था। तीन चार साल पहले अधिक गरीबी ने कपड़ा बेचने वाले एक फर्म का प्रेस-प्रतिनिध का काम स्वीकार करने को बाध्य कर दिया था; और यद्यपि उसे काम अपनी योग्यता के अनुरूप नहीं लगता था, जिन्हें वह बड़ी ऊँची मानता था, उसकी पत्नी की दृढ़ता और परिवार की आवश्य-

कताओं ने उसे उसी से लगे रहने पर मजबूर कर दिया था।

ऐथेल्नी परिवार से विदा लेने के बाद फ़िलिप चान्सरी लेन पर, फिर स्ट्रैंड के किनारे-किनारे चलने लगता, जिससे पार्लियामेंट-स्ट्रीट के शुरू होते ही उसे बस मिल जाये। एक इतवार को, जब उनसे परिचय हुये छः सप्ताह हो चुके थे, वह हमेशा की तरह चल रहा था परन्तु उसे केनिंगटन की बस भरी मिली। जून का महीना था, पर दिन में पानी बरसा था और रात नम और सर्द थी। जगह पाने के लिये वह पिकैडिली सर्कस तक पैदल गया; बस फ़व्वारे के पास इन्तज़ार करती थी और जब वहाँ पहुँचती थी तो उसमें मुश्किल से दो या तीन आदमी होते थे। बस हर पन्द्रह मिनट बाद आती थी और उसे कुछ समय इन्तज़ार करना पड़ा। वह भीड़ को निरर्थक देख रहा था। पब्लिक हाउस बन्द हो रहे थे और अनेक आदमी इधर-उधर टहल रहे थे। उसका मस्तिष्क उन विचारों में उलझा था, जिन्हें ऐथेल्नी बड़ी सुन्दरतापूर्वक सुझा सकता था।

सहसा उसके हृदय का स्पंदन बन्द हो गया। उसने मिल्ड्रेड को देखा। उसने हफ्तों से उसके बारे में नहीं सोचा था। वह शैफ्टसबरी ऐवेन्यू के कोने से सड़क पार कर रही थी और 'कैब्रों' की कतार को गुज़र जाने देने के लिये सायेबान में खड़ी हो गई। वह आगे निकल जाने का अवसर देख रही थी और उसकी नजर किसी चीज़ पर न थी। सर पर एक बड़ा काला 'स्ट्रॉहैट' और शरीर पर काली रेशम की पोशाक वह पहने थी; उस युग में 'स्कर्ट'[1] पहनना स्त्रियों का फ़ैशन था; सड़क साफ हो गई और मिल्ड्रेड ने सड़क पार कर ली, उसका स्कर्ट जमीन में घसिटता रहा और वह पिकैडिली की ओर चलने लगी। फ़िलिप ने जोर-जोर से धड़कते अपने हृदय के साथ, उसका पीछा किया। वह उससे बोलना नहीं चाहता था, पर उसे आश्चर्य था कि इस समय वह कहाँ जा रही है; वह

१. पीछे की ओर घिसटता रहने वाला एक वस्त्र विशेष।

एक बार उसका चेहरा देखना चाहता था। धीरे-धीरे चलती हुई वह एयर स्ट्रीट पर मुड़ी और इस तरह रीपेन्ट स्ट्रीट पर पहुँच गई। वह फिर सर्कस की ओर चलने लगी। फ़िलिप उलझन में पड़ गया। उसकी समझ में न आया कि वह क्या कर रही है। शायद वह किसी का इन्तज़ार कर रही है, और उसे बड़ी उत्कंठा हुई कि वह आदमी कौन है। उसने कड़े ऊन का हैट पहने एक आदमी को प्यार किया, जो उसकी ही दिशा में बहुत धीमे-धीमे जा रहा था; उसके पास से गुज़रते समय उसने उसे तिरछी दृष्टि से देखा। वह कुछ क़दम और चलकर स्वान एंड एडगर की दूकान के पास पहुंच गई, तब रुककर इन्तज़ार करने लगी, सड़क की ओर मुँह करके। जब वह आदमी आया, वह मुस्कराई। एक क्षण को आदमी ने उसे घूर कर देखा, अपना सिर घुमा लिया और वह आगे बढ़ता गया। तब फ़िलिप समझ गया।

वह अत्यधिक भयभीत हो उठा। एक क्षण के लिये उसे अपने पैरों में इतनी कमजोरी मालूम हुई कि खड़ा रहना मुश्किल हो गया; तब वह तेजी से उसकी ओर चलने लगा; उसने उसकी बांह छूई।

"मिल्ड्रेड!"

वह जोर से चौंक कर घूमी। उसने सोचा, उसका चेहरा लाल हो गया है, पर धुंधलके में वह ठीक तरह से नहीं देखा जा रहा था। एक क्षण तक खड़े होकर बिना कुछ बोले वे एक दूसरे को देखते रहे। आखिर में उसने कहा:

"कल्पना तो करो, मैं तुम्हें देख रही हूँ।"

उसकी समझ में न आया कि क्या उत्तर दे; वह बुरी तरह हिल गया था; और उसके मस्तिष्क में एक दूसरे का पीछा करते हुए वाक्य अविश्वसनीय रूप से अति नाटकीय मालूम पड़े।

"यह बड़ा भयानक है," उसने लगभग स्वयं से कहा।

मिल्ड्रेड ने कुछ न कहकर उसकी ओर से अपना सिर घुमा लिया और फुटपाथ की ओर नीचे देखा। फ़िलिप को लगा कि उसका चेहरा

कष्टों से विकृत हो उठा है।

"क्या कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ बैठकर हम बातें कर सकें ?"

"मैं बातें नहीं करना चाहती," उसने उदास स्वर में कहा, "मुझे अकेला छोड़ दो, नहीं कर सकते ऐसा ?"

फ़िलिप को ख़्याल आया कि शायद उसे पैसों की सख़्त जरूरत है और इस कारण उस समय वह कहीं जा न सकती हो।

"अगर तुम्हें जरूरत हो तो मेरे पास दो पौंड हैं, वह बिना सोचे कह उठा।

"मेरी समझ में नहीं आया तुम्हारा क्या मतलब है। मैं अपने कमरों को लौटती हुई टहल रही थी। मुझे अपने साथ काम करने वाली लड़कियों में से एक से मिलने की आशा थी।"

"भगवान् के लिये मुझसे झूठ मत बोलो," फ़िलिप ने कहा।

तब उसने देखा वह रो रही है और उसने अपना प्रश्न दोहराया।

"क्या कहीं जाकर हम बातें नहीं कर सकते ? क्या मैं तुम्हारे कमरे में नहीं चल सकता ?"

"नहीं, तुम वैसा नहीं कर सकते।" वह सिसकी, "मुझे वहाँ आदमियों को ले जाने की आज्ञा नहीं है। अगर तुम चाहो तो मैं कल तुमसे मिल लूँगी।"

फ़िलिप को निश्चय लगा कि वह समय पर नहीं मिलेगी। वह उसे जाने नहीं देगा।

"नहीं। तुम अभी कहीं चलो।"

"अच्छा तो एक कमरा मैं जानती हूँ, पर वे उसका छः शिलिंग किराया लेंगे।"

"मुझे उसकी परवाह नहीं। वह कहाँ है ?"

मिल्ड्रेड ने उसे पता बता दिया और उसने एक 'कैब' बुलाई। ब्रिटिश म्यूजियम के पीछे, गेज इनडोर के समीप एक गंदी सड़क पर वे चले और मिल्ड्रेड ने कोने पर 'कैब' रुकवाई।

"वे दरवाजे तक 'कैब' का जाना पसन्द नहीं करते," मिल्ड्रेड ने कहा।

'कैब' में बैठने के बाद उन्होंने ये पहले शब्द कहे थे। वे थोड़ी दूर पैदल चले और मिल्ड्रेड ने एक दरवाजे को तीन बार, जोर से खटखटाया। दरवाजे के ऊपर पंखे के आकार की बनी खिड़की से आने वाली रोशनी में उसने एक दफ़्ती देखी जिस पर लिखा था कि कमरे किराये पर दिये जाते हैं। दरवाजा चुपके से खोला गया और एक अधेड़, लम्बी औरत ने उन्हें अन्दर जाने दिया। उसने फ़िलिप को घूरकर देखा और तब धीमे स्वर में मिल्ड्रेड से कुछ कहा। मिल्ड्रेड उसे गलियारे के पीछे के एक कमरे में ले गई। वहाँ काफी अंधेरा था; उसने फिलिप से दियासलाई माँगकर गैस जला दी; ग्लोब नहीं था और गैस की लपट तेजी से इधर उधर हिलने लगी। फिलिप ने देखा कि वह एक सीलन-भरे सोने के कमरे में है, जिसमें उसकी तुलना में काफी बड़ा फर्नीचर, जिसे चिड़ की तरह दिखलाई पड़ने के लिये पेंट किया गया था, रक्खा था; फीते लगे हुये परदे बड़े गंदे थे; अंगीठी की ज़ाली एक बड़े कागज़ के पंखे के पीछे छिपी थी। 'चिमनी पीस' [1] के बगल में रक्खी एक कुर्सी पर मिल्ड्रेड बैठ गई। फ़िलिप बिस्तर के किनारे पर बैठा। उसे शर्म लग रही थी। अब उसने देखा कि मिल्ड्रेड के गालों पर रूप की गहरी परत है, उसकी भवें काली की गई हैं; पर वह दुबली और बीमार दिखलाई पड़ती थी; उदास भाव से वह कागज के पंखे की ओर देख रही थी। फ़िलिप सोच न सका उसे क्या कहना चाहिये और उसका गला इस तरह फँस रहा था जैसे वह रोने जा रहा हो। उसने अपनी आँखें हाथों से ढ़क लीं।

"हे भगवान्, यह भयानक है!" वह कराहा।

---

१. 'फ़ायर प्लेस' के ऊपर की आलमारी।

"मेरी समझ में नहीं आता तुम किस बारे में यह तमाशा कर रहे हो। मैं सोचती थी कि तुम्हें खुशी ही हुई होगी।"

फिलिप ने उत्तर नहीं दिया और एक क्षण में वह सिसकने लगा।

"तुम यह क्यों नहीं सोचते कि ऐसा मैं अपनी पसन्द से करती हूँ?"

"ओह, प्रिय," वह चीखा, "मुझे बड़ा दुःख है, मुझे बहुत दुःख है।"

"इससे मुझे बड़ा लाभ पहुँचेगा।"

"फिर फिलिप के पास कहने को कुछ न रह गया। उसे निराशा मिश्रित भय था कि कहीं वह कोई ऐसी बात न कह दे, जिसे वह भर्तस्ना या व्यंग समझ ले।

"बच्ची कहाँ है?" आखिर उसने पूछा।

"मेरे साथ लंदन में है। ब्राइटन में उसे रखने को मेरे पास पैसे नहीं थे, इसलिये उसे यहाँ बुलाना पड़ा। हाईबरी में मेरे पास एक कमरा है। मैंने उनसे कह दिया है कि मैं स्टोर में काम करती हूँ। हर दिन वेस्ट-एंड आना बड़ा लम्बा रास्ता है, पर स्त्रियों को मकान किराये पर देने वाले भी तो बड़े बिरले ही होते हैं।"

"क्या वे तुम्हें दूकान में फिर नौकर नहीं रख लेंगे?"

"मुझे कहीं कोई काम नहीं मिल सका। काम खोजते-खोजते मेरे पैर घायल हो गये। एक बार मुझे एक काम मिला अवश्य, पर मैं अजीब दशा में थी और एक हफ्ते को चली गई और जब मैं लौटकर वहाँ पहुंची तो वे बोले कि अब उन्हें मेरी जरूरत नहीं है। उन्हें भी तो दोष नहीं दिया जा सकता, है न? उन जगहों पर मजदूर लड़कियों के बिना काम ही नहीं चल सकता।"

"अब भी तुम बहुत अच्छी नहीं दिखलाई पड़तीं," फिलिप ने कहा।

"मैं आज रात बाहर आने योग्य न थी, पर मेरे पास खाना नहीं था, मुझे पैसों की जरूरत थी। मैंने एजिल को लिखा कि मेरे पास जरा भी पैसे नहीं हैं, पर उसने पत्र का उत्तर न दिया।"

"तुम मुझे लिख सकती थीं।"

"जो कुछ हुआ, उसके बाद मैं तुम्हें न लिखना चाहती थी और न ही यह चाहती थी कि तुम जानो कि मैं मुश्किलों में हूँ। अगर अभी तुमने मुझसे कहा होता कि मुझे अपने किये का उचित फल मिल रहा है, तो मुझे आश्चर्य न होता।"

"अब भी तुम मुझे पूरी तरह नहीं समझीं, है न ?"

एक क्षण के लिये उसे उस पीड़ा का ध्यान का आया, जिसे उसे मिल्ड्रेड के कारण बहाना करना पड़ा था और अपने दर्द की याद करके उसे अच्छा नहीं लगा पर यह स्मृति के अतिरिक्त और कुछ न था। जब उसने मिल्ड्रेड की ओर देखा, उसे मालूम हो गया कि अब वह उसे प्यार नहीं करता। उसे उसके लिये बड़ा दुःख था, पर अपनी मुक्ति पर प्रसन्नता भी। गंभीरता से उसे देखता हुआ वह स्वयं से पूछने लगा कि आख़िर क्यों उसके प्यार में वह इतना डूब गया था।

"तुम हर तरफ से शरीफ़ आदमी हो," मिल्ड्रेड ने कहा, "और जितने आदमी आज तक मुझे मिले हैं, उनमें एक तुम्हीं हो।" एक मिनट को रुक कर वह शर्माई। "तुमसे कहने में घृणा लगती है, फिलिप, पर क्या तुम मुझे कुछ दे सकते हो ?"

"यह सौभाग्य है कि मेरे पास इस समय कुछ है। मुझे भय है कि मेरे पास इस समय सिर्फ दो पौंड हैं।"

उसने मिल्ड्रेड को दो पौंड दे दिये।

"मैं तुम्हें वापस कर दूँगी, फ़िलिप !"

"ओह वह ठीक है," फ़िलिप मुस्कराया, "तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं।"

जो कुछ वह कहना चाहता था, उसने कुछ नहीं कहा। वे इस तरह बातें कर रहे थे, जैसे सारी चीज बिल्कुल स्वाभाविक थी; और लगता था कि वह अपने जीवन की भयानकता में वापस लौट जायेगी और उसे रोकने के लिये वह कुछ न कर पायेगा। पैसे लेने के लिये वह खड़ी हो गई थी और अब वे दोनों खड़े थे।

"क्या मैं तुम्हें देर कर रही हूँ ?" उसने पूछा, "मैं सोचती हूँ अब तुम घर पहुँचना चाहोगे।"

"नहीं मैं किसी जल्दी में नहीं हूँ," उसने उत्तर दिया।

"बैठने का अवसर पाकर मैं खुश हूँ।"

उन शब्दों ने, जिनका जो कुछ मतलब था, उसका हृदय चीर दिया और किसी तरह थकावट के साथ वह कुर्सी पर गिर सी पड़ी, उसे देख कर फ़िलिप को बड़ा भयानक दर्द महसूस हुआ। निस्तब्धता इतनी लम्बी हो गई कि फ़िलिप ने घबराहट में सिगरेट जला ली।

"मुझे चोट पहुँचाने वाली कोई बात न कह कर तुमने बड़ा अच्छा किया है, फ़िलिप ! मैं सोचती थी तुम न मालूम क्या-क्या कहोगे।"

उसने देखा वह फिर रोने लगी थी। उसे याद आया कि जब एमिल मिलर ने उसे छोड़ दिया था तो वह उसके पास आकर किस तरह रोई थी। मिल्ड्रेड की पीड़ा और अपने स्वयं के अपमान की स्मृति ने उसे प्रतीत होने वाले दर्द को और बढ़ा दिया।

"अगर मैं इससे बाहर निकल जाती !" वह कराही, "मैं इससे कितनी घृणा करती हूं। मैं इस जीवन के लिये ठीक नहीं हूँ। मैं उस तरह की लड़की नहीं हूँ। इससे निकल भागने के लिये मैं कुछ भी, चाकरी भी, कर सकती हूँ। ओह, मैं मर गई होती तो अच्छा था।"

और अपने प्रति दया के कारण वह अब पूरी तरह फूट पड़ी। वह उन्माद की सी अवस्था में सिसकने लगी और उसका दुबला शरीर काँप-काँप उठने लगा।

"ओह, तुम नहीं जानते, यह क्या है। इसे करने के पहले कोई नहीं जानता।"

फ़िलिप उसको रोते देखना सहन न कर सका। वह अपनी स्थिति के भय से पीड़ित था।

"बेचारी बच्ची," वह फुसफुसाया, "बेचारी बच्ची।"

वह पूर्णतया विचलित हो उठा था। सहसा उसमें एक भाव आया।

वह एक प्रकार की असन्तुलित प्रसन्नता से भर उठा।

"देखो, अगर तुम इससे बाहर निकलना चाहती हो, तो मेरे दिमाग़ में एक ख़्याल आया है। मैं आजकल खुद बड़ी तंगी में हूं और यथा-संभव मितव्यय होता है; पर मेरे पास केनिंगटन में एक छोटा सा फ्लैट है और एक खाली कमरा भी। अगर तुम चाहो तो बच्ची के साथ वहाँ रह सकती हो। मैं एक औरत को साढ़े तीन शिलिंग हर हफ़्ते देता हूँ और वह सफाई करती है और थोड़ा बहुत खाना बना देती है। तुम वह कर सकती हो और इस तरह बचे हुए पैसों से अधिक तुम्हारा खाने का खर्च न होगा। एक के बदले दो को खिलाने में ज्यादा पैसे नहीं लगते और मैं सोचता हूँ कि बच्ची ज्यादा नहीं खाती।"

वह रोना बन्द करके उसकी ओर देखने लगी।

"तुम्हारा मतलब है कि इतना सब होने के बाद भी तुम मुझे वापस ले लोगे?"

इस घबराहट में कि अब उसे क्या कहना चाहिये, फ़िलिप शर्मा गया।

"मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे गलत समझो। मैं सिर्फ तुम्हें एक कमरा, जिसका मुझे कुछ देना पड़ेगा और तुम्हें खाना देना पड़ेगा और तुम्हें खाना दे रहा हूँ। अभी जो औरत काम करती है, उससे अधिक कुछ भी करने की मैं तुमसे आशा नहीं करूँगा। उसके अलावा मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता। मेरा ख्याल है कि काम चलाने लायक तुम खाना बना ही लेती हो।"

"तुम मेरे लिये बड़े अच्छे हो, फ़िलिप!"

"नहीं, कृपा करके जहाँ हो वहीं रुकी रहो," उसने जल्दी से कहा, और हाथ आगे बढ़ाया, जैसे उसे दूर ढकेल रहा हो।

उसे नहीं मालूम था, ऐसा क्यों था, पर यह विचार उसे सहन नहीं हो सका कि मिल्ड्रेड उसे छुए।

"मैं तुम्हारे लिये एक मित्र से ज्यादा कुछ नहीं होना चाहता।"

"तुम मेरे लिये बड़े अच्छे हो," मिल्ड्रेड ने दोहराया, "तुम मेरे लिये बड़े अच्छे हो।"

"क्या इसका मतलब है तुम आओगी ?"

"ओह, हाँ, यहाँ से निकल भागने के लिये मैं कुछ भी करूँगी। तुम अपने किये पर कभी पछताओगे नहीं, फ़िलिप, कभी नहीं। मैं कब आऊँ, फ़िलिप ?"

"कल आना ज़्यादा अच्छा होगा।"

सहसा वह फूट-फूट कर रोने लगी।

"अब तुम क्यों रो रही हो ?" वह मुस्कराया।

"मैं तुम्हारी कितनी कृतज्ञ हूँ मैं समझ नहीं सकती, मैं किस तरह इसका बदला चुका सकूंगी।"

"ओह वह ठीक है अब तुम घर जाओ।"

उसने पता लिखा और उसे बताया कि अगर वह साढ़े पाँच बजे आयेगी तो वह उसके लिये तैयार होगा। इतनी देर हो गई थी और घर तक उसे पैदल जाना पड़ा, पर रास्ता उसे लम्बा न मालूम पड़ा, क्योंकि उस पर प्रसन्नता का नशा था; उसे लग रहा था कि वह हवा में चल रहा है।

: १८ :

दूसरे दिन सवेरे वह जल्दी उठा, जिससे मिल्ड्रेड के लिये कमरा ठीक कर सके। जो औरत उसका काम करती थी उसने उससे कह दिया कि अब उसे उसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मिल्ड्रेड छः बजे के लगभग आई, और फ़िलिप, जो खिड़की से देख रहा था, उसे और उसका सामान लिवाने नीचे गया : अब वह तीन भूरे कागजों में लिपटे हुए तीन बड़े बंडलों के अलावा और कुछ नहीं रह गया था, क्योंकि उसे अत्यधिक आवश्यकता की भी सारी चीजें बेचनी पड़ गईं थीं। वह वही काली पोशाक पहने थी जिसे कल रात में पहने थी और यद्यपि अब उसके

गालों पर सुर्खी नहीं थी, उसकी आंखों में रात का कालापन अब भी था जो सुबह मुंह धोने के बाद भी बाक़ी रह गया था। उसके कारण वह बड़ी बीमार दिखलाई पड़ रही थी। जब वह हाथों में अपनी बच्ची सहित कैब के बाहर निकली तो बड़ी दयनीय मालूम पड़ रही थी। वह कुछ लज्जित मालूम पड़ रही थी और वे साधारण के अलावा कोई बातें न कर सके।

"तो तुम यहाँ ठीक से पहुँच गईं।"

"मैं लन्दन के इस भाग में पहले कभी नहीं रही।"

बच्ची आराम से सो रही थी।

"मुझे आशा है तुम इसे पहचानते नहीं," मिल्ड्रेड ने कहा।

"ब्राइटन ले जाने के बाद मैंने इसे कभी नहीं देखा।"

"कहाँ लिटाऊँ मैं इसे ? यह इतनी वज़नी है कि अधिक समय तक अपनी बाँहों में मैं नहीं रख सकती।"

"मुझे भय है, मेरे यहाँ कोई पालना नहीं है," फ़िलिप ने उत्तेजित हँसी से कहा।

"ओह, वह मेरे साथ सो जायेगी। वह हमेशा यही करती रही है।"

मिल्ड्रेड ने बच्ची को एक आरामकुर्सी पर लिटा दिया और कमरे में चारों ओर देखा। उसकी पुरानी चीजों में से अधिक को वह पहचान गई थी, पिछली गर्मियों के आखिर में लॉसन ने फ़िलिप का सिर और कंधे पेंट किये थे वह चिमनी पीस के ऊपर टंगा हुआ था; मिल्ड्रेड उसे आलोचनात्मक दृष्टि से देखने लगी।

"कुछ बातों में इसे पसन्द करती हूँ, कुछ में नहीं। मैं सोचती हूँ कि तुम इससे ज्यादा अच्छे दीखते हो।"

"सारी बातें ठीक से हो रही हैं," फ़िलिप हँसा, "तुमने पहले कभी नहीं कहा था कि मैं देखने में असमर्थ हूँ।"

"मैं ऐसी नहीं हूँ कि आदमी के चेहरे के लिये परेशान होऊँ। मेरे लिये वे बड़े घमंडी हैं।"

उसकी आँखें अपने आप किसी आइने की तलाश में कमरे में चारों ओर घूम रही थीं, पर वहाँ कोई नहीं था; उसने अपना हाथ उठाकर अपनी चोटी थपथपाई।

"मेरे यहाँ रहने पर दूसरे आदमी क्या कहेंगे ?" उसने सहसा पूछा।

"ओह यहां केवल एक दम्पति रहते हैं। पति दिन भर बाहर रहता है और पत्नी की शनिवार को किराया देते समय के अलावा मैं कभी नहीं देखता। वे हमेशा अपने में रहते हैं। यहां आने के बाद से मैं उनसे दो शब्द भी नहीं बोला हूँ।"

मिल्ड्रेड सोने के कमरे में चली गई, जिससे अपनी चीजें खोलकर ठीक से रख सके। फ़िलिप ने पढ़ने की कोशिश की, पर वह बहुत खुश था। सिगरेट पीते हुए वह अपनी कुर्सी से टिक कर बैठ गया और उसकी मुस्कराती आँखें बच्ची को देखती रहीं। उसे बड़ी खुशी महसूस हो रही थी। उसे विश्वास था कि वह मिल्ड्रेड को प्यार नहीं करता। उसे आश्चर्य था कि उस पुराने भाव ने उसे एकदम छोड़ दिया है; उसने स्वयं में उसके प्रति एक प्रकार का धीमा शारीकि विकर्षण महसूस किया। उसने सोचा कि अगर वह उसे छुएगा तो उसकी त्वचा बत्तख की त्वचा सी मालूम पड़ेगी। वह अपने को समझ न सका। थोड़ी देर में वह दरवाज़ा खटखटाकर भीतर आई।

"तुम्हें दरवाजा खटखटाने की क्या जरूरत ?" फ़िलिप ने कहा, "तुमने पूरा मकान देख लिया ?"

"इससे छोटा रसोई घर मैंने नहीं देखा।"

"हमारा बढ़िया खाना बनाने के लिये तुम्हें वह बड़ा ही महसूस होगा।"

"मैंने देखा वहाँ कुछ नहीं है। अच्छा हो कि मैं जाकर कुछ ले आऊँ।"

"हां, पर मैं फिर याद दिला देना चाहता हूं कि हमें बड़ी कंजूसी

से चलना है ।"

"रात के खाने के लिये क्या लाऊँ ?"

"जो तुम पका सको, वही लाओ," फ़िलिप हँसा ।

उसने मिल्ड्रेड को कुछ पैसे दिये और वह चली गई। आधे घंटे बाद वह भीतर आई और अपनी खरीद उसने मेज पर रख दी। सीढ़ियाँ चढ़ने के कारण उसकी साँस फूल रही थी।

"मैं कहता हूँ, तुम्हारे शरीर में लहू नहीं है," फ़िलिप ने कहा, "मुझे तुम्हें ब्लड की गोलियाँ खिलानी पड़ेंगी।"

"मुझे दूकान खोजने में थोड़ा समय लगा। मैं कुछ जिगर लाई हूँ। वह स्वादिष्ट होता है, न ? और उसे ज़्यादा खाया भी नहीं जा सकता। इससे वह गोश्त से सस्ता पड़ेगा।"

रसोई घर में एक गैस का स्टोव था, जब उसने जिगर पकने रख दिया, मिल्ड्रेड बैठने के कमरे में कपड़ा बिछाने आई।

"तुम एक ही आदमी के लिये क्यों लगा रही हो ?" फ़िलिप ने पूछा, "क्या तुम कुछ नहीं खाओगी ?"

मिल्ड्रेड शरमा गई।

"मैंने सोचा तुम मेरे साथ खाना पसन्द न करो।"

"क्यों नहीं ?"

"क्योंकि मैं केवल एक नौकरानी हूँ, है न ?"

"गधी मत बनो। तुम कैसे इतनी बेवकूफ हो सकती हो ?"

वह मुस्कराया, पर मिल्ड्रेड की नम्रता ने उसके हृदय को एक अजीब तरह से मरोड़ दिया। बेचारी ! उसे याद आया पहली बार जब उसे उसने देखा था तो वह क्या थी। एक क्षण को वह हिचकिचाया।

"यह मत सोचना कि मैं तुम पर कोई अहसान कर रहा हूँ," उसने कहा, "यह बस एक व्यापारिक समझौता है, तुम्हारे काम के बदले में मैं तुम्हें रहने और खाने को दे रहा हूं। तुम पर मेरा कोई कर्ज़ थोड़े ही है और इसमें तुम्हें स्वयं को हीन भी नहीं समझना चाहिये।"

मिल्ड्रेड ने उत्तर नहीं दिया, पर उसके गालों पर भारी-भारी आँसू बहने लगे। अपने अस्पताल के अनुभव को फ़िलिप जानता था कि उस तबके की औरतें नौकरी करना अपमान जनक समझती थीं; उसके सामने व्यग्र होने से वह स्वयं को रोक न सका, पर उसने स्वयं को अपराधी ठहराया, क्योंकि यह स्पष्ट था कि वह बीमार और थकित थी। उठकर उसने मेज पर दूसरे आदमी के लिये जगह बनाने में उसकी सहायता की। बच्ची अब जाग गई थी और मिल्ड्रेड ने उसके लिये कुछ मोलिन का खाना तैयार कर दिया था। जिगर और बेकन तैयार हो गये और वह बैठ गये। मितव्ययता के लिये फ़िलिप ने पानी छोड़कर सब कुछ पीना बन्द कर दिया था, पर उसके पास आधी बोतल ह्विस्की थी और उसने सोचा थोड़ी ह्विस्की से मिल्ड्रेड को चैन मिलेगा। उसने खाने का समय खुशी से बिताने की पूरी कोशिश की, पर मिल्ड्रेड थकी और नमित थी। जब वे खा चुके तो उसने उठकर बच्ची को बिस्तर पर लिटा दिया।

"मैं सोचता हूँ कि जल्दी सो जाने से तुम्हें भी आराम मिलेगा," फ़िलिप ने कहा, "तुम बिल्कुल थकी मालूम पड़ती हो।"

"खाने के बाद मैं भी यही सोचती हूँ।"

अपना पाइप जलाकर फ़िलिप पढ़ने लगा। दूसरे कमरे में किसी को चलता फिरता सुनना बड़ा अच्छा लग रहा था। कभी-कभी एकान्त से वह घबरा उठा करता था। मिल्ड्रेड मेज साफ करने आई और धोते समय प्लेटों की आवाजें उसे सुनाई पड़ीं। यह सोचते हुए वह मुस्कराया कि मिल्ड्रेड का सारा काम काली रेशमी पोशाक में करना कैसा विशेषतापूर्ण है। पर उसे काम करना था और किताबें लाकर उसने मेज पर रख दीं। वह ऑसता की 'मेडिसिन' पढ़ रहा था, बहुत वर्षों से पाठ्य पुस्तक की तरह इस्तेमाल होती आई टेलर की किताब के मुकाबले में विद्यार्थियों का सहयोग पा लिया था। उसी समय मिल्ड्रेड अपनी बाँहें नीचे करती हुई आई। फ़िलिप ने उसकी ओर यों

ही देखा, पर वह हिला नहीं; अवसर बड़ा अजीब था और उसने स्वयं को थोड़ा घबराया हुआ महसूस किया। उसे भय था कि मिल्ड्रेड यह कल्पना करने लगे कि वह बदमाशी करने वाला है और वह नहीं जानता था कि बिना निर्दयता के किस तरह वह उसे फिर विश्वास दिलाये।

"हाँ, कल नौ बजे एक लेक्चर है, इसलिये नाश्ता मैं सवा आठ बजे करूंगा। क्या तुम प्रबंध कर सकेगी ?"

"ओह, हाँ, जब मैं पार्लियामेंट-स्ट्रीट में थी तो रोज सवेरे हर्न हिल से आठ बजकर बारह की ट्रेन पकड़ा करती थी।"

"मुझे आशा है तुम्हें अपना कमरा आराम देह लगेगा बिस्तर पर रात में अच्छी तरह सोने के बाद तुम बिल्कुल परिवर्तित हो जाओगी।"

"मेरा ख्याल है तुम देर तक काम करते हो ?"

"मैं साधारणतः ग्यारह साढ़े ग्यारह तक काम करता हूं।"

'तब मैं गुड नाइट कहूँगी।"

"गुड-नाइट।"

उनके बीच में मेज थी। फ़िलिप ने मिलने के लिये अपना हाथ नहीं बढ़ाया। मिल्ड्रेड ने धीमे से दरवाजा बन्द कर लिया। उसने मिल्ड्रेड को सोने के कमरे में घूमते सुना और थोड़ी देर बाद उसके बिस्तर पर चढ़ने से हुई पलंग की चरमराहट सुनी।

: ९९ :

अगला दिन मंगलवार था। हमेशा की तरह फ़िलिप ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और नौ बजे अपने लेक्चर के लिये भाग गया। मिल्ड्रेड से दो चार शब्द कहने का ही समय उसको मिला। जब वह शाम को लौटा तो उसने उसे खिड़की पर बैठे अपने मेज को साफ करते हुए देखा।

"यानी कि तुम परिश्रम शीला हो," वह मुस्कराया, "दिन भर तुम

क्या करती रही हो ?"

"ओह, मैंने घर को अच्छी तरह साफ किया और बच्ची को थोड़ी दूर तक घुमाने ले गई।"

वह एक पुरानी काली पोशाक पहने हुए थी, जैसी वह चाय की दूकान में काम करते समय वर्दी के रूप में पहना करती थी। वह गंदी थी, पर उसे पहने हुए वह पिछले दिन की रेशम पहनने से अच्छी लगती थी। बच्ची फर्श पर बैठी थी। उसने बड़ी रहस्यमय आँखों से फ़िलिप की ओर देखा और जब वह उसकी बगल में बैठकर उसके अंगूठों से खेलने लगा, तो वह हंस पड़ी। दोपहर के बाद की धूप कमरे में आकर कोमल रोशनी फैला रही थी।

"वापस आकर किसी को घर में पाना बड़ी खुशी की बात है। एक औरत और एक बच्ची कमरे के बड़े अच्छे शृंगार हैं।"

वह अस्पताल के दवाखाने में जाकर ब्लड की गोलियों की एक बोतल ले आया था। उन्हें मिल्ड्रेड को देकर उसने कहा कि दोनों समय खाना खाने के बाद उन्हें अवश्य खा ले। उस दवा की वह अभ्यस्त थी, क्यों कि सोलह वर्ष की होने के बाद उसने अक्सर उसे खाया था।

"मुझे विश्वास है लॉसन तुम्हारी हरी त्वचा को प्यार करने लगेगा," "फ़िलिप ने कहा। "वह कहेगा कि उसे जरूर पेंट करना चाहिये, पर मैं आजकल बहुत दुनियाँदार हो गया हूँ, और मैं तब तक खुश नहीं होऊँगा जब तक तुम ग्वालिनों की तरह सफेद और गुलाबी नहीं हो जाओगी।"

"मैं अभी भी स्वयं को अच्छी महसूस करने लगी हूँ।"

रात का मितव्यय खाना खाने के बाद फ़िलिप ने अपनी जेब तम्बाकू से भरी और हैट सिर पर रक्खा। मंगलवार को ही वह साधारणतः बीक स्ट्रीट की सराय में जाया करता था और उसे खुशी थी कि मिल्ड्रेड के आने के इतने थोड़े दिन बाद ही वह दिन आ गया, क्योंकि उसके साथ अपने संबध को वह बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता था।

"क्या तुम शहर जा रहे हो ?" मिल्ड्रेड ने पूछा।

"हां मंगलवार की रात को मैं स्वयं को आराम देता हूँ। मैं तुमसे कल मिलूंगा। गुड-नाइट।"

फ़िलिप हमेशा खुशी के साथ सराय में जाया करता था। मैकालिस्टर, दार्शनिक दलाल, साधारणतः वहीं रहता था और संसार के किसी भी विषय पर बहस करने को खुशी से तैयार हो जाता था। हेवर्ड जब तक लन्दन में रहता था, वहाँ नियमित रूप से जाया करता था और यद्यपि वह और मैकालिस्टर एक दूसरे को नापसंद करते थे, आदतवश वे हफ्ते में उस शाम एक दूसरे से मिलते ही रहे। मैकालिस्टर सोचता था कि हेवर्ड एक साधारण आदमी है और उसकी भावनाओं की कोमलता पर झुँझला उठा करता था; वह व्यंगात्मक ढंग से हेवर्ड की साहित्यिक कृतियों के बारे में पूछा करता था; और चिढ़ाने वाली मुस्कराहटों के साथ उसके भविष्य की महान कृतियों के धुँधले स्वभाव स्वीकार कर लिया करता था। उनकी बहसें कभी-कभी गरम हो उठा करती थीं; परंतु 'पंच' अच्छी होती थी और दोनों ही उसे पसन्द करते थे; शाम खतम होते-होते वे साधारणतः समझौता कर लेते थे और एक दूसरे को बड़ा अच्छा आदमी समझने लगते थे। आज शाम फ़िलिप ने उन दोनों और लॉसन को वहाँ पाया। लॉसन अब लन्दन में और आदमियों को जानने लगा था और डिनर खाने अक्सर चला जाया करता था, इस क़ारण कम ही आया करता था। वे सभी अच्छे दोस्त थे, क्योंकि मैकालिस्टर ने उन्हें जिता दिया था और हेवर्ड और लासन दोनों ने पचास-पचास पौंड बना लिये थे। यह लॉसन के लिये बड़ी चीज थी क्योंकि वह खर्चीला आदमी था और कमाता कम था। वह पोर्टेट-पेंटर के पेशे की ऐसी स्थिति पर आगया था, जबकि आलोचक आलोचना काफी करने लगे थे और अनेक बड़े खान्दानों की स्त्रियाँ उससे मिलने लगी थीं जो बिना कुछ लिये पेंट कराने को तैयार हो जाती थीं। इससे उन दोनों का ही विज्ञापन होता था और स्त्रियाँ स्वयं को चित्रकला की संरक्षिकाएं

समझने लगती थीं; परन्तु वह कभी-कभी किसी ऐसे ठोस अशिक्षित आदमी को पकड़ लाता था जो अपनी पत्नी के पोर्ट्रेट के लिये अच्छे पैसे देने को तैयार हो। लॉसन सन्तुष्टि से उफना पड़ रहा था।

"पैसा बनाने का यह सबसे बढ़िया तरीका मुझे मालूम पड़ गया है, वह चीखा, "मुझे अपनी जेब में ६ पैन्स के लिये हाथ नहीं डालना पड़ता।"

"यहाँ पिछले मंगलवार को न आकर तुमने कुछ खो दिया," मैकालिस्टर ने फ़िलिप से कहा।

"हे ईश्वर, तुमने मुझे लिखा क्यों नहीं?" फ़िलिप ने कहा, "अगर तुम जान सकते कि सौ पौंड मेरे लिये कितने लाभदायक होते।"

"ओह, उसके लिये समय नहीं था। आदमी को उसी जगह पर होना चाहिए था। पिछले मंगलवार को मैंने एक खुशखबरी सुनी और इन लोगों से कहा कि क्या ये उड़ना पसन्द करेंगे, मैंने इनके लिए बुधवार को सवेरे एक हज़ार के शेयर खरीदे और दोपहर के बाद उनकी कीमत बढ़ी और मैंने उन्हें फौरन बेच दिया। मैंने इनके लिये पचास-पचास पौंड पैदा किये और अपने लिये दो सौ।"

फ़िलिप ईर्ष्या से जल उठा। उसने कुछ दिन पहले ही अपना आख़री बंधक भी बेच दिया था, जिसमें उसका धन लगा हुआ था और अब उसके पास सिर्फ़ छः सौ पौंड बचे थे। भविष्य की बात सोच-सोच कर वह कभी-कभी भयभीत हो उठा करता था। 'क्वालीफ़ाई' होने से पहले अभी दो साल तक उसने खर्च चलाना था और तब किसी अस्पताल में नियुक्ति के लिये कोशिश करने का उसका इरादा था, इसलिये कम से कम तीन साल तक वह कुछ भी पैदा करने की आशा नहीं कर सकता था। बड़ी मितव्ययता के साथ ख़र्च करने पर उसके पास सौ पौंड से अधिक नहीं बच रहेंगे। यह रकम बहुत कम थी, कहीं वह बीमार पड़ गया और पैसे न कमा पाया या किसी समय बेकार हो गया। कोई सौभाग्य शाली जुआ उसके लिये भी अन्तर पैदा कर सकता है।

"ओह, उससे क्या फर्क पड़ता है," मैकालिस्टर ने कहा, "जल्दी ही कुछ-न-कुछ होगा। किसी-न-किसी दिन दक्षिण अफ्रीका के शेयरों पर गर्मी आयेगी और तब मैं देखूंगा, मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ।"

मैकालिस्टर शेयर मार्केट में था और अक्सर साल-दो-साल पहले व्यापार में गर्मी आने पर बन जाने वाली आकस्मिक धन-राशि की कहानियां सुनाया करता था।

"हां, तो अगली बार भूलना मत।"

वे लगभग आधी रात तक बातें करते बैठे रहे और फ़िलिप, जो सबसे दूर रहता था, सबसे पहले चल दिया। अगर वह आखरी ट्राम नहीं पकड़ पायगा तो उसे पैदल चलना पड़ेगा और उसे बड़ी देर हो जायगी। कुछ भी हो वह साढ़े बारह बजे से पहले घर नहीं पहुँच सका। जब वह ऊपर पहुँचा तो मिल्ड्रेड को आराम कुर्सी पर बैठे देखकर उसे आश्चर्य हुआ।

"तुम अभी तक सोई क्यों नहीं ?" वह चीखा।

"मुझे नींद नहीं आ रही थी।"

"फिर भी तुम्हें बिस्तर पर तो लेटना ही चाहिये था। आराम मिलता।"

वह हिली नहीं। उसने देखा कि खाना खाने के बाद उसने अपनी रेशमी पोशाक पहन ली थी।

"मैंने सोचा मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करलूँ, शायद तुम्हें किसी चीज की ज़रूरत हो।"

उसने फ़िलिप को देखा और उसके पतले, पीले होठों पर मुस्कान की छाया खेल गई। फ़िलिप की समझ में न आया कि वह समझ सका या नहीं। वह थोड़ा परेशान हुआ, पर तब अपने चेहरे पर खुशी और साधारणता का भाव ले आया।

"अच्छा गुड-नाइट !"

"क्या तुम अभी ही सो जाना चाहते हो ?"

"लगभग एक बज गया है। आजकल देर तक जगने की आदत मुझ में नहीं रह गई," उसने कहा।

मिल्ड्रेड ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे पकड़े हुए उसने हल्की मुस्कराहट के साथ उसकी आँखों में देखा।

"फ़िलिप, उस रात उस कमरे में तुमने मुझसे यहाँ आकर रहने को कहा था, मेरा मतलब यह नहीं था जो तुमने सोचा। मेरा मतलब था, जब तुमने कहा था कि तुम मुझसे अपने लिये महाराजिन और नौकरानी से ज्यादा कुछ नहीं चाहते।"

"तुम्हारा वह मतलब नहीं था?" अपना हाथ खींचते हुए फ़िलिप ने कहा, "मेरा मतलब वही था।"

"ऐसे बदतमीज़ मत बनो," वह हंसी।

फ़िलिप ने अपना सिर नकारात्मक हिलाया।

"मैंने बड़ी गंभीरता से वह कहा था। किसी और दशा में मैं तुमसे यहां रहने को न कहता।"

"क्यों नहीं?"

"मैं महसूस करता हूँ कि मैं नहीं कह सकता था। मैं कारण नहीं बता सकता, पर उससे सब नष्ट हो जायगा।"

"मिल्ड्रेड ने अपने कंधे उचकाये।

"ओह बहुत अच्छा, जैसा तुम चाहो। मैं अपने हाथ और घुटने जोड़कर तुमसे वह न माँगूंगी।"

अपने पीछे का दरवाज़ा बन्द करते हुए वह चली गई।

: २० :

उनका जीवन काफी सरलता से चलता रहा। फ़िलिप सारा दिन अस्पताल में बिताता और शाम को घर में काम करता, सिवा तब के जब ऐथेल्नी के यहाँ या ब्रीक स्ट्रीट की सराय में जाता। एक बार उसके डाक्टर ने, जिसके लिए उसने क्लर्की की थी, उसे आदरपूर्ण डिनर पर

बुलाया और दो या तीन बार साथ के विद्यार्थियों द्वारा दी हुई दावतों में गया। मिल्डेड ने अपने जीवन की एकरसता स्वीकार करली। अगर कभी उसे फ़िलिप का शाम को अकेला छोड़ जाना बुरा लगता, तो भी वह कभी कहती नहीं। कभी-कभी वह उसे म्यूज़िक-खेल में ले जाता। उसने अपने इरादे का पूरा-पूरा पालन किया कि उनके बीच का बंधन केवल यही था कि उसके रहने और खाने के पैसों के बदले वह उसका घर का काम कर दिया करती। मिल्ड्रेड ने निश्चय कर लिया था कि उन गर्मियों में काम की तलाश करना बेकार था और फ़िलिप की सलाह से पतझड़ तक यों ही रहने का इरादा कर लिया। उसका ख्याल था कि उस समय काम आसानी से मिल जायेगा।

"जहाँ तक मेरा सवाल है, जब तुम्हें काम मिल जाये तब भी अगर सुविधा हो तो यहीं रह सकती हो। कमरा है ही और जो पहले यहाँ काम करती थी, फिर आकर बच्ची की देखभाल करने लगेगी।"

अन्दर के मरीजों के क्लर्क की हैसियत से काम करने वाले दूसरे 'टर्म' के अन्त में फ़िलिप के भाग्य ने जोर मारा। जुलाई का मध्य था। एक दिन मंगलवार की शाम को बीक-स्ट्रीट की सराय में गया और वहाँ उसने मैकालिस्टर के सिवा किसी को नहीं पाया। वे बैठकर अपने अनुपस्थिति दोस्तों के बारे में बातें करने लगे और कुछ देर बाद मैकालिस्टर ने उससे कहा।

"ओह, मुझे आज एक खुशखबरी सुनाई पड़ी है, 'न्यू क्लीन फान्टीस' यह रोडेशिया में एक सोने की खान है। अगर तुम भी उड़ना चाहो, तो थोड़ा सा ले लो।"

फ़िलिप ऐसे अवसर की आकुल प्रतीक्षा में था, पर अब उसके आने पर हिचकिचाने लगा। उसे अपना धन खो देने का निराशा जनक भय था। उसमें जुआरी की सी आदत नहीं थी।

"मैं ऐसा करना तो चाहूँगा, पर मैं सोच नहीं पाता कि ख़तरा उठाने का साहस करूँ या नहीं। अगर गड़बड़ हो गया तो मैं कितने पैसे

खोऊँगा ?"

"मैं तुम्हें बताता ही न, अगर तुम इसके बारे में इतने आतुर न होते," मैकालिस्टर ने निरुत्साह होकर कहा।

फिलिप को लगा मैकालिस्टर उसे गधे की तरह देख रहा है।

"मैं कुछ रुपये बनाने को तो बिल्कुल तैयार हूँ," वह हँसा।

"अगर तुम रुपये खोने को तैयार नहीं हो तो रुपये बना भी नहीं सकते।"

मैकालिस्टर दूसरी चीजों के बारे में बातें करने लगा और फिलिप उसे जवाब देते हुए, सोचता रहा कि अगर यह व्यवसाय ठीक से पूरा हो जायेगा, तो अगली बार मिलने पर दलाल उसका बड़ा मजाक बनायेगा। मैकालिस्टर व्यंग बहुत बोलता था।

"मैं सोचता हूँ कि मैं एक बार कोशिश करूँगा, अगर तुम बुरा न मानो," उसने आतुर स्वर में कहा।

"बहुत अच्छा। मैं तुम्हारे लिये दो सौ पचास शेयर खरीदूँगा और अगर आधे क्राउन उनकी कीमत बढ़ी तो उन्हें फौरन बेच दूँगा।"

"फिलिप ने फौरन हिसाब लगाया कि वह कितना रुपया हो जायगा, और उसके मुंह में पानी भर आया; उस समय तीस पौंड ईश्वर की देन ही होंगे और उसने सोचा भाग्य के ऊपर उसका अब कर्ज हो गया है। दूसरे दिन सवेरे नाश्ता करते समय उसने मिल्ड्रेड से बताया कि उसने क्या कर डाला है। उसने उसे बहुत बेवकूफ समझा।

"मैं तो किसी ऐसे आदमी को नहीं जानती जिसने सट्टे में रुपया कमाया हो," उसने कहा, "यही तो हमेशा एमिल भी कहा करता था। कोई आदमी सट्टे में रुपया नहीं पैदा कर सकता, वह कहता था।"

घर लौटते समय फिलिप ने एक शाम का अखबार खरीदा और उसका बाजार-भाव वाला स्तंभ पहले ही खोला। उसे इन चीजों के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था और मैकालिस्टर के बताये हुए स्टॉक को खोलने में उसे कुछ मुश्किल पड़ी। उसने देखा कि उनके दाम चौथाई

बढ़ गये थे। उसका हृदय उछल पड़ा और फिर यह सोच-सोचकर उसका जी बैठने लगा कि कहीं मैकालिस्टर भूल गया हो या किसी कारण से खरीद न पाया हो। मैकालिस्टर ने तार देने का वायदा किया था। फिलिप घर जाने के लिये ट्राम का इन्तजार न कर सका। वह एक कैब में बैठा। यह अनभ्यस्त शाहखर्ची थी।

"मेरे लिये कोई तार है क्या ?" अन्दर पहुंचते ही उसने पूछा।

"नहीं," मिल्ड्रेड ने कहा।

उसका चेहरा लटक गया और कड़वी निराशा के साथ वह कुर्सी पर गिर सा गया।

"तब उसने मेरे लिये खरीदे ही नहीं। बुरा हो उसका," उसने क्रोध से जोड़ा, "कैसा अभाग्य है और सारे दिन मैं सोचता रहा था कि उस धन का क्या करूँगा।"

"क्यों, तुम क्या करने जा रहे थे ?" मिल्ड्रेड ने पूछा।

"अब उसके बारे में सोचने से क्या लाभ ? ओह, मुझे पैसों की बुरी तरह जरूरत थी।"

उसने हँसकर एक तार उसके हाथ पर रख दिया।

"मैं तुमसे सिर्फ़ मजाक कर रही थी। मैंने इसे खोल लिया था।"

उसने उसे मिल्ड्रेड के हाथ से लगभग छीन लिया। मैकालिस्टर ने ढाई सौ शेयर खरीद लिये थे और पहले के कथनानुसार आधे क्राउन के लाभ पर बेच दिये थे। कमीशन अगले दिन आयेगा। एक क्षण के लिये फिलिप मिल्ड्रेड पर उसके कठोर मजाक के लिये नाराज हो उठा, पर तब उसे केवल अपनी खुशी का ख्याल रह गया।

"इससे मेरे लिये कितना अन्तर पड़ जाता है," वह चीखा "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें एक नई पोशाक दे सकता हूँ।"

"मुझे इसकी बुरी तरह जरूरत है," मिल्ड्रेड ने उत्तर दिया।

फिलिप के विचारों में आजकल धन का प्रमुख स्थान रहता था। उस उड़ती हुई कहावत में, जिसे वह स्वयं ही अकसर कहा करता था,

उसे सत्य का तनिक भीअंश नहीं दिखलाई पड़ता था, कि दो आदमी एक आदमी की तरह ही रास्ते में रह सकते हैं और खर्च की अब उसे चिन्ता होने लगी थी। मिल्ड्रेड अच्छी प्रबन्धक न थी और उनका खर्च उतना ही पड़ता था जितना किसी रेस्तराँ में खाने पर लगता; बच्ची को कपड़ों की जरूरत थी और मिल्ड्रेड को जूतों की एक छाता और दूसरी छोटी-छोटी चीजों की आवश्यकता थी, जिनके बिना उसका काम चलना असम्भव था। उसने नौकरी करने का अपना इरादा स्पष्ट कर दिया था, पर कोई ठोस कदम नहीं उठा रही थी और तभी गहरे जुकाम के कारण पन्द्रह दिन के लिये उसे बिस्तर पर पड़े रहना पड़ा। जब वह ठीक हुई तो उसने एक दो विज्ञापनों को लिखा, पर उसका नतीजा कुछ न निकला; या वह देर में पहुँचती और खाली जगह भर चुकी होती, या काम उसकी शक्ति से बाहर होता। एक बार उसे एक काम का प्रस्ताव मिला, पर पारिश्रमिक सिर्फ चौदह शिलिंग प्रति सप्ताह था और उसका विचार था कि उसकी कीमत इससे ज्यादा है।

"अपने को झुकाना ठीक नहीं," उसने कहा, "अगर बहुत सस्ते में काम करो तो लोग इज्जत नहीं करते।"

"लेकिन चौदह शिलिंग इतने बुरे तो नहीं," फिलिप ने शुष्क स्वर में उत्तर दिया।

फिलिप यह सोचने से स्वयं को रोक न सका, कि यह घर के खर्च के लिये कितना लाभदायक होता और मिल्ड्रेड इशारे करने लगी थी कि उसे काम इसलिये नहीं मिलता क्योंकि काम देने वालों से इन्टरव्यू करने के लिये उसके पास अच्छे कपड़े नहीं हैं। उसने उसे कपड़े बना दिये और उसने एकाध प्रयत्न और किये, पर फिलिप ने परिणाम निकाला कि वह गंभीरतापूर्वक नहीं किये गये थे। वह काम करना चाहती ही न थी। पैसा बनाने का सिर्फ एक रास्ता सट्टे वाला उसे मालूम था और गर्मियों में सफल प्रयोग के दोहराने के लिये वह बड़ा उत्सुक था; लेकिन ट्रांसवाल में लड़ाई छिड़ गई थी और दक्षिणी अफ्रीका के शेयरों में कुछ न रहा

था । मैकालिस्टर ने कहा कि एक महीने में रेडवर्स बुलार प्रेटोरिया पहुँच जायगा और तब सब ठीक हो जायगा : प्रश्न केवल धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने का था। फिलिप अपने प्रिय अखबार की 'स्थानीय बातचीत' गंभीरतापूर्वक पढ़ने लगा। वह परेशान था और आसानी से चिढ़ने लगा था। एक दो बार वह मिल्ड्रेड से तेज स्वर में बोला और चूँकि न तो वह चालाक थी और न धैर्यवान, उसने क्रोध से उत्तर दिया और वह लड़ पड़े। फिलिप हमेशा अपनी कही बातों की माफी मांग लेता, पर मिल्ड्रेड का स्वभाव क्षमाशील न था और वह दो-तीन दिन तक मन-ही-मन कुढ़ती रहती। फिलिप को उसकी हर बात से जिद लगने लगती; जिस ढंग से वह खाती और जिस फूहड़पन के कारण वह बैठने के कमरे में कपड़े छोड़ रखती।

फिलिप मिल्ड्रेड की मूर्खता पर चिढ़ गया; पर अब वह उससे इतना विरक्त था कि बहुत कम वह उसे क्रोधित कर पाती। उसके आस-पास रहने की उसे आदत पड़ गई। बड़ा दिन आया और उसके साथ फिलिप की दो दिन की छुट्टी थी। कुछ 'हॉली' [1] वह खरीद लाया और उनसे उसने अपना घर सजाया और बड़े दिन पर उसने मिल्ड्रेड और बच्ची को कुछ उपहार दिये। वे केवल दो ही आदमी थे इसलिये 'टर्की' नहीं ले सके, पर मिल्ड्रेड ने एक मुर्गी भूँजी और स्थानीय किराने की दूकान से खरीदी हुई 'बड़े दिन की पुडिंग' उबाली। उन्होंने एक बोतल शराब की भी ली। जब वे खाना खा चुके, फिलिप अपना पाइप पीते हुये आग के पास आरामकुर्सी पर बैठ गया; और उस अनभ्यस्त शराब ने उसे सदा साथ रहने वाली रुपयों की चिन्ता से मुक्त कर दिया। उसने प्रसन्न और आराम से स्वयं को महसूस किया। थोड़ी देर बाद मिल्ड्रेड ने आकर उससे कहा कि बच्ची चाहती थी कि वह उसे 'गुडबाई' का चुम्बन ले और वह मुस्कराकर मिल्ड्रेड के सोने के कमरे में गया। तब, बच्ची से

१. एक सदाबहार गुल्मविशेष जिसमें बेर की तरह के फल लगते हैं।

सोने को कहकर, उसने गैस धीमी कर दी और दरवाजा खुला छोड़कर कि शायद वह रोये, वह बैठने के कमरे में चला गया ।

"तुम कहाँ बैठोगी ?" उसने मिल्ड्रेड से पूछा ।

"तुम अपनी कुर्सी पर बैठो । मैं धरती पर बैठ जाऊँगी ।"

जब वह कुर्सी पर बैठ गया, वह आग के सामने उसके घुटनों के सामने बैठ गई । उसे बरबस याद आया कि इसी तरह वह मिल्ड्रेड के वॉक्साल ब्रिज रोड वाले मकान पर बैठे थे, पर उनकी जगहें उलटी थीं । वह धरती पर बैठा था और उसका सिर मिल्ड्रेड के घुटनों से टिका था । तब वह कितने उछाह से उसे प्यार करता था ! अब उसके प्रति उसके मन में एक तरह की कोमलता आई, जिसे उसने बहुत दिनों से नहीं जाना था । उसे लगा बच्ची के कोमल छोटे-छोटे हाथ अब भी उसकी गर्दन के चारों ओर लिपटे हैं ।

"तुम आराम से हो ?" उसने पूछा ।

मिल्ड्रेड ने आँखें उठाकर उसे देखा, वह मुस्कराई, तब उसने सिर हिलाया । वह स्वप्न में से आग की ओर देखने लगे, बिना एक दूसरे से बोले हुये । आखिर वह घूमी और उसने अजीब दृष्टि से उसे देखा ।

"तुम्हें मालूम है यहाँ आने के बाद से तुमने कभी मेरा चुम्बन नहीं लिया है ?" सहसा उसने कहा ।

"क्या तुम चाहती हो मैं तुम्हें चूमूँ ?" वह मुस्कराया ।

"मेरा ख्याल है उस तरह से अब तुम मेरी परवाह नहीं करते ?"

"मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ ।"

"तुम बच्ची को ज्यादा चाहते हो ।"

उसने उत्तर नहीं दिया और मिल्ड्रेड ने उसके हाथ पर अपना गाल रख दिया ।

"तुम मुझ पर अब तो नाराज नहीं हो ?" थोड़ी देर बाद उसने अपनी आँखें नीची किये हुये पूछा ।

"मैं क्यों तुम पर नाराज रहूँ ?"

"अब की तरह मैंने पहले कभी तुम्हारी परवाह नहीं की। उस आग में से गुजरने के बाद ही मैं तुम्हें प्यार करना सीख पाई हूँ।"

सस्ते उपन्यासों, जिन्हें वह रुचि से पढ़ा करती थी, के वाक्यों की तरह का वाक्य उसे प्रयोग करते देखकर फ़िलिप का उत्साह ठंडा हो गया। तब वह सोचने लगा कि उसके कथन का उसके लिये भी कुछ मतलब था या नहीं; शायद उसे अपनी वास्तविक भावनाओं को व्यक्त करने की शब्दाडम्बरमय भाषा के अलावा और कोई राह नहीं मालूम थी।

"हमारा इस तरह साथ-साथ रहना बड़ा अजीब मालूम पड़ता है।"

उसने काफी देर तक कोई उत्तर नहीं दिया और उनके बीच फिर निस्तब्धता छा गई; पर आखिर वह बोला और आगे उसे बीच के समय की याद नहीं थी।

"तुम्हें मुझ पर नाराज नहीं होना चाहिये। कोई हमारा कुछ कर नहीं सकता। मुझे याद है बहुत सी बातें करने के लिये मैं तुम्हें बदमाश और निर्दय समझता था। पर यह मेरी मूर्खता थी। तुम मुझे प्यार नहीं करती थीं और उसके लिये तुम्हें अपराधी ठहराना असंगत था। मैं सोचता था मेरे कोशिश करने पर तुम मुझे प्यार करने लगोगी, पर अब मैं जानता हूँ यह असम्भव था। मैं नहीं जानता तुममें वह क्या चीज है जो किसी को तुमसे प्यार करने पर बाध्य कर देती है, पर वह जो कुछ भी है और यह अगर वहाँ नहीं है तो तुम उसे दयालुता या उदारता या उसी तरह किसी और चीज़ से पैदा नहीं कर सकतीं।

"मैं सोचती थी अगर तुम मुझे सचमुच प्यार करते थे तो अब भी करते होगे।"

"मुझे भी यही सोचना चाहिये था। मुझे याद है मैं कैसे सोचा करता था कि वह जीवन भर रहेगा, मैं महसूस करता था कि तुम्हारे साथ बिना रहे मैं मर जाऊँगा और मैं उस समय की प्रतीक्षा किया करता था जब तुम बूढ़ी और झुर्रियों वाली हो जाओगी कि कोई

तुम्हारी परवाह नहीं करेगा और मैं तुम्हें केवल अपनी बना सकूंगा।"

मिल्ड्रेड ने उत्तर नहीं दिया और थोड़ी देर में वह उठ खड़ी हुई और बोली वह सोने जा रही है। वह एक खिस्यानी मुस्कान मुस्काई।

"आज बड़ा दिन है फिलिप, क्या तुम मुझे सोने से पहले चूमोगे नहीं?"

वह हंसा, थोड़ा शर्माया और उसने उसे चूम लिया। वह अपने सोने के कमरे में चली गई और वह पढ़ने लगा।

: २१ :

उत्कर्ष दो तीन हफ़्ते बाद आया। फ़िलिप के व्यवहार ने मिल्ड्रेड को एक अजीब क्रोध की स्थिति में पहुंचा दिया। उसके भीतर अनेक भिन्न-भिन्न भावनायें थीं और वह आसानी से 'मूड' बदल लेती थी। वह अपना बहुत सा समय अकेले अपनी स्थिति के बारे में सोच-सोच कर व्यतीत करती। अपनी सभी भावनाएं वह शब्दों में व्यक्त न करती। उसे मालूम ही नहीं था वे क्या थीं, पर कुछ चीजें उसके मस्तिष्क में अलग थीं और वह उनके बारे में बार बार सोचती। वह फ़िलिप को कभी समझ नहीं पाई थी, न ही कभी ज्यादा पसन्द कर पाई थी, पर उसे अपने पास पाकर प्रसन्न थी क्योंकि सोचती थी वह शरीफ़ आदमी है। वह प्रभावित थी क्योंकि फिलिप के पिता डाक्टर थे और चचा पादरी। वह उसे थोड़ा हीन समझती थी क्योंकि उसने उसे बेवक़ूफ़ बनाया था और साथ ही उसकी उपस्थिति में वह आराम से भी न रहती; वह अपने को कहीं और न ले जा पाती और महसूस करती कि वह उसके रहने के ढंग की आलोचना करता है।

जब वह पहले पहल केनिंगटन के छोटे कमरों में रहने आई थी, थकी और शर्मिंदा थी। अकेले छूट जाने पर खुश रहती थी। यह आराम की बात थी कि किराया नहीं देना था; हर मौसम में उसे बाहर जाने की जरूरत न थी और तबियत खराब होने पर बिस्तर पर

लेटकर आराम कर सकती थी। उस तरह की जिन्दगी को वह घृणा करती थी। नम्र और साधनमात्र होकर रहना बड़ा भयानक था; और अब भी जब वह पुरुषों की कठोरता और उनकी निर्दय भाषा की याद करती तो अपने पर तरस खाकर रो पड़ती। पर उसे याद बहुत कम आती, उसकी सहायता के लिये आगे बढ़ने के लिये वह फ़िलिप की कृतज्ञ थी और जब उसे याद आता कि कितनी ईमानदारी से वह उसे प्यार करता था और कितनी बुरी तरह उसने उसके साथ व्यवहार किया था, उसे दुःख की अनुभूति हो आती। उसके साथ समझौता कर लेना आसान था। उसके लिये यह काम भी था। जब उसने उसका सुझाव अस्वीकार कर दिया, वह आश्चर्य में पड़ गई थी, पर उसने अपने कंधे उचकाये थे; अगर वह चाहता है तो अभिमान करता फिरे, उसे परवाह न थी, कुछ दिनों में वह स्वयं आतुर हो उठेगा और तब अस्वीकार करने की उसकी बारी होगी; अगर वह सोचता हो इससे मिल्ड्रेड की कोई हानि होगी तो वह बहुत बड़ी गलती कर रहा था। उसके ऊपर अपनी शक्ति में उसे कोई सन्देह न था। वह अजीब था, पर वह उसे पूरी तरह जानती थी। अनेक बार वह उससे लड़ा था और कसम खा गया था कि कभी उसे नहीं देखेगा और तब थोड़े दिन में अपने घुटने के बल बैठकर उसने क्षमा माँगी थी। यह सोचकर उसके शरीर में सिरहन हो उठी कि उसकी कैसी चापलूसी करता था। वह खुशी से जमीन पर लेट जाता, जिससे उसके ऊपर चल सके। उसने उसे रोते देखा था। उसे ठीक-ठीक मालूम था उसके साथ कैसा व्यवहार होना चाहिये, उस पर ध्यान मत दो, बहाना करो कि तुमने उसका क्रोध देखा ही नहीं, उसे बिल्कुल अकेला छोड़ दो और निश्चय ही थोड़ी देर में वह झुक जायेगा। जब उसे याद आया कि किस तरह आकर उसने उसके सामने धूल चाटी थी तो वह हंस पड़ी, हल्की हंसी। उसका अपना दौर खत्म हो चुका था। उसे मालूम हो गया था आदमी कैसे होते हैं और उनके साथ अब सम्पर्क नहीं रखना चाहती थी। वह

फ़िलिप के साथ घर बसाने को बिल्कुल तैयार थी । सब कुछ कहे जाने के बाद, वह असल में शरीफ़ आदमी था और वह ऐसी चीज़ थी जिसका मज़ाक नहीं बनाया जा सकता था, था न ? कुछ भी हो वह जल्दी में न थी और न ही पहला कदम उठाने जा रही थी । उसे यह देखकर खुशी होती थी कि वह बच्ची को कितना चाहने लग गया था, यद्यपि बच्ची उसे गुदगुदाती काफ़ी थी । यह हास्यास्पद था कि दूसरे आदमी की बच्ची को वह इतना प्यार करे । निश्चय ही वह अजीब था ।

परन्तु एक-दो चीज़ें उसे आश्चर्य में डाले थीं । यह उसकी साधन-मात्र की अभ्यस्त थी; पिछले दिनों में उसके लिये कुछ कर जाने में वह बहुत खुश हो उठता था । एक क्रोध में भरे शब्द से नम्र हो जाते और एक ही सीधे सादे शब्द से खुशी से उछल पड़ते देखने की वह अभ्यस्त थी; अब वह बदल गया था और वह अपने से कहती पिछले एक साल में उसने उन्नति नहीं की । एक क्षण के लिये उसे ख्याल नहीं आया कि उसकी भावनायें भी बदल सकती थीं और जब वह उसके बुरे स्वभाव पर कोई ध्यान न देता तो वह उसे सिर्फ़ अभिनय समझती । कभी-कभी वह पढ़ना चाहती तो उसे मना कर देता : वह नहीं समझ पाती थी कि इस पर नाराज़ होना चाहिये या कुढ़ना चाहिये और इतनी उलझन में पड़ जाती थी कि कुछ न करती थी । तब वह बातचीत हुई जब फिलिप ने उसे बताया कि उनके सम्बन्ध वासनाहीन होंगे और अपने सम्मिलित भविष्य की बात याद करके उसे लगा कि उससे गर्भवती हो जाने की आशंका से वह डरता था । वह उसे समझाने की कोशिश करती । उससे कोई अन्तर न पड़ता । वह उस तरह की औरत थी जो नहीं समझ सकती थी कि पुरुष में उसकी तरह की यौन-भूख न हो सकती थी; पुरुषों से उसके सम्बन्ध बिलकुल उसी तरह के थे; और वह समझ न पाती थी कि पुरुषों की और पसन्दें भी हो सकती थीं । उसे ख्याल आया कि फ़िलिप किसी

और से प्यार करने लगा था और अस्पताल की नर्सों वा दूसरे व्यक्तियों पर सन्देह करके उसकी निगरानी रक्खा करती थी; पर चालाकी से भरे सवालों से उसने नतीजा निकाला कि ऐथेल्नी परिवार में कोई ख़तरनाक आदमी नहीं था, यों उसे विश्वास सा ही हो गया कि फ़िलिप को अधिकतर मेडिकल के विद्यार्थियों की तरह काम के कारण सम्पर्क में आने वाली नर्सों के सेक्स का भान नहीं है। उसके मस्तिष्क में आयोडोफार्म की भीनी खुशबू सहित ही वे रहती थीं। फ़िलिप के पास कोई पत्र नहीं आते थे और उसके सामान में किसी लड़की का फोटो न था। यदि वह किसी को प्यार करता था तो उसे छिपाने में बड़ा होशियार था; और वह मिल्ड्रेड के प्रश्नों के उत्तर स्पष्टत: और बिना सन्देह किये हुये कि उनके पीछे कोई अभिप्राय था, देता था।

"मुझे विश्वास नहीं होता कि वह किसी और से प्यार करता है," आखिर उसने अपने आप से कहा।

यह चैन की बात थी, क्योंकि वैसी हालत में वह अवश्य ही अब भी उसी से प्यार करता था; परन्तु ऐसा मानने पर उसका व्यवहार बड़ा उलझन भरा था। यदि उसे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना था तो उसने उसे आकर अपने फ्लैट में रहने को कहा ही क्यों? यह अस्वा-भाविक था मिल्ड्रेड ऐसी स्त्री न थी जो तरस, उदारता या दयालुता की सम्भावना समझ सकती। उसका निर्णय केवल यही था कि फिलिप अजीब था। उसने सोच लिया उसके व्यवहार का कारण केवल नीर-वतासूचक था; और उसकी कल्पना सस्ते कथा साहित्य की उच्छृखंलता से भर उठी। फिलिप के नाज के अनेक प्रकार के ढंग वह अपने सामने देखती। कड़वे भ्रम, अग्नि से शुद्धि, बर्फ की तरह सफेद आत्माएँ और बड़े दिन की रात की क्रूर सर्दी में मृत्यु आदि के चारों ओर उसकी कल्पना मंडराया करती। जब उसने देखा कि किसी प्रकार भी फिलिप उसके साथ एक कमरे में न रहेगा, जब इसके बारे में वह उससे ऐसी 'टोन' में बातें करता जिसे उसने पहले कभी नहीं सुना था,

तब उसे सहसा भान हुआ कि वह उसे नहीं चाहता, वह विस्मित रह गई। उसे अतीत में कही हुई उसकी सारी बातें याद आईं और याद आया कि कितनी निराशा पूर्वक वह उसे प्यार करता था, उसने स्वयं को अपमानित और क्रोधित समझा परन्तु उसमें एक तरह की जन्मजात धृष्टता थी, जो उसे पार ले जाती थी। फिलिप को यह नहीं सोचना चाहिए कि वह उससे प्यार करती थी, क्योंकि वह नहीं करती थी। वह कभी-कभी उसे घृणा करती थी और वह उसका अपमान करना चाहती थी; पर उसने अपने को बिल्कुल शक्तिहीन पाया; वह समझ न सकी उसके साथ कैसे पेश आया जाय, वह उसके साथ थोड़ी घबराने लगी। एक दो बार वह रोई भी। एक दो बार उसने फिलपि के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया; पर जब रात में सोते समय उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया तो थोड़ी देर में उसने कुछ बहाना बताकर अपना हाथ मुक्त कर लिया, जैसे उसके द्वारा छुआ जाना ही उसे नापसन्द हो। उसकी समझ में न आता। उसके ऊपर उसका केवल एक वश बच्ची का था, जिसको वह रोज-रोज अधिक से अधिक चाहने लगा था; बच्ची को एक तमाचा मार कर या धक्का देकर वह उसे बहुत क्रोधित कर सकती थी; और केवल उस समय पुरानी कोमल मुस्कान उसकी आँखों में वापस आती जब वह बच्ची को लेकर उसके पास खड़ी होती।

वह यह सब सोचती और क्रोध पूर्वक स्वयं से कहती कि कभी वह उससे इस सबका बदला चुका लेगी। वह इस सत्य से स्वयं को मना न पाती कि अब वह उसकी परवाह नहीं करता था। वह उसे परवाह करना सिखा देगी। दर्पचूर्ण का उसे बड़ा मान था और कभी-कभी एक अजीब ढंग से वह फिलिप की लालसा करती। अब वह इतना उदासीन होगया था कि उसे चिढ़ लग आती। वह उस प्रकार से हमेशा उसके बारे में सोचा करती। वह सोचती कि फिलिप उसके साथ बड़ा बुरा व्यवहार कर रहा है और समझ न पाती कि ऐसा पाने के लिये उसने क्या किया

है। वह अपने से कहती रहती कि उनका इस तरह साथ-साथ रहना अस्वाभाविक था। तब वह सोचती कि अगर परिस्थितियाँ बदल जायं और वह गर्भवती हो जाय तो वह अवश्य ही उससे विवाह कर लेगा। वह अजीब था, पर वह वास्तव में शरीफ आदमी था, कोई इससे इन्कार नहीं कर सकता। आखिर यह बात उसके मष्तिस्क में बार-बार विरने लगी और उसने निश्चय किया कि अपने दोनों के सम्बन्धों में वह अन्तर अवश्य लायेगी। अब कभी वह उसे चूमता भी नहीं था और वह चाहती थी कि वह चूमे : उसे याद आया कितने जोश से वह उसके होंठ दबाया करता था। यह सोचकर उसे बड़ा अजीब सा महसूस हुआ। वह अक्सर उसके मुंह की तरफ देखती।

एक दिन फरवरी के प्रारम्भ में फिलिप ने उससे कहा कि वह लॉसन के साथ खाना खायगा, जो अपनी वर्षगाँठ मनाने के लिये अपने स्टूडियो में दावत दे रहा था और वह रात में बहुत देर तक नहीं आयगा, लॉसन ने बीक-स्ट्रीट की सराय से अपनी प्रिय 'पंच' की दो बोतलें खरीदी थीं और उनका इरादा था कि शाम खुशी से बिताई जाय। मिल्ड्रेड ने पूछा कि क्या वहां स्त्रियां भी रहेंगी, पर फिलिप ने कहा नहीं; सिर्फ पुरुष आमन्त्रित किये गये थे और वे सिर्फ बैठे रह कर बातें करेंगे और धूम्र-पान करेंगे। मिल्ड्रेड नहीं सोच सकी, पर ज़रा देर में एक विचार आया उसने उठकर नीचे के दरवाजे का खटका लगा दिया, जिससे फिलिप अन्दर न आ सके। वह एक बजे के करीब वापस आया और खटका लगाकर उसने उसे कोसते हुए सुना। बिस्तर से बाहर आकर उसने दरवाजा खोला।

"आखिर तुमने अपने को बन्द क्यों कर लिया? मुझे दुःख है मेरे कारण तुम्हें बिस्तर से उठना पड़ा।"

"मैंने तो उसे खुला ही छोड़ दिया था, न मालूम कैसे वह बन्द हो गया।"

"जल्दी से बिस्तर पर पहुंच जाओ, नहीं तो सर्दी लग जायगी।"

"बैठने के कमरे में जाकर उसने गैस खोल दी। मिल्ड्रेड उसके पीछे-पीछे गई और आग के पास बैठ गई।

"मैं अपने पैर थोड़े गर्म करना चाहती हूँ। बर्फ जैसे ठंडे हो गये हैं।"

बैठ कर वह जूते उतारने लगा। उसकी आँखें चमक रही थीं और गाल लाल थे। मिल्ड्रेड ने सोचा वह शराब पीता रहा है।

"तुम मजा लूट रहे हो?" मिल्ड्रेड ने मुस्कराते हुए पूछा।

"हाँ, आज का समय बड़ा अच्छा बीता।"

फ़िलिप काफी गम्भीर था, पर वह बातें करता और हंस रहा था और वह भी उत्तेजित था। इस तरह की शाम ने उसे पेरिस के बीते दिनों की याद दिला दी थी। वह बड़े उत्साह में था। जेब से अपना पाइप निकाल कर उसने उसे भरा।

"तुम सोओगे नहीं?" मिल्ड्रेड ने पूछा।

"अभी नहीं, मुझे जरा भी नींद नहीं है। लॉसन बड़ा खुश था। मेरे पहुँचने से लौटने तक वही ज्यादा बातें करता रहा।"

"किस विषय की बातें करते रहे?"

"ईश्वर ही जाने। दुनिया की हर चीज़ के बारे में। हम लोग पूरे जोश से चीखते और किसी को किसी की बात न सुनते हुए तुम देखतीं!"

याद करके फिलिप खुशी से हंस पड़ा और मिल्ड्रेड भी हंसी। उसे विश्वास हो गया कि फिलिप ने मात्रा से अधिक शराब पी ली है। ठीक यही तो वह आशा कर रही थी। वह पुरुषों को जानती थी।

"मैं बैठ जाऊँ?" उसने कहा।

उसके उत्तर देने से पहले वह उसके घुटनों पर बैठ गई।

"अगर सोने नहीं जारही हो तो ड्रेसिंग गाउन पहन लो, अच्छा होगा।"

"ओह, मैं यों ही ठीक हूँ।" तब उसकी गर्दन में अपनी बाहें डाल कर उसने अपना चेहरा उसके चेहरे से सटा दिया, और कहा :

"तुम मुझसे इतना कतराते क्यों हो, फिल ?"

फिलिप ने उठने की कोशिश की, पर उसने उठने न दिया।

"मैं तुम्हें प्यार करती हूँ फ़िलिप," उसने कहा।

'बेकार की बातें मत करो।"

"यह बेकार की बात नहीं, सत्य है। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मैं तुम्हें चाहती हूँ।"

उसने उसकी बाँहों से अपने को छुड़ा लिया।

"कृपा करके उठ जाओ। तुम अपने को बेवकूफ बना रही हो और मुझे महसूस करा रही हो कि मैं बिलकुल मूर्ख हूं।"

"मैं तुम्हें प्यार करती हूं, फिलिप। तुमको मैंने जितना नुकसान पहुंचाया है उसका भुगतान करना चाहती हूँ। मैं इस तरह नहीं रह सकती, यह मानव स्वभाव में नहीं है।"

वह कुर्सी से उतर गया और उसने उसे वहीं छोड़ दिया।

"मुझे बहुत दुःख है, पर अब बहुत देर हो चुकी है।"

हृदय को चीर कर एक सिसकी निकली।

"लेकिन क्यों ? तुम इतने कठोर कैसे हो सकते हो ?"

"मेरा ख्याल है क्योंकि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता था। मेरी इच्छा समाप्त हो गई। उस तरह के किसी ख्याल से मुझे भय लगता है। बिना ग्रिफिथ्स और एमिल की बातें सोचे मैं तुम्हारी ओर देख ही नहीं सकता। कोई उन्हें रोक नहीं सकता, मेरा ख्याल है ये बस भावनाएं हैं।

मिल्ड्रेड ने उसका हाथ पकड़ कर उसे चुम्बनों से ढक दिया।

"यह मत करो," वह चीखा।

वह कुर्सी पर बैठ गई।

"मैं इस तरह नहीं रह सकती। अगर तुम मुझे प्यार नहीं करोगे तो चली जाना पसन्द करूंगी।"

"बेवकूफी मत करो, तुम कहाँ जाओगी ? तुम यहाँ जब तक चाहो रह सकती हो, पर यह निश्चित समझ कर कि हम दोनों दोस्त हैं और

अधिक नहीं।"

तब सहसा उसने वासना की उत्तेजना छोड़ दी और वह एक कोमल फुसलाने वाली हंसी हंसी। वह तिरछे चलकर उसके पास पहुँची और उसके चारों ओर अपनी बाहें डाल दीं। उसने आवाज धीमी और खुशामद से भरी बनायी।

"इतने बेवकूफ मत बनो। मैं जानती हूं तुममें उत्साह की कमी है तुम्हें मालूम नहीं कि मैं कितनी अच्छी हो सकती हूँ।"

उसने अपना चेहरा उसके चेहरे पर रख दिया और उसका गाल अपने गाल से रगड़ा। फिलिप के लिये उसकी मुस्कान एक कटाक्ष थी और उसकी आँखों की अर्थभरी चमक ने उसे भय से भर दिया। वह स्वभावतः पीछे हट गया।

"मैं नहीं करूंगा," फिलिप ने कहा।

पर उसे उसने जाने नहीं दिया। अपने होठों से वह उसका मुंह तराशने लगी। फिलिप ने उसके हाथ जबर्दस्ती अलग कर दिये और उसे अपने से अलग ढकेल दिया।

"तुमसे मुझे घृणा लगती है," उसने कहा।

"मुझसे ?"

एक हाथ 'चिमनी-पीस' पर रखकर वह स्थिर होकर खड़ी रह गई उसने एक क्षण को उसे देखा और सहसा उसके गालों पर दो लाल धब्बे उभर आये। वह तेजी से, क्रोध में हंसी।

"मुझसे तुम्हें घृणा लगती है।"

रुक कर उसने तेजी से साँस अंदर खींची। तब वह गालियों के प्रवाह में फूट पड़ी। वह ऊंचे स्वर में चिल्लाने लगी। उसने हर बुरे नाम से उसे बुलाया। उसने इतनी अश्लील भाषा का प्रयोग किया कि फिलिप आश्चर्य में पड़ गया, वह हमेशा शीलवती रहने के लिये कितनी उत्सुक रहती थी। भद्देपन से कितना धक्का खाती थी, कि उसने कभी सोचा भी न था कि जो शब्द वह इस समय इस्तेमाल कर रही थी, उसे मालूम

भी थे। उसके पास आकर मिल्ड्रेड ने अपना चेहरा उसके चेहरे के समीप कर दिया। वह वासना से विकृत हो उठा था और उसके आवेशमय भाषण के कारण थूक उसके होठों पर निकल आया था।

"मैं कभी तुम्हारी परवाह नहीं करती थी, एक बार नहीं, मैं हमेशा तुम्हें बेवकूफ बनाती रही हूँ, तुमसे मुझे ऊब लगती थी, बहुत ऊब लगती थी और मैं तुमसे घृणा करती थी और अगर पैसों का सवाल न होता तो कभी स्वयं को छूने न देती और जब तुम्हें चूमने देना पड़ता था, तब मैं बीमार सी हो जाती थी। हम तुम पर हंसते थे, ग्रिफिथ्स और मैं, हम हंसते थे क्योंकि तुम इतने बेवकूफ थे। बेवकूफ! बेवकूफ!"

तब फिर वह अपनी गालियों में फूट पड़ी। उसने हर छोटी गलती के लिए उसे दोष दिया; उसने कहा वह कंजूस था, बुद्धू था, दर्प सहित और स्वार्थी था; जिन चीजों के बारे में वह सबसे अधिक संवेदनशील था उनका उसने विषमय मजाक उड़ाया और आखिर वह जाने को मुड़ी। उन्मादग्रसित हिंसा से उसने उसे वह चोट पहुँचाई, जो उसे मालूम था हमेशा उसे छू लेती थी। अपना सारा वैमनस्य सारा विष उस एक शब्द में उसने फेंक दिया। उसने उसे उस पर फेंका जैसे वह कोई हथियार हो।

"लंगड़ा!"

: २२ :

अगली सुबह फिलिप चौंक कर उठा। उसे लगा देर हो गई है और अपनी घड़ी की ओर देखने पर उसने पाया नौ बज चुके हैं। वह उछल कर बिस्तर से बाहर जारहा और रसोईघर में गया। जिससे दाढ़ी बनाने के लिए थोड़ा गर्म पानी ला सके। वहां मिल्ड्रेड का कोई चिन्ह न था और जिन चीजों में उसने रात में खाना खाया था वे अब भी बिना धोई पड़ी थीं। उसने दरवाजा खटखटाया।

"उठो, मिल्ड्रेड बहुत देर हो गई है।"

उसने उत्तर नहीं दिया, यद्यपि उसने दूसरी बार भी खटखटाया और उसने परिणाम निकाला कि वह कुढ़ रही है। उसके बारे में परेशान होने के लिये वह बड़ी जल्दी में था। उसने कुछ पानी उबालने को रख दिया और वह नहाने को टब में घुस गया जो हमेशा रात में भर दिया जाता था, जिससे उसकी ठंडक कम हो जाय। उसने मान लिया कि उसके कपड़े पहनते-पहनते मिल्ड्रेड नाश्ता तैयार करके बैठने के कमरे में रख देगी। दो तीन बार जब क्रोधित थी तो उसने ऐसा ही किया था। पर उसे उसके चलने-फिरने की कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ी और महसूस किया कि खाना खाना चाहता था तो उसे स्वयं बनाना पड़ेगा। वह चिढ़ गया कि वह आज सुबह जब वह ज्यादा सो गया था, वह उसके साथ ऐसी शैतानी करे। वह तैयार हो गया तो भी उसका कोई चिन्ह न था, पर अपने कमरे में उसके चलने फिरने की आवाज उसे सुनाई पड़ रही थी। स्पष्टतः वह उठ रही थी। उसने अपने लिये थोड़ी चाय बनाई और दो टुकड़े रोटी और मक्खन काटे, जिन्हें उसने जूते पहनते-पहनते खा लिया, तब वह तेजी से सीढ़ियों से उतर कर सड़क पर अपनी ट्राम पकड़ने को दौड़ पड़ा। अखबार की दुकानों के विज्ञापन के बोर्डों पर लड़ाई की खबरें उसकी आँखें खोज रही थीं और वह पिछली रात के दृश्य के बारे में सोच रहा था; अब जब सब खत्म हो चुका था और उसके बाद वह सो चुका था, वह उसे भद्दा समझने से स्वयं को रोक न सका। उसने सोचा उसका व्यवहार हास्यास्पद था, पर उसे अपनी भावनाओं पर अधिकार न था; उस समय वे दोनों ही उबल रहे थे। वह मिल्ड्रेड पर नाराज हो उठा क्योंकि उसने फिलिप को ऐसी भद्दी स्थिति में फेंक दिया था और तब नये आश्चर्य से वह उसके उद्गारों और गन्दी भाषा के बारे में सोचने लगा। उसके आखरी उपहार को याद कर अपने चेहरे को लाल होने से वह रोक न सका; पर उसने क्रोध और घृणा से अपने कंधे उच-काये। उसे बहुत दिनों से मालूम था कि जब कभी उसके दोस्त उससे

नाराज हो जाते थे तो उसकी कुरूपता पर व्यंग करने से नहीं चूकते थे। उसने अस्पताल में आदमियों को अपने चलने के ढंग की नकल करते देखा था, उसके सामने नहीं, पर जब वे सोचते वह उन्हें देख नहीं रहा है। उसे अब तक मालूम हो गया था कि ऐसा वे किसी इच्छित अभद्रता वश नहीं करते थे, परन्तु चूँकि मनुष्य नकल करने वाला जानवर ही है, और चूँकि यह लोगों को हँसाने का आसान तरीका था। वह इसे जानता था, पर वह कभी इतने से ही संतोष न कर पाता था।

अपने काम में लगकर उसे खुशी हुई। जब वह घुसा तो वार्ड के आदमी खुश और दोस्ताना मालूम पड़े। सिस्टर ने व्यापाराना मुस्कान के साथ उसका स्वागत किया।

"आज आपको बड़ी देर हो गई, मिस्टर कैरी।"

"कल रात मैं देर तक बाहर घूमता रहा।"

"वह तो दिखलाई पड़ रहा है।"

"धन्यवाद !"

हँसता हुआ वह अपने पहले केस के पास गया, एक लड़का जिसे तपेदिक का नासूर हो गया था और उसने उसकी पट्टियाँ खोलीं। लड़का उसे देखकर खुश हुआ और नई पट्टी बाँधते समय फिलिप उससे हँसी करने लगा। फिलिप अपने मरीजों का प्रिय था, वह बड़ी अच्छी तरह उनकी दवा करता; और उसके हाथ कोमल, संवदेनशील थे जो उन्हें चोट नहीं पहुँचाते थे। कुछ पट्टी बाँधने वाले जरा कठोर थे और अपने काम यों ही किया करते थे। अपने मित्रों के साथ क्लब के कमरे में उसने खाना खाया। एक 'स्कोन' [1] और मक्खन के साथ एक प्याला कोको ही उनका संक्षिप्त सा खाना था और लड़ाई के बारे में वे बातें करते रहे। कई आदमी बाहर जाना चाहते थे, पर अधिकारी इसके बारे में अपने ख्याल रखते थे और जिसे किसी अस्पताल में नियुक्ति न मिली

---

१. एक प्रकार की मुलायम केक।

होती थी उसे इन्कार कर देते थे। किसी ने सुझाव रखा कि अगर लड़ाई चलती रही, तो कुछ दिनों बाद हर 'क्वालीफाइड' आदमी को लेने को तैयार हो जायेंगे; परन्तु सर्वसाधारण की राय यही थी कि वह एक महीने में समाप्त हो जायेगी। रॉबर्ट्स अब वहाँ पहुँच गया था और सारी चीजें ठीक हो जायेंगी। यही मैकालिस्टर की राय भी थी और उसने फिलिप से बताया था कि उन्हें अवसर की ताक में रहना चाहिये और शान्ति घोषित होने से पहले पहले खरीद लेना चाहिये। तब व्यापार में सरगर्मी होगी, और वे सभी कुछ धन कमा सकेंगे। फिलिप ने मैकालिस्टर से कह रक्खा था कि जब भी अवसर आये वह उसके लिये 'स्टॉक' खरीद ले। गर्मी में जो तीस पौंड उसने कमा लिये थे उनसे उसकी भूख बढ़ गई थी और अब वह दो सौ पैदा करना चाहता था।

उसने अपना दिन का काम खत्म कर दिया और केनिंगटन जाने के लिये बस पर चढ़ गया। वह सोच रहा था कि शाम को मिल्ड्रेड उसके साथ कैसा व्यवहार करेगी। यह सोचना बेवकूफी थी कि वह चिड़चिड़ी होगी और उसके प्रश्नों के उत्तर देने से इन्कार कर देगी। वर्ष के उस समय के लिये शाम में गर्मी थी और दक्षिणी लन्दन की उन गलियों में भी फरवरी की मलिनता थी; लम्बे जाड़े के महीनों के बाद तब प्रकृति बेचैन रहती है, उठती हुइ चीजें अपनी नींद से जग पड़ती हैं, और धरती में एक तरह की खड़खड़ाहट होती है, बसन्त के आगमन से पूर्व आने वाले मौसम, जब वह अपनी शाश्वत क्रियाएँ शुरू करती है। फिलिप और आगे जाना पसन्द करता, अपने कमरों में लौट जाने में उसे मज़ा न था और वह शुद्ध वायु चाहता था; परन्तु बच्ची को देखने की इच्छा ने सहसा उसके हृदय के तारों को पकड़ लिया और खुशी से चीखते, लटपटा कर अपनी ओर आते हुए उसे सोचकर वह स्वयं मुस्करा पड़ा। जब वह मकान पर पहुंचा और यंत्रचालित सा उसने ऊपर खिड़की को देखा, कि वहाँ जरा भी रोशनी न थी, तो उसे आश्चर्य हुआ। ऊपर जाकर उसने खट-

खटाया, पर कोई उत्तर न मिला। जब मिल्ड्रेड बाहर जाती थी तो चाबी चटाई के नीचे छोड़ जाती थी और अब उसे नहीं पाया। वह अन्दर गया और बैठने के कमरे में पहुँचकर उसने दियासलाई जलाई। कुछ हो गया था, सहसा उसकी समझ में न आया क्या; उसने गैस खोलकर उसे जला दिया। कमरा एकाएक चमक से भर उठा और उसने चारों ओर देखा। उसका मुंह खुला रह गया। सारा कमरा उजाड़ हो गया था। उसकी हर चीज़ जान बूझ कर नष्ट की गई थी। उसे क्रोध हो आया और वह झपट कर मिल्ड्रेड के कमरे में पहुंचा। वह अन्धेरा और खाली था। जब उसने रोशनी जलाई तो देखकर बच्ची की सारी चीजें ले गई थी; (प्रवेश करते समय उसने देखा था कि चलना सिखाने वाली गाड़ी नीचे अपने हमेशा की जगह पर न थी, पर सोचा था मिल्ड्रेड बच्ची को घुमाने ले गई होगी); और वाशिंगटन स्टैंड पर रखकर सारी तोड़ दी गई थीं, दोनों कुर्सियों की गद्दियाँ लाकर चाकू से चीर दी गई थीं, तकिया चीर कर खोल डाला गया था, चद्दरों और ऊपर रक्खे शीशों पर बड़े-बड़े फटे हिस्से थे और आइना हथौड़े से तोड़ा गया मालूम पड़ता था। फ़िलिप स्तम्भित हो गया। वह अपने कमरे में गया और वहाँ की सारी चीजें अस्त-व्यस्त थीं तसला और सुराही नष्ट कर दिये गये थे, आइने टुकड़े-टुकड़े था और चद्दरें चिथड़े हो गई थीं। मिल्ड्रेड ने तकिये में हाथ डालने भर को छेद कर दिया था और कमरे में पंख फ़ैला दिये थे। उसने कम्बलों में चाकू भौंके थे। ड्रेसिंग टेबिल पर फ़िलिप की माँ के फोटो ग्राफ़ थे, फ्रेम तोड़ शीशे चूर-चूर कर दिये थे। फ़िलिप छोटे रसोई घर में गया। वह तोड़ी जाने वाली चीज़ तोड़ी जा चुकी थी, शीशे, पुडिंग के तसले, प्लेटें तश्तरियाँ।

इससे फ़िलिप की साँस रुक गई। मिल्ड्रेड कोई पत्र नहीं छोड़ गई थी, अपने क्रोध का प्रदर्शन करने के लिये इस ध्वंस के अतिरिक्त और वह उसके स्थिर चेहरे की कल्पना कर सकता था जिसके साथ उसने सारा काम किया होगा। बैठने के कमरे में जाकर उसने अपने चारों

ओर देखा। वह इतना आश्चर्यान्वित हो गया था कि अब उसे क्रोध न आ रहा था। उसने अजीब दृष्टि से रसोई के चाकू और कोयला तोड़ने के हथौड़े को, जो मेज़ पर जहाँ उन्हें छोड़ गई थी पड़े थे, देखा। तब उसकी दृष्टि एक बड़े चाकू पर पड़ी, जो टूटा हुआ 'फ़ायरप्लेस' में पड़ा था। इतना नुकसान करने में उसे काफ़ी समय लगा होगा। लॉसन का बनाया हुआ उसका चित्र काटा हुआ था और उसमें बुरी तरह चाकू भी भौंका हुआ था। उसकी अपनी बनाई तस्वीरें टुकड़े टुकड़े कर डाली गईं थीं; और फ़ोटोग्राफ, मैनेटकी 'अलम्पियाँ' और 'इंग्रेस' की "ओडालिस्क', फ़िलिप चतुर्थ का चित्र, कोयला तोड़ने के हथौड़े के प्रहार से नष्ट कर डाले गए थे। मेज़पोश और दोनों आराम कुर्सियों में बड़े-बड़े छेद थे। वे बिल्कुल नष्ट हो चुके थे।

फ़िलिप के पास दो-तीन नीली और सफेद प्लेटें थीं, 'मूल्यवान नहीं' परन्तु उसने उन्हें एक-एक करके कम दामों में खरीदा था और उनके साथ जुड़ी स्मृतियों के कारण उन्हें प्यार करता था। वे टुकड़े-टुकड़े होकर फ़र्श पर बिखरी पड़ी थीं। उसकी किताबों पर पीठों पर लम्बे लम्बे घाव लगे थे और उसने फ्रेंच की अजिल्द पुस्तकों के पृष्ठ फाड़ डालने का काम उठाया था। चिमनी पीस पर रखे छोटे-छोटे आभूषण टुकड़ों में होकर वहीं पर पड़े थे। चाकू या हथोड़े से नष्ट की जा सकने वाली हर चीज़ नष्ट कर दी गई थी।

फ़िलिप की सारी सम्पत्ति तीस पौंड से अधिक में न बिकती पर अधिकतर चीजें उसकी पुरानी दोस्त थीं और वह घरेलू आदमी था और उन सारी चीजों से प्रेम करता था क्योंकि वे उसकी थीं; उसे अपने छोटे से घर के लिये अभिमान था और थोड़े से धन से उसने उसे सुन्दर और अपने लिये बनाया था। अब वह निराश होकर कुर्सी पर गिर गया। अपने से पूछने लगा, वह कैसे इतनी क्रूर हो सकी। एक आकस्मिक भय से वह उठ कर गलियारे में गया, जहाँ उसके कपड़े रखने की अल्मारी थी। उसने उसे खोला और सन्तोष की एक साँस

ली। स्पष्ट ही वह उसे भूल गई थी और उसकी कोई चीज़ नहीं छूई गई थी।

वह बैठने के कमरे में फिर गया और सारा दृश्य देखते हुए सोचने लगा कि वह क्या करे; सारी चीजों को सम्हाल कर रखना शुरू करने का उसके पास साहस न था; फिर घर में खाना बिल्कुल न था और वह भूखा था। बाहर जाकर खाने के लिये कुछ लिया। जब वह भीतर आया तो अधिक शान्त था। बच्ची की याद करके उसे वेदना हुई और वह सोचने लगा कि क्या वह उसकी कमी महसूस करेगा, शायद पहले पहल, पर एक हफ़्ते में उसे भूल जायेगी; और मिल्ड्रेड से मुक्ति पाकर वह कृतज्ञ हुआ : उसकी याद उसे क्रोध के साथ नहीं, वरन् अत्यधिक ऊब के भाव सहित आई।

"मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि उसे फिर न देख सकूं," उसने जोर से कहा।

अब केवल एक रास्ता कमरे छोड़ देने का रह गया था, और उसने दूसरे दिन नोटिस दे देने का विचार किया। नुकसान पूरा करने के लिए उसके पास पैसे न थे और उसके पास इतना कम धन रह गया था कि अब उसे और सस्ते मकान की ज़रूरत थी। वह खुशी से उनसे बाहर निकल जायेगा। खर्च से वह परेशान हो गया था और अब मिल्ड्रेड की यादगार हमेशा उनमें रहेगी। फ़िलिप अधीर हो उठा और अपनी तरकीब को काम में लाने तक आराम न कर सका; इसलिये दूसरे दिन दोपहर के बाद उसने पुराने फर्नीचर का व्यापार करने वाले एक आदमी को बुलाया, जिसने उसके नष्ट और अच्छे सारे सामान के तीन पौंड दिये और दो दिन बाद वह अस्पताल के सामने एक मकान में चला गया, जिसमें पहले जब वह मेडिकल का विद्यार्थी था, रहा करता था। मकान मालकिन बड़ी अच्छी महिला थी। उसने ऊपर की मंजिल पर एक सोने का कमरा लिया, जिसका किराया मकान मालकिन ने छः शिलिंग प्रति सप्ताह माँगा; वह छोटा और गन्दा था और पीछे के मकान के अहाते की

ओर उसका मुँह था, परन्तु अब उसके पास अपने कपड़े और किताबों के बक्स के अलावा और कुछ न था, इतने सस्ते में रहने पर वह खुश था।

और अब ऐसा हुआ कि फ़िलिप हैरी की सम्पत्ति पर जिसका मूल्य उसके अतिरिक्त किसी के लिये न था, उन घटनाओं का प्रभाव पड़ा जिनसे होकर उसका देश गुज़र रहा था। इतिहास लिखा जा रहा था और यह क्रिया इतनी महत्वपूर्ण थी कि यह भद्दा मालूम पड़ता था कि वह किसी अनजाने मेडिकल के विद्यार्थी का जीवन स्पर्श करे। लड़ाई के बाद लड़ाई, मोजर्सफान्टीन, कालेन्सो, स्पियन, काप, सभी एटन के खेलों के मैदान में हार गए, उन्होंने राष्ट्र का असम्मान किया और अमीर उमराओं तथा शरीफ़ों की इज़्ज़त को मौत का सा धक्का पहुँचाया, जिन्हें उस समय तक गंभीरता पूर्वक उनके कथन का, कि उनमें शासन करने का जन्मजात माद्दा है, का विरोध करने वाला कोई नहीं मिला था। पुरानी व्यवस्था टूट रही थी: इतिहास सचमुच लिखा रहा था। तब 'कोलासस' ने अपनी शक्ति आगे की और फिर गल्ती करके, बिजय की अनुरूपता में पहुंच गया। फारदेबर्ग में क्वोंजे ने आत्मसमर्पण कर दिया, लेडीस्मिथ मुक्त कर दिया गया और मार्च के शुरू में लार्ड राबर्टस ब्लोएम फान्टेन में पहुंच गये।

इस ख़बर के लन्दन पहुँचने के दो तीन दिन बाद मैकालिस्टर बीक स्ट्रीट की सराय में आया और खुशी से बोला कि स्टॉक एक्सचेंज में चीजों की शक्ल चमकदार होती जा रही है। शान्ति पास ही थी, कुछ हफ़्तों के भीतर राबर्ट्स प्रेटोरिया पहुंच जायेगा और शेयरों की कीमत तो अभी से बढ़ रही थी। निश्चय ही व्यापार में अधिक लाभ होगा।

"यही समय मैदान में आने का है," उसने फ़िलिप को बताया, "पबलिक को मालूम हो जाने का इन्तजार करने से कोई लाभ नहीं। अभी या कभी नहीं।"

उसके पास भीतरी ख़बर थी। दक्षिणी अफ्रीका की एक खान के मैनेजर ने उसकी 'फर्म' के बड़े हिस्सेदार को तार दिया था कि खान को

कोई हानि नहीं पहुंची है। वह शीघ्रातिशीघ्र काम करना शुरू कर देंगे। यह सट्टा नहीं था, व्यापार में रुपया लगाना था। बड़े हिस्सेदार ने उसे कितना अच्छा समझा था यह दिखलाने के लिए मैकालिस्टर ने फ़िलिप को बताया कि उसने अपनी दोनों बहनों के लिए पांच सौ शेयर खरीदे हैं। वह कभी इन्हें बैंक आफ इंगलैंड से कम सुरक्षित जगह में नहीं रखता था।

"मैं खुद इस पर अपनी कमीज तक लगाने जा रहा हूँ," उसने कहा।

उसने फ़िलिप को बताया कि ज़्यादा लालची नहीं बनना चाहिए, परन्तु दस शिलिंग की बढ़ती पर सन्तोष करना चाहिए। वह अपने लिये तीन सौ खरीद रहा था और उसने सुझाव रक्खा कि वह उतने ही लेले। वह उन्हें रख लेगा और उचित समय पर बेच देगा। फ़िलिप को उसपर भरोसा था, कुछ इसलिए कि वह स्काटलैंड का निवासी और इसलिए स्वभावतः सावधान था और कुछ इसलिये कि पहले भी वह सही कहता था। सुझाव पर वह खुशी से उछल पड़ा।

"मैं कह सकता हूँ कि हम उन्हें गणना से पहले ही बेच डालेंगे," परन्तु यदि ऐसा न हुआ, तो मैं तुम्हारे हिस्से के ठीक कर दूंगा।

यह फ़िलिप को बड़ी अच्छी स्कीम मालूम पड़ी। अपना लाभ उठाने तक इन्तजार करना पड़ता था और अपनी जेब में हाथ तक नहीं डालना पड़ता था। नये उत्साह से उसने स्टाक-एक्सचेंज के कालम देखना शुरू कर दिया। दूसरे दिन सबके दाम कुछ बढ़ गये और मैकालिस्टर ने लिखा कि शेयरों के लिये उसे सवा दो देने पड़े। उसनें लिखा कि बाजार स्थिर था पर एक दो दिन में भाव नीचा हो गया। दक्षिणी अफ्रीका से आई हुई ख़बर ज्यादा भरोसा देने वाली न थी और फ़िलिप ने आतुरता से देखा कि उसके शेयर दो पर गिर गये हैं। परन्तु मैकालिस्टर आशा-वादी था। बोएट अधिक समय तक ठहर नहीं सकेंगे और वह एक-एक हैट की शर्त लगाने को तैयार था कि अप्रैल के मध्य से पहले-पहले

राबर्ट्स जोहन्सबर्ग पहुंच जायेगा। गणनामें फ़िलिप को लगभग चालीस पौंड देने पड़ गये। इससे उसे बड़ी चिन्ता हुई, पर उसे लगा केवल एक रास्ता था कि वह इसमें लगा रहे : ऐसी परिस्थिति में नुकसान बहुत बड़ा था। दो तीन सप्ताह तक कुछ न हुआ; बोएर लोगों की समझ ही में न आता था कि वे हार गये हैं और अब आत्मसमर्पण करने के अलावा उनके पास और कोई रास्ता नहीं है : वास्तव में उन्हें एक-दो छोटी-छोटी सफलताएं भी मिल गई थीं और फ़िलिप के शेयरों का दाम आधा क्राउन और गिर गया। यह स्पष्ट हो गया कि लड़ाई अभी समाप्त नहीं हुई थी। काफी लोगों ने अपने शेयर बेच डाले। जब मैकालिस्टर फ़िलिप से मिला, वह निराश था।

"मुझे विश्वास नहीं है कि सबसे अच्छी चीज नुकसान बचाना न होगी। मैं फर्कों में जितना चाहता था देता रहा हूं।"

फ़िलिप उत्कंठा से पीड़ित रहने लगा। रात में वह सो न पाता; नाश्ता करना बन्द कर दिया, चाय और रोटी और मक्खन पर वह उतर आया, जिससे वह क्लब के वाचनालय में जाकर अखबार देख सके; कभी खबर बुरी होती, और कभी खबर ही न होती, पर जब शेयरों के दामों में परिवर्तन होता। वह छपते ही। वह न समझ सका उसे क्या करना चाहिये। अगर अब उसने उन्हें बेचा तो वह पूरे साढ़े तीन सौ पौंड का घाटा उठाना पड़ेगा; और तब उसके पास काम चलने के लिये सिर्फ आठ पौंड रह जायेंगे। वह सोचने लगा कि वह स्टॉक-एक्सचेंज के पचड़े में पड़ने की बेवकूफी न करता तो ठीक था, परन्तु अब केवल एक रास्ता था जमे रहने का; कुछ निश्चय किसी भी दिन हो सकता है और तब शेयरों की कीमत बढ़ जायेगी; अब उसे लाभ की आशा न थी, परन्तु वह अपनी हानि पूरी करना चाहता था। अस्पताल में अपना कोर्स पूरा करने का यही एक अवसर था। गर्मी का सेशन मई में शुरू होने वाला था और उसके अन्त में उसका इरादा मिडवाइफरी का इम्तहान देने का था। तब केवल एक साल रह जायगा; उसने बड़ी

सावधानी से हिसाब लगाया और तब इस नतीजे पर पहुंचा कि वह फीस आदि सभी का प्रबंध डेढ़ सौ पौंड में कर सकता था; परन्तु इससे कम में नहीं।

अप्रैल के प्रारम्भ में वह मैकालिस्टर से मिलने बीस्ट्रीट की सराय में गया। उसके साथ परिस्थिति पर बहस करके उसे थोड़ी शान्ति मिलती थी; और यह ज्ञान कि उसके अतिरिक्त अनेक आदमी रुपयों की हानि उठा रहे हैं उसकी अपनी चिन्ता को कम असह्य बना देता था। परन्तु जब फ़िलिप पहुंचा तो वहाँ हेवर्ड के अलावा कोई न था, और फ़िलिप के बैठते ही उसने कहा :

"मैं इतवार को जहाज से 'केप'[1] जा रहा हूँ।"

"सचमुच !" फ़िलिप चीख पड़ा।

हेवर्ड आखिरी आदमी था जिसके बारे में फ़िलिप आशा करता था कि वह ऐसी कोई बात करेगा। अस्पताल से आदमी अधिक संख्या में जा रहे थे; सरकार किसी भी 'क्वालीफाइड' आदमी को पाने पर खुश थी; और जो अश्वारोही सैनिकों की तरह गये थे, घरों को पत्र लिखे कि जैसे ही पता लगा वह मेडिकल विद्यार्थी थे, वह अस्पताल में रख दिये गये थे। देश-भक्ति की भावना की एक लहर सारे देश में दौड़ रही थी और समाज की सभी श्रेणियों से स्वयंसेवक आ रहे थे।

"तुम किस हैसियत से जा रहे थे ?" फ़िलिप ने पूछा।

"ओह, मैं डॉरसेट अश्वारोही दल' में जा रहा हूँ, अश्वारोही सैनिक की हैसियत से।"

फ़िलिप हेवर्ड को आठ साल से जानता था। उस व्यक्ति के प्रति, जो उसे कला और साहित्य के बारे में बता सकता था, उत्साहपूर्ण प्रशंसा से उत्पन्न यौवन की अंतरंग मित्रता बहुत पहले समाप्त हो चुकी थी; परन्तु उसकी जगह अब आदत ने ले ली थी; और जब हेवर्ड लन्दन में

---

१. केपटाउन उत्तमाशा अंतरीप पर स्थित अफ्रीका का एक नाम।

रहता था तो वह हफ्ते में एक दो बार उससे मिल लिया करता था। वह अब भी किताबों के बारे में एक कोमल प्रशंसा सहित बातें किया करता था। फ़िलिप अभी सहनशील न हुआ था और हेवर्ड का वार्तालाप कभी-कभी उसे चिढ़ा देता था। अब उसे पूरा विश्वास न रह गया था कि कला के अलावा संसार में महत्वपूर्ण कुछ नहीं है। हेवर्ड के 'काम और सफलता के प्रति क्रोध और घृणा का वह विरोध करता। फ़िलिप अपनी 'पंच' हिलाते हुए, अपनी पहले की दोस्ती और उत्कट आशा कि हेवर्ड बड़े-बड़े काम करेगा, के बारे में सोचता रहा। बहुत पहले ही उसका यह भ्रम समाप्त हो गया था और अब उसे मालूम हो गया था कि वह बातें करने के अलावा कभी कुछ न कर सकेगा। अब वह पैंतीस वर्ष का था और तीन सौ पौंड प्रति वर्ष में रहने में कठिनाई होती थी, बनिस्बत इसके कि जब वह युवक था; और उसके कपड़े, यद्यपि अब भी अच्छे दरजी द्वारा सिले होते थे, अधिक समय तक पहने जाते थे, वह मजबूत था, और उसके बालों का कोई कलात्मक प्रबंध इस सत्य को न छिपा पाता था कि वह गंजा था। उसकी नीची आँखें बुझी हुई और पीली पड़ गई थीं। यह संदेह करना कठिन नहीं था कि वह बहुत ज्यादा पीने लगा था।

"तुम्हें जाने की बात कैसे सूझी?" फ़िलिप ने पूछा।

"ओह, मैं नहीं जानता, मैंने सोचा मुझे जाना चाहिये।"

फ़िलिप चुप हो गया। वह अपने को बेवकूफ समझ रहा था। वह समझ रहा था कि हेवर्ड अपनी आत्मा की बेचैनी द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा था, जिसे वह समझ न सकता था। उसके भीतर की शक्ति ने उसे दिखलाया। मुझे अपने देश के लिये जाकर लड़ना आवश्यक है। यह आश्चर्य की बात थी, क्योंकि देश भक्ति को वह पक्षपात से अधिक नहीं समझता था और अपनी सार्व भौमिकता की प्रशंसा स्वयं करके, इंग्लैंड को देश निकाले की जगह समझता था। अधिक संख्या में

उसके देशवासी उसकी भावनाओं को ठेस पहुंचाते थे। फिलिप को आश्चर्य हुआ कि वह कौन सी ऐसी चीज है जो आदमियों को जीवन के सिद्धान्तों के विरुद्ध काम करने पर बाध्य कर देती है। हेवर्ड के लिये अलग खड़े रहकर मुस्कराते हुए असभ्यों को एक दूसरे की हत्या करते देखते रहना ही युक्तिसंगत होता। लगता था जैसे व्यक्ति एक अज्ञात शक्ति के हाथ में खिलौने हों, जो उन्हें कुछ भी करने को बाध्य करता है और कभी-कभी अपने कामों की सत्यता सिद्ध करने के लिये कारण भी बताता; और जब वह असंभव होता, बिना कारण ही काम करते।

"आदमी बड़े अजीब होते हैं," फिलिप ने कहा "मैं कभी आशा नहीं कर सकता था कि तुम अश्वारोही सैनिक की तरह जाओगे।"

जरा अजीब परिस्थिति में स्वयं को पाकर हेवर्ड मुस्कराया, बोला कुछ नहीं।

"कल मेरा इम्तहान था, आखिर में उसने कहा और उतनी मुसीबत का सामना करना यह जानने के लिये ठीक ही था कि मैं बिलकुल ठीक हूँ।"

उसी समय मैकालिस्टर आया।

"मैं तुमसे मिलना चाहता था कैरी," उसने कहा "मेरी कम्पनी वाले अब वे शेयर और अपने पास नहीं रखना चाहते बाजार ऐसी भयानक स्थिति में हैं और वे चाहते हैं कि तुम उन्हें ले लो।"

फिलिप का दिल डूब गया। उसे मालूम था यह असम्भव था। इसका मतलब था वह हानि स्वीकार कर ले। उसके आत्माभिमान ने उसे शान्ति से उत्तर देने पर बाध्य किया।

"मैं नहीं समझता वह किसी काम का होगा। तुम उन्हें बेच दो तो अच्छा हो।"

"यह कहना तो बिल्कुल ठीक है। पर मैं ठीक नहीं कह सकता उन्हें बेच सकूंगा या नहीं। बाजार बिल्कुल घट बढ़ नहीं रहा और

ख़रीदने वाले हैं ही नहीं।"

"पर एक और एक के आठवें भाग उनके दाम हैं।"

"जो, हो, उसका कोई मतलब नहीं। उनके यह दाम नहीं मिल सकते।"

एक क्षण के लिये फ़िलिप ने कुछ नहीं कहा। वह अपने को संयत करने की कोशिश कर रहा था।

"तुम्हारा मलब है उनकी कीमत अब कुछ नहीं है ?"

"ओह मैं वह नहीं कहता। निश्चय ही उनकी कुछ-न-कुछ कीमत है, पर कोई अभी उन्हें खरीद नहीं सकता।"

"तब जितना मिल सके उतने पर ही उन्हें बेच दो।"

मैकालिस्टर ने फ़िलिप को अनुदार व्यक्ति की तरह देखा। वह सोचने लगा, क्या उसे अधिक गहरा आघात लगा है।

"मुझे बहुत दुःख है दोस्त, पर हम सब एक ही नाव पर हैं। किसी ने नहीं सोचा था कि लड़ाई इस तरह बढ़ जायेगी। मैंने तुम्हें इस मुसीबत में डाला है, पर मैं स्वयं भी इसमें हूँ।"

"उसकी कोई बात नहीं, "फ़िलिप ने कहा "आदमी को कभी-न-कभी नुकसान उठाना ही पड़ता है।"

जिस मेज से उठकर वह मैकालिस्टर से बातें करने गया था, फ़िलिप उसी पर फिर जा बैठा। वह चुप हो गया; उसका सिर सहसा जोर से दर्द करने लगा, पर वह उन्हें अपने को कायर पुरुष नहीं समझना चाहता था। वह एक घंटे से ज्यादा समय तक बैठा रहा। उनकी हर बात पर वह मुर्झाई हंसी हंसता रहा। आखिर वह जाने को उठ खड़ा हुआ।

"तुमने इसे बड़ी शांति पूर्वक सहन किया," मैकालिस्टर ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा "मेरा ख्याल नहीं है कि कोई आदमी तीन चार सौ पौंड खो देना पसंद करता है।"

अपने छोटे गंदे कमरे में पहुंचकर फ़िलिप अपने बिस्तर पर गिर

गया और निराशा से व्यथित हो उठा। वह अपनी ग़लती पर बार-बार पछताता रहा; और यद्यपि उसने अपने से कहा कि पछताना बेवक़ूफ़ी है, क्योंकि जो हो गया था अवश्यंभावी था क्योंकि वह हो चुका था, वह अपने को सम्हाल न सका। वह बहुत दुःखी हो उठा था। सो न पाया। उसे याद आया उसने किस तरह पिछले कुछ सालों में धन बहाया था। उसका सिर भयानक रूप से दर्द करने लगा।

अगली शाम आख़री डाक से उसके हिसाब का विवरण आ गया। उसने अपनी पासबुक देखी। उसे पता लगा कि सब कुछ दे चुकने के बाद उसके पास सात पौंड बचेंगे। सात पौंड! कृतज्ञ हुआ कि वह हिसाब तो साफ कर सकेगा। मैकालिस्टर को नम्रतापूर्वक यह बताना कि उसके पास रुपये नहीं हैं कितना भयानक होता। गर्मी के सेशन में उसे 'नेत्र विभाग' में काम सीखना था और उसने एक विद्यार्थी से एक 'आफ़ थैलमैस्कोप'[1] खरीदा था, जो उसे बेचना चाहता था। उसने उसका दाम नहीं दिया था, पर उसमें साहस नहीं था कि विद्यार्थी से जाकर यह कह दे कि वह सौदा नहीं करना चाहता और उसे कुछ किताबें भी खरीदनी थीं। उसके पास ख़र्च चलाने के लिये पांच पौंड रह गये। वे छः हफ़्ते चले, तब उसने अपने चचा को अपनी समझ में बहुत व्यापाराना ढंग पर एक पत्र लिखा; उसने लिखा कि बड़ी लड़ाई के कारण उसे काफ़ी नुकसान हो चुका है और अगर चचा उसकी मदद न करें तो वह पढ़ाई जारी नहीं रख सकता। उसने सुझाया कि 'विकर' उसे डेढ़ सौ पौंड उधार दे दें जिन्हें वे अगले अठारह महीनों में माहवारी किश्तों में देते रहें; जब वह कमाने लगेगा तो धीरे-धीरे सारा मूल्य चुका देगा और इस पर ब्याज भी देगा। अधिक-से-अधिक डेढ़ साल के भीतर वह 'क्वाली फ़ाइड' हो जायगा और तब तीन पौंड प्रति सप्ताह पर सहकारी डाक्टर हो जाने

---

१. आँख के भीतर निरीक्षण करने में सहायक एक यंत्र।

का उसे विश्वास हो जायगा। उसके चाचा ने उत्तर दिया कि वह कुछ नहीं कर सकते। जब सारी परिस्थितियां एकदम बिगड़ गईं थीं, उनसे सब कुछ बेच देने को कहना ठीक नहीं था और जो कुछ थोड़ा उनके पास था, उसे बीमारी आदि के मौकों पर काम आने के लिये उन्होंने अपने प्रति एक कर्त्तव्य समझ कर रख छोड़ा था। एक छोटे व्याख्यान के साथ उन्होंने अपने पत्र का अंत किया था। उन्होंने बार-बार फ़िलिप को चेतावनी दी थी और फ़िलिप ने कभी उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया था; वे ईमानदारी से यह न कह सके कि उन्हें आश्चर्य हुआ था; वह बहुत दिनों से फ़िलिप की शाहखर्ची और संतुलन की कमी का अन्त जानते थे। पत्र पढ़ कर फिलिप को क्रोध आया, बुरा लगा। उसने कभी सोचा भी न था कि उसके चचा इनकार कर देंगे और वह क्रोध में फूट पड़ा; परन्तु उसके बाद एक तरह का शून्य व्याप्त हो गया : यदि उसके चाचा उसकी सहायता न करेंगे तो वह अस्पताल में न रह सकेगा। उसे भय लगा और अपना अभिमान एक ओर रखकर उसने ब्लैकस्टेबिल के विकर को फिर पत्र लिखा। अपना केस बहुत आवश्यक बताया; परन्तु शायद उसने ठीक तरह से अपनी बात नहीं कही और उसके चचा ने महसूस नहीं किया कि कितनी निराशा जनक परिस्थितियों में वह था, क्योंकि उन्होंने उत्तर दिया कि वह अपना इरादा बदल नहीं सकते; फिलिप अब पचीस वर्ष का हो गया था और अब उसे कुछ कमाना शुरू कर देना चाहिये था। जब वह उठ जायेंगे, तब फिलिप को कुछ मिलेगा, परन्तु उस समय तक के लिये उन्होंने एक पेनी भी देने से इनकार कर दिया। पत्र में फिलिप को उस आदमी का संतोष दिखलाई पड़ा, जो, वर्षों से उसके कामों का विरोध करता आ रहा था और अब अपने को ठीक समझ रहा था।
